प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला, ग्रन्थ ३

प्राचीन फागु-संग्रह

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
वडोदरा–संचालित

प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला

सामान्य संपादक
डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा,
एम. ए., पीएच. डी.
अध्यक्ष, गुजराती विभाग,
म. स. विश्वविद्यालय, वडोदरा

卐

ग्रन्थ ३

प्राचीन फागु-संग्रह

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्राचीन फागु-संग्रह

विक्रमना चौदमाथी अराढमा सैका सुधी रचायेलां आडत्रीस फागुकाव्योनो समुच्चय—कृतिपरिचय अने प्रतिपरिचय, फागु-विषयक अभ्यासलेख तथा शब्दकोश सहित

संपादक

भोगीलाल ज. सांडेसरा, एम. ए., पीएच. डी.

सोमाभाई पारेख, एम. ए., एम. एड्.

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रकाशक
डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा,
अध्यक्ष, गुजराती विभाग,
म. स. विश्वविद्यालय, वडोदरा.

आवृत्ति पहेली, वि. सं. २०११
प्रत ५०० ई. स. १९५५

मूल्य आठ रूपिया

प्राप्तिस्थान
प्राच्य विद्यामन्दिर,
वडोदरा.

मुद्रक
रमणलाल जी. पटेल, व्यवस्थापक,
म. स. युनिवर्सिटी ऑफ बरोडा प्रेस
(साधना प्रेस), रावपुरा, वडोदरा.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निवेदन

प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालानुं आ त्रीजुं प्रकाशन 'प्राचीन फागु-संग्रह' अभ्यासीओ समक्ष रजू करतां आनंद थाय छे. जूना गुजराती साहित्यना एक रसप्रद प्रकारना आडत्रीस नमूनाओनो आ समुच्चय साहित्य तेम ज भाषाना अभ्यास माटे उपयोगी थशे एवी आशा छे.

आ एक ज प्रकाशन माटे साठेक प्राचीन हस्तप्रतो एकत्र करवी पडी हती. वडोदरा युनिवर्सिटीना प्राच्य विद्यामन्दिरना नियामक प्रो. गोविन्दलाल भट्टे ए संस्थानी हस्तप्रतोना उपयोग माटे अमने बधी सगवड आपी ए माटे तेमना आभारी छीए. गुजरात विद्यासभाना संग्रहमांनी केटलीक हस्तप्रतोनो उपयोग ए संस्थामांना मारा सेवाकाळ दरमियान हुं करी शक्यो हतो. प्राचीन ग्रन्थभंडारोना समुद्धारक अने संशोधक पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए आ संग्रह छपाई रह्यो त्यां सुधी जुदा जुदा भंडारोमांथी फागुकाव्योनी संख्याबंध हस्तप्रतो मेळवी आपी हती अने तेमना अंतेवासी पू. पं. श्री. रमणिकविजयजीए आ संग्रहना संपादनमां अंगत रस लई अनेक पोथीओ अमने उपयोग माटे आपी हती अने लांबा समय सुधी अमारी पासे रहेवा दीधी हती ते माटे तेमना ऋणी छीए. पू. मुनिश्री कान्तिविजयजीए लींबडीना ज्ञानभंडारमांथी जोईती हस्तप्रतो मेळवी आपी हती. आ उपरांत मारा साहित्यरसिक मित्रो श्री. अगरचंदजी नाहटा, श्री. कनैयालाल भाईशंकर दवे अने पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजके पोतानी पासेनी हस्तप्रतो उदारतापूर्वक धीरीने अमने उपकृत कर्या छे. लगभग चारसो वर्षना गाळामां रचायेला एक ज साहित्यप्रकारना अनेक नमूनाओनो आ संग्रह ए सर्वनी सहाय विना शक्य बन्यो न होत.

वडोदरा युनिवर्सिटी प्रेसना कार्यदक्ष व्यवस्थापक अने तेमना सहकार्यकरोए कामनां अनेकविध दबाणोमां आ ग्रन्थमालानां पुस्तकोनुं मुद्रण चीवटथी नियमितपणे कर्युं छे ए माटे तेमना आभारी छीए.

'अध्यापकनिवास',
वडोदरा.
चैत्री पूर्णिमा,
सं. २०११

भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा
सामान्य संपादक

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

डॉ. सांडेसरानां अन्य पुस्तको

संघविजयकृत सिंहासनबत्रीसी (१९३३)
माधवकृत रूपसुन्दर कथा (१९३४)
वीरसिंहकृत उषाहरण (१९३८)
वाघेलाओनुं गुजरात (१९३९)
मतिसारकृत कर्पूरमंजरी (१९४१)
प्राचीन गुजराती साहित्यमां वृत्तरचना (१९४१)
इतिहासनी केडी—लेखसंग्रह (१९४५)
संघदासगणिकृत वसुदेव-हिंडी—अनुवाद (१९४६)
वस्तुपाल का विद्यामण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९४७)
वस्तुपालनुं विद्यामंडळ अने बीजा लेखो (१९४८)
सत्तरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य (१९४८)
ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण (१९४८)
पंचतंत्र (१९४९)
जगन्नाथपुरी अने ओरिसाना पुरातन अवशेषो (१९५१)
हेमचन्द्राचार्य का शिष्यमण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९५१)
जैन आगमसाहित्यमां गुजरात (१९५२)
उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन १-१८ (१९५२)
भारतीय आर्यभाषा अने हिन्दी (१९५२)
नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित षष्टिशतक प्रकरण, त्रण बालावबोध सहित (१९५३)
Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and Its Contribution to Sanskrit Literature (1953)
महीराजकृत नल-दवदंती रास (१९५४)
शब्द अने अर्थ—ऐतिहासिक शब्दार्थशास्त्र विषे पांच व्याख्यानो (१९५४)
वर्णक-समुच्चय (छपाय छे)
नन्दोपाख्यानम् (छपाय छे)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शेठ देवचंद लाल
पु० ज्ञा० फंड
जोधपुर

अनुक्रम

निवेदन

कृतिपरिचय अने प्रतिपरिचय १-५०

फागुनो साहित्यप्रकार ५१-७२

(१) जिनपद्मसूरिकृत स्थूलिभद्र फागु ३-७

(२) राजशेखरसूरिकृत नेमिनाथ फागु ८-११

(३) कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिकृत प्रथम नेमिनाथ फागु १२-१६

(४) कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिकृत द्वितीय नेमिनाथ फागु १७-२१

(५) प्रसन्नचन्द्रसूरिकृत रावणि पार्श्वनाथ फागु २२-२४

(६) अज्ञात कविकृत जंबुस्वामी फाग २५-३०

(७) मेरुनन्दनकृत जीरापल्ली पार्श्वनाथ फागु ३१-३७

(८) समुधरकृत नेमिनाथ फागु ३८-४२

(९) अज्ञात कविकृत पुरुषोत्तम पांच पांडव फाग ४३-४६

(१०) अज्ञात कविकृत भरतेश्वर चक्रवर्त्ती फाग ४७-५०

(११) समरकृत नेमिनाथ फागु ५१-५२

(१२) पद्मकृत नेमिनाथ फागु ५३-५४

(१३) गुणचंदसूरिकृत वसंत फागु ५५-५६

(१४) धनदेवगणिकृत सुरंगाभिध नेमि फाग ५७-६७

(१५) रत्नमंडनगणिकृत नारीनिरास फाग ६८-७५

(१६) हेमरत्नसूरि फागु ७६-७८

(१७) आगममाणिक्यकृत जिनहंसगुरु नवरंग फाग ७९-८१

(१८) अज्ञात कविकृत राणपुरमंडन चतुर्मुख आदिनाथ फाग ८२-९१

(१९) चतुर्भुजकृत भ्रमरगीता ९२-१०१

(२०) अज्ञात कविकृत मोहिनी फागु १०२-१०७

(२१) अज्ञात कविकृत कामीजनविश्राम तरंग गीत १०८-११०

(२२) अज्ञात कविकृत चुपइ फागु १११-११७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२३) अज्ञात कविकृत फागु ११८-११९
(२४) अज्ञात कविकृत वाहणनु फाग १२०-१२१
(२५) अज्ञात कविकृत नेमिनाथ फाग १२२-१२४
(२६) जयवंतसूरिकृत स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग १२५-१३३
(२७) कमलशेखरकृत धर्ममूर्त्तिगुरु फाग १३४-१३६
(२८) मालदेवकृत स्थूलिभद्र फाग १३७-१४९
(२९) वाचक कनकसोमकृत मंगलकलश फाग १५०-१७१
(३०) कल्याणकृत वासुपूज्य मनोरम फाग १७२-२०४
(३१) विनयविजयकृत नेमिनाथ भ्रमरगीता २०५-२११
(३२) वृद्धिविजयकृत ज्ञानगीता २१२-२१७
(३३) लक्ष्मीवल्लभकृत अध्यात्म फाग २१८-२१९
(३४) उदयविजयकृत पार्श्वनाथ राजगीता २२०-२२८

अनुपूर्ति

(३५) जिनचंदसूरि फागु २३१-२३२
(३६) अज्ञात कविकृत विरह देसाउरी फागु २३३-२४०
(३७) अमररत्नसूरि फागु २४१-२४२
(३८) जयशेखरसूरिकृत द्वितीय नेमिनाग फागु २४२-१ थी २४२-७

शब्दकोश २४३-२९०

'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना प्रकाशन विषे केटलाक अभिप्रायो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

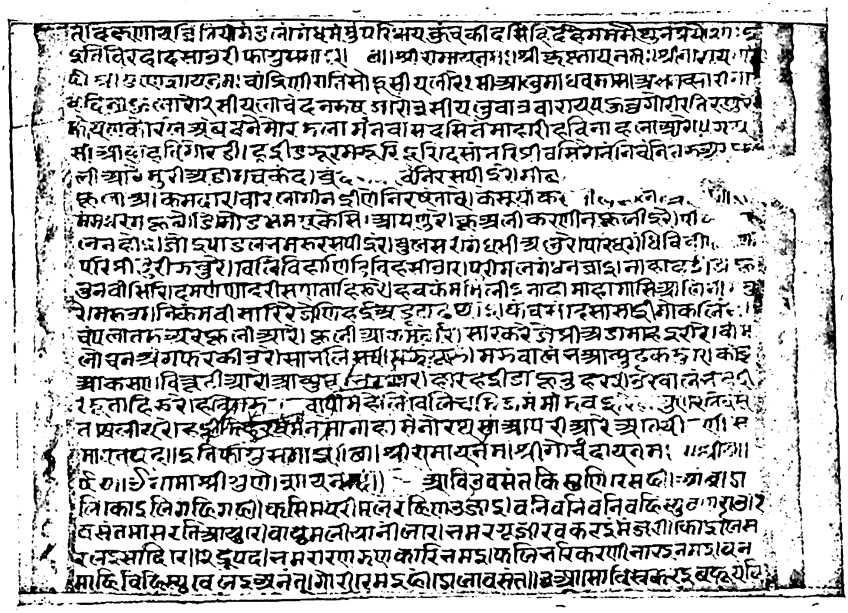

वस्त्र उपर लखायेला ओळियामां अज्ञात कविकृत 'फागु' (काव्यांक २३)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

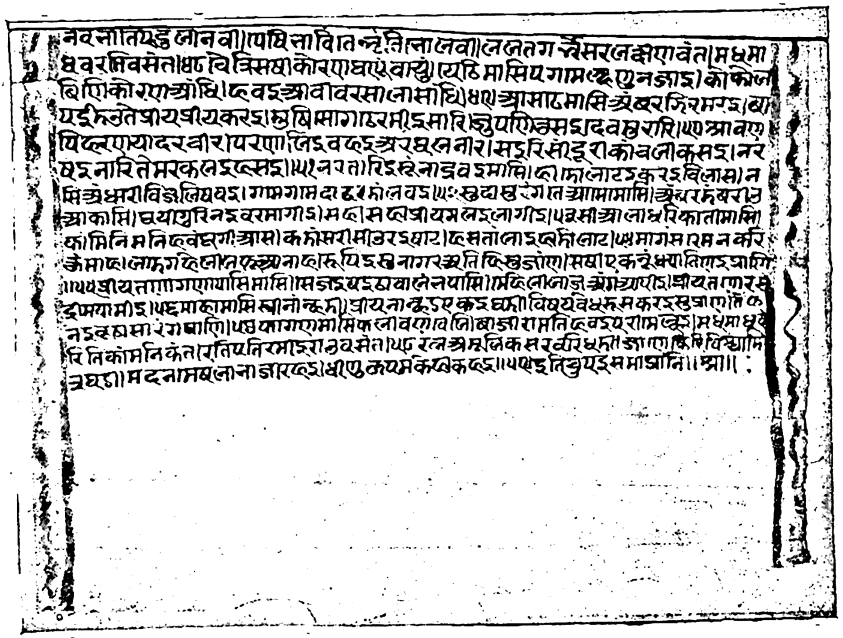

वस्त्र उपर लखायेला ओळियामां अज्ञात कविकृत 'चुपइ फागु' (काव्यांक २२)नो अंतभाग

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कृतिपरिचय अने प्रतिपरिचय

फागुना साहित्यप्रकारनो ऐतिहासिक तेम ज साहित्यिक दृष्टिए अभ्यास करवामां आ 'प्राचीन फागु-संग्रह'मां संघरायेली कृतिओनां वस्तु, विषयनिरूपण, छंदोरचना आदिनो परिचय उपयोगी होई ए साहित्यप्रकार विषे सर्वसामान्य विचार करतां पहेलां आपणे कालानुक्रमे प्रत्येक कृतिनुं टूंकुं अवलोकन करीशुं. साथोसाथ एना कर्ता विषे पण प्राप्त माहिती रजु करीशुं तथा जे साधनो उपरथी काव्यनुं संपादन थयुं हशे एनो पण परिचय आपीशुं.

[१] जिनपद्मसूरिकृत 'स्थूलिभद्र फागु'

जिनपद्मसूरिकृत 'स्थूलिभद्र फागु' गुजराती साहित्यनां उपलब्ध फागु-काव्योमां कालानुक्रमे बीजुं छे. (एनी पहेलां, सं. १३४१ ना अरसामां रचायेल 'जिनचंदसूरि फागु' माटे जुओ अनुपूर्तिमां काव्यांक ३'५) आ तथा एनी पछीनो राजशेखरसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु' बीजां अनेक अपभ्रंश अने प्राचीन गुजराती काव्यो साथे पाटणना भंडारमांथी मळ्या हता, अने सने १९२०मां सद्गत चिमनलाल डाह्याभाई दलाल-संपादित 'प्राचीन गुर्जर काव्यसंग्रह'मां (गायकवाड्झ ओरियेन्टल सिरीझ, नं. १३)मां ते छपायां हतां. श्री. दलालना अकाळ अवसानने कारणे प्रस्तावना, टिप्पण के उपयोगमां लेवायेली प्रतिओना पण उल्लेख विना ए पुस्तक बहार पडयुं हतुं तथा केटलाक मुद्रणदोषो पण एमां रही जवा पाम्या हता. ए पुस्तकनी नकलो घणां वर्षथी मळती नथी. वडोदरा विश्वविद्यालयना सने १९५४ अने १९५५ ना बी. ए. ना अभ्यासक्रममां आ बन्ने काव्यो नियत थयेलां होई विद्यार्थीओनी अनुकूळता खातर संक्षिप्त प्रस्तावना साथे आ बन्नेनुं पुनःसंपादन

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

Journal of the Oriental Institute, Baroda ना पु. २, अंक ३, मार्च १९५३ मां में कर्युं हतुं. ए संपादनमांनो पाठ आ संग्रहमां पुनर्मुद्रित करवामां आव्यो छे.

'स्थूलिभद्र फागु'नां कर्ता जिनपद्मसूरि जैन श्वेतांबर संप्रदाय–अंतर्गत खरतर गच्छना आचार्य हता. खरतर गच्छनी पट्टावलिओ प्रमाणे, जिनपद्मसूरिने सं. १३९० मां अचार्यपद मळ्युं हतुं अने सं. १४०० मां तेमनुं अवसान थयुं हतुं. आथी तेमनो आ 'स्थूलिभद्र फागु' सं. १३९० अने १४०० नी वच्चे क्यारेक रचायो हशे एम मानवुं योग्य छे.

'स्थूलिभद्र फागु' ए २७ कडीनुं एक नानुं काव्य छे. एनुं वस्तु जैन इतिहासमां प्रसिद्ध छे. स्थूलभद्र के स्थूलिभद्र ए एक मोटा आचार्य थई गया. तेओ पूर्वाश्रममां पाटलिपुत्रना नंदराजाना मंत्री शकटालना पुत्र हता. पाटलिपुत्रनी कोशा नामे एक प्रसिद्ध गणिकाना प्रेममां पडीने तेओ एना घरमां सतत बार वर्ष सुधी रह्या हता. शकटालना मरण पछी राजाए स्थूलिभद्रने बोलावी प्रधानपद स्वीकारवा जणाव्युं, पण राजकाजनी खटपटोने कारणे पिताए नाना पुत्र श्रीयकने हस्ते मृत्यु स्वीकारी लीधुं हतुं, ए विचारतां स्थूलिभद्रने संसार उपर वैराग्य उत्पन्न थयो अने एमणे तुरत ज संभूतिविजय गुरु पासे जईने दीक्षा लीधी. गुरुनो आदेश लई पहेलो ज चातुर्मास तेओ कोशाना घरमां गाळवा माटे आव्या. एमने पाछा आवता जोई कोशा खूब आनंदित थई, अने पोताना प्रणयी स्थूलिभद्रने पाछा मेळववा तेणे खूब प्रयत्न कर्यो. परन्तु विरक्त स्थूलिभद्रे तो काम उपर विजय मेळव्यो हतो. कोशाना घरमां नियत समय सुधी रही, तेने प्रतिबोध पमाडी तथा पोतानो अभिग्रह पूर्ण करीने स्थूलिभद्र पाछा गुरु पासे आव्या. दुष्करकारक तरीके तेमनी देवोए पण प्रशंसा करी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छंदोरचनानी दृष्टिए जोईए तो, आ कृति सात विभागमां वहेंचायेली छे तथा दरेक विभागने 'भास' (सं. भाषा) नाम अपायेलुं छे. प्रत्येक 'भास'मां एक दूहो तथा पछी एक के वधारे रोळा आवे छे. अलंकृत काव्यरचनामां पोतानी निपुणता बतावबानो प्रयत्न कविए वर्षा ऋतुना वर्णनमां कर्यो छे तथा कोशाना सौन्दर्यवर्णनमां तथा स्थूलिभद्र माटेना तेना उत्कट प्रणयना आलेखनमां तेणे शृंगार रसनुं निरूपण करवा प्रयास कर्यो छे.

[२] राजशेखरसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु'

'नेमिनाथ फागु'ना कर्ता राजशेखरसूरि हर्षपुरीय गच्छ अथवा मलधार गच्छना आचार्य अने पोताना समयना एक प्रसिद्ध विद्वान हता. एमनो संस्कृत 'प्रबन्धकोश' अथवा 'चतुर्विंशतिप्रबन्ध' गुजरातना मध्यकालीन हिन्दु इतिहासना एक मूल्यवान साधनग्रन्थ तरीके जाणीतो छे अने 'रासमाला'मां गुजरातनो पहेलो व्यवस्थित इतिहास लखनार अलेकझान्डर फॉर्बसना समयथी मांडी इतिहासकारोए एनो उपयोग करेलो छे. 'प्रबन्धकोश'नी रचना सं. १४०५ मां थयेली छे. श्रीधराचार्यकृत प्रसिद्ध 'न्यायकन्दली' उपरनी पंजिका, हास्यरसिक टुचकाओनो एक संग्रह 'विनोदकथासंग्रह,' 'स्याद्वादकलिका-स्याद्वाददीपिका,' 'रत्नावतारिका पंजिका,' तथा १८० श्लोकोमां विविध दर्शनोनो परिचय आपतो 'षड्दर्शन-समुच्चय' ए एमना बीजा संस्कृत ग्रन्थो छे. ऐतिहासिक प्रबन्धो लखनार, न्यायशास्त्रना कूट ग्रन्थ उपर टिप्पण लखनार तथा विनोदकथाओनो—संस्कृतमां कदाच पहेलो ज—संग्रह करनार राजशेखरसूरिनी विद्वत्ता अनेकदेशीय हती. एमनो 'प्रबन्धकोश' सं. १४०५ मां रचायेलो होई 'नेमिनाथ फागु'नी रचना पण ए अरसामां ज थई हशे एम मानवुं उचित छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'नेमिनाथ फागु' नो विषय अमुक रीते 'स्थूलिभद्र फागु' ना जेवो छे. नेमिनाथ एक महान यादव हता, अने द्वारकामां रहेता अने दश दशारो तरीके ओळखाता यादव राजाओमांथी (जेमां समुद्रविजय सौथी मोटा अने वसुदेव सौथी नाना हता) समुद्रविजय अने तेमनी पत्नी शिवादेवीना पुत्र हता. तेओ जैन धर्ममां बावीसमा तीर्थंकर थया हता. नेमिनाथ लग्न करवा इच्छता नहोता, पण तेमना काकाना दीकरा तथा वयमां एमनाथी मोटा श्रीकृष्णनी पत्नीओए एमने वसंत-खेल करतां करतां मांड लग्न करवा माटे मनाव्या हता. राजा उग्र-सेननी पुत्री राजीमती अथवा राजुल साथे एमनुं लग्न नक्की करवामां आव्युं. ज्यारे नेमिनाथनी जान द्वारकामांथी पसार थती हती त्यारे जानैयाओने जमाडवा माटे वाडामां बांधी राखेलां पशुओ तेमणे जोयां. आ रीते थनार हिंसानी कल्पना आवतां ज एमने ऊंडी विरक्ति थई अने लग्न कर्या विना तेओ पाछा वळ्या. अहीं कविने वसंतनुं, राजीमतीना शणगारनुं अने नेमिनाथना वरघोडानुं तेम ज निराश थयेल राजीमतीना हृदयभावोनुं वर्णन करवानी सारी तक मळे छे. नेमिनाथे तो कशुं नहि सांभळतां सांवत्सरिक दान दईने संसारनो त्याग कर्यो; गिरनार उपर तेमनो दीक्षामहोत्सव थयो अने त्यां ज तेमने केवलज्ञान अर्थात् सर्वज्ञता प्राप्त थई. राजीमतीए पण पोते जेने मनथी पति तरीके स्वीकार्या हता एमने अनुसरीने दीक्षा लीधी. बन्ने सिद्धिमां गयां.

आ 'नेमिनाथ फागु'नी छंदोरचना जिनपद्मसूरिना 'स्थूलिभद्र फागु'ने बराबर मळती छे. एमां २७ कडीओ छे. एना पण सात विभाग छे अने दरेकमां पहेलां एक दूहो अने पछी रोळा आवे छे. 'स्थूलिभद्र फागु' अथवा एना जेवो फागुनो बीजो कोई नमूनो जोईने राजशेखरसूरिए आ काव्य रच्युं होय ए असंभवित नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३-४] कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिकृत बे 'नेमिनाथ फागु'

एक ज लेखके एक ज वस्तु लईने आ बे फागु-काव्यो रच्यां छे. कृष्णर्षीय गच्छना जयसिंहसूरिए सं. १४२२ मां संस्कृत 'कुमारपाल-चरित महाकाव्य' रच्युं छे तथा भासर्वज्ञना 'न्यायसार' उपर 'न्यायतात्पर्यदीपिका' नामे टीका लखी छे, एटले एमना आ बन्ने फागुओ सं. १४२२ आसपास रचाया हशे.

जूना गुजराती साहित्यना प्राचीनतर युगमां फागुकाव्योनी रचनानी मुख्य बे परिपाटीओ हती. एक तो जिनपद्मसूरि अने राजशेखर-सूरिना फागुओमां आपणे हमणां जोयुं तेम, एक टूंका काव्यने 'भास'मां विभक्त करीने प्रत्येक भासमां एक दूहो अने केटलाक रोळा मूकवानी; बीजी परिपाटी ते 'वसंतविलास' जेवा सुप्रसिद्ध फागु-काव्यमां तेम ज ए प्रकारनी बीजी अनेक कृतिओमां छे तेम, आंतरप्रास के आंतरयमकवाळा दूहामां आखुं ये काव्य रचवानी. जयसिंहसूरिए आ बन्ने परिपाटी अनुसार एक ज वस्तुने बहलावीने पोतानी काव्य-निपुणता दर्शावी छे, अने एक विद्वानने शोभे एवुं भाषाप्रभुत्व अने प्रौढि बन्ने काव्योमां सर्वत्र वरताय छे. वळी 'भास'मां विभक्त थयेलो फागु अहीं पहेलो मूक्यो छे अने आंतरप्रासवाळा दूहामां रचायेलो फागु बीजो मूक्यो छे ए केवळ अनुमानथी छे; आ संग्रहना प्रथम बे फागुओनो छंदोबंध पहेला प्रकारनो छे एटलुं ज कदाच ए अनु-मानना आधारमां कही शकाय. परन्तु कर्ताए कदाच एथी ऊलटा क्रमे आ बे कृतिओ रची होय एम पण बने. पहेला फागुनी कडी २९ अने बीजा फागुनी कडी ४९ नुं 'वसंतविलास'ना विरहिणीवर्णनमांनी

उर वरि हारु ते भारु मू, सयरि सिंगारु अंगारु;
चींतु हरइ नवि चंदनु, चंद्रु नहि मनोहारु.

(कडी ४०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ए पंक्तिओ साथे नोंधपात्र साम्य छे. फागुकाव्योमां वसंतवर्णन अने विरहवर्णनमां आ प्रकारनी पदावली परापूर्वथी चाली आवी हशे एम अनुमान करवुं वधारे पडतुं नथी.

वडोदरा जैन ज्ञानमंदिरनी हस्तलिखित पोथी नं. ४६७७ मांथी आ बन्ने तथा बीजा केटलाक फागुओ मळेला छे. ए पोथीनां कुल आठ पत्र ज (२४८-५५) सचवायेलां छे, अने ते उपरथी कोई दळदार संग्रहपोथीनो आ एक नानो शो अंश छे एम जणाय छे. आ पत्रोने पाछळथी कोईए नवा अंक आप्या छे अने ते ३१ थी ३८ छे. एमां अज्ञात कविकृत 'जंबुस्वामी फाग' (काव्यांक ६) नी छेल्ली दस कडीओ, 'गणपति फागु' नामे एक अश्लील फाग, 'मोहिनी फागु,' प्रसन्नचंद्र-सूरिकृत 'रावणि पार्श्वनाथ फागु', जयसिंहसूरिना बे 'नेमिनाथ फागु,' 'कान्हड बार मास' तथा छेल्ले देवसूरिना प्रशंसात्मक पवाडानी प्रारंभिक साडातेर कडीओ छे; ए पछीनो भाग अधूरो छे. आ त्रूटित हस्तप्रतमां क्यां य लेखनवर्ष नथी, पण लिपि उपरथी ते विक्रमना सोळमा शतक करतां अर्वाचीन लागती नथी. आ प्रतिमां सर्वत्र 'ब'ने स्थाने 'व' लखेलो छे, जेम के—'बोल' ने बदले 'वोल,' 'बाल' ने बदले 'वाल', 'बाण' ने बदले 'वाण,' इत्यादि. मूल प्रतनी आ लाक्षणिकता जेमनी तेम राखी छे.

[५] प्रसन्नचन्द्रसूरिकृत 'रावणि पार्श्वनाथ फागु'

हमणां ज जेनो निर्देश कर्यो ए संग्रह पोथीमांथी आ काव्य मळेलुं छे. एना कर्ता प्रसन्नचंद्रसूरि, एने अंते निर्देश छे ते प्रमाणे, उपर्युक्त जयसिंहसूरिना शिष्य छे, एटले एमनुं आ काव्य पण सं. १४२२ आसपास—संभवतः एथी कंईक आ तरफना काळमां रचायुं हशे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रावणि ए अल्वर पासे आवेलुं एक गाम छे. त्यांना पार्श्वनाथना मन्दिरनी प्रशस्तिरूपे कविए आ फागु रच्यो छे. एमां प्रारंभमां वनश्रीनुं वर्णन करीने कवि वसंतनी शोभा वर्णवे छे, तथा मन्दिरमां थती पूजानुं छटादार बयान करीने १६ कडीना आ टूंका काव्यनी समाप्ति करे छे.

काव्यनो छंदोबंध दूहा अने रोळा वडे बंधायेल चार 'भास' मां विभक्त थयेल छे.

[६] अज्ञात कविकृत 'जंबुस्वामी फाग'

सं. १४३० जेटला जूना समयमां रचायाना स्पष्ट निर्देशवाळुं आ सुन्दर काव्य पाटणमां मुनिश्री जशविजयजी पासेथी मळेली एक हस्तप्रत उपरथी मुंबईना 'गुजराती' साप्ताहिकना सं. १९८८ ना दीपोत्सवी अंकमां मैं छपाव्युं हतुं. केटलीक रीते महत्त्वनी आ कृति पछी दुर्लभ होवाथी आ विषयना अभ्यासीओनी मागणीथी 'जैन सत्य-प्रकाश,' मे-जुन १९४६ मां पुनर्मुद्रित करवामां आवी हती. ए पाठ अहीं आप्यो छे, पण ते साथे, उपर [४] मां वर्णवेली संग्रह-पोथीमां एनी छेल्ली दस कडीओ मळे छे, एनां पाठान्तर नोंध्यां छे.

आंतरप्रासवाळा ६० दूहामां रचायेला आ काव्यमां कर्तानुं नाम नथी, पण एनी रचना सं. १४३० मां थई होवानो उल्लेख छे. अर्थात् गुजराती साहित्यना प्राचीनतम युगनी आ कृति छे.

स्थूलिभद्र अने नेमिनाथनी जेम जंबुस्वामीनुं कथानक पण फागु-काव्यनी अपेक्षाओने अनुरूप छे. जंबुस्वामी एक प्रभावक आचार्य हता अने जैन इतिहासमां तेओ चरम–छेल्ला केवली तरीके प्रसिद्ध छे. मगध देशना भूषणरूप राजगृह नगरना श्रेष्ठी ऋषभदत्त अने एनी पत्नी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धारिणीना तेओ पुत्र हता. युवावस्थामां आव्या पछी एक वार जंबु-कुमार, वसंतऋतु खिली हती अने दक्षिणानिल वाई रह्यो हतो त्यारे पोताना परिवार सहित राजगृह पासे आवेला वैभारगिरि उपर क्रीडा करवा माटे गया. अहीं फागुओनी परंपरागत पद्धतिए वसंत अने वन-श्रीनुं वर्णन करवानी तक कविने मळे छे. वनमांथी पाछा वळतां, गुणशील चैत्यमां महावीरना गणधर सुधर्मास्वामी साथे जंबुकुमारनो समागम थयो. एमनी अमृत समान वाणी जंबुकुमारे सांभळी. ए घेर आव्या पण एमनुं चित्त संसारथी विरक्त थई गयुं हतुं. आ पहेलां ज, जंबुकुमारनो विवाह राजगृहनी आठ इभ्यकन्याओ साथे करवामां आवेलो हतो. जंबुकुमारने वरना वेशमां जोवा इच्छती माताए एमने आग्रहपूर्वक लग्न करवा माटे मनाव्या, पण लग्न पछी दीक्षा लेवानी एमने संमति आपी. अहीं जंबुकुमारनी पत्नीओना रूपशृंगारनुं अने एमना लग्नमहोत्सवनुं वर्णन कवि दाखल करे छे.

रात्रे जंबुकुमार वासघरमां गया. सौ ऊंघी गयां हतां, पण असं-भ्रान्त जंबुकुमार जागता हता. विवाहोत्सव प्रसंगे माणसो एकत्र थयांनुं जाणीने प्रभव नामे एक चोर त्यां चोरी करवा आव्यो. प्रभव अने एना पांचसो साथीओने जंबुकुमारे प्रतिबोध पमाड्यो. आठ पत्नीओ सहित जंबुकुमारे सुधर्मास्वामी पासे दीक्षा लीधी. प्रभवे पण दीक्षा लीधी अने गुरुए तेने जंबुस्वामीने शिष्य तरीके सोंप्यो. जंबु-स्वामी केवलज्ञानी थया. जगतमां विदित रतिपतिने जेणे जित्यो छे एवा जंबुकुमार आनंद पामो एम कवि अंतमां उच्चारे छे.

'जंबुस्वामी फागु' नुं कवित्व अने भाषाप्रौढि जोतां एना अनामी कर्ताए बीजां पण काव्यो रच्यां हशे ए विशे शंका नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[७] मेरुनन्दनकृत 'जीरापल्ली पार्श्वनाथ फागु'

आ काव्यना कर्ता मेरुनन्दन उपाध्याय खरतर गच्छना जिनोदयसूरिना शिष्य छे. अंतमां उल्लेख छे तेम, आ काव्य तेमणे सं. १४३२मां रचेलुं छे. ए ज वर्षमां तेमणे पोताना गुरु विषेनो 'जिनोदयसूरि विवाहलउ' (आचार्य जिनविजयजी–संपादित 'जैन ऐतिहासिक गुर्जर काव्यसंचय,' पृ. २३३-२३७) रच्यो छे. आ उपरांत 'अजित-शान्ति स्तवन' ए एमनी बीजी कृति पण जाणवामां छे ('जैन गुर्जर कविओ,' भाग १, पृ. १९).

बीकानेरवाळा श्री. अगरचंद नाहटा पासेनी सं. १४९३मां लखायेली संग्रहपोथीमांथी आ काव्य मळ्युं छे[१] अने पांचेक वर्ष पहेलांना मारा बीकानेर-जेसलमेरना प्रवास दरमियान आ काव्यनी में नकल करी लीधी हती. प्रस्तुत संग्रहपोथीनां पत्र २८८-९० उपर आ काव्य लखायेलुं छे. त्यार पछी गुजरात विद्यासभानी सं. १५११मां लखायेली एक संग्रहपोथीमां पत्र ४७१-७३ उपर[२] आ काव्य जोवामां आवतां एनां पाठान्तरो

---

१ आ संग्रहपोथीना प्रारंभपत्रमां अनुक्रम-सूचिना पहेलां नीचे प्रमाणे पुष्पिका छे:

॥ ६० ॥ संवत १४९३ वर्षे वैशाखमासे प्रथम पक्षे ८ दिने सोमे श्रीवृहत् खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिगुरौ विजयमाने श्रीकीर्त्तिरत्नसूरीणां शिष्येण शिवकुंजरमुनिना निजपुण्यार्थं स्वाध्यायपुस्तिका लिखिता चिरं नंदतात्। श्रीयोगिनीपुरे ॥श्री॥

श्री. गांधीना पुस्तकमां (पृ. ७१) आ संग्रहपोथी सं. १५१९ मां लखायानो निर्देश छे, ए बराबर नथी.

२ विद्यासभावाळी पोथीमां आ काव्यने अंते लेखनसंवत नथी, पण आ फागु-संग्रहमां क्रमांक १० तरीके लेवायेल 'भरतेश्वर चक्रवर्ती फाग' ए पोथीमां पत्र ४७० उपर पूरो थाय छे. एने अंते नीचे मुजब पुष्पिका छे–'इति श्रीभरथेश्वर चक्रवर्त्ति फागु समाप्तः। सं. १५११.'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नोंध्यां छे. विद्यासभानी पोथीमां पत्र ४७४ खूटतुं होवाथी आ कृतिनो ४९मी कडी पछीनो काव्यांश एमां नथी; एटले ए पछीनां पाठान्तर नोंधी शकायां नथी.

पं. लालचंद्र गांधीए 'पावागढथी वडोदरामां प्रकट थयेला जीरावला पार्श्वनाथ' ए पोताना पुस्तकना पृ. ६७-७१मां नाहटाजीनी प्रत उपरथी आ फागु छाप्यो छे एमां १३ थी १७ सुधीनी कडीओ नथी. मूळ प्रतमां चार पंक्तिए कडीनो अंक नोंध्यो छे, ज्यारे आ तो दूहो होवाथी बे पंक्तिनी कडी गणावी जोईए. आम जोतां पं. लालचंद्रनी वाचनामां कुल १० कडीओ (आ पुस्तिकामांनी वाचनानी कडी २५ थी ३४ सुधीनी) नथी. अर्थात् मूळ आखुं काव्य अहीं पहेली वार प्रकाशित थाय छे.

जीरापल्ली अथवा जीरावली ए आबुनी पासे आवेलुं एक गाम अने पुराणुं जैन तीर्थ छे. त्यांना पार्श्वनाथना मन्दिरनो आ वर्णनात्मक फाग छे (सर० 'रावणि पार्श्वनाथ फागु'). पार्श्वनाथनी यात्रा निमित्ते पति-पत्नीनो वार्तालाप, वसंतवर्णन आदि दाखल करीने कविए पार्श्वनाथनी स्तुति करवा उपरांत फागुनां लाक्षणिक तत्त्वो काव्यमां दाखल कर्यां छे.

६० कडीनुं आ काव्य छे अने तेनो छंदोबंध आंतरप्रासवाळा दूहानो छे.

[८] समुधरकृत 'नमिनाथ फागु'

पू. पं. श्री. रमणिकविजयजी महाराज पासेनी संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश स्तोत्रादिनी एक प्राचीन संग्रहपोथीनां पत्र ३९८-९९ उपर आ फागु लखायेलो मळे छे. संग्रहपोथीनां ९८ थी ४४० सुधीनां पत्र

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उपलब्ध छे. आ पोथीने अंते सं. १४३७मां नकल थयानो उल्लेख होई आ 'नेमिनाथ फागु'नी नकल तेम ज रचना त्यार पहेलां थयेलां ए स्पष्ट छे. श्री. अगरचंद नाहटानी सं. १४९३वाळी पोथीनां पत्र २९५-९७ मां पण आ फागु मळे छे. श्री. रमणिकविजयजीवाळी पोथीने मुख्य पाठ तरीके स्वीकारी श्री. नाहटावाळी नकलनां पाठान्तरो नोंध्यां छे.

काव्यना कर्ता समुधर विषे कशुं जाणवामां नथी.

२८ कडीनो आ फागु दूहा छंदमां छे. दूहामां आंतरप्रास के आंतरयमक सामान्य रीते नथी. पण दरेक पंक्तिना प्रारंभमां छंदना मापथी विशेष, 'लटकणिया' तरीके 'अरे' शब्द आवे छे, ते जाहेरमां गावाना प्रकार तरीके फागु होवानुं सूचन करे छे. बीजी प्रतमां आ 'अरे' शब्द नथी. केटलाक फागुओमां 'अरे' ने बदले अमुक कडीओना आरंभमां 'अह' अथवा 'अहे' शब्द पण आवे छे. जो के सर्वत्र ए 'लटकणिया' तरीके होय एवुं नथी.

[९] अज्ञात कविकृत 'पुरुषोत्तम पांच पांडव फाग'

श्री. अगरचंद नाहटानी सं. १४९३ना उल्लेखवाळी संग्रहपोथीमां पत्र २९७-२९९मां आ काव्य मळ्युं छे.

पांचे पांडवोने, एमना लग्न पछी, द्रौपदी साथे लईने पांडु राजा हस्तिनापुरमां आवे छे. त्यां एमनो सत्कार थाय छे तथा नगरमां उत्सव थाय छे एनुं वर्णन कवि करे छे. गंगा-यमुनाना अंतरालमां

---

१ जुओ पत्र ४४० उपरनी पुष्पिका—

संवत १४३७ वैशाख सुदि २ द्वितीया दिने सुमुरु श्रीजिनराजसूरिसदुपदेशेन व्य. देदापुत्र्या देवगुर्वाज्ञाचिंतामणिमस्तकभूषितया मांकुसुश्राविकया आत्मपुण्यार्थं श्रीस्वाध्यायपुस्तिका लेखिता। वाच्यमाना आचन्द्रार्कं नन्दतु।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आवेला कुलपर्वत उपर पांडवो अने यादवो क्रीडा माटे जाय छे. त्यां खीलेली वसंतनुं कवि वर्णन करे छे, अने ए रीते 'फागु' नामनी सार्थकता थाय छे. कुंतीपुत्रोनी साथे कृष्ण आम क्रीडा करता हता एटलामां नारद ऋषि त्यां गगनमार्गे आवे छे. बधा वंदन करे छे अने नारद एमने आशीष आपे छे अने ऋषितीर्थने वंदन करवाना माहात्म्यनो उल्लेख करीने कवि फागुनी समाप्ति करे छे.

२४ कडीना आ फागुनो छंदोबंध जिनपद्म अने राजशेखरना प्राचीनतर फागुओ जेवो—एक दूहो अने एक करतां वधु रोळाना बनेला आठ 'भास' नो—छे. ए प्राचीनतर फागुओनी काव्यरीतिनी स्पष्ट असर आनां वर्णनोमां वरताय छे.

[१०] अज्ञात कविकृत 'भरतेश्वर चक्रवर्ती फाग'

सं. १४९३ना उल्लेखवाळी श्री. अगरचंद नाहटानी पोथीनां पत्र २९०-९२मां आ फाग लखायेलो मळ्यो छे अने मारा बीकानेरना प्रवास वखते एनी नकल में करी लीधी हती. त्यार पछी गुजरात विद्यासभानी सं. १५११ नी संग्रहपोथीनां पत्र ४६९-७० उपर आ काव्यनी बीजी नकल मळतां एनां पाठान्तर नोंध्यां छे.

भरत चक्रवर्ती एटले जैनोना प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव अथवा आदिनाथना पुत्र भरत अने तेमना भाई बाहुबलि वच्चेनो विग्रह अने अंते बाहुबलिनो संसारत्याग वर्णवतुं गुजराती साहित्यनुं अति प्राचीन रासकाव्य, शालिभद्रसूरिकृत 'भरत-बाहुबलि रास' (सं. १२४१) भाषासाहित्यना अभ्यासीओमां जाणीतुं छे. भरत चक्रवर्ती यथावसर पांच प्रकारना भोग भोगवतो हतो अने देवगुरुपादनुं स्मरण करतो हतो (कडी १८). एक दिवस आदर्शभवनमां पोतानुं रूप जोतां, अलंकारो विना पोते केवो विरूप लागे ए विचारतां अने एकतानतापूर्वक शुभ भावना भावतां त्यां ज एने केवल ज्ञान थयुं, अने ते सिद्धिमां गयो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आम काव्यनुं वस्तु आटलुं छे अने ते पण मुख्यत्वे अंतमां आवे छे, पण प्रारंभमां भरतनी राज्यधानी अयोध्यानगरीनुं, राजवैभवनुं तथा अंतःपुर साथे भरत वसंतक्रीडा करवा जाय छे एनुं विस्तारथी वर्णन करीने एने फागुनुं रूप आप्युं छे.

छंदोबंध जिनपद्मसूरि अने राजशेखरसूरिना प्राचीनतर फागुओनी जेम दूहा अने रोळा छंदनी बनेली चार 'भास' नो छे.

[११-१२] समरकृत 'नेमिनाथ फागु' अने 'पद्मकृत 'नेमिनाथ फागु'

श्री. अगरचंद नाहटानी सं. १४९३ ना उल्लेखवाळी संग्रहपोथीनां पत्र ३०६-३०७ उपर आ बन्ने फागुओनी नकल छे. अनुक्रमे १० अने १४ कडीनां आ टूंकां काव्योमां छंदोबंध आंतरप्रास के यमक-वाळा नहि, पण सादा दूहानो छे. समरकृत फागुनो घणो भाग राजी-मतीनी विरहोक्तिओनो छे, ज्यारे पद्मकृत फागुमां १० कडी वसंतवर्णनमां रोकायेली छे अने बाकीनी ४ कडीमां नेमिनाथनुं सुप्रसिद्ध कथानक जेनाथी श्रोताओ के वाचको सुपरिचित हता एनो संक्षिप्त निर्देश कवि करी ले छे. ऊर्मितत्त्व अने वर्णननी फूलगूंथणीनां आ बन्ने काव्यो सारां उदाहरण छे.

[१३] गुणचंदसूरिकृत 'वसंत फागु'

पाटणना केसरबाई ज्ञानमन्दिरनी पोथी ११४, नं. ७६ नी बे पत्रनी प्रतिमांथी आ फागु मळ्यो छे. प्रतमां लेखसंवत नथी, पण लिपि उपरथी ते विक्रमना सोळमा सैकानी होय एवुं अनुमान थाय छे. गुण-चंद्रसूरि नामना एक करतां वधु आचार्यो चौदमा अने पंदरमा सैकामां थई गया छे. एमांथी आ काव्यना कर्ता कोण हशे ए कहेवुं मुश्केल छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परन्तु प्रतिनी प्राचीनता तेम ज भाषानुं स्वरूप एने आधारे आ कृतिने विक्रमना पंदरमा शतकमां मूकवामां हरकत नथी.

आ फागुमां कोई धार्मिक कथाप्रसंग नथी, जेने आधारे कविए शृंगारनुं मर्यादित आलेखन कर्युं होय. एक जैन साधुने हाथे लखायेलुं आ नखशिख सांसारिक काव्य छे अने आदिथी अंत सुधी एमां शृंगारनुं सुरेख आलेखन छे. कडी २-३ नुं 'वसंतविलास'नी नीचेनी पंक्तिओ साथे नोंधपात्र साम्य छे—

पाडल कली अति कूंअली तुं अलीअल म धंधोलि;
तउं गुणवेध ति साचउं काचउं महीउं म रोलि.

(कडी ७२)

[१४] धनदेवगणिकृत 'सुरंगाभिध 'नेमि फाग'

धनदेवगणिकृत 'सुरंगाभिध नेमि फाग'नी नोंध स्व. मोहनलाल देसाईए 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग १ (पृ. ४३-४४) मां करी हती. एमां एनी प्रत पाटणना भंडारमां होवानो निर्देश कर्यो हतो. श्री. देसाईए आपेलां केटलांक अवतरणनो उपयोग में वडोदरानी प्राच्य विद्यापरिषदमां रजु करेला 'प्राचीन गुजराती साहित्यमां वृत्तरचना' ए निबंधमां १९३३ मां कर्यो हतो अने त्यारथी आ फागुनी तपासमां हुं हतो. पाटणना कोई भंडारमां एनो पत्तो लाग्यो नहि, पण छेवटे आटले वर्षे ए ज प्रति वडोदराना जैन ज्ञानमन्दिरमांथी (गुजराती विभाग, नं. ४८२) जडी आवतां घणो आनंद थयो. कुल चार पत्रनी ए पोथी छे अने एमां ४था पत्रना बीजा पृष्ठनी पहेली पंक्तिमां आ फाग पूरो थाय छे. अंतनी पुष्पिकामां सं. १५०२मां धनदेवगणिए एनी रचना करी होवानो उल्लेख छे. त्यार पछी 'श्रीजयचन्द्रसूरीणां स्तुतिः' अने 'श्रीनेमिनाथस्तुतयः' ना केटलाक संस्कृत श्लोको छे. लिपि उपरथी प्रति सत्तरमा सैकानी जणाय छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नेमिनाथना लोकप्रिय कथावस्तुने कवितामां ऊतारता ८४ कडीना आ फागुनी छंदोरचना अत्यार पहेलां आपणे जोयेला फागुओ करतां जुदा प्रकारनी अने वधारे संकुल छे. दूहा जेवा कोई एक ज छंदनो अथवा जेमां दूहा अने रोळानी संसृष्टि होय एवी पूर्वोक्त 'भास'नो एमां प्रयोग नथी. आ फागुनी छंदोरचना नीचे प्रमाणे केटलांक एकमोमां वहेंचाई जाय छे —

मंगलाचरणना संस्कृत श्लोक पछी गुजरातीमां शार्दूलविक्रीडितनी एक कडी आवे छे, जेने 'काव्य' नाम आपवामां आव्युं छे. ए पछी रासक, अढैयु अने फागनी केटलीक कडीओ आवे छे. आ फाग छंद ए आंतरयमकवाळो दूहो ज छे, अने दूहाने आ नाम अपायुं ए फागना काव्यप्रकार साथेनी एनी निकटता दर्शावे छे. आ काव्यना छंदोबंधना मुख्य दस एकमोमां उपर प्रमाणेनी व्यवस्था छे. मात्र छट्ठा एकममां प्रारंभिक 'काव्य' (शार्दूल) नथी. छल्ला—अगियारमा एकममां एक शार्दूल अने समापननो संस्कृत श्लोक एटलुं ज छे. धनदेवगणिना आ काव्य पहेलांना फागुओमां आ प्रकारनी मिश्र छंदयोजना माणिक्यसुन्दरसूरिकृत 'नेमिफाग' (सं. १४७८)[1], सोमसुन्दरसूरिकृत 'रंगसागर नेमिफाग' (सं. १४९६ आसपास)[2], अने 'देवरत्नसूरि फाग'मां[3] छे. जो के केटलाक गौण भेद ए त्रणेयमां छे खरा.

आ काव्य प्रमाणमां लांबुं होवाथी नेमिनाथना कथानकना प्रारंभथी

---

१ संपादक श्री. मोहनलाल देसाई, श्री. आत्मानंद शताब्दी स्मारकग्रन्थ,' पृ. ४७-६५.

२ 'शमामृतम्'नी साथे संपादक विजयधर्मसूरि.

३ आचार्य जिनविजयजी संपादित 'जैन ऐतिहासिक गुर्जर काव्यसंचय,' पृ. १५०-५८.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मांडीने कविए उचित विस्तार कर्यो छे. एनी कडी ४५ अने ७२नुं 'वसंतविलास' नी अनुक्रमे ३१ अने ३८मी कडी साथे नोंधपात्र शाब्दिक साम्य छे.

[१५] रत्नमंडनगणिकृत 'नारीनिरास फाग'

'वसंतविलास' नी पद्धतिए आंतरयमकवाळा दूहानी वच्चे वच्चे संमतिना संस्कृत श्लोको मूकीने रचायेल आ 'नारीनिरास फाग' एना वस्तु तेम ज विषयनिरूपणनी दृष्टिए पण विशिष्ट छे. आ काव्यनुं प्रथम प्रकाशन श्री. अंबालाल प्रेमचंद शाहे तेमनी पासेनी एक हस्त-प्रत उपरथी 'जैन सत्यप्रकाश'ना वर्ष १२, अंक ५-६, फेब्रुआरी-मार्च १९४७मां कर्युं हतुं. त्यार पछी एनी बीजी बे हस्तप्रतो मने मळी—एक वडोदराना जैन ज्ञानमन्दिरना गुजराती विभागनी नं. १७५२ अने बीजी वडोदरा पासेना छाणी गामना जैन ज्ञानमन्दिरनी नं. ७४४. वडोदरानी पोथी बे पत्रनी छे. एमां लेखनसंवत नथी, पण लिपि उपरथी ते विक्रमना सोळमा सैकानी होवी जोईए. छाणीनी प्रत प्रमाणमां घणी अर्वाचीन—सं. १८४९मां लखायेली छे.[1] वडोदरा अने छाणीनी प्रतो वच्चे तेओ बन्ने मूळ एक ज प्रतीकनी नकलो होय एटलुं बधुं साम्य छे, अने एथी छाणीनी प्रतनो संपादनमां उपयोग करवानुं--कोई कोई पाठोनी तुलना करवा सिवाय अन्यत्र—जरूरी लाग्युं नथी. श्री. शाहनी वाचना करतां वडोदरानी प्रत निश्चितपणे जूनी होई एने मुख्य वाचना गणी छे अने श्री. शाहनी वाचनानां पाठान्तर नोंध्यां छे.

---

१ ए प्रतिना संस्कृत श्लोकोने अंते पुष्पिका—'इति श्रीनारीनिरास फाग समाप्तः । लि । सं. १८४९ ना द्वितीय श्रा० शु० रवौ श्रेयं भवः ।' गुजराती कडीओने अंते पुष्पिका—'इति श्रीनारीनिरासफागटिप्पनं समाप्तं । लि. पं. रंग-विजय पं. श्रीकृष्णसत्केन ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्री. शाहनी प्रतने अंते आ फागना कर्तानुं नाम रत्नमंडनगणि आप्युं छे. वळी फागनी अनुक्रमे गुजराती अने संस्कृत ५२ अने ५३मी कडीमां पण कर्ताए 'सुरयणमंडन' अने 'रैवतरत्नमण्डनमभूद्' ए शब्दो वडे पोतानुं नाम सूचित कर्युं छे. श्री. अंबालाल शाहे बताव्युं छे तेम, आ रत्नमंडनगणि तपागच्छना आचार्य सोमसुन्दरसूरिना अथवा तेमना शिष्य सोमदेवसूरिना शिष्य हता अने विक्रमना सोळमा शतकना पूर्वार्धमां विद्यमान हता.[1] आ काव्य उपरांत संस्कृतमां 'सुकृत-सागर,' 'मुग्धमेधालंकार,' जल्प-कल्पलता' आदि ग्रन्थो तेमणे रचेला छे.

'नारीनिरास फाग'नी समग्र काव्यधाटी 'वसंतविलास'नी छे. केटलेय स्थळे एमां 'वसंतविलास'नी पंक्तिओना पडघा संभळाय छे. 'वसंतविलास' जेवा प्रचुर शृंगारिक काव्यनी रचना थया पछी ए शृंगारभावनानो निरास करवाना ख्यालथी आ 'नारीनिरास फाग'नी रचना थई होय एवुं स्वाभाविक अनुमान थई शके. राजीमती जेवी नारीनो निरास—त्याग करीने चाली नीकळनार नेमिनाथ विषे छेल्ली बे कडीओ (गुजराती अने संस्कृत)मां कविए भक्तिपूर्वक निर्देश कर्यो छे, पण एकंदरे फागनो विषय अने उद्देश जुदो ज छे ए स्पष्ट छे. संस्कृत श्लोको लोकभाषानी असरवाळा छे अने हस्तप्रतोमां ए पण प्रायः अपभ्रष्ट स्वरूपमां मळे छे.

[१६] 'हेमरत्नसूरि फागु'

एक जूनी हस्तलिखित प्रति उपरथी करेली आ काव्यनी नकल मने श्री. अगरचंद नाहटाए मोकली हती. आ पहेलां आपणे जोया ए फागुओ करतां आनुं वस्तु जुदा प्रकारनुं छे अने ते ए रीते के एक

१. 'जैन सत्यप्रकाश,' वर्ष १२, पृ. १६८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समकालीन ऐतिहासिक व्यक्ति विषेनुं ए काव्य छे. हेमरत्नसूरि ए आगम गच्छना आचार्य हता. एमणे प्रतिष्ठित करावेली धातुप्रतिमाओना लेखो विक्रमनी पंदरमी सदीनी छेल्ली पचीसीना तथा सोळमी सदीना प्रारंभना मळ्या छे.[१] आचार्यनी प्रशंसा—खास करीने एमना मोहविजयनी प्रशंसा कर्ताए एमां गाई छे. विनयचूला साध्वीना आग्रहथी आ काव्य रचायुं होवानो निर्देश एनी पुष्पिकामां छे. २१मी कडीमां पण विनयचूलानो उल्लेख छे, पण ए कडी त्रूटित होवाथी एमां विनयचूलाने आनी कवयित्री कही छे के मात्र पुष्पिकामां छे ए प्रकारनो ज ए उल्लेख हशे ए निश्चितपणे कही शकाय एम नथी. गमे तेम, पण हेमरत्नसूरिना शिष्यमंडळमांथी कोईए आ फागु रच्यो हशे एटलुं तो निश्चित छे. आ रीते एनी रचना सोळमी शताब्दीना प्रारंभमां मानवी योग्य छे.

२२ कडीनो आ फागु दूहामां—मोटे भागे आंतरयमकवाळा दूहामां रचायो छे. आटली टूंकी मर्यादामां पण फागुने अनुरूप झडझमकवाळां वर्णनो आपीने तथा १७मी कडीमां फागुनो उल्लेख करीने कविए आ काव्यप्रकारमां कृतिने घटाववा प्रयत्न कर्यो छे. जुदा जुदा आचार्यो विषेना वीजा पण फागुओ मळे छे ए विषे चर्चा हवे पछी फागुना साहित्यप्रकार विषेना लेखमां आपणे करीशुं.

[१७] आगममाणिक्यकृत 'जिनहंसगुरु नवरंग फाग'

आ काव्यनी एक पत्रनी हस्तलिखित प्रत वढोदराना जैन ज्ञान-मन्दिरमांना प्रवर्तक श्री. कान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहमांथी (गुजराती विभाग, नं. २६४१) मळेली छे. लिपि उपरथी ते विक्रमना

१. आचार्य विजयधर्मसूरि-संपादित 'प्राचीन लेखसंग्रह', भाग १, नं. १२५, २०८, २३२, ३३०; तथा आचार्य बुद्धिसागरसूरि-संपादित 'जैन धातुप्रतिमा लेखसंग्रह', भाग १, सूचि पृ. ३४.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोळमा शतकना अंतमां के सत्तरमाना आरंभमां लखायेली जणाय छे. 'हेमरत्नसूरि फागु' नी जेम आ पण एक समकालीन ऐतिहासिक व्यक्ति विषेनुं काव्य छे. जिनहंसगुरु तपागच्छना हता (कडी ६) अने लक्ष्मीसागरसूरिना शिष्य हता (कडी २५). लक्ष्मीसागर ए तपागच्छना सुप्रसिद्ध आचार्य, पंदरमा शतकना अंतमां थयेला सोमसुन्दरसूरिना एक शिष्य हता,[1] अने जिनहंसगणिए सोमसुन्दरना बीजा एक शिष्य रत्नशेखरसूरिने सं. १५१६मां 'आचारप्रदीप' ग्रन्थना लेखनशोधनादिमां सहाय करी हती.[2] आथी जिनहंसगणिनो समय विक्रमना सोळमा शतकना पूर्वार्धमां निश्चित थाय छे. एमना शिष्य आगममाणिक्ये आ फाग रच्यो छे.

आचार्यना मन्मथविजयनुं वर्णन कविए आमां कर्युं छे अने ए निमित्ते फागुमां आवतां वसंतवर्णन, विरहिणीवर्णन आदि आलेख्यां छे. प्रारंभमां मंगलाचरणना बे दूहा आप्या पछी रासक, आंदोला अने फागनी (दूहानी) केटलीक कडीओ आवे छे. आ काव्यना छंदोबंधना त्रणे विभागोनी योजना ए प्रमाणेनी छे. आ काव्यनी १९ मी कडीनुं 'वसंतविलास'नी नीचेनी पंक्तिओ साथे नोंधपात्र साम्य छे —

सकलकला तुं तुय निशाकर इवा कर सयरि संतापु,
अबल म मारि कलंकिय शंकिय रे हिव पाप.

(कडी ४२)

[१८] अज्ञात कविकृत 'राणपुरमंडन चतुर्मुख आदिनाथ फाग'

आ काव्यनी त्रण पत्रनी, सं. १५५७ मां लखायेली हस्तलिखित प्रति वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्री. कान्तिविजयजी महा-

१ मोहनलाल देसाई, 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,' पृ. ४६६

२ ए ज.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजना संग्रहना गुजराती विभागमांथी (नं. १२१४) मळी छे. प्रत संपूर्ण छे, पण पहेला अने छेल्ला पानानी किनारो फाटी जवाथी थोडाक शब्दो तूटे छे.

मारवाडमां सादडी पासे राणकपुरमां आवेलुं जैन मन्दिर—जेमां आदिनाथनी चतुर्मुख मूर्ति छे—मात्र पश्चिम भारतनी ज नहि, पण समस्त देशनी स्थापत्यकृतिओमां विशिष्ट स्थान धरावे छे. राणकपुरना धरणाशाह नामे एक श्रेष्ठीए ते बंधाव्युं हतुं तेथी ए 'धरणविहार' तरीके प्रसिद्ध छे. सं. १४९६मां सोमसुन्दरसूरिने हस्ते एमां प्रतिष्ठा थई हती. ए मन्दिरनी प्रशस्तिरूप आ फागुकाव्य छे. सं. १५५७मां एनी नकल थई छे, एटले त्यार पहेलां तो ए रचायुं छे, पण सं. १४९६मां मन्दिरमां प्रतिष्ठा थई ए पछी तुरतमां एनी रचना थई होय ए बनवा जोग छे. कर्तानुं नाम मळतुं नथी, पण सोमसुन्दरसूरिना विद्वान शिष्यमंडळमांथी कोईए ए रच्युं होय एवो संभव छे.

प्रारंभमां राणकपुरनुं वर्णन, मन्दिर बंधावनारना कुटुंबनो टूंक वृत्तान्त, मेवाडना राजा कुंभकर्ण (कुंभाराणा)ना अधिकारी धरणाशाहे सोमसुन्दरसूरिना उपदेशथी मन्दिर बंधाव्युं ते वात, पछी मन्दिरनुं अने तेनी शिल्पसमृद्धिनुं विगतभरपूर वर्णन, अने सुन्दर वसंतवर्णन आपीने तथा मन्दिरमां थता उत्सवो वर्णवीने कवि धरणविहार माटे शुभेच्छा दर्शावे छे.

८१ कडीना आ काव्यनो छंदोबंध फाग, रासक अने अंदोलामां मुख्यत्वे बंधायो छे; कोईक स्थाने अंदोला पछी अढैया आवे छे, अने घणी वार फागनी पहेलां शिथिल अक्षरमेळवाळा शार्दूलविक्रीडितनी एक कडी आवे छे ए नोंधपात्र छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१९] चतुर्भुजकृत 'भ्रमरगीता'

आ काव्यनी त्रण पत्रनी सं. १६२२मां लखायेली पोथी वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्री. कान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रह-मांथी (गुजराती विभाग, नं. ४०१) मने मळी हती, अने ते उपरथी लगभग बावीस वर्ष पहेलां, मुंबईना 'गुजराती' साप्ताहिकना सं. १९८९ना दीपोत्सवी अंकमां ए काव्य में प्रथम वार संपादित कर्युं हतुं. मूळ प्रत साथे फरी वार तुलना करीने ए अहीं पुनर्मुद्रित कर्युं छे. आ काव्यनी त्रीजी कडीमां—

फाग फागुणि गाउं क्रिष्ण केरा

ए प्रमाणे उल्लेख छे; वळी पुष्पिकामां आ कृतिने 'श्रीकृष्णगोपीविरह-मेलापक फाग' कहेवामां आवी छे तथा जे आंतरयमकवाळा दूहाथी काव्यनो प्रारंभ थाय छे त्यां पाछळथी कोईए 'फाग' शब्द लख्यो छे, एथी आ एक फागुकाव्य छे ए निश्चित थाय छे. एकांतरे आवती दूहा अने छंदनी[1] कडीओनो एनो पद्यबंध छे.

आ काव्यमां विगतवार रचनासंवत नथी, पण छेल्ली ९८मी कडीमांना—

छिहुतरि कीधु छूटवा भेटवा श्रीभगवान

ए शब्दो उपरथी 'छिहुतरि' ('छोंतेर'मां अर्थात् सं. १५७६मां)

---

१ आ छंद ते खरुं जोतां झूलणानो १७ मात्रानो उत्तरार्ध छे. हिन्दीना 'छंदःप्रभाकर' पिंगळमां (पृ. ५३) एने १७ मात्रानो (१०-७) 'चंद्र' नामे छंद कह्यो छे. ए ज रीते एमां (पृ. ५७) झूलणाना २० मात्राना पूर्वार्धने 'अरुण' छंद कह्यो छे. आ 'भ्रमरगीता'मां तथा त्यार पछीनां केटलांक फागुकाव्योमां आ 'चंद्र' छंदनो प्रयोग बधी वखते एना शास्त्रोक्त शुद्ध स्वरूपमां थयो होय एवुं नथी. केटलीक वार तो ए छंदनी मात्र चाल ज गणी शकाय एवी रचना जोवामां आवे छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एनी रचना थई हशे एम लागे छे. एनी भाषानुं स्वरूप जोतां 'छिहुतरि' शब्दनो अर्थ 'सं. १४७६' करवो योग्य नथी.

९७मी कडीमांना—

कहि चतुर्भुज करजुगल जोडी, बोलिउ बालापण बुद्धि थोडी.

ए उल्लेख उपरथी चतुर्भुजे आ रचना युवावस्थामां करी हशे एम अनुमान थाय छे.

'भ्रमरगीता' ए श्रीमद् 'भागवत'ना दशम स्कन्धमांना कथानकने अनुसरीने रचेलुं उद्धवसंदेशने लगतुं काव्य छे. श्रीकृष्ण अने बलदेव गोकुल छोडीने अक्रूरनी साथे मथुरा जाय छे. ए पछी नंद-यशोदा अने गोपांगनाओने आश्वासन आपवा माटे श्रीकृष्ण उद्धवने गोकुल मोकले छे. गोपीओ पोतानी विरहवेदना वर्णवे छे अने कृष्णने उपालंभ पाठवे छे. छेवटे आ भोळां ग्रामवासीओना मुग्ध प्रेमथी आश्चर्य पामता उद्धव गोकुलमांथी विदाय ले छे.

कवि चतुर्भुज नानो अने अजाण्यो छे, पण एनी आ रचना ऊंची कोटिनी छे. समग्र काव्यमां करुण रसनुं असरकारक निरूपण छे अने रसप्रवाहमां आपणे तणायां जईए एवुं एनुं भाषाप्रभुत्व छे. कृष्णना मथुरागमन वखते गोपीओनी आजीजी, उद्धवनी आगळ कृष्णनी बालक्रीडाओ संभारीने गोवाळोनो शोक, नंद अने यशोदानुं रुदन—ए प्रसंगोनुं आलेखन कविए कोई कुशळ चित्रकारनी जेम करेलुं छे.

जूना गुजराती साहित्यमां भीमनी 'रसिकगीता,' ब्रेहेदेवनी 'भ्रमरगीता', विश्वनाथ जानीनी 'प्रेमपचीशी' अने दयारामनी 'प्रेम-रसगीता'मां उद्धवसंदेशना प्रसंगनी कविता छे. आमांनां त्रण काव्योने 'गीता' नाम अपायुं छे, पण चतुर्भुजनी आ 'भ्रमरगीता'नी जेम ए फागुकाव्यो नथी. परन्तु आ संग्रहमांनां 'ज्ञानगीता,' 'नेमिनाथ

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भ्रमरगीता,' 'पार्श्वनाथ राजगीता' तथा यशोविजय उपाध्यायकृत 'जंबुस्वामी ब्रह्मगीता'[1] ए काव्यो बतावे छे के आ प्रकारमां फागुनी रचना ठीक ठीक प्रचलित हती.

व्रजभाषानी कवितामां भ्रमरगीतनो विषय घणो लोकप्रिय हतो, अने ए विषेनी पुष्कळ रचनाओ जाणवामां छे. जुओ 'पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ' (पृ. ३११-३४८)मां श्री. सरला शुक्लनो लेख 'भ्रमरगीत की परंपरा.'

[२०] अज्ञात कविकृत 'मोहिनी फागु'

आ संग्रहमां काव्यांक ३-४-५ तरीके लेवायेला जयसिंहसूरिकृत वे 'नेमिनाथ फागु' तथा प्रसन्नचन्द्रसूरिकृत 'रावणि पार्श्वनाथ फागु' जे संग्रहपोथीमांथी मळ्या छे तेमांथी ५२ दूहामां रचायेलो आ फागु पण मळ्यो छे. ए पोथी लिपि उपरथी विक्रमना सोळमा सैकामां लखायेली जणाय छे. एटले आ कृति पण ओछामां ओछी एटली जूनी होवी जोईए.

एनुं वस्तु एक प्रचलित ग्राम्य लोकवार्तामांथी लेवायुं छे. मोहिनी नामे वणजारीनो पति परदेश जाय छे. पतिनी गेरहाजरीमां ते चार प्रणयीओने रीझवे छे अने पति पाछो आवे छे त्यारे एने पण युक्तिथी समजावी ले छे. आमां केटलोक भाग अश्लील छे ते मुद्रणमां काढी नाख्यो छे; वसंतखेलनां ग्राम्य गीतो साथे फागुनो साहित्यिक प्रकार ऐतिहासिक दृष्टिए संबंध धरावे छे एनुं सूचन ए करी जाय छे. ए ज पोथीमांनो ४० कडीनो 'गणपति फागु' आखो अश्लीलप्रायः होई आ संग्रहमां लीधो नथी.

---

१. यशोविजय उपाध्यायकृत 'गुर्जर साहित्यसंग्रह,' भाग १, पृ. ५४८-५५३.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२१] अज्ञात कविकृत 'कामीजनविश्राम तरंग गीत'

पुराणवस्तुसंग्राहक पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजकनी सात पत्रनी एक हस्तलिखित पोथीमांथी आ काव्य मळ्युं छे. जैन धाटीनी देवनागरीमां लखायेली आ पोथीमां लेखनसंवत नथी, पण ताडपत्रनी पद्धतिनां सुशोभनो एमां छे ते उपरथी तथा लिपि उपरथी ते विक्रमना सोळमा सैकाथी अर्वाचीन जणाती नथी. आ पोथीमां नीचे प्रमाणे चार काव्योनी नकल मळे छे—

पत्र १-४ शृंगारवणजारो
पत्र ४-५ कामीजनविश्राम तरंग गीत
पत्र ५-७ वैराग्यवणजारो
पत्र ७ वैराग्यकणवीडो

एमांनुं बीजुं काव्य 'कामीजनविश्राम तरंग' अहीं लेवामां आव्युं छे. आ सिवायनां बीजां त्रण काव्यो ए प्रेमानंदना 'विवेकवणजारा' नी जेम वाणिज्य के व्यवसायमूलक रूपको छे.

कोई जूनी हस्तप्रत उपरथी स्व. मोहनलाल दलीचंद देसाईए करेली आ गीतनी नकल श्री. अगरचंद नाहटा तरफथी मळी हती, एनां पाठान्तरो अहीं नोंधवामां आव्यां छे. ए प्रतमां आ गीतने 'नवरंग' नाम आपवामां आवेलुं छे.

आ संग्रहमां लेवायेलुं प्रस्तुत गीत ए फागुकाव्य छे एवो स्पष्ट उल्लेख एमां क्यांय नथी, पण कृतिनो प्रारंभ तथा वर्णननी आखीये धमक ए फागु होवानुं सूचन करे छे. वळी आ गीतनी कडी ५-९ नुं 'वसंतविलास'नी कडी ७२, ७४, ७७, ७८, ८३ आदि साथे नोंधपात्र साम्य छे. आ गीतमां तथा जे पोथीमांथी ए मळ्युं छे एमांनी बीजी एके कृतिमां कर्तानो उल्लेख नथी, पण वर्णनमां क्यांय जैन

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

असर नथी तथा छेल्ली कडीमां वृंदावननी गोपीओनो उल्लेख छे, तेथी ए जैनेतर कविनी रचना जणाय छे. जो के एनी साथेनां त्रण रूपक-काव्यो मंगलाचरण तथा विषयनिरूपण उपरथी स्पष्ट रीते कोई जैन कविनी रचनाओ छे.

[२२] अज्ञात कविकृत 'चुपई फागु'

आ विरल काव्यनी हस्तलिखित प्रति पाटणना मारा संशोधक मित्र श्री. कनैयालाल भाईशंकर दवे पासेथी मळेली छे. एमनी पासे आवेला, खेळ चढावेला सुंवाळा कापड उपर लखेला एक ओळियामां नीचे प्रमाणे त्रण फागुकाव्यो छे—

(१) विरह देसाउरी फागु—हस्तप्रतमां आ सौथी पहेलुं लखायेलुं छे. परन्तु ओळियानो शरुआतनो भाग फाटी गयो होवाथी एनी छेवटनी ज थोडी कडीओ मळे छे. एमां पण केटलीक कडीओ प्रत फाटी गयेली होवाथी वंचाती नथी. ए सिवाय पण प्रतिने अनेक स्थळे घसारो लाग्यो होई अक्षरो वंचाता नथी.[1]

(२) आ संग्रहमां अनुक्रमांक २३ तरीके छापेला 'फागु' नी नकल आ हस्तप्रतमां त्यार पछी मळे छे.

(३) प्रतमां छेल्ली कृति आ 'चुपइ' छे, परन्तु एनुं अंतरंग तपासतां ए 'फागु' जणाय छे. कडी ३७मां वसंतखेलनो स्पष्ट उल्लेख छे. ६० कडीना काव्यनो मोटो भाग वसंतनी वनश्री अने वसंतमां थती क्रीडाओथी रोकायेलो छे. ५० थी ५८ सुधीनी कडीओमां जेठथी माघ सुधीना महिनाओनुं संक्षिप्त वर्णन कवि करे छे, पण छेल्ले ५९-६० कडीओमां पाछो वसंतवर्णन उपर आवी

१ आ आखा काव्यना पाठ माटे जुओ काव्यांक ३६.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जाय छे. विषय अने निरूपणनी दृष्टिए जेने 'फागु' ज गणवुं पडे एवुं आ काव्य साद्यन्त चोपाई छंदमां रचायेलुं होई नोंधपात्र छे.

एक ज ओळियामां लखायेलां आ त्रणे काव्यो जैनेतर लेखक के लेखकोनी कृति छे, पण ए लेखक के लेखकोनुं नाम जाणवा मळतुं नथी. ब्राह्मण धाटीनी सुन्दर देवनागरी लिपिमां आ काव्योनी नकल थई छे. लिपि विक्रमना सोळमा सैकाथी अर्वाचीन लागती नथी, एटले आ काव्योनी रचना पण सोळमां सैकामां अथवा त्यार पहेलां थई हशे.

फागुकाव्योने वस्त्र उपर लखवानी एक जूनी परंपरा होय एम जणाय छे ए अहीं नोंधवुं प्रस्तुत थशे. आ हस्तप्रत उपरांत 'वसंतविलास'नुं श्री. केशवलाल ध्रुवने मळेलुं सचित्र ओळियुं कापडनुं हतुं; माणिक्य-सुन्दरसूरिकृत 'नेमिफाग'नी सं. १५१० मां कपडाना ओळिया उपर लखायेली हस्तप्रत मुनिश्री पुण्यविजयजीना संग्रहमां अने ए ज काव्यनी सं. १५६०नी कापड उपरनी सचित्र हस्तप्रत पं. अमृतलाल भोजक पासे छे.

[२३] अज्ञात कविकृत 'फागु'

उपर जेनो परिचय आप्यो छे ते हस्तलिखित ओळियामांनी त्रण कृतिओमांनुं बीजुं काव्य आ छे. १२ कडीनी आ टूंकी रचनामां वसंतना उद्दीपन विभावनी भूमिकामां नायिकाना विप्रलंभ शृंगारनुं वर्णन कर्युं छे अने छेले परदेशथी नायकने आवतो वर्णवीने संभोगशृंगारथी समाप्ति करी छे.

आ काव्यनी आ सिवाय बीजी कोई हस्तप्रत जाणवामां नथी अने जे प्रतनो उपयोग कर्यो छे ते केटलेक स्थळे कपायेली होवाथी केटलीक कडीओ त्रूटक स्थितिमां छे. वळी एकंदरे काव्यनो पाठ भ्रष्ट छे जे सूचवे छे के एनी रचना पछी ठीक ठीक समय बाद, अनेक प्रत्यंतरो

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

थया पछी आ नकल थई हशे. पाठ अनेक स्थळे अशुद्ध होवा छतां जैनेतर फागुओनी विरलताने अनुलक्षीने एनुं प्रकाशन अहीं कर्युं छे ए अभ्यासीओने ध्यानमां राखवा विनंती छे. एनी बीजी हस्तप्रत कोई स्थळे होवा विशे अमारुं ध्यान दोरवामां आवशे तो तेनो साभार उपयोग करीशुं.

[२४] अज्ञात कविकृत ' वाहणनु फाग '

आ कृतिनी एक पानानी हस्तलिखित प्रति शेठ आणंदजी कल्याणजीनी पेढी हस्तकना लींबडी खातेना जैन ग्रन्थभंडारमांथी पू. मुनिश्री कान्तिविजयजीना सौजन्यथी मळी हती. ए पानाना पहेला पृष्ठ उपर १४ कडीनुं ' गुडी पार्श्वनाथ स्तवन ' छे, ज्यारे बीजा पृष्ठ उपर आ ' वाहणनु फाग ' छे. प्रति लिपि उपरथी विक्रमना सत्तरमा सैकामां लखायेली जणाय छे. एनी नकल सूरतमां थयेली छे.

आ फागनी छेल्ली–११ मी कडीमां उल्लेख छे ते प्रमाणे, एनी रचना सं. १५८७ मां थयेली छे. आ काव्य एक वाणिज्यमूलक रूपक छे; एमां क्यांय वसंतवर्णन के शृंगारनुं निरूपण नथी. एमां मानव कायाने प्रवहण–वहाण कही छे. जैन धर्मानुसार आचरणथी एना मुक्ति प्रत्येना गमननो मार्ग कविए वताव्यो छे. मनरूपी वायु, तप कूवो (कूवाथंभ), दया दस्तूर, शील सढ, भाव भंडारी छे अने क्रोध मान मायारूपी जळ वहे छे. मार्गमां आवतां अनेक विघ्नो पार करवानो उपदेश कवि आपे छे. छेल्ली कडीमां आ कृतिने कर्ताए ' फाग ' नाम आप्युं छे.

काव्यनो छंद आंतरयमकवाळो नहि, पण सादो दूहो छे. जो के एने पण मूळ प्रतमां ' फाग ढाल ' एवुं नाम आपवामां आव्युं छे. एकाद अपवाद सिवाय बधी ज कडीओना आरंभमां बीजा अनेक फागुओमां आवे छे तेम, लटकणियारूप ' अहे ' मूकवामां आव्यो छे ते

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छंदोरचनानी दृष्टिए फागुनुं एक विशिष्ट लक्षण छे. फागुनो प्रकार साहित्यमां रूढ थई गया पछी विषय, वस्तु के निरूपणनी दृष्टिए जेने ए प्रकार लेखे भाग्ये गणावी शकाय, छतां एनी परंपरागत छंदोरचनानां लक्षणो जेमां जळवायां होय एवा केटलाक फागुओ रचाया छे एमांनो एक आ पण छे.

आ 'वाहण फाग' साथे सरखावी शकाय एवी एक कृति ते कुशललाभकृत 'श्रीपूज्य वाहनगीत' (विक्रमना सत्तरमा शतकनो पूर्वार्ध)[1] छे. तृष्णारूपी जल, अभिमानरूपी मोजां, अने मिथ्यात्वरूपी जळचरोथी भरेला संसारसमुद्रमां विषयादिक वायुने कारणे जीवो भ्रमण करे छे. एमांथी तारनार वहाण तरीके खरतर गच्छना श्रीपूज्य जिनचंद्रसूरिनी एमां स्तुति करेली छे. आपणा संग्रहमां लेवायेलो 'वाहणनु फाग' आ कृतिनी पूर्वे रचायो छे एटलुं अहीं लक्ष्यमां राखवुं जोईए.

[२५] अज्ञात कविकृत 'नेमिनाथ फाग'

वडोदराना जैन ज्ञानमन्दिरमां प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागमांथी आ काव्यनी एक पानानी हस्तप्रत (नं. ३८७६) मळेली छे. एमां प्रथम पृष्ठ उपर तथा द्वितीय पृष्ठना लगभग अर्ध भाग सुधी आ काव्य छे, ज्यारे ते पछीना अर्ध भागमां नायल गच्छना सोमदेवकृत एक 'नेमिनाथ गीत' छे. प्रतिमां लेखनसंवत नथी, पण लिपि उपरथी ते विक्रमना १६मा शतकना अंतमां के १७माना आरंभमां लखायेली जणाय छे.

तीर्थंकर नेमिनाथनुं सुप्रसिद्ध कथानक जे विषे बीजा पण अनेक फागुओ रचायेला छे ते ज आ काव्यनो विषय छे. काव्य जो के

---

१ मुद्रितः श्री. अगरचंद नाहटा–संपादित 'ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह,' पृ. ११०–११७.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नेमिनाथना वियोगे झूरती राजीमतीना बार मासनुं छे, पण ते हस्तप्रतमां निर्देश कर्या प्रमाणे 'फाग' (दूहा) छंदमां छे अने हस्तलिखित प्रतिनी पुष्पिकामां पण एने 'नेमिनाथ फाग' कहेल छे, तेथी एनो समावेश आ संग्रहमां कर्यो छे.

[२६] जयवंतसूरिकृत 'स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग'

आ काव्यनी कुल त्रण हस्तप्रतो मळेली छे. एक वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागमांनी एक पत्रनी पोथी (नं. २०३२), बीजी खंभातना श्रीनीतिविजय शास्त्रसंग्रहमांनी बे पत्रनी पोथी (नं. १४३८), अने त्रीजी प्राच्य विद्यामन्दिर, वडोदरानी पोथी (नं. ४७४४).[१] आमांनी प्राच्य विद्यामन्दिरनी पोथी प्रमाणमां घणी अर्वाचीन अने अशुद्ध होई संपादनमां एनो उपयोग कर्यो नथी. प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजीवाळी प्रति बाकीनी बेमांथी वधारे सारी तथा जूनी होई एने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारी छे अने खंभातनी प्रतनां पाठान्तर नोंध्यां छे.

आ काव्यना कर्ता जयवंतसूरि जैन गुजराती साहित्यना एक सुप्रसिद्ध कवि छे. एमनुं बीजुं नाम गुणसौभाग्य हतुं. एमणे सं. १६१४मां शीलवती सतीनुं चरित्र आलेखतुं 'शृंगारमंजरी' नामे छटादार सुदीर्घ काव्य रच्युं छे, सं. १६४३ मां 'ऋषिदत्ता रास' रच्यो छे. आ उपरांत 'नेमराजुल बार मास वेल प्रबंध' तथा 'सीमंधर स्तवन' ए बे एमनी नानी कृतिओ छे.[२] प्रस्तुत 'स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग' ए रचनावर्ष विनानी, ४५ कडीनी एमनी संक्षिप्त पण रसपूर्ण

१ आ प्रतना विशेष परिचय माटे जुओ [३१] विनयविजयकृत 'नेमिनाथ भ्रमरगीता' नो परिचय.

२ 'जैन गुर्जर कविओ, भाग १, पृ. १९३-१९८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कृति छे. एमां ४१ मी कडी सुधीमां स्थूलिभद्र के कोशानुं नाम पण आवतुं नथी; त्यां सुधीनी रचना सांसारिक प्रेमकाव्यनी ज छे. मात्र छेवटनी चार कडीओमां कवि स्थूलिभद्र अने कोशानी कथानो अछडतो उल्लेख करे छे; अने रचनाने जैन फागुनी परंपरागत कोटिमां मूकवानो औपचारिक प्रयत्न करे छे.

छंदोबंध खरेखर जे दूहो छे एवी 'फागनी ढाल' के 'चाल' अने 'काव्य' के 'छंद'मां बंधायेलो छे. आ 'छंद'ने वडोदरा ज्ञानमन्दिरनी प्रतमां 'दूहा' नाम आप्युं छे ए बराबर नथी. सोनीरामकृत 'वसंतविलास'मां, यशोविजय उपाध्यायकृत 'जंबुस्वामी ब्रह्मगीता'मां तथा आ संग्रहमां लेवायेल 'नेमिनाथ भ्रमरगीता,' 'ज्ञानगीता' अने 'पार्श्वनाथ राजगीता'नी हस्तप्रतोमां आ प्रकारना फागु–अंतर्गत छंदने खोटी रीते 'दूहा' नाम आप्युं छे. पण अनेक हस्तप्रतोमां एनो उल्लेख मळे छे ए जोतां आवी एक रूढि चालु थई हशे अने विद्वान लेखको पण एने अनुसर्या हशे एम लागे छे. आ छंदना स्वरूप माटे जुओ अगाउ पृ. २१, टिप्पण.

छेल्ले केटलाक दूहा आवे छे.

[२७] कमलशेखरकृत 'धर्ममूर्तिगुरु फाग'

आ काव्यनी एक पत्रनी हस्तलिखित प्रति वडोदराना जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागमांथी (नं. ३७१७) मळी छे. प्रति शुद्ध गणी शकाय एवी नथी अने लिपि उपरथी विक्रमना १८मा सैकामां लखायेली जणाय छे.

आ काव्यना कर्ता कमलशेखर अंचल गच्छना जैन साधु हता एम एमनी अन्य कृतिओ उपरथी जणाय छे. तेमणे सं. १६०९मां खंभातमां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'नवतत्त्व चोपाई' अने सं. १६२६ मां वीरमगाम पासेना मांडलमां 'प्रद्युम्नकुमार चोपाई' रचेली छे.[1] प्रस्तुत फाग एमणे अंचल गच्छना आचार्य धर्ममूर्तिसूरिनी प्रशस्तिरूपे रच्यो छे. एमां रचनावर्ष जो के नथी, पण कर्तानी उपर्युक्त बे गुजराती कृतिओनुं रचनावर्ष जोतां आ काव्य पण विक्रमना १७मा शतकना पूर्वार्धमां रचायुं हशे एमां शंका नथी.

२३ कडीनी आ कृतिनो छंदोबंध अढेउ अने फाग (दूहा)मां बंधायेलो छे. त्रंबावती—खंभातमां सूरिनो जन्म, एमनां मातापितानो वृत्तान्त, अमदावादमां दीक्षामहोत्सव, सूरिपद तथा धर्मप्रवणतानुं कवि वर्णन करे छे. जुदा जुदा आचार्यो विषेना केटलाक प्राचीनतर फागुओमां आवे छे एवुं वसंतनुं, कामविजयनुं के शृंगारना उद्दीपनविभावने अवकाश आपे एवुं वर्णन आ काव्यमां नथी. पण एनो छंदोबंध फागनो छे अने पुष्पिकामां पण एने 'फाग' नाम आपेलुं छे.

[२८] मालदेवकृत 'स्थूलिभद्र फाग'

सं. १६५०मां लखायेली आ काव्यनी त्रण पत्रनी एक हस्त-लिखित प्रति वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागमांथी (नं. ७७१) मळी छे. आ ज कृतिनी एक नकल सद्गत मोहनलाल दलीचंद देसाईए तैयार करेली, ते श्री. अगरचंद नाहटा मारफत मने मळी हती. श्री. देसाईए वडोदरानी उपर्युक्त प्रतनो उपयोग कर्यो छे खरो, पण २४ कडी सुधी तेओ वडोदरानी प्रतने अनुसरे छे; ते पछी तेओ जणावे छे, "अहीं सुधी सं. १६५०नी प्रतनुं (अर्थात् वडोदरा भंडारनी प्रतनुं) मूळ कायम राखी अन्य संवत वगरनी प्रतमांथी पाठान्तर आप्यां छे. हवे

१ 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग ३, पृ. ६५९-६६२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बन्ने प्रतमांथी योग्य प्रमाणे मूळ राखी, पाठान्तर बीजां आपेलां छे." आनो अर्थ एम थयो के १०७ कडीना काव्यना संपादनमां २४ कडी सुधी तेओ एक पद्धतिने अनुसर्या छे अने त्यार पछी बीजी पद्धति स्वीकारी छे, जे भाग्ये उचित गणी शकाय. आथी वडोदरानी प्रत अहीं साद्यन्त मुख्य पाठ तरीके स्वीकारवामां आवी छे; एनी तुलनाए श्री. देसाईनी वाचनामां जे भिन्न पाठ हता ते एमनी पासेनी संवत विनानी बीजी प्रतमांथी छे ए स्पष्ट छे. एवा पाठने टिप्पणमां स्थान आप्युं छे. आ बे प्रतो उपरांत श्री. देसाईए कोई त्रीजी प्रतनो पण उपयोग कर्यो होवो जोईए, केम के आ बे सिवायना पाठ पण 'बीजो पाठ' एवा उल्लेखपूर्वक तेमणे नोंध्या छे, जे अमे आ संपादनमां टिप्पणमां यथावत् दर्शाव्या छे.

मालदेवनां बीजां काव्योमां 'पुरंदरकुमार रास' सं. १६५२मां रचायेलो छे,[1] एटले वडोदरा ज्ञानमन्दिरमांनी आ 'स्थूलिभद्र फाग'नी सं. १६५०मां लखायेली प्रत खरेखर जूनी गणाय. आ काव्य एनी पहेलां रचायुं हशे ए स्पष्ट छे.

मालदेव मुनि वृद्ध तपागच्छना भावदेवसूरिना शिष्य हता. आ गुरुशिष्यनो निवास मुख्यत्वे मारवाडमां बीकानेर राज्यमां हतो, अने ते कारणे मालदेवनी आ कृतिओमां मारवाडीनी पुष्कळ असर छे. आ 'स्थूलिभद्र फाग'मां स्थूलिभद्रनी पूर्वकथा कविए कंईक विस्तारथी आपी छे. सळंग एक ज देशीमां रचायेली आ कृतिने कविए पोते ज पहेली कडीमां 'फाग' नाम आप्युं छे. मालदेवनो अप्रसिद्ध 'पुरंदर-कुमार रास' एक लोकप्रिय कृति हती अने एनी पुष्कळ हस्तप्रतो

१. 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग १, पृ. ३०५.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मळे छे. विक्रमना सत्तरमा शतकमां थयेला खंभातना कवि ऋषभदासे 'कुमारपाल रास'ना प्रारंभमां पोताना पूर्वकालीन कविओमां मालदेवनो पण मानपूर्वक उल्लेख कर्यो छे.

[२९] वाचक कनकसोमकृत 'मंगलकलश फाग'

सं. १६४९मां रचायेली आ काव्यनी बे हस्तप्रतो मळेली छे. एक पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजक पासेनी सात पत्रनी पोथी अने बीजी वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना श्रीहंसविजयजी महाराजना शास्त्र-संग्रहमांनी पांच पत्रनी पोथी (नं. ४६७४). बन्ने प्रतोमां लेखनसंवत नथी, पण लिपि उपरथी ते बन्ने विक्रमना १७मा शतकमां लखायेली होय एम अनुमान थाय छे. पाठनो साचो अर्थ समजवामां तथा पदच्छेद करवामां आ बेय प्रतिओ परस्परने उपकारक थई छे. पं. अमृतलालवाळी प्रतिने सामान्य रीते मुख्य तरीके स्वीकारीने ज्ञान-मन्दिरनी प्रतनां पाठान्तर अहीं नोंध्यां छे.

आ काव्यने अंते वाचक कनकसोमे कह्युं छे ते प्रमाणे, पोते खरतर गच्छना अमरमाणिक्यना शिष्य छे तथा एमणे आ कृति मूलतानमां रचेली छे. एमणे सं. १६३८मां खंभातमां 'आषाढभूति रास' अने सं. १६४४मां मारवाडमां अमरसरमां 'आर्द्रकुमार चोपाई' रची छे.[१]

अत्यार सुधी आपणे जोयेला टूंका फागुओथी जुदुं पडी आवे एवुं आ १६६ कडीनुं तुलनाए लांबुं काव्य छे.

मंगलकलशनुं अद्‌भुतरसिक कथानक जैन साहित्यमां प्रसिद्ध छे अने ते विषे संस्कृतमां[२] तथा जूनी गुजरातीमां संख्याबंध गद्य-पद्य

१ 'जैन गुर्जर कविओ, भाग १, पृ. २४५-४७

२ संस्कृत कृतिओ माटे जुओ प्रो. वेलणकर-संकलित 'जिनरत्नकोश,' पृ. २९९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रचनाओ थयेली छे. प्रस्तुत गुजराती काव्यमां अपायेला कथानकनो संक्षेप आ प्रमाणे छे—उज्जयिनी नगरीमां वइरसिंह राजा हतो अने एनी सोमचंद्रा राणी हती. त्यां सुविनीत अने धर्मार्थी धनदत्त श्रेष्ठी हतो अने तेनी सत्यभामा नामे पत्नी हती. ए युगलने शासनदेवीनी कृपाथी मंगलकलश नामे पुत्र थयो हतो. एनी माताने स्वप्नमां सुवर्णना कलश देखाया हता, तेथी पुत्रनुं नाम मंगलकलश पाडवामां आव्युं हतुं.

बीजी तरफ चंपापुरीमां सुरसुन्दर नामे राजा अने तेनी गुणावली राणी हती. एमने त्रैलोक्यसुन्दरी नामे स्वरूपवान पुत्री हती. ए मोटी थतां राजा एना लग्ननी चिन्ता करवा लाग्यो. पण जीवन करतां पण प्रिय पुत्रीने परदेशमां नहि आपवा माटे तेणे पोताना मंत्रिपुत्र साथे एनुं लग्न करवानुं विचार्युं. राजाना अत्याग्रहने कारणे, पोतानी अनिच्छा छतां, सुबुद्धि मंत्री आ वातनी ना पाडी शक्यो नहि. पण पोतानो पुत्र कुष्ठरोगी होवाथी आ बाबतमां शुं करवुं एनी एने भारे चिन्ता थई. परन्तु साथोसाथ राजकन्या पोताने त्यां आवे तो पुष्कळ लक्ष्मी मळे एवो पण पछी एने लोभ लाग्यो.

पछी मंत्रीए पोतानी कुलदेवतानी आराधना करी एने प्रसन्न करी अने पोताना पुत्रना रोगनुं निवारण करवा विनंती करी. देवताए कह्युं के 'कर्यां कर्म तो भोगव्या विना अंत आवतो नथी.' त्यारे मंत्रीए कोई रूपवान युवानने परदेशथी लाववा विनंती करी, जेनी साथे राजकन्यानो विवाह करी शकाय. देवताए उज्जयिनीमां जई, मंगल-कलशने उपाडी लावी, चंपानगरीना परिसरमां मूकी दीधो. मंत्रीना माणसोए एनो आदरसत्कार कर्यो अने मंत्री पासे लई गया. एक आगंतुकनो आवो सत्कार करवानुं कारण मंगलकलशे पूछ्युं त्यारे मंत्रीए पोताना कुष्ठरोगी पुत्रने बदले मंगलकलशे राजकन्या साथे लग्न

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

करवानुं छे अने पछी चाल्या जवानुं छे, ए योजनानी वात करी, अने ए माटे कुलदेवता एने चंपापुरीमां लावी हती ए समजाव्युं. आवुं कुकर्म करवानी मंगलकलशे ना पाडी त्यारे मंत्रीए एने मारवा माटे खड्ग काढ्युं. केटलाक प्रधान पुरुषो वच्चे पड्या त्यारे मंगलकलशे वणिक्बुद्धि वापरीने शरत करी के 'राजा तरफथी जे दाग्रजो मळे ते मने आपजो तथा मने उज्जयिनी पहोंचाडजो तो आ वात मने स्वीकार्य छे.' मंत्री खुशी थयो.

पछी राजकन्या त्रैलोक्यसुन्दरी अने मंगलकलशनां धामधूमथी लग्न थयां. राजाए घणी पहेरामणी आपी. वहू लईने मंगलकलश मंत्रीने घेर आव्यो अने पोंखणुं करीने वन्नेनो प्रवेश करावववामां आव्यो. मंगल अने सुन्दरी वन्ने शयनगृह तरफ जाय छे, पण मंत्रीनो मुखभाव जोईने मंगल वहार आव्यो. पोताना पतिने चलचित्त जोईने सुन्दरीने आश्चर्य थयुं, अने लग्नना दिवसे थयेला उपवासने कारणे भूख लागी हशे एवुं अनुमान करीने लाडु मंगाव्या. मंगले कह्युं, 'लाडु मने गमे छे, पण उज्जयिनीनुं जळ मळे तो ज ए खरेखर भावे.' आ सांभळीने सुन्दरी चमकी, पण कदाच उज्जयिनीमां पतिनुं मोसाळ हशे एवी कल्पना तेणे करी. सुन्दरीए एने तंवोल आप्यां अने संध्याकाळे अबोल मंगलकलश आवुं वहानुं करीने नीकळ्यो. मंत्रीनी विदाय लीधी, तेणे आपेली वधी वस्तुओ लीधी अने उज्जयिनीना मार्गे जता एक सार्थने जईने मळ्यो.

खोवाई गयेला पुत्रने घणा दिवस पछी भारे समृद्धिपूर्वक क्षेम-कुशळ पाछो आवेलो जोईने मंगलनां मातापिताने घणो हर्ष थयो. मंगले मांडीने वधी वात कही. पछी मंगले सर्व कलाओनो अभ्यास करवानुं नक्की कर्युं, अने ए माटे पाठकने त्यां जवा लाग्यो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बींजी तरफ, चंपानगरीमां आ प्रमाणे बन्युं. सुन्दरी पाछी पोतानी शय्यामां जाय छे तो त्यां कुष्ठरोगी मंत्रिपुत्रने जोईने एने भारे आघात लाग्यो अने आ शुं थयुं ते ए समजी शकी नहि. बहार नीकळीने दासीओ साथे सूई रही अने सवार पडतां पोताने पियर पहोंची. राजाए पूछ्युं त्यारे सुबुद्धि मंत्रीए बनावटी उत्तर आप्यो के 'मारो पुत्र तो लग्न वखते जोयो हतो तेवो हतो, पण आ कन्याना संसर्गथी कुष्ठरोगी थई गयो छे.' राजाए पण व्यवहारनयथी आ मान्युं अने पुत्रीनी दुर्भगता जोई राजा अने राणी बन्ने एना प्रत्ये उदासीन थई गयां.

पोतानो साचो पति उज्जयिनी गयो छे एनुं स्मरण राजकन्याने हतुं, अने तेणे पोताना उपरनुं कलंक दूर करवानुं नक्की कर्युं. पोताना मामा सिंह सामंत द्वारा राजाने समजावी तथा सिंहने साथे लई पुरुष-वेश धारण करी ते उज्जयिनीमां आवी पहोंची. चंपानगरीनी राजकन्या आवी जाणीने वइरसिंह राजा स्वागत माटे आव्यो अने एमने सिप्राने किनारे महेलमां उतारो आप्यो. त्यांथी सुन्दरीए केटलाक घोडा जोया अने पोताना घोडा तरीके ओळख्या. पहेरामणीमां मळेला ए घोडा मंगलकलश चंपानगरीथी लाव्यो हतो. घोडानी पाछळ चर मोकल्या, एटले मंगलकलशना घरनो पत्तो लाग्यो. पछी सिंह सामंतनी मारफत जे कलाचार्यने त्यां मंगलकलश अभ्यास करतो हतो तेमने बधा छात्रो सहित सुन्दरीए पोताने त्यां निमंत्र्या. छात्रोनी आगळ पोताना पतिने जोई सुन्दरीने आनंद थयो, अने बधा छात्रो करतां पण सविशेष वस्त्रादि वडे तेनो सत्कार कर्यो. पछी सुन्दरीए कलाचार्यने कह्युं के 'आ विद्यार्थीओ पासे कंई कथा कहेवडावो.' त्यारे विद्यार्थीओ बोल्या के 'आ मंगल उपर तमारो विशेष राग छे, माटे ए ज कथा कहेशो.' त्यारे मंगलकलश बधाने आश्चर्य थाय एम बोलवा मांड्यो, 'मने वीतेलुं कथानक कहुं छुं ते तमे सांभळो. आ ते ज स्त्री छे, जेने

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हुं भाडेथी परण्यो हतो. तेणे पुरुषवेश शाथी धारण कर्यो हशे?' पछी बनेली बधी वात तेणे कही. 'जा रे! आ तो जूठी वात छे! पकडो एने!' कहीने सुन्दरीना नोकरोए मंगलने पकड्यो. छात्रो वधा नासी गया अने एना पिता धनदत्त श्रेष्ठीने जईने वात करी. धनदत्त सुन्दरीने उतारे आव्यो. पछी सुन्दरी अने मंगल जाणे नवां परण्यां होय तेम श्रेष्ठीने घेर आव्यां. त्यांथी बधां चंपानगरीमां आव्यां. सुरसुन्दर राजाने वस्तुस्थितिनी पूरी जाण थई अने सुन्दरीनुं कलंक दूर थयुं. राजा मंत्रीनो वध करवा तैयार थयो, पण मंगले एने जीवितदान अपाव्युं. राजाए मंगलने पोताना पुत्र तरीके स्थाप्यो अने एने राज्य आप्युं, अने पोते यशोभद्र गुरु पासे दीक्षा लीधी.

पछी एक वार जयसिंहसूरि नामे आचार्य उद्यानमां आव्या. मंगलकलश राजा वाजते गाजते एमने वंदन करवा गयो. मंगलकलशे आचार्यने पूछ्युं के 'हुं सुन्दरीने भाडेथी परण्यो; वळी एना उपर केटलोक समय कलंक चडयुं, ए कयां पूर्वकर्मने कारणे?' आचार्ये उत्तर आप्यो के 'तमे पूर्वजन्ममां पण पतिपत्नी हतां. तें परद्रव्यथी पुण्य कर्युं हतुं तेथी आ जन्ममां तुं आवी रीते परण्यो तथा तारी पत्नीए बीजी स्त्रीने आळ आप्युं हतुं, तेथी तेना उपर आ कलंक चडयुं.'

आ सांभळीने, विरक्त थई मंगलकलश तथा राणी त्रैलोक्य-सुन्दरीए दीक्षा लीधी. अनशन करीने बन्ने पांचमा सुरलोकमां गयां. त्यांथी पाछां मनुष्यभव पामीने तेओ निर्वाण पामशे.

छेवटे, जिनप्रतिमानी पूजा करवानो तथा मानवभवमां पुण्यनां फळ लेवानो उपदेश कवि आपे छे.

आ कथाकाव्यने एना कर्ता वाचक कनकसोमे बीजी कडीना उत्तरार्धमां ज 'फाग' नाम आप्युं छे, एटले ए काव्यप्रकारनुं लेखन

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कविने उद्दिष्ट छे ए स्पष्ट छे. पहेला पद्यखंडना शीर्षक तरीके मूळ प्रतोमां 'ढाल फाग' ए शब्दो छे तथा पुप्पिकाओमां आ काव्यनो 'फाग' तरीके निर्देश छे. पण आ बे उल्लेखो कर्ताना पोताना ज हशे एम निश्चयपूर्वक कही शकाय नहि. कडी १३०-१३९ ना शीर्षक तरीके पं. अमृतलालवाळी हस्तप्रतमां 'ढाल आढीयानी' एवा शब्दो छे, ज्यारे खंभातनी प्रतमां 'ढाल फागनी' एम छे. छंदोबंध मोटे भागे दूहा-चोपाईमां अने प्रसंगोपात्त देशी ढाळोमां बंधायेलो छे. बाकी, साहित्यमां फागनो जे प्रकार रूढ थयो छे एनां लक्षणो—विषयनिरूपण वर्णनादि के छंदोरचनानां—आमां खास जणातां नथी. खरुं जोतां, कर्ताए बीजी कडीना पूर्वार्धमां कह्युं छे तेम आ 'प्रबंध' छे अथवा छेल्ली कडीमां कह्युं छे तेम 'चरित' छे. 'फाग' शब्द एने माटे बहु शिथिल अर्थमां अहीं वपरायो छे. आवा 'फाग' पण पाछळथी लखाता ए सूचक छे. एटला माटे ज आ संग्रहमां एनो समावेश कर्यो छे.

[३०] कल्याणकृत 'वासुपूज्य मनोरम फाग'

आ कृतिनी रचना कटुक गच्छना एक कवि कल्याणे सं. १६९६मां थिरपुर अथवा थरादमां करेली छे. एनी ३२७मी कडीमांना 'सेवक कल्याणकार' ए उल्लेखमां कर्ताए पोतानुं नाम गर्भित रीते मूक्युं छे. सं. १६९७मां अमदावादना हेवतपुर नामे परामां रचायेली एमनी बीजी एक कृति 'अमरगुप्त चरित्र' मां पण तेमणे पोतानुं नाम आ ज रीते मूक्युं छे[1] एटले 'कल्याणकारक' एवा अर्थनो ए केवल औपचारिक उल्लेख होय एम मानवानी जरूर नथी.

आ कृतिनी रचना पछी मात्र एक ज वर्षे, सं. १६९७मां

१ 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग १, पृ. ५७७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लखायेली १६ पत्रनी एनी एक हस्तप्रत खंभातना श्रीनीतिविजयजी शास्त्रसंग्रहमांथी (नं. १४६६) मळी छे. आनी ज २० पत्रनी एक पोथी वडोदराना प्राच्य विद्यामंदिरमां (नं. ५३२२) छे. ते सं. १८५२मां लखायेली होई तुलनाए घणी अर्वाचीन तथा अशुद्ध छे.[1] एनां पाठान्तर नोंधवानुं उपयोगी लाग्युं नथी. एने बदले काव्य रचाया पछी मात्र एक ज वर्षे लखायेली प्रतिने संपादनमां अनुसरवानुं योग्य जणायुं छे. मात्र ए जूनी प्रतमां क्वचित् शब्दो के पंक्ति पडी गयां छे त्यां प्राच्य विद्यामंदिरवाळी प्रतिमांथी एनी पूर्ति करीने यथास्थाने ए वस्तुनो निर्देश कर्यो छे.

३२८ कडीना आ लांबा काव्यमां बारमा तीर्थंकर श्रीवासुपूज्यनुं चरित्र आप्युं छे. काव्यना बे विभाग छे अने तेमने उल्लास नाम अपायुं छे. १५६मी कडीए पहेलो उल्लास पूरो थाय छे अने तेमां तीर्थंकरना पूर्वजन्मोनो वृत्तान्त छे. १५७ मी कडीथी शरू थता बीजा उल्लासमां एमना तीर्थंकरभवनी वात छे. चंपापुरीना वसुपूज्य राजानी जया नामे राणीनी कुक्षिमां दशमा देवलोकथी च्यवीने तेओ आव्या. ए समये माताए १४ स्वप्न जोयां अने स्वप्नपाठकोए तीर्थंकरनो जन्म थवानुं भविष्य भाख्युं. फागण वदि १४ ना दिवसे वासुपूज्यनो जन्म थयो. देवोए एमनो जन्मोत्सव कर्यो. तेओ युवावस्थामां आव्या त्यारे पिताए एमने लग्न करवानो तथा राज्यासन स्वीकारवानो आग्रह कर्यो, पण तेमणे ना पाडी. सांवत्सरिक दान आपीने तेमणे अनेक राजाओ साथे दीक्षा लीधी. एक मास छद्मस्थ रह्या पछी महा सुदि बीजने दिवसे तेमने केवलज्ञान थयु. पोतानो मोक्षकाळ नजीक जाणी तेओ चंपानगरीमां पधार्या हता. त्यां अनशन करीने असाड सुदि

१ आ प्रत एक रूपियो आपीने एना मालिके पोताने माटे खरीदी होवानी एने अंते नोंध छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चौदशना दिवसे तेओ निर्वाण पाम्या. एमना साधुपरिवारनुं वर्णन करीने कवि आ वृत्तान्तनी समाप्ति करे छे.

आनी पूर्वेना 'मंगलकलश फाग' साथे आ कृतिने अनेक रीते सरखावी शकाय एम छे. कथाकाव्य तरीके 'मंगलकलश फाग' करतांये आ लांबुं छे. आ काव्यनो छंदोबंध मुख्यत्वे देशी ढाळोनो छे. प्रारंभिक संस्कृत श्लोकमां कर्ताए 'वक्ष्ये मनोरमं फागं' ए प्रमाणे आने 'फाग' कह्यो छे. वळी कडी १, २, ४, ६, ७ मां अने २२७, २३४ तथा छेल्ले कडी ३२७ मां कर्ताए पोते ज 'फाग' नो उल्लेख कर्यो छे. परन्तु 'मंगलकलश फाग' नी जेम आमां पण प्राचीनतर फागुओनां विशिष्ट लक्षणो नथी. ढाळ १५–१६ मां वसंतक्रीडानुं वर्णन छे, ते काव्यने 'फाग' नाम आपवानी दृष्टिए मूक्युं होय एम बने. वासुपूज्यने फाग रमतां बोध थयो एम कडी ४ मां कह्युं छे ते पण आ नामकरणनी दृष्टिए विचारवा जेवुं छे. कडी २२७ मां 'वनमां फाग खेलवा'नो अने कडी २३४ मां 'सोहामणा फाग गावा'नो निर्देश छे. आ बन्ने निर्देशो वसंतक्रीडा वर्णवती बे ढाळमांना छे. ढाळ ४ अने १८ 'फागनी' अर्थात् आंतरयमकवाळा दूहानी छे. ढाळ ५ अने १७ 'अढिया' अथवा अढैयानी छे, जेनो प्राचीनतर फागुकाव्यमां अनेक वार प्रयोग छे. आम फागनां केटलांक लक्षणो विशृंखल प्रकारे आमां मळे छे, पण बीजी रीते 'रास' नाम आपी शकाय एवुं एनुं स्वरूप छे. परन्तु कर्ताए पोते एने अनेक वार 'फाग' कह्यो छे, ए वस्तु ध्यानमां राखवी जरूरी छे.

[३१] विनयविजयकृत 'नेमिनाथ भ्रमरगीता'

आ काव्यनी एक पत्रनी हस्तप्रत वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागमां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(नं. २४७१) छे. एनी ज बीजी प्रत वडोदरा युनिवर्सिटीना प्राच्य विद्यामन्दिरमां (नं. ४७४४) छे. प्राच्य विद्यामन्दिरनी प्रति सात पत्रनी छे अने एमां नीचे प्रमाणे कृतिओ लखायेली छे—

पत्र १-४ स्थूलिभद्र नवरसो

पत्र ४-६ स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग

पत्र ६-७ नेमिनाथ भ्रमरगीता

बन्नेमांथी एके प्रतमां लेखनसंवत नथी, पण ज्ञानमन्दिरवाळी प्रति देखीती रीते वधारे जूनी अने शुद्धतर होई एने मुख्य राखी प्राच्य विद्या मन्दिरवाळी प्रतनां पाठान्तर नोंध्यां छे.

आ 'नेमिनाथ भ्रमरगीता' एने अंते उल्लेख छे ते प्रमाणे, सं. १७०६मां रचायेली छे. एना कर्ता विनयविजय उपाध्याय एक प्रतिभाशाळी, व्युत्पन्न विद्वान हता अने संस्कृत तथा गुजरातीमां एमणे अनेक ग्रन्थो रचेला छे. तपागच्छना आचार्य हीरविजयसूरिना शिष्य कीर्त्तिविजयना तेओ शिष्य हता. जैन विश्वविद्या (Cosmology)नुं वर्णन करतो एमनो 'लोकप्रकाश' नामे वीस हजार श्लोकप्रमाणनो संस्कृत ग्रन्थ सौथी वधु प्रसिद्ध छे अने ते सं. १७०८मां जूनागढमां रचायो हतो. सं. १६९६मां 'कल्पसूत्र' उपर सुबोधिका नामे प्रमाणभूत संस्कृत टीका तथा सं. १७१०मां राधनपुरमां 'हैमलघु-प्रक्रिया' नामे व्याकरणग्रन्थ तेमणे रच्यां छे. 'मेघदूत'ना अनुरणनरूपे रचायेला तेमना 'इन्दुदूत' नामे गुरुविषयक संस्कृत विज्ञप्तिलेखमां आबु, सिद्धपुर, अमदावाद, वडोदरा, भरूच अने सूरतनां सुन्दर वर्णनो आवे छे. आ सिवाय पण तेमनी केटलीक नानी संस्कृत कृतिओ छे. तेमनी आशरे वीसेक नानीमोटी गुजराती रचनाओ जाणवामां आवी छे,[1]

१. 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग २, ४-२०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अने ए बधी सं. १६८९ अने सं. १७३८नी वच्चे रचाई छे. एमां महापंडित यशोविजय उपाध्याये शरू करेलो 'श्रीपाल रास' एमना अवसानने कारणे अधूरो रह्यो हतो, ए विनयविजये सं. १७३८मां रांदेरमां पूरो कर्यो हतो ए नोंधपात्र छे.

बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथ अने राजीमतीनुं सुप्रसिद्ध कथानक ए आ काव्यनो विषय छे. छंद अने फाग (अथवा दूहा)मां एनो काव्यबंध छे. परंपरागत रीतिए विप्रलंभ शृंगार अने करुणनुं सारुं निरूपण कविए कर्युं छे.

[३२] वृद्धिविजयकृत 'ज्ञानगीता'

५१ कडीनी आ 'ज्ञानगीता'नी बे पत्रनी हस्तप्रत वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्र-संग्रहना गुजराती विभागमांथी (नं. ८०९) मळी छे.

अंतमां उल्लेख छे ते प्रमाणे, आ काव्य सं. १७०६ मां सांई-पुरमां रचायुं छे. एना कर्ता वृद्धिविजय तपागच्छना लाभविजयना शिष्य हता. आ कृति उपरांत तेमणे सं. १७३० मां 'शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन' रच्युं छे तथा 'दशवैकालिक सूत्र'ना दशे अध्यायोनी सज्झायो लखी छे.[1]

आ काव्यनो छंदोबंध, आ प्रकारनी बीजी केटलीक रचनाओमां छे तेम, छंद (जुओ अगाउ पृ. २१, टिप्पण) अने फाग (दूहा)मां बंधायो छे. एनो विषय 'नारीनिरास फाग' साथे सरखावी शकाय एवो छे. मोहनी प्रबळता दर्शावी एमांथी बचाववा माटे कवि शंखेश्वर पार्श्वनाथने प्रार्थना करे छे.

---

१. ए ज, भाग २, पृ. २७०-२७१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३३] लक्ष्मीवल्लभकृत 'अध्यात्म फाग'

'अध्यात्म फाग'नी एक पानानी हस्तप्रत वडोदराना जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागमांथी (नं. २०२०) मळी छे. लिपि उपरथी प्रति विक्रमना १८ मा सैकामां लखायेली जणाय छे.

आ काव्यना कर्ता लक्ष्मीवल्लभ खरतर गच्छना वाचक क्षेमकीर्त्तिना शिष्य सोमहर्षना शिष्य हता. तेमणे सं. १७२५मां 'रतनहास चोपाई,' सं. १७२७ मां विक्रमादित्य पंचदंड रास' तथा सं. १७३८ मां 'रात्रिभोजन चोपाई' रची छे. आ उपरांत रचनावर्ष विनानो एमनो 'अभरकुमार चरित्र रास' मळे छे.[1] आ जोतां प्रस्तुत 'अध्यात्म फाग'नो रचनाकाळ सं. १७२५ आसपास मानवो उचित छे.

तनु वृंदावननी कुंजमां ज्यारे ज्ञानवसंत प्रकटे छे त्यारे मतिगोपी साथे पांचे गोप (इन्द्रियो) मळे छे; सुमति राधाजी साथे आतम हरि होरी खेले छे, एवुं रूपक कविए आप्युं छे, अने एमां वेदान्त तथा योगनी परिभाषानी असर जणाय छे. १३ कडीनी आ रचना एक सुन्दर काव्य छे.

[३४] उदयविजयकृत 'पार्श्वनाथ राजगीता'

आ कृतिनी बे हस्तप्रतो मळी छे—एक वडोदरा जैन ज्ञानमन्दिरमांना मुनिश्री हंसविजयजी महाराजना संग्रहनी बे पत्रनी प्रति (नं. ४७६३) अने बीजी ए ज ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागनी त्रण पत्रनी प्रति (नं. ८९७). बेमांथी एकेयमां लेखनसंवत नथी, पण बन्नेय लिपि उपरथी विक्रमना १८ मा सैकाना अंतनी के १९ मा सैकाना प्रारंभनी होय एम अनुमान

---

१. ए ज, पृ. २४३-२४५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

थाय छे. एमांथी प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजीवाळी प्रत पहेलां मळी हती, पण ते घणी अशुद्ध होई तेने ज आधारे संपादन अशक्य हतुं. पाछळथी मुनि श्रीहंसविजयजीना संग्रहमांनी प्रमाणमां शुद्ध प्रत मळी आवतां आ संग्रहमां प्रस्तुत काव्यनो समावेश करी शकायो. हंसविजयजीवाळी हस्तप्रतने मुख्य गणी बीजी प्रतनां पाठान्तर नोंध्यां छे. बीजी प्रत अशुद्ध होवा छतां प्रसंगोपात्त अर्थनिर्णय तथा पाठशोधनमां उपयोगी छे.

आ काव्यना कर्ता उदयविजय तपागच्छना विजयसिंहसूरिना शिष्य हता. तेमणे सं. १७२८मां 'श्रीपाल रास' रच्यो छे, एटले 'पार्श्वनाथ राजगीता'नी रचना पण ए अरसामां थई हशे. आ उपरांत उदयविजये 'मंगलकलश रास', 'रोहिणी रास' तथा केटलीक प्रकीर्ण गुजराती कृतिओ रची छे.[1]

'पार्श्वनाथ राजगीता'मां कविए शंखेश्वर पार्श्वनाथनी स्तुति करीने मोहनुं प्राबल्य तोडवा विनंती एमने करी छे. 'नेमिनाथ भ्रमरगीता'नी जेम आमां कशो कथाप्रसंग नथी. ए रीते वृद्धिविजयजीनी 'ज्ञानगीता' साथे आ रचनाने ठीक साम्य छे. पोताथी थोडाक समय पहेलां रचायेल ए काव्य उदयविजये जोयुं होय ए असंभवित नथी.

आवी रचनाओना छंदोबंध विषे अगाउ [१९] अने [२६]ना परिचयमां नोंध करी छे.

अनुपूर्ति

[३५] 'जिनचंदसूरि फागु'

संग्रहनी अनुपूर्तिमां रजु करेलुं आ काव्य उपलब्ध फागुकाव्योमां प्राचीनतम छे. जेमने विषे आ काव्य रचायुं छे ते जिनचन्द्रसूरि खरतर

१. ए ज, पृ. २५५-५६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गच्छना आचार्य हता. काव्यना आरंभमां उल्लेख छे ते प्रमाणे, जिन-प्रबोधसूरिनी पाटे तेओ आचार्य थया हता. एमनो जन्म सं. १३२६मां थयो हतो; तेमणे दीक्षा सं. १३३२मां लीधी हती. एमने सूरिपद आपवानो महोत्सव सं. १३४१मां पाटणमां थयो हतो.[1] आ फागु ए महोत्सव प्रसंगे रचायो होय एवुं अनुमान थाय छे, केम के प्रारंभमां अणहिलवाड पाटणना अलंकाररूप तीर्थंकर श्रीशान्तिनाथनी स्तुति करेली छे तथा छेल्ले पण 'गुजरात पाटण सर्वे नगरोमां उत्तम छे' एम कहीने ए नगरनी प्रशंसा करी छे. कर्तानुं नाम नथी, पण खरतर गच्छना साधुओमांथी कोईए एनी रचना करी हशे एम मानवुं जोईए.

आ पदमहोत्सव वैशाख सुद त्रीजना दिवसे थयो हतो, एटले वसंतश्रीनुं वर्णन करी, मदननुं आक्रमण अने छेल्ले शीलनरेन्द्र द्वारा मदननो पराजय कवि वर्णवे छे. वच्चेनो अर्ध करतां पण वधु अंश त्रूटित होवाथी आ कृति साव खंडित दशामां मळी छे, अने ए मळी त्यारे संग्रहनो प्रारंभनो केटलोक भाग छपाई गयो हतो ए कारणे एने अनुपूर्तिमां स्थान आप्युं छे.

जेसलमेरना ग्रन्थभंडारमांनी एक हस्तलिखित संग्रहपोथीमांथी श्री. अगरचंद नाहटाए आ फागुनी नकल करी हती, अने ए नकल तेमणे मने आ संग्रह माटे मोकली हती. ए प्रतिमांनुं एक पत्र खोवाई गयेलुं होवाथी ७थी २० सुधीनी कडीओ मळती नथी अने ६ट्ठी तथा २१मी कडीना टुकडा ज मळे छे. आ संपादन करती वखते जेसलमेरथी

---

१. ए ज, पृ. ६७८. वळी जुओ आचार्य श्री. जिनविजयजी-संपादित 'खरतर गच्छ पट्टावलीसंग्रह,' पृ. ३०, ५४. एक पट्टावलि (पृ. ५४) जावालिपुर—जालोरमां पदमहोत्सव थयानुं कहे छे, पण प्रस्तुत फागुनो निर्देश ए बाबतमां पूरतो स्पष्ट छे. जिनचन्द्रसूरिनुं अवसान सं. १३७६मां थयुं हतुं.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मूळ प्रत मेळववानुं शक्य नहोतुं अने तेथी जे स्वरूपे नकल मळेली ए स्वरूपे काव्य अहीं छाप्युं छे.

[३६] 'विरह देसाउरी फागु'

कापड उपर लखायेला जे ओळियामांथी अंक २२ अने २३ना फागुओ लेवामां आव्या छे तेमां आ फागुनी मात्र छेवटनी थोडीक कडीओ (अने एमांनी पण केटलीक तो त्रूटित स्थितिमां) छे, एटले आ संग्रहमां ते लई शकाय एम नहोतुं. पण एनी स्व. मोहनलाल दलीचंद देसाईए बीजी कोई प्राचीन प्रत उपरथी करेली संपूर्ण नकल, संग्रहनां केटलांक काव्यो मुद्रित थई गया पछी श्री. अगरचंद नाहटा द्वारा मळी जतां एने काव्यने पण अहीं अनुपूर्तिमां स्थान आप्युं छे तथा ओळियामां जे कडीओ—संपूर्ण के त्रूटित—मळे छे एनां पाठान्तरो नोंध्यां छे.

'विरह देसाउरी फागु'नी मूळ हस्तप्रत प्रवर्तक श्री. कान्ति-विजयजीना संग्रहमां क्रमांक ७६१मां होवानुं श्री. मोहनलाल देसाईए नोंध्युं छे, पण प्रवर्तकश्रीना वडोदराना संग्रहमां के तेओश्रीनो ज्यां संबंध हतो ते पाटण के छाणीना भंडारोमां पण ए हस्तप्रत छे ज नहि, एटले श्री. देसाईए प्रवर्तकश्री पासे ए प्रत जोई होय तो पण एमना संग्रहमां ए मुकाई नथी अथवा बीजा ज कोई स्थाननी प्रत विषे आवी नोंध शरतचूकथी थई हशे एम अनुमान करवुं रह्युं.

'विरह देसाउरी फागु' ए एक दुर्लभ जैनेतर फागुकाव्य छे, अने उपर जेनो निर्देश कर्यो छे ए ओळियानी प्राचीनता जोतां आ काव्य पण ओळियामांनी वीजी बे कृतिओ जेटलुं जूनुं छे—अर्थात् विक्रमना सोळमा शतकथी अर्वाचीन नथी. एना अंतमां उल्लेख छे ते प्रमाणे, आ फागु पाटणमां रचायेलो छे, पण कर्ताए पोतानुं नाम आप्युं

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नथी. 'वसंतविलास'नी जेम आमां पहेलां विप्रलंभ अने पछी संभोग शृंगारनुं निरूपण छे अने नायक-नायिका लौकिक स्त्रीपुरुष छे. आम छतां शृंगारना निरूपणमां व्यापक एवी कृष्ण--गोपीनी कल्पना कविना मनमांथी दूर थई नथी, ए कडी २१, २७, ३९ अने ४८ना उल्लेखो उपरथी जणाय छे. काव्यना उत्तरार्धमां नायक देशावरथी पाछो आवे छे माटे 'विरह देसाउरी फागु' ए तेनुं नाम सार्थक छे. आमां पण बीजा केटलाक फागुनी जेम वच्चे संस्कृत श्लोको आवे छे अने गुजरातीमां अशुद्ध अक्षरमेळ वृत्तोनो प्रयोग छे ए नोंधपात्र छे. कडी १, १९ अने २०मां 'फागु'नो निर्देश अभ्यसनीय छे. कडी ११, १२ अने ४९ ए 'वसंतविलास'नी अनुक्रमे कडी १२, २३ अने ३९नुं स्मरण करावे छे.

श्री. मोहनलाल देसाईए जे उपरथी नकल करेली छे ते मूळ प्रतनो पत्तो लाग्यो नथी अने ओळियुं अशुद्ध होवा साथे एमांनो आ फाग साव त्रूटित स्थितिमां छे. आथी एनो पाठ केटलेक स्थळे अस्पष्ट अने अशुद्ध रह्यो छे. एनी विश्वसनीय जूनी प्रतो मळे तो आ पाठोनो परिष्कार थाय. परन्तु आ कृतिनी विरलता जोतां अत्यारे तो मळ्युं छे ए स्थितिमां पण एने अहीं मुद्रित करवानुं उचित धार्युं छे.

श्री. देसाईवाळी नकलमां तेम ज ओळियामां कडीओना क्रमांक व्यवस्थित नहि होवाथी मुद्रित पाठमां नवेसरथी क्रमांक कर्या छे.

[३७] 'अमररत्नसूरि फागु'

संग्रहनो लगभग पोणो भाग छपाई गया पछी आ फागु मळ्यो होई तेने पण अहीं अनुपूर्तिमां स्थान आप्युं छे. एनी एक ज पानानी हस्तप्रत मने पू. मुनिश्री पुण्यविजयजी तरफथी प्राप्त थई हती. प्रतमां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लेखनसंवत नथी, पण लिपि उपरथी ते विक्रमना सोळमा शतकथी अर्वाचीन जणाती नथी.

आगम गच्छना आचार्य अमररत्नसूरिनो महिमा गावा माटे आंतरयमकवाळा दूहामां आ संक्षिप्त काव्य रचायेलुं छे. आ संग्रहमांनो 'हेमरत्नसूरि फागु' (काव्यांक १६) जेमने विषे रचायेलो छे ते हेमरत्नसूरिए अमररत्नसूरिने सूरिमंत्र आप्यो हतो (कडी ६). अमररत्नसूरिने सं. १५१३ मां आचार्यपद मळ्युं होवानुं पण आमांथी जणाय छे (कडी ८). वळी अमररत्नसूरिना धातुप्रतिमालेखो सं. १५२४ थी सं. १५४७ सुधीमा मळया छे,[1] एटले सोळमा सैकाना पूर्वार्धमां तेओ विद्यमान हता ए निश्चित छे. एमना शिष्यमंडळमांथी कोईए ए अरसामां ज आ काव्यनी रचना करी होय एम अनुमान थाय छे.

काव्यना आरंभमां कर्ताए काव्यनायक अमररत्नसूरिनी जन्मभूमि श्रीमालनो तथा एमनां मातापितानो निर्देश कर्यो छे. पछी एमनी दीक्षानी अने सूरिमंत्रप्राप्तिनी वात करी छे. आचार्ये कामदेव उपर विजय मेळव्यो ए वर्णवतां कडी १० थी १५ सुधीमां फागुनी परंपरागत पद्धतिए कविए टूंकुं अने छटादार वसंतवर्णन कर्युं छे तथा छेल्ली त्रण कडीओमां जुदी जुदी रीते सूरिना गुणोनुं स्तवन कर्युं छे.

जुदा जुदा आचार्यो विषेना जे फागुओ आ पहेलां मळ्या छे तेमां आ काव्यनी प्राप्तिथी एक नोंधपात्र उमेरो थाय छे.

---

१. आचार्य बुद्धिसागरसूरिकृत 'जैन धातुप्रतिमा लेखसंग्रह,' भाग १, सूचि पृ. ३४; मुनि कान्तिसागरजीकृत 'जैन धातुप्रतिमा लेख,' क्रमांक २२१; आचार्य विजयधर्मसूरि-संगृहीत 'प्राचीन लेखसंग्रह,' भाग १, क्रमांक ४०३, ४०५, ४१३, ४४६, ४९६.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३८] जयशेखरसूरिकृत द्वितीय 'नेमिनाथ फागु'

सं. १४६२मां 'प्रबोधचिन्तामणि' नामे रूपकग्रन्थि संस्कृतमां रचनार अने त्यार पछी एनी रूपरेखामां जूज फेरफार करीने 'त्रिभुवन-दीपक प्रबन्ध' नामे उत्तम गुजराती काव्य रचनार जयशेखरसूरि प्राचीन गुजराती साहित्यमां प्रथम पंक्तिना जैन कवि तरीके प्रसिद्ध छे. ए काव्यना "बंधनी सरळता, वाणीनो प्रसाद अने कवितानी धमक जोतां सूरीश्वरे बीजां गूजराती काव्यो रच्यां होवां जोईए," एवुं श्री. केशवलाल ध्रुवे पचीसेक वर्ष पहेलां करेलुं अनुमान[1] साचुं पड्युं छे.

जिणि जगि जीतउ शमरसि अमरशिरोमणि कांमु,
विलसइ सिद्ध सयंबर संवरगुणि अभिरामु.

ए पंक्तिओथी शरू थतो, जयशेखरसूरिकृत एक 'नेमिनाथ फागु' टूंक समयमां गायकवाड ओरियेन्टल सिरीझमां प्रसिद्ध थनार 'गुर्जर रासावलि'मां छपायो छे. त्यार पछी हमणां ज, चाणस्माना ज्ञानभंडार-मांथी जयशेखरसूरिकृत विविध गुजराती रचनाओनी २१ पत्रनी एक हस्तलिखित पोथी पू. पं. श्रीरमणिकविजयजीना सौजन्यथी मळी छे. एनां पत्र १७-१८ उपर जयशेखरसूरिनो आ बीजो 'नेमिनाथ फागु' लखायेलो छे. अर्थात् कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिनी जेम (काव्यांक ३-४) जयशेखरसूरिए पण बे 'नेमिनाथ फागु' रच्या छे; पण जयसिंहसूरिना बे फाग विभिन्न प्रकारना छंदोबंधमां छे, ज्यारे जयशेखरसूरिनां बन्ने काव्यो आंतरयमकवाळा दूहामां छे. चाणस्मानी हस्तप्रतमां पुष्पिकाओमां 'जिणि जगि जीतउ०'थी आरंभाता पहेला फागुने 'नेमिनाथ फाग' कह्यो छे, ज्यारे वीजा फागुनो 'श्रीनेमिनाथस्य फागु-बंधेन स्तुतिः' एवो निर्देश कर्यो छे.

---

१ 'पंदरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य', प्रस्तावना, पृ. २३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आ हस्तप्रतमांनी जयशेखरसूरिकृत विविध प्रकीर्ण कृतिओमांथी कोईमां रचनावर्ष नथी. एकेय कृतिनी पुष्पिकामां नकल कर्यानुं वर्ष नथी, पण लिपि अने भाषा जोतां विक्रमना पंदरमा शतकथी अर्वाचीन आ प्रति नथी.

चाणस्मानी हस्तप्रतने आधारे प्रस्तुत द्वितीय 'नेमिनाथ फागु'नो पाठ अहीं आप्यो छे. आ पुस्तकनुं मुद्रण लगभग पूरुं थया पछी— मूल काव्यो अने शब्दकोश छपाई गया पछी अने 'कृतिपरिचय'नो पण मोटो भाग छपाया पछी ए प्रत मळी होवाथी प्रस्तुत 'नेमिनाथ फागु'ना शब्दो 'शब्दकोश'मां लई शकाया नथी तथा अनुपूर्तिमां ए काव्य छाप्युं छे त्यां पण कालानुक्रमे नहि मूकी शकातां कामचलाउ पृष्ठांको आपी ते छेल्लुं मूक्युं छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फागुनो साहित्यप्रकार

पद, आख्यान, रास, वारता आदिनी जेम फागु पण जूना गुजराती साहित्यनो एक मुख्य प्रकार छे. कृतिपरिचयमां आपणे जोयुं तेम तथा एनुं नाम ज सूचवे छे ते प्रमाणे, ए वसंतवर्णननो साहित्य-प्रकार होई मानवभाव अने प्रकृतिनुं समन्वित सुभग आलेखन ए एनी एक विशिष्टता छे. गुजराती भाषाना ठेठ आरंभकाळथी मांडी विक्रमना ओगणीसमा सैका सुधी रचायेला फागुना पुष्कळ नमूना मळे छे, अने वस्तु, निरूपण, छंदोरचना आदिनी दृष्टिए आ साहित्यप्रकारे साधेला विकासनो अभ्यास करवा माटे पूरती सामग्री एमांथी प्राप्त थाय छे.

जे फागुओ आज सुधी सचवायां छे एमांना मोटा भागना जैनकृत छे. जैन साहित्य मोटे भागे जैन ग्रन्थभंडारोमां सचवाई रह्युं, ज्यारे जैनेतर साहित्यने विषे एवुं न बनी शक्युं, ए ज मुख्यत्वे एनुं कारण छे. आथी नरसिंह महेता पूर्वेना गुजराती साहित्य अने भाषाना अध्ययन माटे जैन साहित्य ए ज मुख्य साधन छे. जैनेतर फागुओ अत्यार सुधीमां मात्र नव जाणवामां आव्या छे—अज्ञात कविकृत 'वसंतविलास,'[1]

---

१. श्री. केशवलाल ध्रुवे गुजरातीनुं आ श्रेष्ठ फागुकाव्य पहेली वार खोळी काढ्युं अने 'गुजरात शाळापत्र,' 'हाजी महम्मद स्मारकग्रन्थ' अने 'पंदरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य'मां एनी उत्तरोत्तर त्रण वाचनाओ छपावी. ए पछी श्री. कान्तिलाल व्यासे एनुं पुनःसंपादन कर्युं छे. आ काव्यना कर्ताने सामान्यतः जैनेतर गणवामां आवे छे तथा 'नारायण फागु'ना कर्ताथी एने अभिन्न लेखवामां आवे छे. पण ए विषे श्री. उमाशंकर जोपी एक तर्क करे छे ते ध्यानपात्र छे: "एक सूचक हकीकत ए छे के प्रस्तुत कृतिमां नायक तरीके कृष्णनो समादर नथी. एटले ते जैनेतरनी न होवानो संभवने पण अवकाश छे. नेमिनाथ के स्थूलिभद्र

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'फागु' अथवा 'नारायण फागु,'[१] चतुर्भुजकृत 'भ्रमरगीता,'[२] सोनीरामकृत 'वसंतविलास,'[३] अज्ञात कविकृत 'हरिविलास फाग,'[४] अने आ संग्रहमांनां 'कामीजनविश्राम तरंग गीत' (काव्यांक २१), चुपइ-फागु' (काव्यांक २२), 'फागु' (काव्यांक २३) अने

जेवानुं आलंबन लेतां वधुं डाह्युं डाह्युं थई जाय, एटले जैन होवा छतां कविए काव्यनी शक्यताओने साचवी लेवा तेवा नायकोने पडता मूक्या होय, ए रीते ए संभावना विचारवा जेवी छे" (श्री. रजनीकान्त भट्टकृत 'वसंतविलास'नो अर्वाचीन गुजराती अनुवाद, प्रस्तावना पृ. १६). आ संग्रहमां लेवायेलो गुणचंदसूरिनो 'वसंतफाग' ए रीते एक सांसारिक शृंगारकाव्य होवा छतां जैन कविनी कृति छे. अलबत, 'वसंतविलास'नी बाबतमां श्री. उमाशंकरे कह्युं छे तेम आ केवळ संभावना ज छे.

१. आमांथी अवतरणो माटे जुओ 'श्रीफार्बस गुज. सभा त्रैमासिक,' पु. १, पृ. ४३२-३७.

२. मुद्रित : आ संग्रहमां, काव्यांक १९

३. मुद्रित : श्री. व्यास-संपादित 'वसंतविलास'ना परिशिष्टमां.

४. 'हरिविलास'नी हस्तप्रत मुंबईमां भारतीय विद्याभवनना संग्रहमां छे. एमां विषय श्रीकृष्णनी बाळलीलानो छे. आरंभमां बाळकृष्ण द्वारा पूतना अने अन्य असुरोनो वध, पछी दाणलीला अने रासलीलानुं वर्णन छे. तेमां रासलीलामां आरंभे गोपीओ साथे संयोग, पछी वियोग अने अंते संयोग ने वसंतवर्णन, एम फागुकाव्योनी परिपाटी अनुसार विप्रलंभ अने संभोगशृंगार अहीं पण छे. चालु छंद 'वसंतविलास' आदिमां छे तेवो आंतरयमकवाळा दूहानो छे; त्रण पद्य गुजरातीमां वसन्ततिलकामां छे. वच्चे संमतिना २४ संस्कृत श्लोक आवे छे, जे बधा 'विष्णुपुराण'मांथी छे. काव्यनो आदि-अंत आ प्रमाणे छे.

आदि—

पूजीय चंपकि भारती, आरती करीय कपूरि,
गोविंदना गुण गाइसिउं थाइसिउं पातक दूरि. १

पणमीय गुण तणु नायक, दायक श्रेय अनंत,
गाइसिउं चींति आराहीय, राहीय-रूपणि-कंत. २

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'विरह देसाउरी फागु' (काव्यांक ३६). आमां पण 'वसंतविलास'नी एक (स्व. केशवलाल ध्रुवने मळेला सचित्र ओळिया) सिवाय बधी हस्तप्रतो जैन भंडारनी छे अने 'भ्रमरगीता' तथा सोनीरामकृत 'वसंतविलास' पण जैन भंडारोमांथी मळ्या छे. जे थोडाक नमूना मळ्या छे ते पण एटलुं तो अवश्य बतावी जाय छे के वसंतवर्णननो एक ज मूळ प्रकार जैनेतर साहित्यमां सहेज प्रकारान्तरे विकस्यो छे.

वसंतवर्णन उपरांत वसंतक्रीडा ए फागुनो विषय छे, अने शृंगारना बन्ने प्रकारो—विप्रलंभ अने संभोग—नुं एमां निरूपण होय छे. प्राचीनतर अपभ्रंशमां आपणने रासु वगेरे प्रकारोना नमूना मळे छे तेम फागुना मळता नथी, अने तेथी फागुनुं साहित्यप्रकार लेखे मूळ चोक्कस रूपे समजवानां साधनो नथी. पण संस्कृत साहित्यनां ऋतुवर्णननां काव्यो साथे एनी तुलना करी शकाय.

'फागु' शब्दनी व्युत्पत्ति सं. फल्गु ('वसंत')—प्रा. फग्गु—फागु ए प्रमाणे साधवी जोईए. आचार्य हेमचन्द्रे 'देशीनाममाला (६-८२)मां

अन्त—

युवजनदुःखविमोचन, लोचन चंचल मीन,
अहनिशि मिलइ अशोक कि कोक कि कुचयुग पीन. १३१
अरुण चरण कर कमल कि अमल कि पुलिन नितंब,
दीसइ ए मुखचंद्र कि चंद्र तणु प्रतिबिंब. १३२

वसंततिलकानो एक नमूनो आ प्रमाणे छे—

श्लोक : आविउ वसंत भूयमंडलि स्वर्ग छांडी,
तु पांनि फूलि पहिलुं वनराइ मांडी;
मुर्या अछि चिहुं दशे सहकारवृक्ष,
बइठा तिहां भ्रमर कोकिल कोटि लक्ष.

डॉ. हरिवल्लभ भायाणी जेओ आ काव्यनुं संपादन करनार छे एमनो आ अवतरणो मोकलवा माटे आभार मानुं छुं.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'फग्गू' शब्द 'वसंतोत्सव'ना अर्थमां आप्यो छे. सं. फाल्गुन, प्रा. फग्गुण उपरथी एनी व्युत्पत्ति साधवानो प्रयत्न भाषाशास्त्रनी दृष्टिए योग्य नथी. गुजराती अने मारवाडीमां होळीनां अशिष्ट गीतो माटे 'फाग' शब्द वपराय छे त्यां अर्थ हलको पडी गयो छे. आ वर्तमान प्रयोग तेम ज हेमचन्द्रे आपेल 'फग्गू' शब्द फागुना लौकिक मूलनुं सूचन करी जाय छे अने एमांथी काळान्तरे फागुने शिष्ट साहित्यमां स्थान मळ्युं हशे ए वस्तुनो निर्देश करे छे.

'वसंतविलास' (वि. नो १५ मो सैको) ए आंतरयमकवाळा ८४ दूहामां वच्चे वच्चे श्लोको मूकीने रचेलुं फागुकाव्य छे. एमां क्यांय धार्मिकतानो संस्पर्श नथी, पंक्तिए पंक्तिए जीवननो उल्लास ऊभराय छे, पात्रो व्यक्तिओ नहि पण समष्टि छे—ए कारणे हमणां सूचव्युं तेम एना कर्ताने जैनेतर गणवामां आव्यो छे,[1] अने ए रीते प्राचीनतम उपलब्ध जैनेतर फागुकाव्य एने गणी शकाय. 'वसंतविलास' अने 'नारायण फागु'नो कर्ता एक हशे एवुं अनुमान पण आंतरिक प्रमाणोने आधारे करवामां आव्युं छे.[2] 'नारायण फागु'मां कृष्ण अने गोपीओना वसंतविहारनुं वर्णन छे. एनो पद्यबंध आ संग्रहमांना 'सुरंगाभिध नेमि फाग' आदिनी जेम फाग (दूहो), रासक, आंदोल, अढैयामां बंधायेलो छे. एमां—

पौराणैः कीर्त्तितो देव त्वमेव भुवनाधिपः ।
नतर्षिः श्रीजगद्वंद्यो ज्ञानी ध्यानी गुणी कविः ॥

ए संस्कृत श्लोकमांना 'नतर्षिः' शब्द उपरथी केटलाके नतर्षिने आ फागुनो कर्ता मान्यो छे ए योग्य नथी. आ शब्द श्रीकृष्णनुं विशेषण

१. श्री. केशवराम शास्त्री, 'कविचरित,' भाग १, पृ. ५५-६०

२. ए ज.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छे अने 'जेने ऋषिओ नमन करे छे' एवो तेनो अर्थ छे. बीजा जैनेतर फागुओ आ पछीना छे.

समग्र गुजराती साहित्यमां आ साहित्यप्रकारनो जूनामां जूनो उपलब्ध नमूनो ते आ संग्रहना काव्यांक ३५मां लेवायेल त्रूटित 'जिनचंद-सूरि फागु' छे. ए पछी जिनपद्मसूरिनो 'स्थूलिभद्र फागु' (सं. १३९०-१४००), अने कालानुक्रमे त्यार पछी तुरत ज राजशेखरसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४०५ आसपास) आवे छे. आ काव्योमां, त्यार पछीना बीजा फागुओमां तथा अन्य जूना गुजराती साहित्यमां फागुना इतिहास उपर प्रकाश पाडता संख्यावंध सूचक उल्लेखो मळे छे. मारा ध्यानमां आवेला ए प्रकारना उल्लेखोनुं कालानुक्रमिक तारण अभ्यासीओने उपयोगी थई पडशे एम मानीने अहीं आपुं छुं. आ संग्रहमां नहि लेवायेली अथवा आ पहेलां जेमनो खास उल्लेख थयो नथी एवी कृतिओनो समयनिर्देश पण एमां कर्यो छे—

(१) खरतरगच्छि जिणपदमसूरीकिय फागु रमेवउ,
खेला नाचइं चैत्रमासि रंगिहि गावेवउ.
—जिनपद्मसूरिकृत 'स्थूलिभद्र फागु,' कडी २७

(२) राजलदेविसउं सिद्धि गयउ सो देउ थुणीजइ,
मलहारिहिं रायसिहरसूरिकिउ फागु रमीजइ.
—राजशेखरसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु,' कडी २७

(३) भंभलभोलिय वाल रंगि नव फागु रमंते,
दुक्खिय विरहिणि नयण नीरु नीझरण झरंते.
—कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिकृत पहेलो 'नेमिनाथ फागु,' कडी ५

(४) भविय जिणेसरभवण रंगि रितुराउ रमेवउ,
कन्हरिसी जयसिंहसूरिकिउ फागु कहेवउ.
—ए ज, कडी ३२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(५) लाज विलोपिय गोपिय, रोपिय दृढ अनुरागु,
रस भरि प्रियतमु रेलइ, वेलइ खेलइ फागु.
—कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिकृत बीजो 'नेमिनाथ फागु,' कडी १२

(६) तिणि पुरि पासह वर भुवणि, चालउ वहु दिसि नारे;
फाग छंदि अम्हि खेलिसुं, सारु जु ईहु संसारे.
—प्रसन्नचंद्रसूरिकृत 'रावणि पार्श्वनाथ फागु,' कडी ६

(७) फागु वसंति जि खेलइ, बेलइ सुगुण निधान,
विजयवंत ते छाजइ, राजइ तिलक समान.
—अज्ञात कविकृत 'जंबुस्वामी फाग,' कडी ५९

(८) अहे समुधरु भणइ, सोहावणउ फागु खेलउ सविचार.
—समुधरकृत 'नेमिनाथ फागु,' कडी २८

(९) किवि नाचइ मनरंगि, केवि खेलइ तिहि फागो,
किवि वायंति वसंत नामि पयडिय वर रागो.
—अज्ञात कविकृत 'पुरुषोत्तम पांच पांडव फाग,' कडी २१

(१०) देव सुमंगलपुत्तफागु गायउ भो भविया,
जिम तुम्हि पामउ रिद्धिवृद्धि मंगलसंकलिया.
—अज्ञात कविकृत 'भरतेश्वर चक्रवर्त्ती फाग,' कडी २०

(११) पीण पयोहर अपच्छर गूजर धरतीय नारि,
फागु खेलइ ते फरि फरि नेमिजिणेसर बारि.
—पद्मकृत 'नेमिनाथ फागु,' कडी ५

(१२) फागु खेलइ मनरंगिहि हंसगमणि मृगनयणि.
—ए ज, कडी ९

(१३) पहिलउं सरसति अरचिसु, रचिसु वसंतविलासु,
फागु पयड पयबंधिहिं संधि यमक भल भास.[1]
—'वसंतविलास,' कडी १

---

१. 'वसंतविलास'नी पहेली कडीना उत्तरार्धना—
'वीणु धरइ करि दाहिणि वाहणि हंसुलउ जासु'
ए पाठने बदले अहीं आपेलो पाठ पाटण भंडारनी एक हस्तप्रतमां छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१४) गाइ अभिनव फाग, साचवइ श्रीराग.

—'नारायण फागु,' कडी ४३

(१५) देव तणउ ए फाग, पढइ गुणइ अनुराग,
नव निधि ते लहइ ए, जे पणि संभलइ ए.

—ए ज, कडी ६४

(१६) कवितु विनोदिहि सिरि जय सिरिजयसेहरसूरि,
जे खेलइ ते अर्हपद संपद पामइ पूरि.

—जयशेखरसूरिकृत प्रथम 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४६० आसपास)[1] कडी ५७

(१७) श्रीनेमेः परमेश्वरस्य यमकालंकारसारं मनः-
स्मेरीकारकरंगसागरमहाफागं करिष्ये नवम्।

—सोमसुन्दरसूरिकृत 'रंगसागर नेमि फाग' (अं. १४९६ आसपास)[2] प्रारंभिक श्लोक

(१८) ए फागु उछरंग रमइ जे मास वसंते,
तिणि मणिनाण पहाण कीत्ति महियल पसरंते.

—'कीर्त्तिरत्नसूरि फाग' (वि. ना. १५ मा सैकानो अंत अने १६मानो प्रारंभ),[3] कडी ३६

(१९) निशि वशि कीधो नारीये रे, मुरारि सुंदर शाम,
एणी परचें फागण खेली रे, हैयानी पूरी हाम.

—केशवदासकृत 'श्रीकृष्णलीला काव्य' (सं. १५२९), सर्ग १५, कडी २२

---

१. आ फागु गायकवाड्झ ओरियेन्टल सिरीझनी 'गुर्जर रासावलि'मां प्रसिद्ध थनार छे.

२. मुद्रित: मुनि धर्मविजयजी-संपादित संस्कृत 'शमामृतम्'नी साथे.

३. मुद्रित: श्री. नाहटा-संपादित 'ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह,' पृ. ४०१-२.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२०) फागुणि पवन हिलोहलइ, फागु चवइ वर नारी हे,
संदेसडउ न परठ्यउ, वृंदावनह मझारि हे.

—अज्ञात कविकृत 'कान्हड बार मास' (वि. नो १६मो सैको),[1] कडी ९

(२१) रूपिइं कउतिग करति अ धरति अ रंभ तगतागु,
वसंत ऋतुराय खेलइं, गेलिइं गाती फागु.

—'हेमरत्नसूरि फागु' कडी १७

(२२) वेणा वंस वजावइ ए, भावइं पंचम राग,
रंग भरि इक खेलइं, गेलिइं जिणवर फाग.

—'राणपुरमंडन चतुर्मुख आदिनाथ फाग,' कडी ७३

(२३) फाग फागुणि गाउं क्रिष्ण केरा, फल जोउ फोकट टलइ फेरा.

—चतुर्भुजकृत 'भ्रमरगीता,' कडी ३

(२४) एकिहि चित्तिहि सांभलइ, ए इस्यउ फागु रसालु,
रंगि ते रंजवइ कामिणि, नीपजइ छयलु छिनालु.

—अज्ञात कविकृत 'मोहिनी फागु,' कडी ५३

(२५) विरहि वसंत सो आवीउ, फागुणि तरु[णि] गाइं,
राउ करू रसीयं घणुं, सरसति तणइ पसाइ.

—अज्ञात कविकृत 'विरह देसाउरी फागु,' कडी ५८

(२६) वेणा यंत्र करइ आलि विणि, करइ गानि ते सवि सुररमणी,
मृदंग सरमंडल वाजंत, भरह भाव करी रमइ वसंत.

—अज्ञात कविकृत 'चुपइ फागु,' कडी ३७

---

१. जे हस्तप्रतमां जयसिंहसूरिना बे 'नेमिनाथ फागु,' प्रसन्नचन्द्रसूरिनो 'रावणि पार्श्वनाथ फागु' वगेरे लखायेला छे तेमां ज आ 'बार मास' छे, एटले ते १६मा सैकाथी अर्वाचीन होवा संभव नथी. जुओ 'कृतिपरिचय अने प्रतिपरिचय,' पृ. ६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(२७) मध माधव रिति कांमनि कंत, रतिपति रमीइ राउ वसंत,
—ए ज कडी ५९

(२८) फागुण रति वसंत षेलीय रे, हईडि हरष मंनमां नाह.
—अज्ञात कविकृत 'फागु', कडी १२

(२९) एह फाग जे गाइसिइं, तेह घरि मंगल च्यार,
—अज्ञात कविकृत 'वाहणनु फाग,' कडी १२

(३०) फागुणि फाग न मुं गमइ, दमइ ति मदन सरीर.
—अज्ञात कविकृत 'नेमिनाथ फागु,' कडी १६

(३१) सुललित बालिका न दीइ रास, क्षण नवि बांचइ पंडित व्यास,
रूडइ कंठि कोइ न करइ राग, रास भास नवि खेलइ फाग.
—महीराजकृत 'नल-दवदंती रास' (सं. १६१२),[1]
कडी ३८९

(३२) फाग गाइ सवि गोरडी जब आवइ मधुमास.
—जयवंतसूरिकृत 'स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग,' कडी ४४

(३३) चैत्रिय पुनिमनि दिनिं, फाग रमि नरनाहू ए.
—हीरकलशकृत 'सिंहासनबत्रीसी' (सं १६१६), ह. प्र. पत्र ४०

(३४) फागु ते फागुण मासि, लोक ते रमइ उहलासि,
रामति नवनवी ए, किम जाइं वर्णवी ए.
—'वासुपूज्य मनोरम फाग, कडी २

(३५) फाग फाग पण सरिषा नही, छासि धोली नइ दूध धोलुं सही,
जेवडउ अंतर मेरु सिरशवइ, तिम जिनगुण अवर कथा कव्यइ.
—ए ज, कडी ७

---

१. आ काव्यमां १००५मी कडीथी शरू थता 'वसंतवर्णन'ने 'फाग' शीर्षक आप्युं छे ए नोंधपात्र छे. फागुओमां वारंवार प्रयोजाता दूहानो निर्देश पण हस्तप्रतोमां घणी वार 'फाग' अथवा 'फागनी देशी' तरीके होय छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(३६) आज सखी मन कंपए, तालावेलि करेइ;
फागु-खेलण-दिन आवीउ, प्रिय देसांतर लेइ.
—'विरह देसाउरी फागु,'[1] कडी १

(३७) श्रीलषमीवल्लभ को रच्यो हौ, इहु अध्यात्म फाग,
पावतु पद जिनराज को हो, गावत उत्तम राग.
—लक्ष्मीवल्लभकृत 'अध्यात्मफाग,' कडी १३

(३८) फागण मासे फूली रह्यां केसुडां रातां चोळ,
सहियर रंगे राती रे, रातां मुख तंबोळ.
× × ×
वाजे झांझ पखाज ने साहेली रमे फाग,
ताली देइ तारुणी गाय नवला रे राग.
—प्रेमानंदकृत 'मास,' कडी ८९-९१

(३९) आ फागण मासे फाग घट घट खेले रे,
ऐ भांतभांतनां भेष भाव न मेहेले रे.
फूल्यौं चीदपलास बीस्व फूले रे,
मोहे सोहं भमरगुंजार कुसुमें फुले रे.
अनहद बाजे तुर रमण रड्य लागी रे,
ऐहेवी महदानंदनी मोज रंग विभागी रे.
पीचकारी पंचभूत स्थुलता केरी रे,
ते सुरत सषीने हाथ खेले होरी रे.
—प्रागदासजीनी बारमासी

आ अवतरणोमांथी फाग विषे केटलांक महत्त्वनां तथ्य जाणवा मळे छे. (१) खेला अने नाच साथे चैत्र मासमां फागु गावानो, (२२) मधुमासमां स्त्रीओ फाग गाय तेनो, (२३) चैत्री पूनमे फाग

१. आ काव्यनी कडी १९ अने २०मां पण 'फागु'नो उल्लेख नोंधपात्र छे. जुओ काव्यांक ३६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रमवानो, (१८) वसंत मासमां ऊछरंगथी रमवानो, (१९) फाग खेलवानो, (२०) फागणमां कृष्णना फाग गावानो, (३४) फागणमां लोको उल्लासपूर्वक फाग रमे छे तेनो, अने (३८) फागण मासमां झांझ पखाजना वादन साथे साहेलीओ रास रमे छे तेनो निर्देश करे छे. विरहिणीने फागणना फाग गमता नथी एम (३०)मां कह्युं छे. (९) फाग खेलतां वसंतराग गावानो, (१४) अभिनव फाग श्रीराग साथे गावानो, (६) फाग छंदमां खेलवानो, (१६) कवितविनोद साथे फाग खेलवानो, अने (३१) रास, भास अने फाग खेलवानो उल्लेख करे छे. वेलमां—बव्वेनां जोडांमां फाग खेलवानुं (५-७)मां छे. फाग रमवो के खेलवो, वसंत रमवो के खेलवो, ऋतुराज रमवो, एवा उल्लेख संख्याबंध अवतरणोमां छे. फागु खेलवानो दिन आव्यो त्यारे प्रिय परदेश जाय छे एम (३६) मां कह्युं छे.

फागुना धार्मिक स्वरूपनां पण अनेक सूचनो मळे छे. (१५)मां 'देवना फागनो' तथा (११)मां नेमि जिनेश्वरना द्वारमां फाग खेलवानो उल्लेख छे. वीणा अने वंश वगाडतां, पंचम राग भावतां जिनवरनो फाग रंगपूर्वक खेलवानुं (२२)मां कह्युं छे. जिनगुण गाता अने बीजा लौकिक विषयना फागुओ वच्चेनुं 'मेरु अने सरसव' जेटलुं अंतर (३५) मां बतावबामां आव्युं छे. लौकिक फागुमां रहेला ग्राम्य तत्त्वनो निर्देश (२४)मां छे. साहित्यिक फागुओना यमकप्रधान स्वरूपनो निर्देश (१२) अने (१७) मां छे.

उपरनां अवतरणो बतावे छे के फागु ए जाहेरमां विविध रीते नृत्यादि साथे गवातो प्रकार हतो—ओछामां ओछुं, एना प्राचीनतर स्वरूपमां तो हतो. नृत्यकाव्य के गेय रूपकने कंईक मळतो ए प्रकार हशे अने लोकसाहित्यमांथी ए शिष्ट साहित्यमां स्वीकारायो हशे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अलबत्त, जेम जेम आ प्रकार पोताना मूळ स्वरूपथी दूर जतो गयो अने शिष्ट साहित्यना एक प्रकार लेखे ज विकसतो—अथवा कहो के पलटातो गयो तेम तेम एना जाहेरमां प्रयोगनी शक्यता ओछी थती गई. मालदेवकृत 'स्थूलिभद्र फाग,' 'मंगलकलश फाग,' 'वासुपूज्य मनोरम फाग' तथा आ संग्रहमांनी 'गीता' शीर्षकवाळी कृतिओ एनां उदाहरण छे.

'वसंतविलास,' 'विरह देसाउरी फागु,' 'चुपई फागु' अने ए प्रकारना सांसारिक रसना फागुओने बाजुए राखीए तो, साहित्यिक फागुओमां बे प्रकारना विषयो स्वीकारायेला छे. जैनेतर फागुओ 'नारायण फागु,' 'भ्रमरगीता,' 'हरिविलास' आदिमां श्रीकृष्णनी वृन्दावनक्रीडा वर्णवाई छे. जैन फागुओमां मोटे भागे नेमिनाथ, स्थूलिभद्र के जंबुस्वामी जेवां जैन पुराणकथा के इतिहासनां प्रसिद्ध पात्रोनुं चरित्र वस्तु तरीके लेवायुं छे. उद्दीपक शृंगारनुं निरूपण करीने पण अंते शील अने सात्त्विकतानो विजय तथा विषयोपभोगनो त्याग वर्णववामां आ कथानको अनुकूल छे. संख्यानी दृष्टिए विचारीए तो, सौथी वधारे फागुओ नेमिनाथ विषे लखाया छे. जैन कविओए बीजा तमाम साहित्यप्रकारोनी जेम फागुने पण धर्मोपदेशनुं साधन बनाव्यो छे. आथी श्रीकृष्णनी पटराणीओ साथे नेमिनाथना वसंतखेलनुं, राजीमतीनी विरहव्यथानुं, कोशा गणिकाना रूपशृंगारनुं के जंबुस्वामीनी क्रीडाओनुं के तेमनी पत्नीओना सौन्दर्यनुं वर्णन कर्या पछी ए सर्वनुं पर्यवसान संभोग शृंगारमां नहि, पण संसारत्यागमां—'मुक्तिरमणी' साथे विहारमां थाय छे. स्थूलिभद्रना कथानकमां गुरुनो आदेश लईने स्थूलिभद्र पोतानी एक वारनी प्रियतमा कोशाना घेर चातुर्मास गाळवा जाय छे; अने त्यां कवि वसंतने बदले वर्षानुं वर्णन करीने संतोष माने छे. आ उपरांत 'पुरुषोत्तम पांच पांडव फाग,' 'भरतेश्वर चक्रवर्त्ती फाग' आदि

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अन्यान्य पौराणिक प्रसंगो लईने लखायेलां काव्योमां गमे त्यां तक मेळवीने वसंतश्रीनुं के वसंतखेलनुं वर्णन दाखल करीने 'फाग' नाम सार्थक करी बतावबानो प्रयत्न थयो छे. महावीरना गणधर गौतमस्वामी विषे पण एक फाग रचायो छे.[1] 'जीरापल्ली पार्श्वनाथ फागु,' 'रावणि पार्श्वनाथ फागु,' 'राणपुरमंडन चतुर्मुख आदिनाथ फाग' आदि विशिष्ट तीर्थमहिमानां काव्यो छे, अने वर्णनादि तथा छंदोबंध बन्ने रीते एमने फागमां घटाववामां आव्यां छे. 'नारीनिरास फाग' जेवी कृति छंदो-रचनानी दृष्टिए वरावर 'वसंतविलास'नी धाटीए रचायेली होवा छतां विषयनिरूपणनी दृष्टिए 'वसंतविलास'नी विलासितानुं खंडन करवानो साव नबळो नहि एवो प्रयास छे. इतिहासकाळमां थयेला आचार्यादि व्यक्तिविशेषो विषे पण फागुओ लखाया छे. 'हेमरत्नसूरि फाग', 'जिनहंसगुरु नवरंग फाग', 'धर्ममूर्तिसूरि फाग,' अमररत्नसूरि फागु' आदि आ संग्रहमां लेवायेलां काव्यो ए वातनां उदाहरण छे. ए उपरांत 'देवरत्नसूरि फाग' (सं. १९४९)[2] दानवर्धनकृत 'हेमविमलसूरि फाग' (सं. १५५४),[3] 'कीर्त्तिरत्नसूरि फाग' आदि ए प्रकारनी नोंधपात्र रचनाओ छे. आवी रचनाओमां आचार्योनां मातापिता, बाल्यावस्था, दीक्षामहोत्सव आदिनो वृत्तान्त आपीने वसंतवर्णन, कामविजय, संयमनी दृढता, एमना उपदेशोनो प्रभाव वगेरे वर्णवेलां होय छे अने ए रीते

---

१. महीसागर उपाध्यायकृत 'गौतमस्वामी फाग'नी एक हस्तप्रत (नं. ४५१८) वडोदरामां प्रवर्तक श्री कान्तिविजयजी महाराजना संग्रहना गुजराती विभागमांथी मने मळी हती. १५ कडीनी आ कृतिनो काव्यबंध फाग (दूहा) अने अढैयाथी बंधायेलो छे. हस्तप्रत घणी अशुद्ध होई ते एकने ज आधारे संपादन शक्य नहोतुं. प्रत्यंतर नहि मळवाथी आ संग्रहमां एने स्थान आपी शकायुं नथी.

२. मुद्रित: आचार्य जिनविजयजी-संपादित 'जैन ऐतिहासिक गुर्जर काव्यसंचय,' पृ. १५०-५८.

३. मुद्रित: ए ज, पृ. १८६-९०.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'फाग' नामनी ओछोवत्ते अंशे सार्थकता साधवानो प्रयत्न थाय छे. जो के एवुं पण दर वखते थाय छे एम नहि. 'धर्ममूर्तिगुरु फाग'मां आ काव्यप्रकार साथे संकळायेलां गणातां आ बधां लक्षणो नथी. एमां गुरुनो पूर्ववृत्तान्त आपवा साथे एमनी धार्मिक महत्ता वर्णवी छे. फाग अने अढैउनी परंपरागत छंदोरचना कर्ताए, अलबत, साचवी छे. श्री. अगरचंद नाहटाए संपादित करेल खेमहंसकृत 'गुर्वावली फाग'मां[1] (वि. नो १६ मो सैको) दूहा अने रोळा छंदना, प्राचीनतम फागुओमां मळता बंधमां, खरतर गच्छना आचार्योनी मात्र पट्टावली आपवामां आवी छे. आथी पण आगळ वधी, फागुओमां सामान्यतः कवन पामता विषयोने बाजुए मूकी आध्यात्मिक विषयो परत्वे फागुना प्रचलित छंदोमां काव्यरचना करीने एमने 'फाग' नाम अपायुं छे. 'वाहणनु फाग', लक्ष्मीवल्लभकृत 'अध्यात्म फाग' आदि ए प्रकारनां रूपक-प्रधान काव्यो छे. वृद्धिविजयकृत 'ज्ञानगीता,' यशोविजयजीकृत 'जंबु-स्वामी ब्रह्मगीता' आदि प्रधानतः आध्यात्मिक विषयनां काव्यो नथी, तो पण एमनां शीर्षक तथा एमांनुं केटलुंक निरूपण एमने ओछेवत्ते अंशे ज्ञानविषयक रचनाओ ठरवे छे.

आपणे जोयुं के अमुक विशिष्ट छंदोरचनाने कारणे ज केटलीक वार अमुक कृतिओने 'फागु' के 'फाग' नाम अपायुं छे. साहित्यना बीजा प्रकारोनी जेम फागुनुं बाह्य स्वरूप पण अमुक चोक्कस प्रकारनुं छे. जिनपद्मसूरिकृत 'स्थूलिभद्र फागु' अने राजशेखरसूरिकृत 'नेमि-नाथ फागु' जेवां सौथी जूनां फागुकाव्योमां एक कडी दूहानी अने एक अथवा वधारे कडी रोळानी ए प्रकारनी संख्याबंध 'भास'नो काव्यबंध बनेलो छे. जयसिंहसूरिनो पहेलो 'नेमिनाथ फागु' (सं. १४२२

---

१. मुद्रित: 'ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह,' पृ. २१५-१७.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आसपास), प्रसन्नचंद्रसूरिकृत ' रावणि पार्श्वनाथ फागु ' (सं. १४२२ आसपास), जयशेखरसूरिकृत द्वितीय ' नेमिनाथ फागु ' (सं. १४६० आसपास), ' पुरुषोत्तम पांच पांडव फाग,' ' भरतेश्वर चक्रवर्त्ती फाग,' ' कीर्त्तिरत्नसूरि फाग ' आदि प्रमाणमां जूना फागुओनो पद्यबंध पण आ प्रकारनो छे. रोळा जेवो वेगथी पाठ करवा योग्य छंद फागु जेवा मूळे गेय रूपकने मळता प्रकारमां योग्य छे. एमां प्रत्येक भासने आरंभे आवतो दूहो, गरबामां वच्चे वच्चे आवती साखीनी जेम, एक प्रकारनो विराम आपे छे.

परन्तु ' वसंतविलास ' जेवा सुप्रसिद्ध फागुना परिचयने कारणे साधारण साहित्यरसिकने मन आंतरप्रास के आंतरयमकवाळो दूहो फागुकाव्यनुं विशिष्ट लक्षण छे.[1] अत्यार सुधी मळेला फागुओमां जयसिंहसूरिनो वीजो ' नेमिनाथ फागु ' (सं. १४२२ आसपास) ए आंतरयमकवाळा दूहामां रचायेला फागुनुं जूनामां जूनुं उदाहरण छे. जो के जयसिंहसूरिनी आ रचना तथा उपर कह्या ते जिनपद्म अने राजशेखरना जूना फागुओ वच्चे समयनुं अंतर एटलुं ओछुं छे के ' भास '-वाळो अने आंतरयमकयुक्त दूहावाळो काव्यबंध फागुने माटे साथे-लागो प्रचलित हशे एम मानवुं योग्य छे. एटला माटे जयसिंहसूरिए एक ज वस्तु उपर ए बन्ने रीतिए फागु रच्या हशे. जयसिंहसूरि पछी तुरत अज्ञात कविकृत ' जंबुस्वामी फाग ' (सं. १४३०), मेरुनन्दनकृत ' जीरापल्ली पार्श्वनाथ फागु ' (सं. १४३२) अने जयशेखरसूरिकृत प्रथम ' नेमिनाथ फागु ' आ प्रकारना पद्यबंधमां रचायेला मळे छे. ' वसंतविलास,' ' नारीनिरास फाग ' अने ' हरिविलास 'मां

१. फागुओमां प्रयोजायेलो आ छंद दूहा करतां रोळा साथे वधु बंधबेसतो छे एवो प्रो. रामनारायण पाठकनो मत छे. दूहा तेम ज रोळानी बन्नेनी पंक्ति २४ मात्रानी होई आ मत गंभीरताथी विचारवा जेवो छे. आ विषेनी विगतवार चर्चा माटे जुओ ' प्राचीन गुजराती छंदो,' पृ. १५६-१६०.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छंदोबंध तो आ प्रकारनो छे, पण वच्चे वच्चे संमतिना संस्कृत श्लोको उद्धृत करेला छे एटलो विशेष छे. 'वसंतविलास'मां तो संस्कृत श्लोकोनी संख्या गुजराती पद्यो जेटली ज लगभग छे. समाजना जे साहित्यरसिक विदग्ध वर्गमां फागुकाव्योनो समादर थतो हशे तेमां संस्कृत शृंगारकाव्यो अने मुक्तको—जेमांथी ए प्रकारनी गुजराती रचनाओनी पदावली अने अलंकारादि सीधेसीधां तेम ज प्राकृत भाषाओ द्वारा ऊतरी आव्यां छे—ठीक लोकप्रिय हतां ए पण एमांथी फलित थाय छे. अलबत्त, आ रीते संमतिना श्लोको आपवानी पद्धति फागुकाव्यमां ज हती एम नहि; ज्ञानमार्गी कवितामां अने आख्यानात्मक कविता (Narrative Poetry)मां पण आ पद्धति सारा प्रमाणमां जोवा मळे छे.

आ रीतना सळंग एक छंदमां रचायेलां काव्यमां प्रसंगोपात्त श्लोकोनो उमेरो ए एक नवुं तत्त्व गणाय, अने ए दृष्टिए 'वसंतविलास' आदि काव्यो उपरकह्या प्राचीनतर फागुओनी अपेक्षाए काव्यबंधनो विकास दर्शावे छे. 'वसंतविलास' आदिनो काव्यबंध समयदृष्टिए ए फागुओनी पछीनो छे. आंतरयमकवाळो दूहो जते दिवसे फागुनी रचना साथे एवो संकळाई गयो के पछीना संख्याबंध फागुओमां तेम ज सर्वसाधारण काव्यरचनाओमां एने माटे 'फाग', 'फागनी देशी' के 'फागनी ढाळ' एवा मोघम निर्देशो नजरे पडे छे.

परन्तु संख्याबंध जूना फागुओनी रचना आंतरयमकवाळा नहि, पण सादा दूहामां थई छे, जे बतावे छे के आंतरयमक चमत्कृति अर्थे उमेरायो हशे. सं. १३४१ना अरसानो 'जिनचंदसूरि फागु' सादा दूहामां रचायो छे. समर, समधर अने पद्मना 'नेमिनाथ फागु,' गुणचंद्रगणिनो 'वसंत फागु' अने अज्ञात कविकृत 'मोहिनी फागु'नी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रचना सादा दूहामां छे. प्रभासपाटणनिवासी कायस्थ केशवदासकृत 'श्रीकृष्णलीला काव्य' (सं. १५२९)ना १५मा सर्गमां (कडी १-२६) 'वसंतविलास' ए शीर्षक नीचे कृष्णगोपीना वसंतविहारनुं वर्णन छे; एना आदि अने अंतनुं स्वरूप जोतां, कविए सळंग काव्यनी वच्चे मूकी दीधुं होवा छतां एनी रचना तो एक स्वतंत्र कृति तरीके करेली छे. केशवदासकृत आ 'वसंतविलास' दूहामां रचायो छे, पण आंतरयमक एमां सर्वत्र नथी.

अगाउ आपणे जोयुं तेम, फागु ए जाहेरमां गावानो प्रकार हतो. एनी निशानीओ एनी छंदोरचनामां पण छे. दूहा के रोळा जेवा मात्रामेळ छंदोना प्रारंभमां, छंदनो खरेखर अंश नहि एवां 'अहे,' 'अह' के 'अरे' जेवां लटकणियां मुकायां छे ते जाहेरमां ए छंदो ललकारवानी अनुकूळता माटे हशे (दूहो जाहेरमां बोलतां 'ए....' जेवा लटकणियाथी प्रारंभ कराय छे ते आ साथे सरखावी शकाय. अज्ञात कविकृत 'जिनचंदसूरि फागु,' राजशेखर, जयशेखर, समुधर अने समरना 'नेमिनाथ फागु,' 'पुरुषोत्तम पांच पांडव फाग' (छेल्ली भास), गुणचंदसूरिनो 'वसंत फागु,' 'हेमरत्नसूरि फागु,' 'वाहणनो फाग,' 'अमररत्नसूरि फागु' आदिनी छंदोरचनामां आवां उमेरणो छे.

भास के दूहानी छंदोरचना ए सादी रचना छे. जेम फागु लोकप्रिय बनतो गयो अने शिष्ट साहित्यमां स्थिर स्थान पामतो गयो तेम विदग्ध भावकोना समाराधन माटे एनी छंदोरचना पण, गान अने अभिनयप्रयोगने अनुकूल रहेवा साथे वधारे संकुल अने संमिश्रित बनती गई. 'नारायण फागु'नी रचना रास, आंदोला, फागु (आंतरयमकयुक्त दूहा) अने अढैयामां छे. 'पृथ्वीचंद्र-चरित्र'ना कर्ता माणिक्यसुन्दरसूरिकृत 'नेमीश्वरचरित फागबंध'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(सं. १४७८)[1] ठीक जूनुं काव्य होई आ रीते एनो पद्यबंध तपासवो उपयोगी थशे. ८८ कडीनुं आ काव्य जुदा जुदा पंदर खंडोमां वहेंचाई जाय छे. दरेकना आरंभमां एक अथवा वधु संस्कृत श्लोक, पछी रासुनी कडीओ, अढैयु अने फाग एवो क्रम सामान्य रीते छे. कोई कोई खंडमां फागु नथी (खंड ४, ६, ९), कोईमां अढैयु नथी (खंड ५, १०), ७ मां फागु बे वार आवे छे; १३ मां श्लोक अने रास, १४ मां श्लोक अने अढैयु, अने १५ मां श्लोक अने रासउ एटलुं ज छे. पण एकंदर छंदोविभागनुं वलण उपर सूचव्युं ते प्रमाणेनुं छे. संस्कृत श्लोको विविध छंदोमां छे. ' रास ' शीर्षकवाळी कडीओ एक ज निश्चित देशीमां नहि, पण विविध देशी ढाळोमां छे.

सोमसुन्दरसूरिकृत ' रंगसागर नेमि फाग ' (सं. १४९६ आसपास) त्रण खंडोमां वहेंचायेल छे. प्रत्येक खंडना प्रारंभमां संस्कृत के प्राकृत श्लोक अथवा गुजराती वृत्तबद्ध श्लोक, रासक, आंदोला, फाग—आवी रचना सामान्य रीते छे. क्वचित् वच्चे एकाद संस्कृत श्लोक आवी जाय छे अथवा उपर बतावेला क्रममां थोडोक हेरफेर थाय छे. १-३१, २-२७, ३१; ३-१, ८; ३-१८, १९ गुजराती शार्दूलविक्रीडितमां छे ए प्राचीन गुजराती साहित्यमां वृत्तरचनाना इतिहास माटे नोंधपात्र छे. ३-८ भोजनादिनुं अने ३-१८, १९ अश्वोनुं वर्णन करे छे.

' देवरत्नसूरि फाग ' (सं. १४९९) ए ६५ कडीनुं काव्य छे. एमां एक संस्कृत श्लोक, पछी रास (देशी), अढैयु अने फाग ए प्रमाणे क्रम छे. ५७ कडीना ' हेमविमलसूरि फाग ' (सं. १५५४)ना त्रण खंडोनो पद्यबंध फाग अने अंदोलामां बंधायो छे.

आवी मिश्र छंदोरचनावाळुं आपणा संग्रहनुं सौथी जूनुं काव्य ते

१. मुद्रितः ' श्रीआत्मानंद शताब्दी स्मारकग्रन्थ, ' पृ. ४७-६५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धनदेवगणिकृत 'सुरंगाभिध नेमि फाग' (सं. १५०२) छे. गुजराती शार्दूलविक्रीडित पद्योने कारणे ध्यानपात्र आ कृतिनी छंदोरचनानुं पृथक्करण 'कृतिपरिचय'मां कर्युं छे. आगममाणिक्यकृत 'जिनहंसगुरु नवरंग फाग,' अज्ञात कविकृत 'राणपुरमंडन चतुर्मुख आदिनाथ फाग,' कमलशेखरकृत 'धर्ममूर्तिगुरु फाग' आदिनी छंदोयोजना पण आ प्रकारनी मिश्र छे. फागुना प्रयोग विषेनां जे विविध अवतरणो अगाउ टांक्यां छे ते जोतां योग्य प्रसंगोए आ फागुओ जाहेरमां गवाता हशे.

फागुमांथी ज विकसेलो एक पेटाप्रकार ते 'भ्रमरगीता' जेवां 'गीता'काव्योनो छे. एनो जूनामां जूनो नमूनो अत्यारे तो आपणी पासे, उद्धवसंदेशना भागवतप्रोक्त विषयनुं छटादार कवन करती चतुर्भुजनी 'भ्रमरगीता'नो (सं. १५७६) छे. विनयविजयकृत 'नेमिनाथ भ्रमरगीता'मां जैन फागुओमां सौथी वधु लोकप्रिय नेमिनाथना कथानकने वणी लीधुं छे. उपाध्याय यशोविजयकृत 'जंबुस्वामी ब्रह्मगीता'मां जंबुस्वामीनुं कथानक छे. आ बधां काव्योमां जेने झूलणानो उत्तरार्ध गणी शकाय एवा छंदने एकांतरे (जुओ अगाउ पृ. २१, टिप्पण) 'फाग' अथवा 'फागनी देशी' ए शीर्षक नीचे एक अथवा वधारे दूहा आवे छे.[1] सोनीरामकृत 'वसंतविलास'नी पद्यरचना पण आवी ज छे. जो के एनी प्रतमां ए छंदने खोटी रीते दूहो कह्यो छे. वृद्धिविजयकृत 'ज्ञानगीता' अने उदयविजयकृत 'पार्श्वनाथ राजगीता'मां आपणे अगाउ 'कृतिपरिचय'मां जोयुं ते प्रमाणे, कोई इतिवृत्त नथी, परन्तु उपर्युक्त छंदोबंध तेने फागुनो ज एक प्रकार पुरवार करे छे.

---

१. प्रेमानंदकृत 'मास'नो पद्यबंध आ ज प्रकारनो छे. एमांनी देशीने जो के 'फाग' नाम आप्युं नथी, पण तेथी हकीकतमां कंई फेर पडतो नथी

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आम फागुनो साहित्यप्रकार उत्तरोत्तर परिवर्तन पामतो गयो छे. पाछळना समयमां एमां केटलीक एकविधता आवी गई. एवा पण फागुओ रचाया छे, जेमने नाम मात्र फागु गणी शकाय. मालदेवनो 'स्थूलिभद्र फाग' एक ज देशीनी १०७ कडीमां रचायो छे. कल्याण-कृत 'वासुपूज्य मनोरम फाग'मां फागुनां लक्षणो विरल स्थाने नजरे पडे छे, अने 'मंगलकलश फाग'ने कर्ताए 'फाग' कह्यो छे एटलुं ज.[1] परंतु आ तो थोडाक अपवादो छे. विक्रमना चौदमा शतकथी मांडी

१. सुन्दर अने चतुर स्त्रीने कुरूप अने मूर्ख पति मळ्यानां दुख वर्णवतो एक 'मूर्ख फाग' जाणवामां आव्यो छे (पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीनो संग्रह, हस्तप्रत नं. १४०४), ते पण आवा नाम मात्र फागुनुं एक नोंधपात्र उदाहरण छे. ३३ दूहामां रचायेली आ कृतिना आदिअंतमांथी केटलीक कडीओ नमूना रूपे अहीं टांकुंछुं.

आदि—

आदि गणेस आराहिइ, सधि वुधि केरो कंथ;
जेह पसाइ गायसू, **मूरष फाग** वसंत. १
एक नारी नवजोवनी, तेहनो रे नीसत नाह;
करमे भाग्या रे कजोडला, दइवे दीधो रे दाह. २
सुंदर कोटि सवालषि, ते दूषभरी रे अपार;
पूरव पाप प्रकासिया, सांपडयो भूंडो भरथार. ३
मूरष वापि बांधिउ, माणक कागनी कोटि;
रतन जडानूं रे रेहटिइ, पाणि पटोलानी मोटि. ४
चंदन घालू रे चूलडि, संघ सीयालाने साथि;
काग कपूर सु जाणे रे, अंध अरिसानी भाति. ५

अंत—

महारा मननू दोहिलू, सांभलो सहियर गूज;
एक जिभे कहु केतलू, थोडा माहे घणू वूझ. २९
विहिनि कहु बेसारीनि, सारि सीखामण आज;
बापडी तु कां भोली रे, पीउनी नही तुझ लाज. ३०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केटलाक सैका सुधी मानव भावो साथे प्रकृतिनुं गान गाती, शृंगार साथे त्याग अने वैराग्यना तरंगो उछाळती कविता आ साहित्यप्रकारे आपी छे. आख्यान के रासा करतां आनुं स्वरूप टूंकुं छे, पण मोटे भागे एमां कंईक इतिवृत्त आवतुं होई होरी के धमार जेवां वसंतखेलनां टूंकां पदो करतां एमां वैविध्यने विशेष अवकाश रह्यो छे. आ साहित्यप्रकारना नमूनाओनो आ मध्यम कदनो समुच्चय उत्तरकालीन अपभ्रंशना समयथी मांडी लगभग अर्वाचीनताना सीमाडा सुधीना गुजराती भाषाना विकासनो ख्याल आपे छे, ते साथे जूनी गुजरातीनी केटलीक सारी कविता एमांथी मळे छे.

भोगीलाल ज. सांडेसरा

शोधन

'कृतिपरिचय,' पृ. ४९. पंक्ति १९ : "ज्यारे जयशेखरसूरिनां.... दूहामां छे." ए वाक्यखंडने बदले नीचे प्रमाणे वांचवुं :

"जयशेखरसूरिनो पहेलो फाग साद्यन्त आंतरयमकवाळा दूहामां छे, ज्यारे बीजा फागनी पहेली २४ कडी आंतरयमकवाळा दूहामां छे, परन्तु बाकीना काव्यनो बंध अनुक्रमे एक दूहो अने त्रण के चार रोळा छंदनी बनेली कुल छ 'भास 'नो छे."

पापण पीउ वगोइयो, ए तुझ भूडी टेव;
कोढीउ कावडी घालीने, सही ते जाणवो देव. ३१
करिनि भगति पतिव्रता, साडलानी परि सांधि;
रूप करूप करइ नही, जानि तु ईश्वर आराधि. ३२
आ भवे एहवो आराधीउ, आवति तु नहि पामि;
मनवंछित फल तु मलि, जो तुससे सारंगस्वामि. ३३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्राचीन फागु-संग्रह

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१]

जिनपद्मसूरिकृत

स्थूलिभद्र फागु

(सं. १३९०-१४००)

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी,
थूलिभद्दमुणिवइ भणिसु फागुबंधि गुण केवी. १

अह सोहगसुंदररूववंतु गुणमणिभंडारो,
कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो,
थूलिभद्दमुणिराउ जाम महियलि बोहंतउ,
नयररायपाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ. २

वरिसालइ चउमासमाहि साहू गहगहिया,
लियइ अभिग्गह गुरह पासि नियगुणमहमहिया,
अज्जविजयसंभूयसूरि गुरु वय मोकलावइ,
तसु आएसि मुणीस कोसवेसाघरि आवइ. ३

मंदिरतोरणि आवियउ मुणिवरु पिक्खेवी,
चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी,
वेसा अतिहि ऊतावलि य हारिहि लहकंती,
आवीय मुणिवररायपासि करयल जोडंती. ४

भास—धर्मलाभु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी,
रहियउ सीहकिसोर जिम धीरिम हियइ धरेवी. ५

झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसंति,
खलहल खलहल खलहल ए वाहला वहंति,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

झबझब झबझब झबझब ए वीजुलिय झबकइ,
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपइ. ६

महुरगंभीरसरेण मेह जिम जिम गाजंते,
पंचबाण निय कुसुमबाण तिम तिम साजंते,
जिम जिम केतकि महमहंत परिमल विहसावइ,
तिम तिम कामि य चरण लग्गि नियरमणि मनावइ. ७

सीयलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते,
माणमडप्फर माणणि य तिम तिम नाचंते,
जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया,
तिम तिम कामी तणा नयण नीरिहि झलहलिया. ८

भास—मेहारवभरऊलटि य जिम जिम नाचइ मोर,
तिम तिम माणिणि खलभलइ साहीता जिम चोर. ९

अइ सिंगारु करेइ वेस मोटइ मनऊलटि,
रइयरंगि बहुरंगि चंगि चंदणरसऊगटि,
चंपयकेतकिजाइकुसुम सिरि षुंप भरेइ,
अतिआछउ सुकमाल चीरु पहिरणि पहिरेइ. १०

लहलह लहलह लहलह ए उरि मोतियहारो,
रणरण रणरण रणरण ए पगि नेउरसारो,
झगमग झगमग झगमग ए कानिहि वरकुंडल,
झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल. ११

मयणखग्ग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो,
सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो,
तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगारथवक्का,
कुसुमबाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का. १२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भास—काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संथउ फाडेई,
बोरीयावडिकांचुलिय पुण उरमंडलि ताडेइ. १३

कन्नजुयल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला,
चंचल चपल तरंगचंग जसु नयणकचोला,
सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमसूरा,
कोमल विमलु सुकंदु जासु वाजइ संखतूरा. १४

लवणिमरसभरकूवडिय जसु नाहि य रेहइ,
मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरू सोहइ,
जसु नहपल्लव कामदेवअंकुस जिम राजइ,
रिमिझिमि रिमिझिमि ए पायकमलि घाघरिय सुवाजइ. १५

नवजोवनविलसंतदेह नवनेहगहिल्ली,
परिमललहरिहि मयमयंत रइकेलिपहिल्ली,
अहरविंब परवालखंड वरचंपावन्नी,
नयणसलूणी य हावभावबहुगुणसंपुन्नी. १६

भास—इय सिणगार करेवि वर जव आवी मुणि पासि,
जोएवा कउतिगि मिलिय सुरकिन्नर आकासि. १७

अह नयणकडक्खहं आहणए वांकउं जोवंती,
हावभाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति,
तह वि न भीजइ मुणिपवरो तव वेस बोलावइ,
तवणुतुल्ल तुह देह नाह मह तणु संतावइ. १८

बारहवरिसहं तणउ नेहु किणि कारणि छंडिउ,
एवडु निठुरपणउ कंइ मूंसिउ तुम्हि मंडिउ,
थूलिभद्द पभणेइ वेस अह खेदु न कीजइ,
लोहिहि घडियउ हियउ मज्झ तुह वयणि न भीजइ. १९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मह विलवंतिय उवरि नाह अणुराग धरीजइ,
एरीसु पावसु कालु सयलु मूसिउ माणीजइ,
मुणीवइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा,
मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा. २०

भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ,
मूं मिल्हिवि संजमसिरिहि जउ रातउ मुणिराउ. २१

उवसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ,
चिंतामणि परिहरवि कवणु पत्थरु गिह्णेइ,
तिम संजमसिरि परिवएवि बहुधम्मसमुज्जल,
आलिंगइ तुह कोस कवणु पसरंतमहाबल. २२

पहिलउ हिवडा कोस कहइ जुव्वणफलु लीजइ,
तयणंतरि संजमसिरीहि सुह सुहिण रमीजइ,
मुणि बोलइ जि मइ लियउ तं लियउ ज होइ,
कवणु सु अच्छइ भुवणतले जो मह मणु मोहइ. २३

भास—इणपरि कोसा अवगणिय थूलिभद्दमुणिराइ,
तसु धीरिम अवधारि करि चमकिय चित्ति सुहाइ. २४

अइबलवंतु सु मोहराउ जिणि नाणि निधाडिउ,
झाणखडग्गिण मयणसुभड समरंगणि पाडिउ,
कुसुमवुट्ठि सुर करइ तुट्ठि हुउ जयजयकारो,
धनु धनु एहु जु थूलिभद्द जिणि जीतउ मारो. २५

पडिबोहिवि तह कोसवेस चउमासि अणंतरु,
पालिय भिग्गह ललिय चलिय गुरु पासि मुणीसरु,
दुक्करदुक्करकारगु त्ति सूरिहि सु पसंसिउ,
संखसमुज्जलजसु लसंतु सुरनरहं नमंसिउ. २६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नंदउ सो सिरिथूलिभद्द जो जुगह पहाणो,
मलियउ जिणि जगि मल्लसल्लरइवल्लहमाणो,
खरतरगच्छि जिणपदमसूरिकिय फागु रमेवउ,
खेला नाचइं चैत्रमासि रंगिहि गावेवउ. २७

॥ सिरिथूलिभद्दफागु समत्त ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२]

राजशेखरसूरिकृत

नेमिनाथ फागु

(सं. १४०५ आसपास)

सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय ते तित्थयर नमेवी,
फागुबंधि पहुनेमिजिणुगुण गाएसउं केवी. १

अह नवजुव्वण नेमिकुमरु जादवकुलधवलो,
काजलसामल ललवलउ सुललियमुहकमलो,
समुदविजयसिवदेविपूतु सोहगसिंगारो,
जरासिंधुभडभंगभीमु बलिं रूवि अप्पारो. २

गहिरसद्दि हरिसंखु जेण पूरिय उद्दंडो,
हरि हरि जिम हिंडोलियउ भुयदंडपयंडो,
तेयपरिक्कमि आगलउ पुणि नारिविरत्तउ,
सामि सुलक्खणसामलउ सिवसिरिअणुरत्तउ. ३

हरिहलहरसउं नेमिपहु खेलइ मास वसंतो,
हावि भावि भिज्जइ नही य भामिणिमाहि भमंतो. ४

अह खेलइं खडोखलिय नीरि पुणु मयणि नमावइ,
हरिअंतेउरमाहि रमइ पुणि नाहु न राचइ,
नयणसलूणउ लडसडंतु जउ तीरिहिं आविउ,
माइ बापि बंधविहिं मांड वीवाह मनाविउ. ५

घरि घरि उत्सव बारवए राउल गहगहए,
तोरण वंदुरवाल कलस धयवड लहलहए,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कन्हडि मागिय उग्गसेणधूय राजल लाधा,
नेमिऊमाहीय, बाल अट्ठभवनेहनिबद्धा. ६

राइमए सम तिहु भुवणि अवर न अत्थइ नारे,
मोहणविल्लि नवल्लडीय उप्पनीय संसारे. ७

अह सामलकोमल केशपाश किरि मोरकलाउ,
अद्धचंद समु भालु मयणु पोसइ भडवाउ,
वंकुडियालीय भुंहडियहं भरि भुवणु भमाडइ,
लाडी लोयणलहकुडलइ सुर सग्गह पाडइ. ८

किरि सिसिविंब कपोल कन्नहिंडोल फुरंता,
नासा वंसा गरुडचंचु दाडिमफल दंता,
अहर पवाल तिरेह कंठु राजलसर रूडउ,
जाणु वीणु रणरणइं जाणु कोइलटहकडलउ. ९

सरलतरल भुयवल्लरिय सिहण पीणघणतुंग,
उदरदेसि लंकाउली य सोहइ तिवलतुरंगु. १०

अह कोमल विमल नियंवविंब किरि गंगापुलिणा,
करिकर ऊरि हरिण जंघ पल्लव करचरणा,
मलपति चालति वेलहीय हंसला हरावइ,
संझारागु अकालि बालु नहकिरणि करावइ. ११

सहजिहिं लडहीय रायमए सुलखण सुकमाला,
घणउं घणेरउं गहगहए नवजुव्वण बाला,
भंभरभोली नेमिजिणवीवाह सुणेई,
नेहगहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई. १२

सावणसुकिलछट्ठि दिणि बावीसमउ जिणंदो,
चल्लइ राजलपरिणयण कामिणिनयणानंदो. १३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अह सेयतुंगतरलतुरइ रइरहि चडइ कुमारो,
कन्निहि कुंडल सीसि मउड गलि नवसरहारो,
चंदणि ऊगटि चंदधवलकापडि सिणगारो,
केवडियालउ खुंपु भरवि वंकुडउ अतिफारो. १४

धरहि छत्तु वित्तु चमर चालहिं मृगनयणी,
लूणु उत्तारिहिं वरबहिणी हरिसुज्जलवयणी,
चहुपरि वइसइ दसारकोडि जादवभूपाला,
हयगयरहपायक्कचक्कसीकिरिहिं झमाला. १५

मंगल गायहिं गोरडीय भट्टह जयजयकारो,
उग्गसेणघरनारि वरो पहुतउ नेमिकुमारो. १६

अह सहिय पयंपय हल सहि ए तुह वल्लहउ आवइ,
मालिअटालिहिं चडिउ लोउ मण नयणु सुहावइ,
गउखि बइठी रायमए नेमिनाहु निरखइ,
पसइपमाणिहिं चंचलिहिं लोअणिहिं कडखइं. १७

किम किम राजलदेवि तणउ सिणगारु भणेवउ,
चंपइगोरी अइधोइ अंगि चंदनुलेवउ,
खुंपु भराविउ जाइकुसमि कसतूरी सारी,
सीमंतइ सिंदूररेह मोतीसरि सारि. १८

नवरंगी कुंकुमि तिलय किय रयणतिलउ तसु भाले,
मोतीकुंडल कन्नि थिय विंबोलिय करजाले. १९

अह निरतीय कज्जलरेह नयणि मुहकमलि तंबोलो,
नगोदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोलो,
मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं मंला,
करि कंकण मणिवलयचूड खलकावइ बाला. २०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए कडि घघरियालि,
रिमिझिमि रिमिझिमि रिमिझिमि ए पयनेउरजुयली,
नहि आलत्तउ वलवलउ सेअंसुयकिमिसि,
अंखडियाली रायमए प्रिउ जोअइ मनरसि. २१

वाडउ भरिउ जीवडहं टलवलंत कुरलंत,
अहूठकोडिरूं उद्धसिय देपइ राजलकंतो· २२

अह पूछइ राजलकंतु कांइ पसुवंधणु दीसइ,
सारहि वोलइ सामिसाल तुह गोरवु हुस्यइ,
जीव मेल्हावइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ,
धिगु संसारु असारु इस्यउं इम भणि रहु वालइ. २३

समुदविजय सिवदेवि रामु केसवु मन्नावइ,
नइपवाह जिम गयउ नेमि भवभमणु न भावइ,
धरणि धसक्कइ पडइ देवि राजल विहलंघल,
रोअइ रिज्जइ वेसु रूवु वहु मन्नइ निप्फलु. २४

उग्गसेणघूय इम भणइ दूपहिं दाझइ देहो,
कां विरतउ कंत तुहं नयणिहि लाइवि नेहो. २५

आसा पूरइ त्रिहुभुवण मू म करि हयासी,
दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अछउं दासी,
सामि न पालइ पडिवन्नउं तउ कासु कहीजइ,
मयगलु उवट संचरए किणिं कानि गहीजइ. २६

नेमि न मन्नइ नेहु देइ संवच्छरदाणूं,
ऊजलगिरि संजम लियउ हुय केवलनाणूं,
राजलदेविसउं सिद्धि गयउ सो देउ थुणीजइ,
मलहारिहिं रायसिहरसूरिकिउ फागु रमीजइ. २७

॥ इति श्रीनेमिनाथ फागु ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३]

कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिकृत

प्रथम नेमिनाथ फागु

(सं. १४२२ आसपास)

पणमिवि जिण चउवीस पइ, सुमरवि सरसइ चित्ति,
नेमि जिणेसर केवि गुण, गाएसउ वहु भत्ति. १

जादवकुलसिंगारु पहु नेमिकुमारो,
समुद्रविजय नरहि-पुतु, सिवदेवि-मल्हारो,
सोहगसुंदर तरुणदेह, गुणगणभंडारो,
सिवसिरिरत्तउ गणइ चित्ति संसारु असारो. २

वनसइमंडन अह पहूतु, रितुराउ वसंतु,
चंपक वेउल वउल कमल, परिमलु विलसंतो,
कोइल कलिरवु करहि, जाणु वाजइ वर वीण,
मन्नावइ प्रियपाय लग्गि, तरुणी अहि दीण. ३

भमइं भमर मधुपानमत्त झंकारु करंता,
रितुरायह किरि भट्टथट्ट वर कित्ति पढंता,
पसरिउ परिमलु मलइवाउ, दसदिसि पूरंतो,
माणिणि कामिणि मनह माहि, तक्खणि चूरंतो. ४

कामिय वर सहकार साष, वंधंति हिंडोला,
हिंडहिं प्रियतम सरिसु, सरिसु गाइं इंदोला,
भंभलभोलिय वाल रंगि नव फागु रमंते,
दुक्खिय विरहिणि नयण नीरु नीझरण झरंते. ५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भास—लहवि विसंतु सहाइयउ, तरुणिय वलु अविलंवि,
सचराचरु जगि वसि कियउ, मयण सुहडु अविलंबि. ६

पेषवि पहुतउ महि वसंतु, अंतेउर लेई,
वहु परि केसवु नेमि सहितु जलकेलि करेइ,
राणिय रूपिणि पमुह, कुसुम आभरण करंति,
निय वर देवर देह, नेहगहिली मंडंति. ७

गाढइ आदरि नेमिकुमरु, निय वचन विनाणि,
सारगपाणिहि पाणिगहणु, मन्नाविउ प्राणि,
राइमई उग्गसेण धूअ, मागवि तिणि लीधी,
अट्ठ भवंतर तणइ नेहि, तक्खणि मनि वीधी. ८

मयण सुहड करिवाल सरिसु सिरि वेणीयदंडो,
कंतिसमुज्वलु तासु वयणु, ससिविंवु अखंडो,
भालथलु अट्ठमिय चंदु, किरि कंन हिंडोला,
भमुह धणुह सम विपुल, चपल लोयण कंचोला. ९

दप्पणनिम्मल तसु कपोल, नासा तिलफूलु,
हीरा जिम झलकंत दंतपंतिहि नहि मुलु,
अहिरु प्रवालउ, कंठु करइ कोइलसउ वादो,
राजल वाणिय वेणु वीणु ऊतारइ नादो. १०

भास—तसु भुयवल्लीय करि कमल, पीण पयोहर तुंग,
परिपूरिय सिंगार रसि, कणय कलस किरि चंग. ११

उइरि लंकालिय सीह जेम, सम त्रिवलि तुरंग,
नाहीमंडलु अह गहीरु, रोमावलि चंग,
पुलिनविसाल नियंबविंव कदलीथंभोरुह,
हरणिय जंघा, चरणजुयल पल्लव गुणचोरु. १२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जुवणवतिय लडसडंति, लावन्ननिहाणी,
कणयकंव सम कायकंति, तिहु भुवण वषाणी,
विनय विवेक विचारसील, लीला सुविसाला,
रंभ तिलुत्तम सरिस रूव सा राजल वाला. १३

समुदविजय उग्गसेण भुवणि मंडप वंधीजइं,
द्वारमइपुरि ठामि ठामि उच्छव मंडीजइ,
सिविदिवि राणिय धारणिय गोत्रिणिहि करावइ,
लाग अचार विचार सार अति फार करावइ. १४

अह सिंगारइ नेमिकुमरु निय करि सिवदेवी,
पहिरावइ देवंगु चीरु, चंदनि अंचेई,
षुंप खणालउ सीसु, मुकुटु रोपिउ मणिसारो,
कंनिहिं कुंडल झगमगंति उरि मोतिय हारो. १५

भास–वीरवलय हथिहि ठविय, अंगुलि मुद्दा संगो,
सुरतरु महि किरि अवइरिउ, सामिउ सामलअंगो. १६

सावण छठि सुकिल दिमसु, सिरि छत्तु वहंतो,
तुंग तुरंगम रहि चडेवि रवि जिम दीपंतो,
जादव कोडि सहितु, नेमि परणेवा चलइ,
रह गइ हइ पाइक्कभारु, महिमंडलु हलइ. १७

चमर चिंध सिकिरि झमालु, गयणंगणु छायउ,
सिविदिवि नंदणु दंसणत्थु दस दिसि जणु धायउ,
भेरी भुंगल तिविल ताल कंसाला वाजइ,
हरसिय नाचहि जादविणी, जादव मनि गाजइं. १८

न्हाइय धोइय रायमइ, धारणि सिंगारइ,
वालिय जादर तणउ चीरु, आछउ पहिरावइ,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भरियउ केतकि धुंपु सीसु सीमंत सिंदूरु,
भाल तिलउ माणिक्कनिलउ धरियउ किरि सूरु. १९

अंजनि अंजिय वेवि नयण, पत्रवेलि कपोलि,
मोतीलग ताडंक कन्नि, मुखि रंगु तंबोलि,
कंठु नगोदरु फुल्लमाल, उरि नवसर हारो,
करे ठिय कंकण रयणवलय, मुंद्रडिय अपारो. २०

भास–तसु कडि कंचण घग्घरिय, झणणणणण वाजंते,
चरणिहि नेउर रुणझुणइं, नहि आलतइ उज्जंति. २१

पेषवि वरु आवंतु सहिय, राजल इम जंपइ,
लोयण धुव तुं करि न देवि, वरु आवइ संपइ,
लाडिय लडहिय गउषि चडवि, पच्चक्खु अणंगो,
जोवइ प्रिय सव्वंगु चंगु, मनि पावइ रंगो. २२

जिम जिम लाडिय चपल नयणि जोवइ निय नाहो,
तिम तिम रंगु न माइ अंगि, मनिमाहि उमाहो,
तक्खणि दाहिणु नयणु फुरिउ, जाणिउ कुर माणि,
परिणइ नेमि न इणि समणि, इम वोलइ राणी. २३

ताम पहूतउ नेमिनाहु मंडप दुवारे,
देषिवि घण कुरलंत जीव वाडा मज्झारे,
बंधन कारणु जीव तणउ, सारहि पुच्छेइ,
गउरउ हुइसइ जानियह, इम सो पभणेई. २४

चिंतइ सामिउ मनह माहि, धिगु धिगु संसारो,
धिगु धिगु पाणिग्गहणुरंगु, जीवह संधारो,
धिगु धिगु वंधवनेहु एहु, धिगु धिगु गृहवासो,
एहु सयलु परमत्थि अत्थि गलिकंदलि पासो. २५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भास–भाउ भंजिवि जीवह तणउ, निय करि करुणासारो,
रहु वालवि घरि संचरिउ, सामिउ नेमिकुमारो. २६

अह मन्नावइ पाणिगहणु, बंधव प्रिय माय,
हथि पाइ लग्गेवि दीणु बोलइं विच्छाय,
नीठुरु चित्तु करेवि, नेहु भंजवि सव्वंगो,
नेमि न मन्नइ भवविरतु, मनि संजमरंगो. २७

प्रियतमु ग्यउ जाणेवि देवि राजल सचिंत,
छिन्नि वल्लि जिम धरणि पडइ, मुच्छा संपत्त,
त्रोडइ नवसरु हारु, कणइ कंकण तहि फोडइ,
मोडइ सयलाभरण, मयणपीडिउ तणु मोडइ. २८

हारु तासु प्राणापहारु, सिंगारो अंगारो,
भोग करइं मणि सोग, सुप दुक्खह भंडारो,
विलवइ, गोवइ विरहझाल, भागी मनि आस,
नेमिविमुक्किय रायमइ, मेल्हइ नीसास. २९

वोलइ लाडी सामिसाल, तुह कवणु विचारो,
जीवह दीधउ अभयदाणु, मह पुणु दुहभारो,
जासु न रूपु न गंधु न रसु नहु देहु न गेहो,
तुह मणि सिवसिरि तेह सरिसु कहि केउ सनेहो. ३०

भास–इम विलवंतिय रायमइ, नेमिनाहपरिचत्त,
परियणु कह नवि बूझवइ, विरहानल संतत्त. ३१

दाणि दलिद्दु दलेवि, लेवि संजमु भरु दुद्धरु,
केवलु नाणु लहेवि सिद्धि पत्तउ नेमीसरु,
भविय जिणेसरभवण रंगि रितुराउ रमेवउ,
कन्हरिसी जयसिंहसूरिकिउ फागु कहेवउ. ३२

॥ इति श्रीनेमिनाथफागः समाप्तः ॥ छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[४]

कृष्णर्षीय जयसिंहसूरिकृत

द्वितीय नेमिनाथ फागु

(सं. १४२२ आसपास)

वंदिवि सिवदिवि नंदनु, चंदनु जिम जगि सारु,
गाइसु नेमि कृपागरु, सागरु गुणहं अपारु. १

समुद्रविजय नृपसंभवु, दंभु विवज्जितु चित्ति,
नेमि न यौवनि माचइ, राचइ साचइ तत्ति. २

विरहिणिजनमनि चूर[इ], पूरइ मनमथ भाउ,
तरुवर कुसुमिहि सोहइ, मोहइ जगि रितुराउ. ३

वनि वनि कुसुमिहि विहसइ, वनसइ भृंग भ्रमंति,
पेषिवि विरहिणि चंपय, संपय कंप करंति. ४

वेउल्ल नवकलीसंकुल, वकुल फुरइ सच्छंदु,
सचकुरि महुपल सुंदरु, कुंदु रचइ आनंदु. ५

फलभरि भरिय विजउरिय, मउरिय वोरिय तुंग,
मधुकरि सेविय करुणिय, तरुणिय जिम गुण चंग. ६

विहसिय नलिणिय सरवरि, तरवरि भमरु न जाइ,
पाडल परिमलु सुविमलु, पुहविहि कहवि न माइ. ७

केतकि करइ कटालिय, पालिय जिम मनरंग,
नारंगि रंगि तरंगिय, संगिय वहु नव रंगि. ८

मलयानिलु तहि लहकइ, वहकइ परिमलु भूरि,
कोइल मधुर सु वासइ, त्रासइ पंथिय दूरि. ९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फिरि फिरि वनि वनि मधुकरनिकर करइं झंकारु,
जीतउ जगु करि अमरसु, समरसु किरि जयकारु. १०

अह हरि हरिसिउ निय मणि, रमणिय बृंद समेतु,
रेवयगिरि सिरि वर, सिरिनेमि सहितु संपत्तु. ११

लाज विलोपिय गोपिय, रोपिय द्रढ अनुरागु,
रस भरि प्रियतमु रेलइ, वेलइ खेलइ फागु. १२

देषिवि नेमि सु निरुतउ, विरतउ भव सुहवासि,
कान्हडि मांड रमांडिउ, पाडिउ त्रीनइ पासि. १३

कवणिय चंदणि अंचइ, खंचइ अंचलि अन्न,
कवणिय कुसुमिहि मारइ, धारइ कवणिय धन्न. १४

कवणिय परिमलआलउ, वालउ आणिवि देइ,
कवणिय जाणिवि अवसरु, चउसरु तासु धरेइ. १५

पभणइ गोपिय देवर, सेव रचइ तुह इंद,
भागि सुभागिहि सुंदरु, मंदिरु तुह गुणबृंद. १६

रूपिहि तुह अति रूडउ, कूडउ पुणु मनि काइं,
एक न परणिय तरुणिय, ईमइ यौवनु जाइ. १७

देवर अम्हि तुहु भेदिउ, खेदिउ एतिय वार,
हव पुणु एक न परणिय, तरुणिय त्रिभुवनसार. १८

गोपिय वोलु न छाडइ, मांडइ मानइ वोलु,
पहुतउ हरिसिउ हरिसिउ निय घरि, गुणिहि अतोलु. १९

वंधव काजि सु जागइ, मागइ उग्रसेणधूअ,
गोविंदि राजल पामिय, कामिय मणहर रूव. २०

सोहइ सिर वरि राजल, काजलसामल वेणि,
भालु सु मयण वरासणु, सासणु दीधउ तीणि. २१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वंकुडि भमुह भमाडइ, पाडइ सज्ज सुदेव,
लोयण अंचलि चंचलइ, त्रिभुवनु मन्नइ सेव. २२

श्रवणहिंडोला रइवर, नरवर किरि निरमोल,
सोहइ कंतिहिं ससहर, जसहर तासु कपोल. २३

उन्नत सरलिय नासिक, सासिक लइ आमोदु,
विलसिर कंतिहिं दंतिहिं, नवकुंद कलिय विनोदु. २४

जाणउ अहर पवालउ, आलउ अमृतह तासु,
कंतु सु कोइल समधुरु, मधुरु करइ जगु दासु. २५

तसु भुज सरलिय तरलिय, पीन पयोधर तुंग,
उयरि लंकालिय वालिय, लालिय त्रिवलि तरंग. २६

गजपति करवर पीवर उरुय, हरिणी जंघ,
कमल सुकोमल नव दल, पदतल गुणिहि अलंघ. २७

मोहणवल्लि नवल्लिय, सोहइ सा जगि वाल,
रूपि कलागुणि पूरिय, दूरिय दूषणजाल. २८

विहु दिसि मंडप बांधिय, सांधिय धयवडमाल,
द्वारवती घण उच्छव, सुंदर वंदुरवाल. २९

अह वरि जादरु पहिरिउ, सुभरिउ केतक घुंपु,
मस्तकि मुकुटु रोपिउ, ओपिउ निरुपम रूपु. ३०

श्रवणिहि ससिरविमंडल कुंडल, कंठिहिं हारु,
भुजयुगि रंगद अंगद, अंगुलि मुद्दियभारु. ३१

सहजिहि रूपि न दूषणु, भूषण भासुर अंगु,
एकु कि गोविंदु इंदु कि चंदु कि अहव अनंगु. ३२

चालिउ रहवरि आरुहि, सारहि सहितु जिणिंदु,
पूट्ठिहि चालिय जादव, भादव किरि घनवृंदु. ३३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तरुणिय चामर वीजइ, दीजइ सिर वरि छत्र,
लूणु उतारइ वहिणिय, रमणिय रूप विचित्र. ३४
गोपिय गीतु ति गायइ, वायइ तूरिय तूर,
कंन्हडु निय मणि हरिसिइ, वरिसइ कंचणपूर. ३५
आवतु रूपि विसेषिउ, देषिउ नेमि तुरंतु,
सहियर राजल जंपइ, संपइ आवइ कंतु. ३६
सीसिहि मोतिय जालिय, वालिय कंचणदेह,
ऊगटि कीधी वयणिहि, नयणिहि काजलरेह. ३७
कन्निहि वेसिय कुंडल, चंचल ऊरि वरि हारु,
कंठि नगोदरु परठिउ, करि ठिउ कंकणभारु. ३८
कडिहि पटोलिय पहिरिय, गहिरिय गुणगणि वाल,
चरणिहि नेउर रुणुझुणु रुणुझुणु करइ विसाल. ३९
गउषिहि चडिय निभालिय, वालिय निय वर वाट,
आवतु प्रियतमु दीठउ, मीठउ अनु जन थाट. ४०
राजल हरसिहि गहिलिय, वहिलिय निय मणि थाइ,
पूरिय प्रेमतरंगिहि, रंगिहि अंगि न माइ. ४१
जाणि विलक्खणि लक्खणि, दक्खिणु अंगु फुरंतु,
राजल वोलइ ईणि न समणि न परिणइ कंतु. ४२
अह वर मणिकरधोरणि, तोरणि नेमि पहूतु,
वाधउ वाडइ पसुगणु, सकरुणु दीठु रुवंतु. ४३
वंधणकारणु दारुणु, जाणिउ निय वीवाहु,
वंध विछोडिय फोडिय, जीव ति वलिउ सुनाहु. ४४
लाडिय देषिवि ग्यउ वरु, अथिरु सु चित्त मझारि,
निवडिय धरणिहि धसकिय, न सकइ देहु स धारि. ४५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केसकलापु विछोडइ, फोडइ कंकण फार,
राजल अंगु सु मोडइ, त्रोडइ मोतियहारु. ४६

जोवइ प्रियतमु वलतउ, अलतउ फेडइ होठि,
विरहिहि वलि वलि विदलिय, विकलिय न करइ गोठि. ४७

कारणि किणि हउ मूकिय, चूकिय तुह गृहवास,
हउ तइ सामिय गाजिय, भाजिय मह मन आस. ४८

तावइ मह तनु चंदनु, चंदु नवलु दुहकंदु,
तुह विणु हारु कुठारु सु, भोगु हुवउ पुणु मंदु. ४९

इणि परि विलवइ रोवइ, गोवइ विरहह झाल,
सहियर सुवचनु आपइ, रापइ राजल वाल. ५०

अह निमि जिणवरु हरसिउ, वरसिउ दाणु सु देइ,
जाइ ति रेवय अंववणि, सुभ मणि संजमु लेइ. ५१

केवलनाणिहि वाणिहि, छेदिउ संसय कंदु,
सीधउ सिवपुरगामिउ, सामिउ नेमि जिणिंदु. ५२

कीधउ कन्हमुनीसर, गणहर जयसिंहसूरि,
फागु रे सुणतह गुणतह, पापु पणासइ दूरि. ५३

॥ इति श्रीनेमिनाथस्य फागुः समाप्तः ॥ छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[५]

प्रसन्नचन्द्रसूरिकृत

रावणि पार्श्वनाथ फागु

(सं. १४२२ आसपास)

रावणि पहु रलियामणउ, गाइसु पास जिणिंदो,
आससेणनरायकुलनहयलपूनिमचंदो. १

अह जमुण गंगनइ अंतर, ए सुरलोयसहोअरु,
रावणि नामु पसिद्धु गामु, नरनारि मणोहरु,
दससिरनंदण तणउ एहु जाणिज्यउ निवेसो,
पास जिणिंद प्रभावि, पयडु छइ पुण्यप्रवेसो. २

ताल विसाल रसाल, सालहिं ताल तमाल,
पारसपीपल घण पलास, पुलंद्रूअ प्रियाल,
करपट कंचणयार, कउठ करमंदी विंद,
महुय मणोहर मंदयार, माल्हइ मचकंद. ३

सीसमि सरघूअ सरल, साग सिंभालि सलीसइ,
वंसयालि वडि वरुण पमुह वणसइ जहिं दीसइ,
जात्रिगु जणु चालंत, छाह अति घणु हरिसेई,
सूआ सालहि मोर सवदु सुणि मणि विहसेई. ४

सरवर निरमल नीर भरिय, हंसिहि परिवरिया,
सालि सुगंधिय तणा खेत्र, पगि पगि अवयरिया,
धूवडि धावलियालडी ए धसमसती चालइ,
लडसडंत लहकंत वेणि, दूधिहि जिणु न्हावइ. ५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गाम गमारिय गोवलिणी, जहि गेलि करंते,
सरले तरले लोयणडे, हसि हियउं हरंते,
तिणि पुरि पासह वर भुवणि, चालउ वहु दिसि नारे,
फाग छंदि अम्हि खेलिसुं, सारु जुई हु संसारे. ६

अह दक्षिणु वाइउ वाउरा उरितु तणउ पहूतउ,
दिसि दिसि हरसि रमंत, लोउ मनमथि गुणि गूतउ,
जाती चंपक वउल, वेल परमल ऊछलिया,
सेवत्रडी मचकुंद कुंद, सुंदर सवि मिलिया. ७

आवुला डाल सुहावणी ए, मंजरि महमहए,
पाडल पुहवि न माइ गंधु, नारिंगि गहगहए,
वीजउरी बहु भंगि भरिय, नवकुसुमह भारो,
सरवर विहसइ विउल, कमल महुअर झंकारो. ८

दमणुलो मातउ वण मझारि, मरुअउ मणु मोहइ,
दाडिम दीसइ अति सुरंग, केसुअडउ सोहइ,
कोइल कलिरवु आगलउ, किरि अमियह ऊलटु,
मयणराय भडि पामियउ, तिहुयण ऊपरवटु. ९

भास–ईणि समइ प्रभु पूजियइ, कीजइ निरमल देहो,
रावणिमंडणु पास जिणु, पुहविहि सुरवरु एहु. १०

अह नागनाहफणमंडलिहिं मंडिउ जिणनायकु,
मेछमाणनीदलणु, सयल वंछियफलदायकु,
सीह जेम एकलमल्लु, वणमाहि वईठउ,
विघनगयंदविडारणउ, विहु नयणे दीठउ. ११

चंदण कंकुम घण कपूर, कसथूरिय लेविणु,
पूज रचिसु पहु पासनाह, करि न्हवणु विलेविणु,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आरत्तीय मंगल पईय, वर धूवनिखेवो,
ढोइय फल नालियर वहुल, जनमह फलु लेवो. १२

तां लगि चंचल चोर चरड पहियह कंपायहिं,
तां लगि लोयह रोगसोगसंचय संतावइ,
ता लगि दुट्ठ दरिद्द दियइ दीणत्तणु, सामिउ
जा लगि रावणधणिउ वीरु दीसइ सिवगामिउ. १३

जइ लाभइ माग्यउ जिणिंद, कीमइ संसारे,
ता वीनत्तीय अम्ह तणी, एक जि अवधारे,
वम्मादेवी तणइ रायहिव सेवह देव,
आपणडा पयकमल तणी, नितु देजे सेव. १४

भास–इम खेलेविणु हरिस भरि, पूजिउ प्रणमिउ नाहो,
मागिउ वंछिउ आपणउ, पूगउ मनह ऊमाहो. १५

अह रावणसामीय पासनाह जिण फागु पढीजइ,
निम्मल सावय जनम तणउ इम फलु पामीजइ,
वादिय जयसिंहसूरि पट्टह सिणगारो,
पसनचंद सुणि[रि] ईम भावि पभणइ गणहारो. १६

॥ इति श्रीरावणि पार्श्वनाथ फागुः समाप्तः ॥ छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[६]

अज्ञात कविकृत

जंबुस्वामी फाग

(सं. १४३०)

वंदिवि वीर कृपानिधि, सानिधि दान अपार,
पामीय सुहगुरु आयसु, गाइसु जंबकुमारु. १

मगधदेशमुखभूषण, दूषणरहित निवासु,
नयर राजगृह राजए, गाजए जगि जसवासु. २

सोहइ तहिं सुगुणायर, सायर भरीय गंभीरु,
रिसहदत्त विवहारीयु, धारीय निज मनि धीरु. ३

तास घरणी गुणधारणी, धारणी नाम प्रसिद्ध,
अमीयवेलि जिम मंदिर, सुन्दरी सीलि समिद्ध. ४

जंबुकुमरु तसु नंदन, नंदन तरु समु छायु,
कायकंति बहु भासरु, वासरनउ जिम राउ. ५

निरुवम रूवि पुरंदरु, सुंदर सोहग सारु,
कदलिदलावलिकोमलु, निम्मल जस आधारु. ६

ससिमंडल गंगाजल उज्जल, गुणि संजुत्तु,
लावनसिरिलीलावन, जोवनवय संपुत्तु. ७

इणि अवसरि गहगहतउ, पहुतउ मास वसंतु,
दक्षिणवाय विकासीय, वासीय वनि विहरंतु. ८

रमलि कतूहल कलीउ, मिलीउ निज परिवारि,
जंबुकुमरु बहु तरिवरि, गिरिवरि गिउ वैभारि. ९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कामीय केतिकि परिमलि, रमलि करइ बहु भंगि,
रमइ रसालि तरुणीय, करणीय नवनव रंगि. १०

पंथीयजनमनदमणउ, दमणउ देखि अनंगु
रंग धरइ मन गरुउ, मरुउ पल्लव चंगु. ११

कामिणिमन तणु कंपक, चंपक वन बहकंति,
कामविजयधज जमणीय, कदलीय लहलहकंति. १२

परिमल केलिअ मातीय, जातिय जिम विहसंति,
महूयर तिम तिम रुणझुण, रुणझुणकार करंति. १३

वनि सेवत्रीय वेउल, वेउ लहइं बहुमान,
वउलसिरि वनि खेलइ, मेल्हइ मानिनी मान. १४

वालउ सुरभि सुआलउ, आलउ मयण नरिंद,
पाडल परिमल विकसीय, विहसीय नय मुचकंद. १५

जिम जिम दाडिमि पाचइ, माचइ तिम रितुराउ,
रायणि डालि लहलहतीय, वहतीय फलसमवाउ. १६

फलभरि भरिय बीजउरीय, मउरीय मंजरी चंग,
नारिंगी फल अति नमतीय, गमतीय मनिहि सुरंग. १७

कुसुम तणइ भरि सोहइ, मोहइ मन जंवीर,
कुवलयदल बहु विकसइ, निवसइ वनि कणवीर. १८

कमल सरोवर वासइ, वासइ हंस गंभीरु,
मयणराय पहराउत, राउत किर अति धीरु. १९

फलदलभारि मनोहर, मोह रचइ सहकार,
मंजरि मउर बहकइ, टहकइ कोइलि सार. २०

इणि वनि खेलीय वलिउ, मिलीउ सोहमसामि,
अमीय समाणीय वाणीय, निसुणिय सुहपरिणामि. २१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सपरिवार घरि आवइ, भावइ नवि संसार,
जणणीय मांड मनावीय, तउ वीवाह कुमार. २२
घरि घरि गूडीय लहकइ, झलकइ तोरण बारि,
रंगि तरंगि गायइ, [वायइ] हरखि न नारी. २३
कन्या अभिनव जोवन, सोवनवन्न समाणा,
मागीय रूवि तिलुत्तम, उत्तम वंस पहाणा. २४
आठइ दिसि मनरंजन, अंजन भूमहीय नारि,
आठइ गुणसंपन्नीय उपन्नि संसारी. २५
सिर वरि वेणीय लहकइ, महकइ चंपकमाला,
रतिपति धणुं समाणउ, जाणउ भाल विसाला. २६
भुमहिय रूव कुसुससरि, अवसरि तोरणमाल,
त्रिभुवन जय उल्लासिहिं, लासिहिं कीय समकाल. २७
लाडीय पंकयलोयणी, जोयणी जगमनमोह,
कन्नजूयल रसलवणिम, निरुवम सारणि मोह. २८
गरुडचंचु सम सरलउ, तरलउ नासावंसु,
अहरविंब परवालिय, लालीय राग विसेसु. २९
विमल कपोल ति दीपइ, जीपइ दिणयरकंति,
दंतपंक्ति दाडिमकलि, मिलीय रहीय एकंति. ३०
कोइलि मोर मरालीय राखीय, विनिजीय जेण,
कंठु तिरेहउ छाजइ, गाजइ कारणि तेण. ३१
अति सरलिय भूयजुयलीय, कुंयलीय कमल समाण,
पाणिजुयल नहकिरणिहिं, अरुणिहिं रागनिहाण. ३२
मनमथि ठवीय पयोहर, मोहरसावलि तुंग,
लवणिम भरीय अंकुरीय, पूरीय रागि नितंब. ३३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्रिभुवनमोहणी तिवलीय, त्रिवलि जिसी मृगनाभी,
कामकेली षड् दोषली, छलीय रसालीय नाभी. ३४

कीरतिथंभ समाणीय, आणीय उरु समान,
मयणराय आरोपिय, लोपिय जगजणमान. ३५

चलण ति कमल हरावइ, नावइ कुणि उपमानि,
कन्या एउ सलुणिय, कुणिय नवि गुणी मानि. ३६

हंसवसहगयगमणीय, रमणीय नयण मिलंति,
जंबुकुमर नवरंगिहिं, अं[गि]हिं सिणगारंति. ३७

सिरि खूंप सिखराउल, वास उंच एक चारु,
कुंडल मुकुट मनोहर, सोह रचंति अपारु. ३८

अंगद बाहु झलकइ, लहकइ मोतीय हार,
पहिरिय अंग सुरंगीय, अंगीय जादर सार. ३९

कुमर रथिहिं आरोहीय, सोहिय नव सिणगारि,
कुतिग अतिहि उतावली, मिलीय सयल पुरनारी. ४०

इणि रूविंहिं अवयरियउ, सहीय महीय अमरिंद,
जंबुकुमर वर चालइ, आलइ मनि आणंद. ४१

महुर गुहिर सरि गोरीय, धोरीय धवल निनाद,
तूर तिवलि, जय बंदीय, जय जय मंगल साद. ४२

सिरहि छत्र चामर ढलइ, मिलइ ति लोक अनेकि,
बहिनडी लूण उतारइ, वारइ असुह विवेकि. ४३

जंबुकुमरु इणि उच्छवि, सुच्छवि आठइ नारि,
सुजनि मांड परणाविउ, आविउ निय घरबारि. ४४

वासभवनि तिहं पइठउ, बइठउ गउख मझारि,
आठ नारी आगल रही, सहीय सहित सिणगारि. ४५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केसर कुमकुम ऊगटि, उलटि करि सुविसाल,
सिरि संथइ उद्योतीय, मोतीय तिलक झमाल. ४६

नयणिं तुलीय जमणाजल, काजल सामल रेह,
करइ कडक्ख तरंगिहिं, रंगिहिं सुरह सिणेह. ४७

अगर कपुर कस्तूरीय, पूरीय रहइपोलिक,
नयणकमलि ससिनिरमल, रमलि रची तंबोलि. ४८

कानिहिं कंतिहिं मंडल, कुंडल लहलहकंति,
नव सिणगार सहोदर, नगोदर झलझलकंति. ४९

उयरि कंचूउ तडक्कइ, लहकइ नवसर हार,
कणयवन्न करि चूडउ, रूडउ तस झलकार. ५०

पहिरणि चीर[१] पटुलीय[२] वउलीय[३] मूल विचारि,
चूनडली नवरंगीय,[४] चंगीय[५] ऊढणि सार.[६] ५१

चरणि पवर अंतेउर, नेउर रणझणकार,[७]
अहिनव[८] अलतउ निरतउ, धरतउ[९] रंग[१०] अपार.[११] ५२

इणि सणगारि[१२] न राचइ, साचइ रसि अणुरत्त,[१३]
निसुणउ[१४] नारीकथानक,[१५] थानक चलइ न चित्त.[१६] ५३

मृगनयणी प्रतिबोधइ, रोधइ निज मनि काम,
चरडराउ अह अहिनवु,[१७] प्रभवु पइठउ ताम. ५४

पांचसइ[१८] सिउं[१९] बूझइ, सूझइ थिर वयरागी,[२०]
निय[२१] मायपिय सिरसउ,[२२] सरसउ संजम[२३] मागि.[२४] ५५

---

१ चीरु. २ पटोलिय. ३ वउलिय. ४ नवरंगी. ५ चंगी. ६ सारु. ७ रुणुझुणुकारु. ८ नहिनति. ९ झरतउ. १० अंगि. ११ अपारु. १२ सिंगारि. १३ अणुरत्तु. १४ निसुणिय. १५ नारि. १६ चित्तु. १७ अहिनिसि. १८ पंचसय. १९ सेउ. २० वइरागि. २१ नियय. २२ सरिसउ. २३ आ शब्द पाठान्तर माटे स्वीकारेली प्रतमां नथी. २४ मांगि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कन्या आठइ आपणि, पणि प्रभवउ[१] पिय[२] साथि,
पामीय[३] चरण निरुवम,[४] सोहमगणहर हाथि.[५] ५६

कलीय महाबल[६] केवलु,[७] केवल सिअ[८] अभिरामि,[९]
सिवमहिमा[१०] महमहतउ, पहूतउ[११] जंबुसामि. ५७

जिण[१२] जगमाहि विदीतउ, जीतउ रति भरतार,[१३]
सोइ[१४] नयण आणंदउ,[१५] नंदउ[१६] जंबुकुमार.[१७] ५८

फागु वसंति जि खेलइ, बेलइ[१८] सुगुण निधान,[१९]
विजयवंत[२०] ते छाजइ,[२१] राजइ तिलक समान.[२२] ५९

चउदह तीस[२३] संवच्छरि,[२४] मुच्छरि[२५] मानि[२६] विमत्तु,[२७]
जंबुय गुण अनुरागहिं, फागिहिं[२८] कहीय[२९] चरित्तु. ६०

[३०] श्रीजंबुस्वामीफागः समाप्तः । पं. साधुरत्नगणिना लिखितः ।
परीक्ष० पदमा पठनार्थे । शुभं भूयात् ।

---

१ ओ. २ किउ. ३ पामिय. ४ निरोपम. ५ साथि. ६ महावल. ७ केवल. ८ सिव. ९ अभिराम. १० सिविमहिमा. ११ पहुतउ. १२ जिणि. १३ भरतारु. १४ सोवन. १५ अटांदउ. १६ टांदउ. १७ जंबुकुमारु. १८ वेलइं. १९ निधानु. २० विजयवंति. २१ छाजइं. २२ समानु. २३ तास. २४ संवत्सरि. २५ माच. २६ आ शब्द बीजी प्रतमां नथी. २७ विमुक्त. २८ फागिहि. २९ कहिउ. ३० बीजी प्रतमां नीचे प्रमाणे पुष्पिका छेः 'इति जंबूस्वामिफागु समाप्त' ॥ छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[७]

मेरुनन्दनकृत

जीरापल्ली पार्श्वनाथ फागु

(सं. १४३२)

समरवि त्रिभुवनसामणि,[१] कामणि[२] सिरसणगारु,[३]
कवियण वयणि ज[४] वरसइ, सरस[५] अमिउ[६] अपारु. १

विधनविणासणु[७] सासणु,[८] सामिउ[९] पासकुमारु,
गायवि[१०] सिरिजीराउलिराउ लिउ[११] फलसारु. २

सिरिअससेण महीपति, दीपति कुलआधारु,[१२]
जुवति सती अभिरामा, वामादेवि मल्हारु.[१३] ३

पासकुमरु तसु जातक[१४] पातकहरु[१५] जगसामि,
सेवकदुरितपयंकरु,[१६] संकरु[१७] लीधइ नामि. ४

रमतलइ जेण भुजंगमु,[१८] जंगमु[१९] पोडि मझारि,
जलणि जलंतउ रापिउ, दाषिउ फलु[२०] नवकारि. ५

कमठ कठोरु पयोधरि धरिउ जो नवकारि,
मुगतिरमणिमनरंजणु, भंजणु भावठि भारि.[२१] ६

जीराउलीय सतीसय,[२२] दीसइ तसु अवतारु,
एकलमलि जिण[२३] सादरि, आदरिउ[२४] जगभारु. ७

---

१ सामिणि. २ कामिणि. ३ सिरिसिणगार. ४ जु. ५ सरसइ. ६ दानि. ७ °विणासण. ८ सासण. ९ सामिय. १० गायवउ. ११ लियउ. १२ °आधार. १३ मल्हार. १४ जातकु. १५ पातकुहरु. १६ °खयंकर. १७ संकर. १८ भुजंगम. १९ जंगम. २० फल. २१ सारु. २२ सलीसइ. २३ जिणि. २४ आदरियउ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चउरासिय नरनायक, पायक भड सपराण,
चोर चरड बहु मानइ, मानइ[१] सिरि जस[२] आण. ८

जसु डरि करि[३] धरि नियं[४] प्रिय, त्रिय नितु जंपइ ईम,
कूडइ मनि पासह तणी, धणिय म लांघसि[५] सीम. ९

घरणि भणइ—सुणि चोरला[६], मोरला[७] वयणु अयाण[८],
पास पहिय म न ढुकिसि, चूंकिसि तू निज प्राण. १०

जइ[९] प्रभुपंथि वहंतडा, कंथडा पाडसि[१०] वाट,
आपणपउं दुषि पाडसि[११], पाडसि[१२] अम्ह वय वाट. ११

देसि विदेसि जयउ[१३] प्रिय, पिउस म[१४] पासह कोस,
अम्हि रहिसिउं इणि देसहि, देसि म पाछइ दोसु. १२

मूरष मन म न ढाढसि, काढसि तउ गढ सापु,
आगइ इणि प्रभुलांछणि, लांछणिउ तूं बापु. १३

जीराउलउ न कोपसि, रोपसि तउ सिरि भागु,
अवरु नयरु पण[१५] पामिय, सामिय मान जि भागु. १४

इणि अवसरि कहि केवडु[१६], एवडु[१७] जासु प्रतापु,
कलिजुग राजि जि धोरिय, गोरिय भणइ ति बापु. १५

जिणि दिणि देवह जोइ न, कोइ न पूछइ सार,
तिणि [दिणि] बंभण षत्रिय, जात्रिय[१८] वर्ण अढार. १६

इणि महिमागुणि रंजिय, अंजिय नयण विसाल,
मुषि तंबोलि सुरंगिय, रंगिय अधर प्रवाल. १७

---

१ माणइं. २ जिम. ३ उरि. ४ निज. ५ लंछसि. ६ मोरला. ७ चोरला. ८ वयण. ९ जसु. १० पाडिसि. ११ पाडिसि. १२ पाडिसि. १३ गयु. १४ पियसि म. १५ घण. १६ केवडउ. १७ एवडउ. १८ जातिय.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लडहियतणि लडसडतीय, घडतीय भाव रसाल,
नेहगहिल्लिय हियडुला, प्रियडुला जंपइ बाल. १८

जइ प्रिय प्रेम अकारिम, वारि म तउ अम्ह आजु,
पासु वंदावि कही वरि, अवरि न भूषणि काजु. १९

घरणि वयणि रोमंचिय, चंचिय सवि भरतार,
सोवन अनइ सुगंधहि, बंधहि कहि किम वार. २०

तक्खिण[१] पंथिविगाहण, वाहण वेगहि जूत,
पास जिणेसर सुंदर,[२] मंदिरि[३] बारि पहूत. २१

दरिसणि[४] सामिउ मीठउ,[५] दीठउ[६] अमिय समाणु,
पूजमहिम अति ओपिय,[७] रोपिय पुण्यप्रमाणि.[८] २२

आविय मेछि अषंडित, मंडित निज निज वेसि,[९]
चउदिसि[१०] तणिय सुयालिय, बालिय मंडप देसि. २३

जसु मुखकमलु[११] निरूपम, रूपम[१२] दिउ ससिबिंबि,[१३]
सरल तरल जसु[१४] वीणिय, लीणिय रमइ नितंबि. २४

गूजरडी[१५] गुणवंतिय, तंतिय सर अवतारि,
मधुर वयण[१६] जव बोलइ, तोलइ कुण संसारि. २५

सरलिय अंगि लता जिम, ताजिम नमतीय वांकि,[१७]
सोरठणी[१८] मनि[१९] गउलिय, कउलिय[२०] मानि ज लांकि.[२१] २६

सामलडी[२२] धण मारुय,[२३] वारुय[२४] नयण तरंगि,[२५]
हावभाव नवि जाणइ, आणइ पुणि मनु[२६] रंगि. २७

---

१ तक्खणि. २ मंदिर. ३ सुंदर. ४ दरसणि. ५ दीठउ. ६ मीठउ. ७ उपिय. ८ प्रमाण. ९ वेस. १० चिहुदिसि. ११ °कमल. १२ रूपम. १३ °बिंब. १४ जुसु. १५ गूजरडिय. १६ वयणि. १७ वंकि. १८ सोरठिणिय. १९ यति. २० कवलिय मान. २१ लंकि. २२ सामलजय. २३ वारूय. २४ मारूय. २५ तुरंगि. २६ मनरंगि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सिंधुय सहजि सभागिय, जागिय लवणिम खाणि,
अंगि अनोपम चोलिय,[१] भोलिय वचन विनाणि. २८

ढीलिणि[२] अनु नागोरिय,[३] गउरिय सोहग पूरि,
जसु वर वदनि[४] कलंकिउ, पंकिउ चंदल[५] दूरि. २९

चंचल चपल सलूणिय, ऊणिय सहजि न[६] रूपि,
वाणिविलासि विचक्षण, दिक्षणडी[७] रसकूपि. ३०

अइसि[८] मलिय[९] महेलिय, खेलिय नाचय[१०] रंगि,
पासकुमर[११] गुण गायहि, मायहि हरषि न अंगि. ३१

चरण चकोरि[१२] ति चमकइ, झमकइ नेउर नादि,
कलपलता करि ठेलइ, रेलइ कंकणसादि. ३२

निरखइ[१३] कंठि सलूणिय, कूणिय आणय[१४] द्रेठि,
सुरवर सयल वियंभिय, थंभिय तिम जण हेठि. ३३

इणि छलि रति पभणइ, वर गरभु[१५] म आणसि चीति,
पासभमणि[१६] जोय[१७] लोपइ,[१८] कोपइ[१९] तू[२०] सवि रीति. ३४

तिणि अभिमानहि रतिपति,[२१] रतिपति मास वसंत,
षोभ भणी अवतारिउ, भारिउ कुसुम[२२] हसंत.[२३] ३५

गिरिवरि गिरिवरि, पुरि पुरि, वनि वनि परमल[२४] सार,
दीसइ विहसय[२५] जणसइ,[२६] वणसइ भार अढार. ३६

---

१ चालिय. २ ढीलणि. ३ नागउरिय. ४ वदन. ५ चंदलउ. ६ निरूपि. ७ दक्षिणडी. ८ अइसिय. ९ मिलिय. १० नाचइ. ११ °कुमरु. १२ चकोर. १३ निरुवम. १४ आणइ. १५ गरवु. १६ °भुवणि. १७ जइ. १८ कोपिय. १९ लोपिय. २० ते. २१ रितुपति. २२ कुसुमि. २३ हसंतु. २४ परिमल. २५ विसहइ. २६ जणसय.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दक्षिण[१] वाउ महीतलि सीतल लहकिउ[२] जाम,
विरहि[३] नीसासड[४] कालउ, वालउ बहिकिउ[५] ताम. ३७

सकल कमल वनि महकिय, टहकिय कोयल[६] जाण,
पंथिय मनि दुष धरतिय, वरतिय मनमथ आण. ३८

वाजइ झुणि अलि केरिय, भेरिय प्रथमारंभि,
पान तणइ मिसि ऊडिय, गूडिय कदलिय थंभि. ३९

बहुफलि नमइ बीजुउरिय, मउरिय अंब रसाल,
सहजि सुभागहि[७] रुयडला सूयडला खेलय[८] डाल. ४०

मधुकर नादिहि जंपक चंपक अति अभिराम,[९]
वनसिरि दीव[१०] ऊतारति आरतिया सिरि काम.[११] ४१

वेउल पाडल करुणिय, अरुणिय दाडिम फूलि,[१२]
लीजइ एक अ वाटडी, वाटडी छाडइ भूलि. ४२

परिमल दस दिसि[१३] वासइ, वासइ सारस हंस,
खेलइ नारि सरीसइ,[१४] रीसइं[१५] सइ अवतंस. ४३

पंथि जि वहइ अकारण, दारण ताह जंभीर,
हरषु[१६] करइ तीह केतक, जेतक साधइ वीर. ४४

पंथि कि पंथिय[१७] सोणिय, सोणिय कुसुम पलास,
देषवि तरुण प्रवासुय, हासूय छंडय आस. ४५

वणसइ माहि पसायणि, रायणि अनु कणयार,
अवर मनोहर गरुयर तरुयर फलिय अपार. ४६

---

१ दक्षण. २ लहकइ. ३ विरह. ४ नीसासडे. ५ बहकिय. ६ कोइल. ७ सभागिय. ८. खेलइ. ९ अभिमान. १० दीप. ११ सरि. १२ फूल. १३ दिसिदिसि. १४ सईसर. १५ मीस रचइं. १६ हरष. १७ सोधिय.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तिणि षणि त्रिभुवन कंपइ, चंपइ रतिपति सीम,
मोर[1] मधुर सरि आलवइ, जालवइ विरहिणि[2] कीम. ४७

विरहिणि[3] एक भणइ, सहि कहि किम आवइ नाहु,[4]
महु[5] तनि सीतलु[6] चंदन, चंद न फेडइ दाह. ४८

एकि[7] भणइ, कुलदेवति सेवति तू जगसामि,[8]
प्रिय परदेसि पहुतउ, गूतउ कवण विरामि.* ४९

इणि परि जगु जगडंतउ कंतउ रति वरनारि,
सहिउ वसंतिहि धाईउ, आईउ पासह बारि. ५०

देखिउ जात्रणि खेलिय, भेलिय मनि नवकारि,
पासभगति अधिकेरिय फेरिय मनह मझारि. ५१

अवसरु नही अमीणउ, हीणउ चिंतय मारु,
बुद्धि विमासिय नाठउ, घाठउ रतिभरतारु. ५२

प्रभुपगि लागी मनावइ, आवइ मास वसंतु,
जय जय रवु जगि वाजिउ, गाजिउ जिण जयवंतु. ५३

जात्रिय हरषि अंकूरिय, पूरिय सवि मन आस,
प्रभुदरिसणि वलि कामिउ, पामिउ निज निज वास. ५४

सिरिजीराउलिनायक, दायक बुद्धि अपार,
इणि परि पुरि पुरि गाजइ, छाजइ तू अवतारु. ५५

थंभणपुरि सेरीसइ दीसइ महिमा सारु,
फलवद्धिय करहेडउ, फेडउ दुरितविकारु. ५६

---

१ मोरु. २ विरहणि. ३ विरिहिणि. ४ नाह. ५ मज्झ. ६ सीतल. ७ एकु. ८ जगिसामि.

* विद्याभवानी प्रतमां अहीं एक पत्र खूटतुं होवाथी आ पछीनो काव्यांश नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राषिउ जिणि संषेसरि अवसरि सारंगपाणि,
जरासिंधु बलि फीतउ, जीतउ जासु प्रमाणि. ५७

पंचासरउ चिंतामणि नवपल्लव नव षंडु,
पास जिणिंदु जयउ जगि, सोहगि दानि अपंडु. ५८

चउद बत्रीसइ संवति, संमति ले गुरु पासि,
जीराउलिपति गाईउ, छाईउ जग जसवासि. ५९

पासह फागु सु नंदउ, चंदउ जा अभिरामु,
सोहइ मेरु सुनंदउ, नंदउ मुनिजन वामु. ६०

॥ इति श्रीजीरापल्ली पार्श्वनाथ फागु समाप्तः ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[८]

समुधरकृत

नेमिनाथ फागु

(सं. १४३७ पहेलां)

[1]अरे[2] द्वारवती जादव मिलिय, पहुतुल[3] मासु वसंतु,[4]
अरे[5] आपुली[6] रलियहि[7] अम्हि[8] खेलिसउ[9], गाइसउ[10] राजलि[11] कंतु.[12] १

अरे अहूट कोडे[13] कुमरह[14] मिली,[15] सरिसा[16] दसय दसार,
अरे रेवइया[17] गिरि सहसंबवणि, जात[18] न लागीय वार. २

अरे वनु[19] रुयडउं[20] रलियावणउ[21] अनु विहसिय[22] वणराए,[23]
अरे वालउ वेउलु[24] विउलु,[25] सिरी केतकी[26] तहि[27] जाए.[28] ३

अरे[29] पाडल[30] चंपउ[31] पारती, कंडू[32] अनु[33] मचकंदु,[34]
अरे[35] सेवत्री[36] करणिय[37] घूंपु[38] भरि, रमइ ते अबला बिंदू.[39] ४

---

१ प्रारंभमां नीचेनी पंक्तिओ संवत १४९३ नी प्रतमां वधारे छेः

सरसति सामणि पणमवि, गुरु नमवि, अंबिक हियइ धरेवि,
फागु छंदि समुधर भणइ, नेमिचरिउ निसुणेवि. १

२ अहै. ३ पहूतलउ. ४ वसंतो. ५ आ शब्द. संवत १४९३नी प्रतमां नथी. ६ आपणी. ७ रली. ८ अम्हे. ९ खेलिवउ. १० गइवो. ११ राजल. १२ कंतो. १३ कोडि. १४ कुमारा. १५ मिलिया. १६ मिलियला. १७ रेवय. १८ जंत. १९ वन. २० रुयडं. २१ रलियमणउं. २२ विहसी. २३ वणराय. २४ वेउल. २५ वउल. २६ केतुकी. २७ करुणी. २८ जाइ. २९ संवत् १४९३नी प्रतमां नथी. ३० पाडलि. ३१ चंपकि. ३२ कुंद. ३३ अनइ. ३४ मचकुंद. ३५ बीजी प्रतमां नथी. ३६ सेवंत्री. ३७ करुणी. ३८ खुंप. ३९ वृंद.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अरे कोइलि[1] सादु सोहावणउ,[2] मोरि[3] मधुर वासंति,
अरे[4] भमरा रणझण[5] रुणु[6] करइ, किरि किन्नरि[7] गायंति. ५

अरे[8] हरि हरिखिउ[9] मनि आपणइ,[10] वासुलडी[11] वाजंति,[12]
अरे[13] सिंगा[14] सबदहि[15] गोपिय सोल सहस[16] नाचंति. ६

अरे कान्हडु[17] अन्नइ[18] नेमि जिणु,[19] खडोखलि मिलि जाइं,[20]
अरे[21] सिंगीय[22] जलभरे छांटियइ,[23] एसिय[24] रमलि कराइं.[25] ७

अरे[26] मधुसूदनु[27] जउ[28] इम भणइ,[29] रुपिणि[30] वयणु[31] सुणेहु,[32]
अरे[33] नेमिकुमरु[34] मुहु[35] बंधवु[36] पाणिग्गहणु[37] मनावेहु.[38] ८

अरे[39] सीष[40] देविणु सारंगधरु गयउ सो आगलु[41] छांडि,[42]
अरे[43] सोल सहस गोपिय[44] मिलि,[45] रहियओ[46] नेमि जिणु[47] मांडि.[48] ९

अरे[49] सिवदिवि[50] माडिय इउ[51] भणइ,[52] नेमि न[53] पूरए[54] आस,
अरे[55] तुहु[56] पुणु[57] एक न परिणए,[58] कान्हड सोल सहस. १०

---

१ कोयल. २ सोहावणउं. ३ मोर. ४ बीजी प्रतमां नथी. ५ रुणिझुणि. ६ झणि. ७ किन्नर. ८ बीजी प्रतमां नथी. ९ हरखिउ. १० आपणय. ११ वासलडी. १२ वायंति. १३ बीजी प्रतमां नथी. १४ संगीय. १५ सद्दहि. १६ सहस्स. १७ कन्हड. १८ अन्नय. १९ जिण. २० जाय. २१ बीजी प्रतमां नथी. २२ संगीय. २३ छंटणा. २४ इसीय. २५ कराइ. २६ बीजी प्रतमां नथी. २७ बृधुसूदन. २८ बीजी प्रतमां नथी. २९ बोलइ. ३० रुपणि. ३१ वयण. ३२ सुणेजे. ३३ बीजी प्रतमां नथी. ३४ नेमिकुमर. ३५ मझु. ३६ वंधवह. ३७ पाणिग्गहणु. ३८ मनावेजे. ३९ अरु. ४० सीख. ४१ आगलो. ४२ छाडि. ४३ बीजी प्रतमां नथी. ४४ गोपी. ४५ मलि. ४६ रहियउ. ४७ जिण. ४८ मंडि. ४९ बीजी प्रतमां नथी. ५० सिविदेवि. ५१ इम. ५२ भणय. ५३ बीजी प्रतमां नथी. ५४ पूरइ. ५५ बीजी प्रतमां नथी. ५६ तइ. ५७ पुणि. ५८ परिणिय.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अरे भाणुमती[१] अनु रुपिणि,[२] सत्यभामा[३] पभणेई,
अरे[४] नीरसो[५] नीठरो[६] निमि जिणु,[७] पाणिग्रहणु[८] न करेई. ११

अरे[९] कुरुल केस मृगनयणि[१०] ए,[११] मागु भरवि[१२] सिंदूरा,[१३]
अरे[१४] नयणकटखे[१५] आहणइ, मिलि सवि[१६] सामल धीर. १२

अरे ऊरहि ऊरहि आहणइ, के केसे ताणंति,
अरे[१७] काहउं नेमि नपुंसको,[१८] एक रमणि न करंति. १३

अरे[१९] सत्यभामा इम बोलए,[२०] मोरिय[२१] बहिनु[२२] काह,[२३]
अरे[२४] रूपि रंभा सामी[२५] तोलियइ,[२६] अवर नही अन नाहि.[२७] १४

अरे हंसगमण[२८] मृगलोयणी, चंदवयण[२९] सज[३०] बाल,
अरे[३१] पूनह[३२] विणु[३३] न हु[३४] पामियइ,[३५] उग्गसेणी[३६] सुकुमाल. १५

अरे[३७] साव सलखण[३८] राजल, रूपि[३९] नही अनु[४०] नारि,[४१]
अरे[४२] के[४३] सावत्रीय ब्रह्मा, के[४४] गवरी[४५] तिवरारि.[४६] १६

अरे रूप बहु[४७] अम्हि वन्निउ,[४८] हासउं[४९] किसउं[५०] बहूत,[५१]
अरे[५२] तोइ[५३] न नेमि जिणु[५४] भेदियउ,[५५] समुदविजयकउ पूतु.[५६] १७

---

१ भाणमती. २ अनुरुपणि. ३ सत्यभाम. ४ बीजी प्रतमां नथी. ५ नीलजु. ६ नीठरु. ७ जिण. ८ पाणिग्रहण. ९ बीजी प्रतमां नथी. १० मृगलोइणी. ११ बीजी प्रतमां नथी. १२ माग भरवि. १३ सिंदूर. १४ बीजी प्रतमां नथी. १५ कडखे. १६ सिंवि. १७ बीजी प्रतमां नथी. १८ नीसत्तो. १९ बीजी प्रतमां नथी. २० बोलइ. २१ मोरइ. २२ वहिन. २३ कुमारि. २४ बीजी प्रतमां नथी. २५ सम. २६ तोलए २७ वर नारे. २८ हंसगमणि. २९ चंद्रवयणि. ३० ससि. ३१ बीजी प्रतमां नथी. ३२ पुन्नह. ३३ विण. ३४ नवि. ३५ पमाय. ३६ उग्गसेणी. आना पछी 'धू' अक्षर बीजी प्रतमां छे. ३७ बीजी प्रतमां नथी. ३८ सलक्खण. ३९ रुप. ४० अनु. ४१ नारे. ४२ बीजी प्रतमां नथी. ४३ कि. ४४ कि. ४५ गउरीय. ४६ तिवरारे. ४७ वहू. ४८ वरनीय. ४९ होसं. ५० किसं. ५१ बहूतो. ५२ बीजी प्रतमां नथी. ५३ तोय. ५४ जिण. ५५ भेदियइ. ५६ पूतो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अरे[1] गोपिय मिलि बाहू[2] धरइ, देवर वयणु[3] सुणेहु,[4]
अरे[5] राजल परिण,[6] पसाउ करि, एहु मानु अम्ह देऊ.[7] १८

अरे आग्रहु[8] कियउ गोपिय, मानए[9] नेमिकुमारु,[10]
अरे[11] वद्धावउ[12] गउ वेगुलि,[13] हरिखिउ मनि गोविंदु. १९

अरे[14] माधवो मनि हरसियउ[15] भणइ, जानत्र वेगु[16] चलेहिं,[17]
अरे[18] सिवदिवि प्रमुह[19] दस[20] मातुर,[21] झत्तिहि मउड बंधेहिं.[22] २०

अरे वाजिय त्रांबक ढाकवूक,[23] वलियउ नीसाणे घाउ,
अरे[24] हय गय रह वर मिलिय,[25] चालिउ[26] जादवराउ. २१

अरे[27] धवल मंगल दियइं[28] गोपिय,[29] बंभी य[30] जयजयकारु,[31]
अरे[32] विप्र वेद[33] झुणि[34] तहि, चलिउ[35] नेमिकुमारु. २२

अरे के इहु[36] इंदु[37] के चंदु[38] के हरिहरु अरु बंभाण,[39]
अरे[40] सविहि[41] रूप विसेसउ, सिविदिवि[42] तण[43] नंदाण.[44] २३

अरे[45] जालगवक्खे[46] राइमइ, जोयए[47] पिउ[48] आवंतु,
अरे[49] रहवरि चडियउ[50] नेमि जिणु,[51] तोरणि[52] वेग[53] पहूत.[54] २४

---

१ बीजी प्रतमां नथी. २ विवाह. ३ वयण. ४ सुणेजे. ५ बीजी प्रतमां नथी. ६ परणि. ७ देजे. ८ आग्रह. ९ मनाए. १० नेमिजिणिंदु. ११ बीजी प्रतमां नथी. १२ वधावउ. १३ वेगलइ. १४ बीजी प्रतमां नथी. १५ हरिखिउ. १६ वेग. १७ चालेउ. १८ बीजी प्रतमां नथी. १९ मनि. २० आणंदिय. २१ माथइ; तेनी पछीनो 'झत्तिहि' शब्द बीजी प्रतमां नथी. २२ बांधइ. २३ ढक्कुक. २४ बीजी प्रतमां नथी. २५ मेलिय. २६ चालिय. २७ बीजी प्रतमां नथी. २८ दियइ. २९ गोपी. ३० मंडिय. ३१ जयकारो. ३२ बीजी प्रतमां नथी. ३३ विप्रकरम. ३४ आना पछी बीजी प्रतमां 'नेमि' शब्द छे. ३५ चालियउ. ३६ केहुइ. ३७ इंद. ३८ चंद. ३९ बंभाणु. ४० बीजी प्रतमां नथी. ४१ सवही. ४२ सिवदिवि. ४३ तणउ. ४४ नंदाणु. ४५ बीजी प्रतमां नथी. ४६ जालत्रि; तेनी पछी बीजी प्रतमां 'पेसइ' शब्द छे. ४७ जोवए. ४८ प्रिय. ४९ बीजी प्रतमां छे. ५० चडिउ. ५१ जिण. ५२ तोरण. ५३ बारि. ५४ पहूतु.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अरे कुरंगीए[१] दीठउ नयणुले,[२] करुण[३] पलाव करेई,
अरे[४] पाणिग्रहणु[५] तुह[६] सामियए,[७] ता[८] जीवबंधु होई. २५
अरे[९] धिगु धिग्[१०] इयउ[११] परिणवउ,[१२] जइं[१३] जीवह संहारु,[१४]
अरे[१५] पशुय[१६] मेल्हिउ[१७] रहु[१८] वालियउ,[१९] चालियउ[२०] नेमिकुमार.[२१] २६
अरे संवच्छरु दाणुं[२२] दियइ, सामिउ सोहग[२३] सारु,[२४]
अरे[२५] ऊजलि[२६] गिरिवर[२७] वेगिहि चडीउ,[२८] लीयउ[२९] संजम[३०] भारु. २७
अरे[३१] समुधरु[३२] भणइ, सोहावणउ फागु खेलउ सविचार,[३३]
अरे निमिकुमरु[३४] मतु[३५] मेल्हउ[३६] मुक्तिरमणि[३७] दातारु.[३८] २८

॥ श्रीनेमिनाथ फागु समाप्तः[३९] ॥ छ ॥

---

१ कुरंगीय. २ नयण. ३ करण. ४ बीजी प्रतमां नथी. ५ पाणिग्रहणि. ६ तुम्हि. ७ सामीय. ८ एउ. ९ बीजी प्रतमां नथी. १० धिगु. ११ इहु. १२ परिणेवउ. १३ जउ. १४ सिंहारो. १५ बीजी प्रतमां नथी. १६ पसूय. १७ मेल्हि. १८ रह. १९ वालिउ. २० चालियउ. २१ नेमिकुमारो. २२ दानु. २३ सोहग्ग. २४ सारो. २५ बीजी प्रतमां नथी. २६ रेवंत. २७ तेना पछीनो 'वेगिहि' शब्द बीजी प्रतमां नथी. २८ चडिय. २९ लीधउ. ३० संयम. ३१ बीजी प्रतमां नथी. ३२ समधर. ३३ सुविचारु. ३४ निसिदिन. ३५ न. ३६ तेना पछी बीजी प्रतमां 'नेमि' शब्द मळे छे. ३७ मुक्ति. ३८ दातारो. ३९ नीचे प्रमाणे बीजी प्रतनी पुष्पिका छेः 'इति श्रीनेमिनाथ फाग समाप्तः'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[९]

अज्ञात कविकृत

पुरुषोत्तम पांच पांडव फाग

(विक्रमनो पंदरमो सैको)

पंडुनरेसर नियकुमरु परिणाविय साणंदु,
हत्थिणउरि पुरि आवियउ, साथि करिउ गोविंदु. १

अहे साथि करिउ गोविंद, जाम पुरिनायकु आवइ,
तत्क्षणि विंहु रह वारि लोउ पुरि सोह करावइ,
तलिया तोरण डगमगंत, दप्पण विसथारिउं,
मंच मिसिहि किरि सुरविमाण महियलि अवतारिउ. २

घरि घरि मोतिय चउक भरिय, गूडिय उछलालिय,
घरि घरि मंगल कलस ठविय, वर वंदुरवालिय,
उच्छाडिय घरहाट, पवर पट्टोलिय सोहय,
नाचति किरि तिम पूतलिय, त्रिभुवनमनु मोहइ. ३

भास–सहज ति निरुवम रूवधरु पंचइ राजकुमार,
तहविह मायडिय रलिय लगि काराविय सिणगार. ४

अहे काराविय सिणगारु, सारु सिरि मऊड छवकइ,
कुसमहि सेहर सुभर भरिय बहुगंधि वहुक्कइ,
कानहि कुंडल डगमगंत, लहलह लहकंता,
कंठकंदलि विलसंति हार, झलझल झलकंता. ५

तिलउअलंकिय भालवट्ट, पट्टंसुय सारा,
कडिहि कटारा झगमगंत, हाथहि हथियारा,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जयकुंजर सिंगारसार, ते गुणहि गिरट्ठा,
मेघाडंबर छत्र तलय, विज्जहरिय वइट्ठा. ६

भास—धवल धयंचिय किंकिणीय रमिझमि सार,
ढलहि चामर मणिदंडमय, पयडिय रुणझुणकार. ७

अहे पयडिय रुणझणकार, सार मणिनेउरयाली,
कसमस कसमस कसमसंत कडि जादर फाली,
झगमग झगमग झगमगंत उरि उत्तिम चोली,
झलहल झलहल झलहलंत घटजोली.* ८

मृगमद् मयवट्ट कुसुमभारु, सिरितिलउ सुरंगो,
नयणहि काजलरेह, वयणि तंबोल सुचंगो,
कंचण कुंडल हारदोर, मणिमउड सिंगारी,
पंचकुमर पूठहि गयंदि दूव्वय बयसारी. ९

भास—सूहव सुसर सुवासणिय, मंगल धवल दियंते,
अहिणव परिणिय वर वहूय, निरुवम गुण गायंते. १०

अहे निरुवम गुण गायंति, ससुर गाइण गहगहिया,
भुंगल भेरि हडुक्क ढक्क, त्रंवक त्रहत्रहिया,
गयवर रहवर तुरग, सुहड कोडिहिं परिकलिया,
कुमर पहुत्ता पोलि, बारि जणे कवतिगि मिलिया. ११

पोलि पगारिय वाससिहरि, चडि नयणविसाली,
पेषि वहूवर, कर जोडि, हरसि इम बोलइ बाली,
धन्न सु कुंतिय मायडिय, जसु इसा कुमारा,
धनु धनु दूव्वय तउं जि पर, जसु इसा भत्तारा. १२

* आ चरणमां अक्षरो खूटे छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भास–जयजयकार करंति सुरगण गधर्व्व मंनरंगे,
मंगल बोल्लहि भट्ट तिहि, पगि पगि नव नव भंगे. १३
अहे पगि पगि नव नव भंगि, रंगि नच्चंतइ पाउलि,
हावभाव सिंगार सार, नव नट्ट रसाउलि,
जिम जिम नाचणि तरल रंगि लोयणु लहकावइ,
तिम तिम माणस कवण मात्र, सुर सग्गह आवइ. १४
दान दियंतउ मागणह, नरनाह बहूतो,
इसइ महोच्छवि पुरप्रवेसि, घरवारि पहूतो,
किरि कुलनारि तत्थ, कियउ कुलमंगलचारो,
रायदुवारि वधावणउ, हूय जय जयकारो. १५
भास–मोकलिया नरवर सयल, नियनयरि निवासे,
कान्हड पुणि परिवार सउं राखिउ आपुण पासे. १६
अहे राखिउ आपुण पासि, राइ जे जादववृंदो,
हसइ रमइ जणलोग सहू, साहरिसाणंदो,
तउ हत्थिणाउर सग्ग तुल्ल उच्छवमइ जाइ,
इणि अवसरि किरि कोड धरिउ आयउ रतिराइ. १७
तउ तिहि मास वसंति, राइ आइसि पुरिलोया,
जादव पांडव कुमर सवे खेलइ सुपमोया,
खेलइ खेलत रायकुमर अंतेउरि जुत्ता,
गंगजवणि नय अंतरालि, कुलगिरि संपत्ता. १८
भास–एकु सुगिरि रलियावणउ, अनय वसंत पहूतो,
वनराजी राजी वणि, परिमलु थियउ बहूतो. १९
अहे परिमल थियउ बहूत, दूत रतिराउ पठावउ,
तउ गहगहतउ सयल लोउ, तहि गिरिवणि आविउ,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

किवि सुरतर, किवि वास, केवि संदूरउ छाहइं,
किवि चंदन कप्पूर गंधि दिसिमंडल मालहि. २०

किवि वीणहि नवकुसुम, केवि गुंथहि वरमालहि,
किवि दोलारसि रमइ, केवि वायहि वरतालहि,
किवि नाचइ मनरंगि, केवि खेलइ तिहि फागो,
किवि वायंति वसंत नामि पयडिय वर रागो. २१

भास–कान्हड कुंतियपुत्रसउं रमलि करंतउ रंगे,
धण वणगण रलियावणउ, पहुतउ गिरिवरशृंगे. २२

अहे पहुतउ गिरिवर संगि, चंगि तरुतलि बइसेई,
पंडव सहुय किरि सिख ज कान्हड देइ,*
इणि अवसरि आवियउ, गयणिमारगि रिखिराउ,
नारद सविहा दियइ आसीस, मनि धरि बहु भाउ. २३

जादव पांडव कुमर सवे ते गुणहि समिद्धा,
उत्तिम धम्म पवित्त गुत्त, त्रिहु भुवणि प्रसिद्धा,
राज करंतउ धरह जगत्र, रिखितीरथ वंदउ,
जसु वित्थारहु, रिद्धिवृद्धि पावउ, चिरु नंदउ. २४

॥ इति श्रीपुरुषोत्तम पांच पांडव फाग समाप्तः ॥

---

* आ चरणमां अक्षरो खूटे छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१०]

अज्ञात कविकृत

भरतेश्वर चक्रवर्त्ती फाग

(विक्रमनो पंदरमो सैको)

भास—वंदवि नाभिनरिंदसुय, रिसहेसर जिणचंदो,
गाइसु मास वसंत हुउं,[१] भरहेसर नरविंदो. १
सोवनवन्न विसाल, साल अमरावइ तुल्ला,
अच्छि अवज्झा नयरि, सारि संसारि अमुल्ला,
भोगपुरंदर देव, सेव मन्नावय[२] भुयबलि,
करइ रज्जु तहि भरहराउ, राउतु इगु[३] भूतलि. २
वाणी बोलइ मुहुर, विमल किरि गंगा वाणी,
राणी चउसठि सहस, जास[४] रूवहिं[५] इंद्राणी,
कंचण कंकण नाद, छंदि मोहंती खेचर,
बिहु पासे सुरसाल बाल ढालइ जसु चामर. ३
हय गय चुलसी लक्ख, जक्ख खेचर जस किंकर,
हास कास संकास, जास[६] जसु गाइं किंनर,
वारू खेली वेस, बाल पहिरवि वर चोली,
जसु आगइ नाचंति, रंगि बहु भंगहि[७] भोली. ४
भास—पूरव पुण्यप्रभावि सो रिसहेसर मल्हारो,
माणइ भोग क्षणेग परि, सग्गि जिम सुरवारो. ५
कंचणगोर सरीर, वीर सेवयजणमहिओ,[८]

---

१ हउ. २ मन्नावइ. ३ इग. ४ जासु. ५ रूवि. ६ जासु. ७ भंगिहि. ८ सहिउं.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लावनरस वरसंत, कंत अंतेउरसहिओ,[1]
आविय[2] मास[3] वसंति, संति सो चडय[4] रिवाडी,[5]
पेपय[6] चंपय[7] जंबु, अंबुतरु फूलिय वाडी. ६
विहिसिय तिहि मचकुंद, कुंद अरविंद अपार,
निरमल परिमल महमहए, सेवंत्री सार,
फूलिय सवि वणराय, वाय वायंती[8] लहकइ,
चंपउ चंपइ अवर सीम, निय परिमल बहकय.[9] ७
केवइ सेवइ भमर, देव देवी जिम रंगि,
विमल सरस फल रंगि,[10] चंग लागइ नारिंगइ,[11]
चंचल[12] पल्लवहाथि,[13] साथि किर[14] सान संचारइ,
कोयल[15] कामणि, भमरवाणि सहकार करेइ.[16] ८
भास—राता केसुय फूलिय, सोहय[17] रति[18] प्रिय संगे,
जाणे नवरंग घाटडी,[19] ओढी[20] वनसिरि अंगि.[21] ९
वेउलवेलि अमूल, फूलरस मेल्हइ मीठउ,
करणकारु[22] सविकारु, कास मणु करइ न दीठउ,
वालउ गंधि अपार, सार पुणि वरणइ[23] कालउ,
दाडिम फूल सुरंग, अंग विणु गंध निहालउ. १०
पंजर[24] मंजरि अंबि लंबि[25] कोयल[26] वासंते,
वउलसिरी सिरिगंधि, अंधिकय[27] भमर भमंते,
अरुणी करुणी तरुणचित्त, तरुणी जिम मोहइ,
सिंहुवार[28] सिंदूरपूर, किरि वनसिरि सोहइ. ११

---

१ सहिउ. २ पहुतइ. ३ मासि. ४ चडइ. ५ रइवाडी. ६ पेखइ. ७ चंपइ. ८ वायंत. ९ वहकउ. १० रंग. ११ नारिंगि. १२ कोमल. १३ हाथ. १४ किरि. १५ कोइलि. १६ कारइ. १७ सोहइ. १८ रित. १९ घाटडिय. २० ऊढिय. २१ अंगे. २२ करणिकारु. २३ वरणि. २४ पिंजर. २५ लुंबि. २६ कोइलि. २७ अंधकय. २८ सिंदवार.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कमलिणि कामिणि राजहंस, कामिय जिम माणइ,
नवपल्लव अस्सोग सोग, विरहिणि मणि आणइ,
कोमल कूपल पहियचित्ति, करवाल[१] तमालो,[२]
राजइ सिरसिज[३] मयणराय, किर फलगसाविलो.[४] १२

भास[५]—एरसु[६] वनसिरि अवयरियउ,[७] रलियामणउ वसंतो,
पेक्खवि[८] विलसइ चक्कवय,[९] नवनव परि पुनवंतो. १३

आरामिय आरामि, ताम सामिय बोलावय,[१०]
विमल कोमल[११] कलिय फूल अमूल अणावइ,
कुसुमहार[१२] निय करि, करेवि राणी पहिरावय,[१३]
रयण झमाल विसाल, माल सिरि मुकुठ[१४] भरावइ. १४

गंधसार घनसार, सार केसररस केलवि,[१५]
कारइ अंगहि[१६] अंगुराग[१७] कसथूरी[१८] भेलवि,
जोवन लावनु[१९] ललियदेह, किरि अमिय-कटोरी,
गव्वाडय[२०] मणिरंगि[२१] प्रिय[२२] गीय[२३] गंधव गोरी. १५

मग्गणजण सुपहाण, दाणु[२४] आणंद[२५] दिवारइ,
जाण राउ पंडतह[२६] पासि कयवार[२७] करावइ,
चंदनवास,[२८] कपूरपूर सिंदूर उषेवइ,
पढमजिणेसरतायपायपंकय संसेवइ. १६

---

१ करिवाल. २ तमाल. ३ सरसिजि. ४ °विसाल. ५ भास. ६ एरिस. ७ अवयरिय. ८ पेखवि. ९ चक्कवइ. १० बोलावइ. ११ सकोमल. १२ °हारु. १३ पहिरावइ. १४ मुकुट. १५ मेलवि. १६ अंगिहि. १७ अंगराग. १८ कसथूरिय. १९ लावन. २० गव्वाडइ. २१ मनरंगि. २२ गीय. २३ प्रिय. २४ दाण. २५ आणंदि. २६ पंडितह. २७ कयवारु. २८ चंदन.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भास[1]—इणि परि सुखमइ[2] नीगमइ,[3] उच्छव सउ[4] बहु काले,[5]
सयल नरेसर वंदिउ,[6] भरहेसर भूपाले.[7] १७

अवसरि सो सविसुद्धबुद्धि,[8] जिणधम्म करेई,
अवसरि खड्डोखलिय[9] मज्झि जलकेलि रमेई,[10]
अवसरि पंच पयार भोग भोगवइ मणोहर,
अवसरि समरइ भावि देवगुरुपाय तमोहर. १८

अन्नदिवसि[11] आयरिसमाहि,[12] निय रूव जोवंता,
एक तानि मनि ज्ञानि[13] ध्यानि[14] भावन भावंता,
राज करंता रिसहपुत्र,[15] केवल ऊपन्ना,
सिद्धिवहू वरमाल, कंठि मेल्हय[16] सुपसन्ना. १९

जयजयकार करंति देवदेवी जणसहिया,
महिमंडलि भरहेसकित्ति केवइ महमहिया,
देव सुमंगलपुत्तफागु गायउ भो भविया,
जिम तुम्हि पामउ रिद्धिवृद्धि मंगलसंकलिया. २०

॥ इति श्रीभरथेश्वर चक्रवर्त्ति फागः समाप्तः ॥

---

१ श्री. नाहटाजीनी प्रतिमां नथी. २ सुखमय. ३ नियगमइ. ४ सं। ५ °कालो. ६ वंदियउ. ७ भूपालो. ८ सुविसुद्ध°. ९ षडोषलिय। १० करेई. ११ दिविसि. १२ आदिरस.° १३ ज्ञान. १४ ध्यान. १५ °पूत. १६ मेल्हइ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[११]

समरकृत

नेमिनाथ फागु

(विक्रमनो पंदरमो सैको)

अहे हरिणा हरिणा हरतइं, काइं कीउं पोकार,
तोरणि आविउ वलि गयउ, नेमि चडिउ गिरिनारि. १

अहे अंग विलूरए आपणउं, हरि हरि नेमिकुमारु,
अहे कंकण फाडइ रायमइ त्रोडइ नवसर हार. २

मि रामाडिउं पसूया तणउं कूड रचिउ जगनाथ,
मइं जाणिउं नेमि परिणिसइ, चडिसइ अम्हारडइ हाथि. ३

आंगणि गाजिउ जलहर, परवत वूठउ मेह,
जउ जाणंत नेमि जाइसिइ, धाइय वलगत छेहि. ४

कुणइ नेमि राहाविउ, कूडीय सघलडी जान,
छप्पन कोडि माहि मूलगउ, कूडउ वलभद्र कान्ह. ५

चंद्रा कहि न संदेसडउ, वीनतडी अवधारि,
शुद्धि पूच्छउं यादव तणी, तू जाइसि गिरिनारि. ६

कोइल करइ टहूकडा बइठी अंवला डालि,
विरह संभारि म पापिणी, जा जई यादव वालि. ७

मेह हकारइ मोरडउ, सरलउ करइ पोकार,
वस्ति के सामिय सामलउ, जे चडइ उ गिरिनारि. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रेवयगिरि केरउ धणी, करउ अम्हारडी सार,
गिरिसिरि सामि समोसरिया, ज्ञानि भरिउ भंडार. ९

मुगतिरमणि यादव वरी, राजल हुई आगेवाणि,
अहे कर जोडी समर भणइ, नमो नमो नेमिकुमारु. १०

॥ नेमिनाथ फागु ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१२]

पद्मकृत

नेमिनाथ फागु

(विक्रमनो पंदरमो सैको)

सिलियागिरि रलियामणउ, दक्षिण वाइउ वाउ,
कामिणि मन सोहामणउ, पहुतउ ऋतु तणउ राउ. १
जिणि विहसइ सवि विणसइ, अलीअलि आलि कराय,
कोइल लवइ टहूकडे, मोरिय अंबवणाय. २
कींब जाबू अन लींबुई, बीजुउरी बहु भंगि,
करणी कणयर करमदी, नारंगी नवरंगि. ३
वालउ वेउल वउलसिरि, सोवनकेतकी जाइ,
पाडल परिमल महमहइ, वाउ सुगंधउ वाइ. ४
पीण पयोहर अपच्छर गूजर धरतीय नारि,
फागु खेलइ ते फरि फरि, नेमिजिणेसर बारि. ५
कडिहि पटउली गडमडइ, उरि एकावलि हारो,
करियलि कंकण मणमय, पय नेउर झमकारो. ६
अहर तंबोलरसि रंगिउ, नयणे कज्जलरेह,
आभ अधारीय कांचली, किरि ऊनइउ मेह. ७
गोरी कंठि नगोदर, बीजल जिम झबकंति,
दंतिपंकति हीराउली दीपति सहण न जाइ. ८
सिरि सींदूरीय सयथलउ, भमरमाला जिसी वीणि,
फागु खेलइ मनरंगिहि हंसगमणि मृगनयणि. ९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काने कुंडल, सिरि धडीअ, अदबुद किय सिणगार,
महुर सरे सिउं गायवउ, नेमिहि बालकूयार. १०

अगर कपूर केरउ [उ]रडउ, सूकडि तणा सवि बार,
तिहां प्रभु बेसइ नेमि जिणु, ऋतराउवीजणहार. ११

महिमानिधि महिमागुरु, गाइवउ गुणह भंडार,
सिंघ सामलवन सो जयउ, राजदेव-भरतार. १२

हंस सरोवरि जिम मिल्या, महुयर जिम वणराय,
पंउम भणइ तिम सामियचलणे मुज्झ मनु जाइ. १३

रेवयगिरि रुलियामणउ, सोहए सुरवर सार,
भविया भाविहि पणमउ, जिम पामउ भवपार. १४

॥ इति श्रीनेमिनाथ फागु ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१३]

गुणचंदसूरिकृत

वसंत फागु

(विक्रमनो पंदरमो सैको)

अहे फागुण फली अ बीजोरडी, पुहतलु मास वसंत,
वनि वनि तरूअर कूंपलां, केसूक सम अनंत. १

कामिणि कारणि भमरलु, भमतु माझिम रातिं,
काची कलिय म भोगवी, भोगवी नव नवि भाति. २ आंचली.

चांपां कुलीं अतिं कूअली, परिमल रहिणु न जाइ,
बालि यौवनिं प्रीय गयु, तु दुःख हीयडि न माइ. ३

अहे पहिरणि पीत पटोलडी, ओढणी नवरंग चीर,
विरहु तुम्हारी नाहला, नयण न सूकि नीर. ४

भरत भरावू कंचूउ, गलि एकाउलि हार,
सहिज सकोमल चालती, पाये नेउर झणकार. ५

जसी तरूअर पांखडी, आंखडी काजलि रेह,
वालपणानुं नेहडु, वालंभ कांइ ऊवेखि. ६

कामिणि होठइ अमीय झरि, दाडिम हुंलडा दंत,
नयणि न देखूउं नाहलु मोरु सलूणु कंत. ७

अहे सर वरि सोहि राखडी, सहिथि घाली सींदूर,
आछी ऊगटि जे करि, बीडली मांहि कपूर. ८

अहे मचकंदिहि मन मोहीउ, लहिकइ लाइ म मासि,
चतुर सुरंगी संदरी, गूजिर केरी नारि. ९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

माइ करि सवि मरहठी, सोरठी अति सुजाणी,
वसंत.तणी रति खेलती, प्रीयपति कहि सुख माणि. १०

मलीय स तेवडतेवडी, सरोवर केरी पालि,
पालि मेल्हि पटोलडी, झीलि सरोवरमाहि. ११

अहे भीनुं कामिनि कंचूउ, भीनुं नवसर हार,
भीनी काजलि रेखडी, भीनी कुसुमांची माल. १२

सीप भरी भरि पाणीय, छांटिसि विना छोह,
नाह सिरीसी गोरडी, दाखि अति घण मोह. १३

अहे हीरडा तइ हरि पूजीउ, कि जागु सिवराति,
गोरी कंठ न ऊतरि, सारी दीह नि राति. १४

अहे नइ हरि मइ आराहीउ, नवि जागु सिवराति,
गोरी कंठ न ऊतरि, माहरी उत्तम जाति. १५

अहे वसंतक्रीडा तीह अति करि, आणंद मुनिनि पूरि,
मनरंगि एम बोलि, श्रीगुणचंदसूरि. १६

॥ इति फाग ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१४]

धनदेवगणिकृत

सुरंगाभिध नेमि फाग

(सं. १५०२)

नत्वानंतगुणात्मकं सुरनतं संसारनिस्तारकं,
विश्वानंदविधायकं जिनपतिं श्रीआदिदेवं प्रभुं ।
स्मृत्वा श्रीश्रुतदेवतां जननतां निःशेषजाड्यापहां,
श्रीनेमेरतुलं करोमि सकलं फागं सुरंगाभिधं ॥ १

प्राकृत काव्यं

देवी देवि नवी कवीश्वर तणी वाणी अमीसारणी,
विद्यासायरतारणी मझ घणी हंसासणी सामिणी,
चंदा दीपति जीपती सरसती मइं वीनवी वीनती,
बोलुं नेमिकुमारकेलि निरती फागिइं करी रंजती. २

रासक

सरसति सरस ति मुझ मति देवी अ, देवीय तुं जगि सार रे,
नील कमलदलसामल जिनवर वरणवुं नेमिकुमार रे. ३
जगरंजण रणि मयणविहंडण, मंडण गिरि गिरनार रे,
सुरनर किंनरवर नित वंदित, कामित फल दातार रे. ४

अढैउ

कामित फल दातार, सामी नेमिकुमार,
हार मनोहरु ए मुगतिरमणिवरु ए. ५
यादववंशशंगार, घावनिवारणहार,
तारण त्रिभुवनु ए, जनमनरंजनू ए. ६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

जाणीइ जगि सोरीपुर सुरपुर किरि अवतार,
जिणहर मंदिर दीपइं ए जीपइं ए दिनि दिनकार. ७

निशि शशिहरकर संहरइं, हरइं सवे अंधकार,
दंड कलस धज लहकइं ए रणकइ ए घंट अपार. ८

काव्यं

दीसइं एकि कुमार रूपि रुअडा सोभागीआ सुंदरा,
साल्णा दोइ ती सलक्षणधरा लीलां करी आगला,
नारी जे नवयौवना पदमिनी जेसी हुइं मोहिनी,
ते सोरीपुरमाहि रायकुमरी रंगिइं रमइं सुंदरी. ९

रासक

तीणइं नयरि श्रीय समुद्रविजय नृप, नृपतिनमित नित पाय रे,
निज तनुदीपति द्युतिपति जीपति, रतिपति किरि नव काय रे. १०

राज करति सुरपति सम दीसति, वसति वदनि सरसती रे,
समरथ शूरशरोमणि भणीइ, सुणीइ दह दिसि अंति रे. ११

अडैउ

सुणीइ दह दिसि अंति, तस मुखि अरि न रहंति,
भूअबलि गंजवइ ए रणि भड भंजवइ ए. १२

गयमर गाजइं बारि, अंजनगिरि अवतारि,
हयवर हीसता ए, रथ घण दीसता ए. १३

फाग

राणी य पाटि शिवादेवि, देवि हरावण रूपि,
शीलवंती गुणवंती य युवती य नही अनुरूपि. १४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यादववंशशंगारण, तारण नेमिकुमार,
देवविमाण ते मूंकी य कीउ सा ऊअरि अवतार. १५

सुखभरि सोइ हीडोलाटइं खाटइं पउढी अ देवि,
चउद्द सुपन मन साखीआं, पेखीआं तीणइं खेवि. १६

ततक्षणि जागी अ रंगीहिं, अंगिहिं अतिहिं आनंद,
नव मास साढआठे दिनि, रजनि जनमिउ जिणिंद. १७

काव्यं

सामी नेमिकुमार यादव जिसिइ जायउ स सोभागीउ,
आधी राति प्रभातनइं सम हुई, भूमी समी उल्हसी.
तीणइं कालि अकालि वृक्ष सिघला फूल्या फलिया पालुया,
वाया शीत समीर वीर किरि ए ऊगिउ नवउ मानवउ. १८

रासक

वैमानिक सुरपति तारापति, व्यंतरपति भुवणिंद रे,
सामी य जनम महोत्सव नव परि करिवा मिल्या सवि इंद रे. १९

सुरगिरि ऊपरि क्षीरसायर जलि विमलि भरी य भिंगार रे,
सुरवर न्हवण करइं मनरंगिहिं अंगिहिं नेमिकुमार रे. २०

अढैउ

अंगिहिं नेमिकुमार करी य जनम आचार,
प्रभु मुंकी करीए, आणंद मनि धरीए. २१

सहू पहुतउं निज ठामि, हरष सोरीपुर ग्रामि,
धवल मंगल हुइं ए, सवि जन गहिगहइं ए. २२

फाग

तीणइं अवसरि मथुरापुरी, अवतरीउ कंसारि,
वसुदेव-देवकीसंभम, निरुपम देव मुरारि. २३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तास बंधव वडु बलभद्द, समुद्द समान गंभीर,
अकल अजेअ निरंजन, रंजन जगि बेऊ वीर. २४

काव्यं

गोविंदिइं सवि माल सरीषउ चाणूर ते चूरीउ,
बीजइं बंधवि मालं मोष्टिक हणिउ तउ कंस कोपिइं चडिउ,
'साहु बाल गोवाल बेउ बलीया, बांधउ' कहइ जेतलइं,
पाडिउ वीणि धरेवि केशवि तिहां पूरउ करिउ तेतलइं. २५

रासक

यादव सवि मनि करइं विमासण, 'रा सुणिसिइ जरासंध रे,
आज जमाई कंस विणासिउ, रहिसिउ तउ हुसिइं बंध रे.' २६

ततक्षणि सवि यादव सोरठ दिसि वसिवा ग्या तस रेसिइं रे,
द्वारिकापुरी य धनदि नव बारी य करीय इंद्र आएसिइं रे. २७

अढैउ

करी य इंद्र आएसिइं इंद्रपुरीनइ वेसि,
यादव तिहां राह्या ए, मनि अति गहिगहिया ए. २८

रूपिइं नेमिकुमार दीसइं देवकुमार,
दिनि दिनि दीपता ए रतिपति जीपता ए. २९

फाग

सामीय वयण अनोपम, ओपम चंद न होइ,
क्षीण कलंकीय दीसइ ए, दीसइं ए तपइ न सोइ. ३०

भमहडी बेऊ रुलीआमणी, कमलिणी लोचनि जीत,
जीभडी जग तणउं जीवन, सवि जन चोरइ ए चींत. ३१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[काव्यं]

दंता दाडिम बीजडां, अधर बे जाचां प्रवालां नवां,
दीपइ सुं जल आंषडी कमलनी जेसी हुइं पांषडी,
नासा सा शुक चंचडी, भमहडी दीसइं बेऊ वांकुडी,
बोलुं किं बहुना, कुमार जमलुं कांई अ ओपइ नहीं. ३२

रासक

एक वार नेमिकुमर रमंता, पहुता आउधशालइं रे,
हरि आउध हेलां सवि शरमइं रमइं, सारंग धनु वालइं रे. ३३
पांचयज्ञ सामी शंष लीधु, कीधउ सहज निनाद रे,
तीणइं नादिइं हरि हईअडइ चमकिउ लुकिउ सयल उनमाद रे. ३४

अडैउ

लुकिउ सयल उनमाद सुणी य शंषनु नाद,
बलभद्र प्रति कहिउं, 'राज हिवइं गऊं ए. ३५
बलिउ नेमिकुमार, राज हरेसिइ सार,'
बलभद्र मनि हसइ ए, हरि नवि वीससइ ए. ३६

फाग

हरि भणइ 'भुज मझ वालुओ, टालुओ एह संदेह,'
नेमिइं कमल नालनी परि, करि धरी वालिउ तेह. ३७
वलतउ ओ नेमिकुमर कर सधर न वलइं मुरारि,
तव विलषउ झांषउ थउ, रहिउ आणी मनि हारि. ३८

काव्यं

तव बोलइ बलभद्र आगलि जई 'ए राजलक्ष्मी गई,
कीजइ कोइ उपाय, नायक नवउ होसिइ सही, चींतवउ,'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जाणी माधव षेद बंधव भणइ, 'तुं कां हीइ आपणइ
हारं? नेमिकुमार नारि न वरइ ते राज केथउं करइ?' ३९

रासक

ईणइं वचनि मनि हरि हरषीयला, आईला वसंत ऋतु काल रे,
वनि वनि मलयानिल पसरीयलइ, करि लिइ मयण करवाल रे. ४०

अढार भार वनसपती य मुरी य, गोरी य धरइं आनंद रे,
रणझिणइं भमर कुसमरसि, राता माता मयण गइंद रे. ४१

अडैउ

माता मयण गयंद, रणि चडिउ मदन नरिंद,
विरहिआं कमकमइं ए निसि दिन नवि गमइं ए. ४२

कोअलि करइं टहूकार, रतिपति दलि जयकार,
वन सवि गहिगह्यां ए, परिमलि महिमह्यां ए. ४३

फाग

बहिकइं ए सोवन केवडी, केवडी सोइ वनमाहि,
पहुती य रति मधु माधवी, माधवी फाल न माइ ४४

चंपकनी दीसइ ए कली नीकली पीली य अंगि,
किरि ए रयणि रणदीवीय, नवीय करीय अनंगि. ४५

दीपइं ए राता कणयर दिणयर किरि अवतार,
पारधि पाडल परिमलि रमलि करइं मधुकार. ४६

फोफलि फणस बीजुरी य, मुरीयडा सहकार,
वृक्ष लिवंग नारंगना अंगना नइं सहकार. ४७

[काव्यं]

दीसइं केसूअ रूअडा किरि नवा आव्या सही सूअडा,
मुरया जे ए मचकंद कंद जमला कामिइं करया आमला,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देषी केलि फली सवे मन रुली, नारी रमंती मिली,
फूली दाडिमि रातडी, दुषि गमइं पंथीयनइं रातडी. ४८

रासक

नेमिकुमर तेडीनइं श्रीपति रमति रमइं वनमांहिं रे,
सोल सहस गोपी रसि राती रमती ते तिहां जाइं रे. ४९
पदमिनी नवयोवना नवरंगी अ, अंगि सुरंगी य नारि रे,
रूपि अनोपम जनमन मोहइं, सोहइं सयल शंगारि रे. ५०

अढैउ

सोहइं सयल शंगारि, वेणि उरग अनुकारि,
सिरि वरि राषडी ए, रयण हीरे जडी ए. ५१
ससि रविमंडल मानि, दीपइं कुंडल कानि,
तिलक मनोहरू ए, कंठि नगोदरू ए. ५२

फाग

उरवरि हार एकावली, कावली कनकनी हाथि,
रयण कंकण घणुं झलकइं ए, षलकइं ए मेषला साथि. ५३
रमिझिमि रणकइं नेउर, देउरसिउं करइं आलि,
नेमिकुमर नवि भीजइ ए, कीजइ ए ते सहू आलि. ५४
मरकलडे मन मोहइं ए, खोहइं ए सुरनर इंद,
लोचनि चित चमकावइं ए, वदनि हरावइं ए चंद. ५५
वेध वयण सवि बोलइं ए, डोलइं ए सुचतुर नरिंद,
'वेगिहिं परणेवुं मानि न,' मानिनि भणइं जिणिंद. ५६

काव्यं

षेलइं माधव मास, माधव तणी गोपी मिली वाउली,
लोपी लाज सवे नवे रसि रमइं कामी प्रतिइं भूलवइं,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बोलइं बोल सकाम वामनयनी, दूती जिसी कामनी,
देषी लोक कहइं सही अभिनवी ए देवनी मोहिनी. ५७

रासक

हावि भावि नवि लीजइ ए सामी, कामी नहीं जिनराय रे,
नेमि अचल गोपी सवि भागी, लागी रही प्रभु पायि रे. ५८
नेमिकुमर हरिनुं मन राषइ, भाषासमितिइं बोलइं रे,
'नारीं ते परणुं महीअलि, जमलि तुलइ मझ तोलइं रे. ५९

अढैउ

जमलि तलइ मझ तोलि, हरि हरषिउ ईणइं बोलि,
नेमि वचन कहिउं ए, त्रिभुवन गहिगहिगहिऊं ए. ६०
यादव सवि पभणंति, कन्या बहु गुणवंति,
छइ राजीमती ए, जस मुखि सरसती ए. ६१

फाग

रूपि हरावए अमरी अ, कुमरी अ सा जगि सार,
मागीय यादवराजि इंहिं, काजिहिं नेमिकुमार. ६२
लगन लेई सहू सामइहइ, जान हुइ जिनराय,
त्रिभुवन चालइ ए मन रुली, मिलीय यादव सुरराय. ६३
'बइठउ ओ वर सुरवर रथि, सारथि मातुलि होइ,
सामीय रूप अनोपम ओपम नावइं कोइ. ६४
त्रिभुवनजनमनमोहन हो, मोहनवेलि समान,
सिरवरि षुंप रयण तणु, रवि तणु हरइ जे माण. ६५

काव्यं

जे वारु गज भद्रजातिक भला गाजइं मदिइं आगला,
चालंता हिमवंत पर्वत जिस्या दीसइं सवे उज्ज्वला,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हांसइं हयवर नीलडा हरीयडा गंगाजला सामला,
तेहे यादव संचरया परवरया तेजी तुपारे चड्या. ६६

रासक

चालीय जान यादव वर केरी, भेरी देव वजावइं रे,
सिरि वरि छत्र चमर सोहावइं, आवइं देवि वधावइं रे. ६७

नेमिकुमर वर सुरवर सहिता, पहुता तोरण वारि रे,
गउपि रही राजलि वर निरषी, हरषी सामनि नारि रे. ६८

अडेउ

हरषी सामनि नारि, वर रहिउ तोरण वारि,
वाड पशू भरिया ए, दीठा तरवरिआ ए. ६९

पूछिउ सारथि सामि, ' पशु वाधा कुण कामि ? '
सारथि इम भणइ ए, ' काजि गुरव तणइ ए. ' ७०

फाग

जाणीय जीववध जिनवरि मदभरि धरिउ वइराग,
' धिग पडउ एह संसारनइं, सार नहीं जिहां राग. ' ७१

पिशू अ बंधन प्रभु छोडीय मोडीय मयणनुं मान,
जिनवर वलीउ ओ मेल्हीय, चेल्हीय ऊभीय जान. ७२

निज वर वलीउ ओ जाणीय, राणीय राजलदेवि,
विरहकरालीय बालीय ढलीय धरणि तीणइं खेवि. ७३

शीतल प्रवनि चंदनि करी, करीय सचेत सा नारि,
दीन वचन सु जि बोलइ ए, ' बोल एक जि अवधारि. ७४

नाह ! संनेह मुं दाखि न, दाखि न राखि न देव !
तुझ विण क्षण मझ राजन ! राज न भावइं हेव. ' ७५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काव्यं

राती नेमि जिणिंदि चंदवदनी रोइ रडइ कामिनी,
फोडइ कंकण सार हार कुमरी चूरइ नवी नेउरी,
खीजइ षेदि करी महादुखि भरी, शोकिइं हीइ आदरी,
दाझइं अंगि अनंगदाह धरती, बोलइ ए राजीमती. ७६

रासक

विरहविधुरमति राजमति विलवति, जिनपति मुंकीय जाइ रे,
ततक्षणि जिनवर दानिहिं वरसइ, वरसइ ईम गनींइं रे. ७७

दान देई दीक्षा प्रभि लीधी, कीधी अकह कहाणी रे,
नव भव नेहनिवंधीय राजीमती, राजमति मनिहिं न आणी रे. ७८

अढउ

मनि नवि आणी नारि, पहुता गिरि गिरनारि,
हारि मनावीउ ए, मोह हरावीउ ए. ७९

दिन पंचावन मानि, प्रामिउं केवलज्ञान,
सुरवर सवि मिली ए, उत्सव करइं रुली ए. ८०

फाग

ज्ञान ऊपन्नुं जाणीय, राणीय राइमइं रंगि,
गिरिसिरि सामीय निरषीय, हरषीय सा निज अंगि. ८१

पाए लागी प्रभु मागए, माग जे मुगतिनु होइ,
सामीय संयमि थापइं ए, आपइं ए मारग सोइ. ८२

काव्यं

सामी केवलकामिनी करि धरी, राजीमती नादरी,
सा सारी निज काज राजकुमरी मुगतिइं गई सादरी,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जे रेवइ गिरिराय ऊपरि गमइं, श्रीनेमि पाए नमइं,
ते पामइं सुखसिद्धि, रिद्धिहिं रमइं, श्री शाश्वती भोगवइं. ८३

संस्कृत काव्यमथ

एवं वासववृन्दवन्दितपदं श्रीनेमिनं स्वामिनं
यस्तौत्यद्भुतभावभावितमनाः श्रीरैवतस्थं जिनम् ।
सः श्रीशार्वपदं गताधविपदं कैवल्यलीलाप्रदं
प्राप्नोत्युत्कटकर्ममर्ममथनं कल्याणलीलावनम् ॥ ८४

॥ इति श्रीसुरंगाभिधो नेमिफागः संपूर्णः । सं. १५०२ वर्षे कृतो धनदेवगणिना ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१५]

रत्नमंडनगणिकृत

नारीनिरास फाग

(विक्रमना सोळमा शतकनो पूर्वार्ध)

[1]सकलकमलाकेलीधामत्वदीयपदांबुज-
प्रणतिनिरतः[2] श्रीनेमीशः[3] ! स्मृतश्रुतदैवतः ।
प्रथमरसजोल्लेखद्वेषप्रदांत्यरसास्पदं
रचयति यतिः फागं नारीनिरास इति श्रुतं ॥ १ ॥

रति पहुती मधु माधवी, साधवी शमरस पूरि;
जिम[4] जिम[5] महमहइ महीतल, शीतल सजस[6] कपूर.[7] २

न जितो मधुमाधवर्तुना विषयैः पंचभिरंचितेन यः ।
स करोति दिशो यशोभरच्छलसर्प्पद्घनसारसौरभाः ॥ ३ ॥

तेह तणुं[8] कीजुंअलि,[9] जुंअलि[10] पयकमलाहिं;[11]
परिहरिउ जेहिं अ काय[12] रे, कायरे[13] वर वनिताहिं.[14] ४

रचयामि[15] [चारु] चिराय चारुतचरणांभोरुहचंचरीकतां ।
कनकद्रवसांद्रकांतिषु प्रमदांगेषु रतिं[16] न ये गताः ॥ ५ ॥

---

१ 'श्रीसोमदेवसूरिगुरुभ्यो नमः' ए पंक्तिथी श्री. शाहनी वाचना शरु थाय छे. २ मूळमां 'निरतिः' छे. ३ मूळमां 'श्रीनेमेश' छे. ४ श्री. शाहनी वाचनामां एक ज 'जिम' छे. ५ स्वजस. ६ कपूरि. ७ तणउं. ८ कीजुअली. ९ जुअली. १० पयकमलाहं. ११ हिअकाय. १२ 'कायरे' पछी आवतो 'वर' शब्द श्री. शाहनी वाचनामां नथी. १३ वनिताहं. १४ आनी पछी श्री. शाहनी वाचनामां मळतो 'चारु' शब्द अहीं कौंसमां दर्शाव्यो छे. १५ 'न ये रतिं गताः' ए प्रमाणे श्री. शाहनी वाचनामां शब्दोनो क्रम छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वेणि गमइ नहीं[१] आज मुं आ जमुनाजल[२] पूर;
कालि अ[३] नाग निरागलु, रागलु डसइ अति क्रूर. ६

कुसुमावलि फेनिलाबलाकबरी कालतनुः कालिंदिजा।
अजिनं जनमत्र मारयत्यनुरागः किल कालियोरुगः[४] ॥ ७ ॥

म[५] करसि एकसि रापडी, रापडी पेषणि रंग;
ए निरयापथदीपक, दीपक लुं[६] जिं पतंग. ८

स्निग्धश्यामलकांतिकुंतलनिभोज्जृंभांजनभ्राजिनं[७]
तेजःपुंजविराजिनं शशिमुखीदीपं[८] नृणां दुर्गतेः।
मार्गं[९] दर्शयितुं शिखामणिमिषाद् धत्ते शिरःशेषरे
मा भूत्तस्य विलोकनाय रसिकस्त्वं[१०] यत्पतंगायसे ॥ ९ ॥

सिंदूर देषी सिरि मुं[११] धरे तुं[१२] धरे नयण निमेष;
तरुण भारे पडी अंब रे, लंब रे ऊकनी रेष. १०

त्वं सिंदूरपरागपूरणधृतारुण्यां तरुण्याः कच-
श्रेण्यंतः[१३] सरणिं विलोक्य मुकुलीकुर्वात्मनश्चक्षुषी।
उल्कायास्तरुणेश्वरिष्टपिशुना रेषार्चिरेषातम-
स्तोमश्यामतमे निपत्य गगने विस्तारमासेदुषी ॥ ११ ॥

---

१ नही. २ जमनांजल. ३ कालिय. ४ कलिकालयोरगः—श्री. शाहनी वाचनामां आ श्लोकनो क्रमांक आठमो छे. ५ श्री. शाहनी वाचनामां आ श्लोकनो क्रमांक सातमो छे. ६ दीपकनूं. ७ भृङ्गश्यामलकुन्तलावलिनिभोज्जृंम्भाञ्जनभ्राजिनं. ८ शशिमुखीमध्ये; तेनी पछी श्री. शाहनी वाचनामां 'शिरःशेखरम्' ए शब्दो छे. ९ नवमा श्लोकनी त्रीजी पंक्ति, श्री. शाहनी वाचनामां आ प्रमाणे छे:

'धत्तेऽधः पथकल्पितप्रकटनं रक्षापुटीदीपकं'

१० रसिको यत् त्वं. ११ मूं. १२ तूं. १३ श्री. शाहनी वाचनामां अगियारमा श्लोकनी बीजी पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'श्रेणयन्तः सरणिं विलोक्य सहसा संकोचय स्वे दृशौ.'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कामिणि वइरिणि सीं[1] गणि[2] सींगणि[3] भमहि[4] वे जाणि;
विकट कटाषि[5] शराउली,[6] राउली मूंकए[7] ताणि. १२

तरुणीं गणयंतु वैरिणीं कुटिलभ्रूनिभधन्वधारिणीं ।
विकटाक्षकटाक्षतोमरैः कटरे विध्यति सा भटानपि ॥ १३ ॥

नाकि म खेडिसि[8] मनरथ, अनरथनुं[9] ए[10] मूल;
भमहि[11] तिलक त्रिणि पांखडी, आंषडी देषि त्रिसूल. १४

मध्यप्रांशुस्मरपरनरस्तोमहृद्भेदरक्ता-[12]
सक्तिव्यक्तारुणतररतिरः सार्पिलोहत्रिपत्रम् ।
भालोन्मीलद्द्युसृणतिलकश्यामलभ्रूयुगश्रीः
सुभ्रूनासा न भवति किमुद्दामकामत्रिशूलम्[13] ॥ १५ ॥

निरमल[14] नासिका माणिक, जाणि कमलि जिस्युं वारि;
तिणि परि आयु अविगणी,[15] निरगणी परिहरि[16] नारि. १६

संपद्यध्वमगण्यपुण्यकरणव्यापारपारंगताः
कान्तारङ्गममुं च मुञ्चत शिवद्रङ्गाध्वगध्वंसिनम् ।
आयुः [पद्म]दलोदबिंदुतरलं[17] यस्मादिति स्मारय-
त्यस्माकं धृतनक्रमौक्तिकमिदं[18] वक्त्रांवुजं सुभ्रुवः ॥ १७ ॥

तुं[19] मनि म धरसि अधरम, अधर मधुर म विमासि;
युवती[20] जंगम विसलय,[21] किसलय तिणि तेह पासि. १८

---

१ सी. २ गिणि. ३ सीगिणि. ४ भमुहि. ५ कटाक्ष. ६ सिराउली. ७ मूंकइ; तेनी पछी श्री. शाहनी वाचनामां, 'ए' मळे छे. ८ खेडसि. ९ अनरथनूं. १० एह. ११ भमुहि. १२ मध्यप्रांशुस्मरपरवशप्राणि-हृद्भेदरक्ता. १३ किमुद्दामकामत्रिसूलम्. १४ निर्मल. १५ अथिर गणी. १६ म भजसि. १७ पद्मगतोदबिन्दुतरलं. १८ धृतमौक्तिकमिदं. १९ श्री. शाहनी वाचनामां अढारमा श्लोकनी प्रथम पंक्ति नीचे प्रमाणे छे:

'तूं मनि अधर मधरसि, अधरम अधर म विमासि.'

२० जुवती २१ बिसलय.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

युवतेरधरस्त्वया सुधामधुरो मुग्ध ! मुधाऽवधार्यते ।
विषवल्लिरकारि येन सा[1] विधिना तत्र पुनः सपल्लवः ॥ १९ ॥

विकसित[2] पंकज पांखडी, आंषडी ऊपम टालि;
ते विष सलिलि[3] तलावली, सा वली पांपिणि पालि. २०

युवतिदृग्युगलं तव पक्ष्मलं तुलितपालिपरिष्कृतपल्वलम् ।
विषजलाकुलमस्ति हिनस्ति तद्[4] भवकटाक्षतरङ्गघटा[5] नरं ॥ २१ ॥

नरग नगरि मुख पोलि, कपोलि कपाट विचार;
ज्योति जलणमय कुंडल, कुंड लगार न सार. २२

नरकपुरिपुरन्ध्र्याः गोपुरं वक्त्ररन्ध्रं[6]
किल कलितकपोलोद्घाटताद्दक्कपाटं[7] ।
अपि च विचरदर्चिःसंकुले वह्निकुंडे
किमु कामिनृकुलानां कुंडले दाहहेतोः ॥ २३ ॥

हार मिसिं[8] मुख[9] सामु[10] कि वासुकि मुंकइ[11] फुंक;[12]
तिणि तीणिं[13] करी महिलींइ[14] गहिलीइ चतुर अचूक. २४

विगलति[15] गलकांडे[16] वासुकिः सुन्दरीणां
गमितगरलशक्तिः शौक्तिकेयस्तगात्मा ।
श्वसितमिषतईर्ष्यामुक्तफूत्कार एष
ग्रहिलित इति हेतोः स्याज्जनस्तत्र सक्तः ॥ २५ ॥

नारि लवइ नित कुंअली कुंअली म सुणि तुं वाणि;
कुमति करइं[17] सुवडाइणि[18] डाइणि मंत्र तु[19] जाणि. २६

---

१ सा यतो. २ विमल कमलदल. ३ सलिल. ४ यद्. ५ भवकटाक्षतरङ्ग-[भरं] ६ वक्त्ररन्ध्रं प्रतोलिः ७ किलकिलतकपोलोद्घाटिता. ८ रमिसिइं ९ मुखि. १० सासु. ११ मूंकइं; तेनी पछी श्री. शाहनी वाचनामां 'ए' मळे छे. १२ फूंक. १३ तीणइ. १४ महिलीइ. १५ मूळमां 'विगलित' छे. १६ गलकुण्डे. १७ करइ. १८ सवडाइणि. १९ तउ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मा कर्णयोन्मीलदलीकमालां त्वं कोमलांगां कमलनानयाः
यड्डाकिनीमंत्र इव श्रुता सा दत्ते बुधानामपि दुष्टबुद्धिम् ॥ २७ ॥

सुर नर तिरिअ[1] प्रजागति, जागति मइं[2] किम जाइ;
तिणि त्रिणि जित कलकंठ[3] रे,[4] रेखा व[च]हुं माइ. २८

दिविजमनुजतिर्यग्गामुकाः कामुकाः स्युः
कथमिव मयि सत्यामेवमावेदनाय[5] ।
कलयति[6] कमलाक्षी[7] वेद्मि रेखास्त्रिसंख्याः
स्वरजितकलकण्ठीकण्ठपीठप्रतिष्ठा ॥ २९ ॥

कासिण कंचुक मिसिं[8] आ भलुं[9] आभलुं[10] कुच गिरिशृंगि;
भीतरि करिसि ए कादम[11] का दम[12] धरिसि न अंगि. ३०

भूषारत्नचरिष्णुरोचिरचिरद्युच्चारु नारीकुच-
क्ष्माभृत्यभ्रकमेतदुन्नतमयं[13] नो मेचकः कंचुकः ।
कर्त्ता पंकिलतामिदं किल भवत्युद्यद्गुणाभ्रंशिनीं[14]
तेनाशु प्रविशत्यमिंद्रियदमावासोदरं सादरः ॥ ३१ ॥

आपणपुं गिणि हार तुं, हार तुं जइ निरषेसि;
मांडि अ[15] पास पयोधर, योध रह्या तुझ रेसि. ३२

विपुलमौक्तिकपद्धतिपाशयोस्तव पयोधरयोः किमु योधयोः ।
द्वयमिदं तरुणिस्वनिरीक्षणप्रवणपुंधरणाय समीहते ॥ ३३ ॥

नेत्रवली[16] त्रिवली नर, लीन रहीं[17] मन वर्णि;
त्रिविध कपट भरी रेख, वरेख [व]हइ तिणि[18] त्रिणि. ३४

---

१ तिरि. २ मइ. ३ कमलकंठि. ४ 'रे' पछी श्री. शाहनी वाचनामां 'कंठि' शब्द मळे छे. ५ सत्यमिवमावेदनाय. ६ कथयति. ७ कमला. ८ मिसि. ९ आभलु. १० आभलु. ११ कांदम. १२ कां दम. १३ क्ष्माभृत्यभ्रकमेतदुन्नतमयं. १४ भवत्युद्गुणभ्रंसिनीं. १५ मांडिय. १६ नेत्रिवली. १७ रही. १८ तिण.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ईयमिह[1] कणगर्त्ता[2] गाढगंभीरभावा[3]
त्रिकरणकपटानामुत्कटानां वधूटी ।
इति विधिरकरोत् किं तामभिज्ञानहेतोः
गलितवलितरंगव्याजमध्यत्रिरेषाम्[4] ॥ ३५ ॥

मयण पारधि कर[5] लाकडि[6] सा कडि लंकिहिं[7] झीण;
इम कि कहइ जुवती वस,[8] जीव सवे हुइं खीण. ३६

युवमृगमृगयोत्कनंगयष्टेस्तरुण्या-[9]
स्तनुदलनकलंकप्रापकश्रेणिलंकः ।
पिशुनयति किमेवं कामिनीं[10] यो मनुष्यः
श्रयति स भवतीत्थं तंतुशंकाशकायः ॥ ३७ ॥

बिल जिसी आणि म सुंदरि, तुं दरिसिणि निज नाभि;
मदन रहइ दृष्टीविष ही, विष धरइ[11] तेह[12] गाभि. ३८

नितंबिनि ! बिलोपमा तवकनाभिरालंबते[13]
बतेयमधरीकृतत्वदभिसंधिगंभीरिमा[14] ।
इमां[15] भुवि भवी निभालयति भालयन्नश्नुते
तदीयविषमेषु दृग्विषभुजंगतः पंचतां[16] ॥ ३९ ॥

वपु विषवन शुभ जाणि म, ताणि म कुच फल लुंबि[17];
सेवि म तेह तणी छांहडी, वांहडी डालि म झुंबि[18]. ४०

---

१ इयमिह. २ कणगर्ता. ३ गाढगंभीरभावात्. ४ कलितवलितरङ्गा-व्याजमध्यत्रिरेखाम्. ५ पारि करि. ६ ला[क]डी. ७ हि. ८ वसि. ९ युवतिमृगमृगयोत्कानङ्गायष्टेतरुण्या. १० कामिनी. ११ विषधर. १२ एह. १३ नाभिरालम्बिते. १४ बतेयमधु[ध]रीकृतत्वदभिसंधिगभीरिमा.
१५ श्री. शाहनी वाचनामां ३९मा श्लोकनी त्रीजी पंक्ति नीचे प्रमाणे छे:
'इमां यदि भवि निभालयति कोऽपि तद् भस्मसात्.'
१६ दृग्विषभुजङ्गमाज्जायते. १७ लूंबि. १८ झूंबि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शंके सुभ्रु ! चकार तावकवपुः किंपाकपृथ्वीरुहा-
कीर्णं काननमाकुलं कलयितुं वेधा कुलं कामिनाम् ।
भ्रूवल्लीह सितप्रसूनसुरभिश्वासानिलोर्मिस्फुरद्[1]-
दोःशाखाधरपल्लवादय इमे यत् ते दहत्यापदम् ॥ ४१ ॥

कुरणइ[2] कामिणि कंकण कां कण विणु जिम रंक;
करि धरी लिइ रपे साकिणि, साकिणि नरगि निसंक. ४२

द्वारि क्षुद्रनृणामकारितकणा रंका इवैणीदृशा[3]
मुक्ता बाष्पकणाः कुतः करुणयंत्युच्चकणाः[4] कंकणाः[5] ।
धृत्वा नः करयोरशंकितमिमं नैषीदसौख्याकरे[6]
मा कस्मिन् नरके तदेकनयनासक्तेऽतिभीत्या सखे ॥ ४३ ॥

विपतरु विषम तजां घडी, जांघडी परिहरि[7] बेउ;
तुं न पीअ[8] पुण थान, कुथानकु जउ[9] तजइं तेउ. ४४

विषतरुभुवा जंघायुग्मं त्वचा घटितं घटा-
मटति युवतेः सत्कं तस्माज्जिहीत हितस्पृहाः ! ।
त्यजत च तनौ तस्याः कुस्थानकं तदनर्थकं[10]
न भ[व]ति तथा पेयं धन्या यथा जननीपयः ॥ ४५ ॥

अंगि अगनि साची रची, रची ए[11] परि गूढ;
तिम करि जिम झाझिम, दाझि म[12] तिहां तुं मूढ. ४६

कचसंचयधूमधूसरोऽरुणचीरा तरुणी न पावकः
अधिभूमिचरिष्णुरुष्णतारहितोऽप्येष दहत्यहो ! जनम् ॥ ४७ ॥

---

१ सितप्रसूनवदनश्वासनिलोर्मिस्फुरद्. २ कुरणइं. ३ इवैणीदृशौ. ४ करुणयंत्युच[च]त्कणाः ५ किंकणाः ६ नैषीरसौख्याकरे. ७ परिहरिउ. ८ पीएं. ९ जुत. १० तद[न]र्थदं. ११ चीर चीए. १२ श्री. शाहनी वाचनामां 'म तूं तिहां मूंढ' एवो पाठ मळे छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साच वचन ऊगाढीआ, काढियां[1] निज मुख सीम;
नेउर झुणि पगि लागलां,[2] लाग लाख्यां लहइं[3] कीम. ४८

सद्भूतानि वचांसि चारुवदना सर्वाणि निर्वासया-
मास स्वाननसीमतः कृतमतिः सत्येतरोदीरणे ।
रुच्यप्राच्यपदस्पृहानुरतया मंजीरमंजुस्वर-
व्याजात् तानि लगंति संति पदयोस्तस्याः[4] प्रशस्यानि किं ॥ ४९ ॥

जेह[5] मनि शमरस सुंदरि, सुंदरि वसइ अराति;
ते मझ सीलसुदरिसण,[6] दरिसण दिउ सुप्रभाति. ५०

येषां चेतःसरसि तरुणी नैति[7] पानीयहारि-
ण्येकाऽप्यंगीकृतकुचघटा शुद्धसिद्धान्तनीरे ।
तेषामालोकनमनुदिनं संगलन् मंगलाली-
लीलागारं मम दिनकरोंकारकाले किलास्तु ॥ ५१ ॥

पदमिनी कुल मधु राजलि, राजलि जिणी तजी खेमि;
जगि जयउ नित नित[8] सुरयण, सुरयणमंडन नेमि. ५२

लक्ष्मीकेलिनिकेतकांतविकसद्वक्त्रारविंदस्फुरद्-[9]
वेणीकैतवचंचरीकृतरुणीझंकारझात्कारिणीम् ।
भोजप्राज्यकुलेज्यपल्वलभुवं राजीमतीं पद्मिनीं
हित्वा रैवतरत्नमण्डनमभूद् यः सोऽस्तु नेमिः श्रिये ॥ ५३ ॥

॥ इति नारीनिरास फाग । शांतरसमय[10]: ॥

---

१ काढीआ. २ लांगलां. ३ लहइ. ४ ऽपदोस्तस्याः; आ पद पहेलांनो 'संति' शब्द श्री. शाहनी वाचनामां नथी. ५ जेहं ६ सीलसुदरिसण. ७ मूलमां 'नैत' छे. ८ नत. ९ लक्ष्मीकेलिनिकेतकान्तविलसद्वक्त्रारविन्दस्फुरद्. १० श्री. शाहनी वाचनानी पुष्पिका नीचे प्रमाणे छे:

॥ इति श्रीमहातीर्थगिरिनारगिरिमण्डनश्रीनेमिनाथफागः समाप्तः ;
पं. रत्नमण्डनगणिकृतः ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१६]

हेमरत्नसूरि फागु

(विक्रमना सोळमा शतकनो पूर्वार्ध)

अहे जुहारिसु जगत्रय अधिपति मुनिपति सुमति जिणंद,
अहे गायसु रंगि घनागम आगम गच्छ मुणिंद. १

श्रीहेमरत्नसूरि भगतिहिं विगतिहिं गुण वर्णवेसु,
गुरु पदपंकज सेविय जीविय सफल करेसु. २

अहे जीणइ मयण हराविय उ, मल्हाविउ खेतसी वंश,
भीमग सुत सखि सांभलि, रांभली उवरसरि हंस. ३

बालापणि जिणि रालिय टालिय मन संसारि,
मृगनयणी नहीं रूडिय कूडिय हृदय मझारि. ४

सारासारि विचारि अ सारि हिइ वसि वात,
जव तव तुलना मांडए, मांड मनावइ तात. ५

जनमनमोहनवाडिमा कारिमा कणब संयोग,
तृष्णादिक वधारइ, भारहिं भवि भवि भोग. ६

क्षणि क्षणि मरण संतावइ, आवइ आरति चिति,
नव जोवण वयरागिय लागिय तप जप खंति. ७

सिरि अमरसिंहसूरि पसाइं जाइं दुरिय सवि दूरि,
मोहभुअंगम खीलए, झीलए समरस पूरि. ८

संजमि सिरि नवतरुणिय परिणिय पसु भर भोग,
आसवाद लीइं लीणा, रीणा करइ करमयोग. ९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अनुक्रमि झीक झमाली बाली अष्ट प्रकारि,
समति गुपतिसिउं रसि रमइं, विरमइं नाहिं किण वारि. १०

अहे पाव सवे हव निठउ, दीठउ गोयम सामि,
भवियण तम्हि आराधउ, वाधउ गुणि अभिराम. ११

सुहगुरु सहज सलूणउ ऊणउ नहिं सिद्धंति,
अंतर अरियण गंजए, रंजए मन एकंति. १२

अहे संघ समिद्ध हसमसि धसमसि चिहुं दिसि चंग,
गुरु वांदिवा वर भाविइं आवइ अभिनव रंग. १३

अहे सहियर सवि सिणगारिय नारी नव नव वेसि,
पुहती तेवडतेवडि केवडि वंदन रेसि. १४

पउमणि जीवइ जोतिय मोति उर वरि हार,
काने झालि झबूकइ, चूकइ नहिं आचार. १५

चंदन कुसुम कपूरिहिं सिन्दूरिहिं सर वरि सार,
मृग नाभिज वांधिइं महमहइं, गहगहइं पुप्प संभारि. १६

रूपिइं कउतिग करति अ धरति अ रंभ तगतागु,
वसंत ऋतुराय खेलइं, गेलिइं गाती फागु. १७

सिरि हेमरत्नसूरि थापिय आपिय सवदप्रमाण,
सिरि अमररत्नसूरि ओपइ, लोपइं जे पंचवाण. १८

झलहलहिं संप्रति लहुअडा रूवडा अतिहि सुजाण,
मुणिवरु तम्हि पर गोलउ तोलउ मेरु समान. १९

अहे साधु सुमेरु गंभीरिम धीरिम चरिय सुठामि,
ते धन जे नवि डोलइं, बोलइं गुरुगुणग्राम. २०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अहे विनय मेरु अनुकूला चूला गरिम निवास,
....मम.....लहर मणहर देसण भास. २१

इणि परि सुहगुरु सेवउ, केवउ नहीं भव वासि,
दुर्लभ नरभव लाधउ, साधउ सिद्धि उल्हास. २२

॥ इति श्रीहेमरत्नसूरिगुरु फागु । विदुषी विनयचूलागणिनिर्बंधेन कृतम् ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१७]

आगममाणिक्यकृत

जिनहंसगुरु नवरंग फाग

(विक्रमना सोळमा शतकनो पूर्वार्ध)

देव अवर जगि नहीं समउ, सीस मुगटि फणि जास,
मझ मनमाहि ते वीसमउ, ते वीसमउ जिन पास. १

गुरु गुणमणि वयरागर, राग रतीय नहीं लाग,
तसु रस वसि मन रुचिसिउं, रचिसिउं नवरंग फाग. २

रासउ

जे चंचलि चडइं सुखिइं सुखासनि आसनि वइसइं जाण रे,
ते सवि सिर वरि धरइं वादीसर, दीस रयणि जसु आण रे. ३

श्रीजिनहंसगुरु गणहर निरुपम, रूप मयण अवतार रे,
वारति भवभय आरति भार ति, भारति तणउ भंडार रे. ४

आंदोला

भारती तणउ भंडार, जिनशासन आधार,
सेवक सुखकरू ए, तेजिइं दिनकरू ए. ५

श्रीतपगच्छ सिणगार, माया मनि न लगार,
श्रीजिनहंसगुरू ए, बुद्धिइं सुरगुरु ए. ६

फाग

मनमथमथन ए जाणीय, आणीय मनि अभिमान,
रतिपति रति प्रतिइं बोलए, बोल ए करी अपमान. ७

मझसिउं कोइ न मांडए, मांडए छांडए ठाम,
तां करइ पुहुवि अ गाज ए, गाजए जां नवि काम. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वात म बोलिसि लामी, जा मीनति सिर नामि,
इम भणिइ रति सुणि सामी, पामीइं सुख एह नामि. ९

एह सिउं तुझ किसी अहनिसि, अहनिसि हियइ विमासि,
अजी प्रिय चेति न ईतर, तीतरनी परिइं नासि. १०

रासउ

तउ रतिपति रतिमति अणमानति, मान तिहा दिइ जाई रे,
रितुपति करि तूं सवल सेनानी सेनानीय सजाई रे. ११

मुचकुंद कुंद कुसुम कुसुमायुध, आयुध आलस छंडी रे,
केसर ते सर लेई भड शिलीमुह, मिली मुहवडि रहइं मंडी रे. १२

आंदोला

मिली मुहवडि रहइं मंडि, भामिनी भमुहि कोदंडि,
नयणवाणावली ए, मेल्हइं ऊतावली ए. १३

करइं पेषी नारंग, अंगना अंगना रंग,
वावि खडोखली ए, झीलइं मोकली ए. १४

फाग

दीसए रवि जिस्यु राषडी, राषडी सोहए सार,
कंठि ठवइं टंकावलि, एकावलि वली हार. १५

झालि झलामल नागला, नाग लागा छइं गालि,
देसि हूं ओपम तिहां सीय? हांसीय जीपए चालि. १६

लहकइं जोइं गयगमणीय रमणीय रास रमंति,
जलि जई करि करी कमलि, रमलिनी खंति पूरंति. १७

गंध गुणिहिं कहि के वडा केवडा सुणि दलि जास,
भमर बइसी तेवतेवडा के वडा करइं विलास. १८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ विरहिणीनां विरहवर्णनं

पूनिम रयणि निशाकर, स्या करइं विरहि संताप ?
मलयानिल मांम माहरी मां हरी करि तूं पाप. १९

चंद रे तूं गमइ मूं किम ? मूकि म किरण अजाण,
राहु असी नवि मूंकत, चूकत तु न हूं प्राण. २०

वली फली कदली करमदी, करम दीजइ किस्यु दोस ?
चंदन मझ कांइं तापवइ ? आप वइर नथी रोस. २१

रतिपति नित अति चंपए, चंपए रंगि म जोइ,
कोइलि पंचम जंपए, जंप एहतु नवि होइ. २२

रासउ

कुसुमि विकास दिसिइं दिसिइं मुहिकिया, बहिकियां वन आराम रे,
दीठी पाडल बीजउरी जइ, बीजउ रीझइ ताम रे. २३

इम काम समरि वे समरथ समवडि, मुहवडि चडी गुरुराय रे,
ततखिणि जगगुरु जगह वदीतउ, जीतउ रतिपति राय रे. २४

आंदोला

जीतउ रतिपति राय, भागु तसु भडवाय,
पेपी पराभवए, दास थ्यु आ भव ए. २५

श्रीलक्ष्मीसागरसूरि-सीस, लबधिइं गोयम सरीस,
गुरि जयश्री वरी ए, जिम हरि श्री वरी ए. २६

फाग

गाइं जे नवरंग फाग ए, लागए नवि पाप लेव,
सेवक सिवपुर माग ए, मागए भवि भवि सेव. २७

॥ इति सकलभट्टारकश्रेणिशिरोवतंस पूज्यश्रीजिनहंसगुरुराजानां नवरंग फागः । श्रीमति गिरिपुरनगरे, सं० हर्षा भार्या श्रीकुंरादे भणनाय लिखितः । आगममाणिक्यगणिना कृतश्च ॥ श्री ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१८]

अज्ञात कविकृत

राणपुरमंडन चतुर्मुख आदिनाथ फाग

(सं. १५५७ पहेलां)

जिण चउमुख.....
.....हंसलागामणि, सामणि सरसति माय. १

गाइसु दायक सवि सुख, चउमुख आदि जिणंद,
जस पयकमल रमलि करइं, भमर जमलि जोगिंद. २

दंड कलस धजमंडित, खंडित सिसिहरकंति,
जिहिं जिणमंदिर ऊपम रूपम ए झलकंति. ३

इणि कारणि जण रंजए, गंजए देस असेस,
देस मेवाड ए ताडए, लछि सग्गनिवेस. ४

राज तिहां परिपालए, टालए वयर विवाद,
हेलां परदल नामए, पामए रणि जयवाद. ५

अति दृढ रिपुगढभंजण, कुंभकरण भूपाल,
अति बल मयगल अविकल, चतुरंग दल चओसाल. ६

धण कण कंचण मणहर, राणपुर नयर सुचंग,
गढ जिम विंध महाचल, निश्चल तेण अभंग. ७

जिणि जीती अमरावती, नासती गईय आकासि,
लंका शंका करती अ, तरतीय रहीय जलवासि. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रासओ

तिणि पुरि बहु परि धनपति निवसइं, विलसइं रुद्धिइं इंद रे,
तींह धुरि सकल लोक उपगारी, व्यवहारी धरणिंद रे. ९

अंदोला

कुमारपाल कुलचंद, सीलवंत धुरि इंद,
धारलि देवरू ए, दानिइं सुरतरू ए. १०
संघाहिव धरणिंद, काराविओ आणंदि,
चउमुख जिणहरू ए, त्रिहु भूमिइं मणहरू ए. ११
कुंभकरण अधिकारिअ, धारिय सारिय ऋद्धि,
जिणप्रासादिइं ठाविय, आवीय एह सुवुद्धि. १२
सोमसुंदरगुरुवाणीय, जाणीय आणीय चित्त,
जण इम जंपइ ए झंपए, संपइ नरवइ कत्ति. १३

[रासओ]

चउमुख जिणहर रंजइ, जनमन त्रिभुवनदीपक नाम रे,
तिहिं चिहुरूपि युगादि जिणेसर अलवेसर अभिराम रे. १४

अंदोला

देवछंदि जिम चंद, दीठइ दिइं आणंद,
युगादि जिणेसरू ए, च्यारिइं सुरतरू ए. १५

अडईया

मूल नायक गब्भारइं च्यारिइं,
बार त्रिभूमिइं एवंकारइं,
भव च्यारइ वारंत तु, जय जय. १६
पेषी प्रभु आभरणे लंकिय,
तक्खणि भवियणचित्त चमक्किय,
संकिय ए किर भाणु, जय जय. १७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

माणिक्कजटित मुकुट वर मस्तकि,
ऊपरि तिक्ख सिखर झलकंत कि,
सोवन केतकि पंति तु, जय जय. १८

निलवटि तिलकजटित मुगताफल,
अट्ठमि चंदि जेम तारावलि,
आगलि थई सेवंति तु, जय जय. १९

बिहु काने कंचणमय कुंडल,
तेजइ जाणे रविससिमंडल,
भामंडल झलकंति तु, जय जय. २०

कंठ पीठ मणिमोती हार,
उरि श्रीवछ बहुवही उदार,
रत्नत्रय किर सार तु, जय जय. २१

बिहु बाहे बहिरषा ओपइं,
भवीयण नयणे अमीय समोपइ,
लोपइ भवदुहताप तु, जय जय. २२

सोवन वीजओरूं अखंड,
पाणिक्कमलि किसिउं केसरपिंड,
छंडइ नवि मणभमर तु, जय जय. २३

कणय रयण मणिमय पालठी,
निरषी हरिषी द्रेठि संतुठी,
वुठी अमीरस अंगि तु, जय जय. २४

सामे आभरणे दीपंते,
झगमग आरीसे दीसंते,
जिम तेजोमय सद्धि तु, जय जय. २५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काव्यं

च्यारइ मूरति मूल नायक तणी, खाणी मंमाणी भणी,
कप्पूरिइं करि ऊगटी नयणले आवी अमी ऊलडी,
चोषी एक ज जेवडी मणि, चडी रूपिइ किसिउं ए घडी,
पेषी लोयण जुयली टलवली, जोइं घणेरूं वली. २६

[फाग]

परिगरि बहु परि कोरीय, चोरीय लइं जणचींत,
पासे चामरहारीय, सारीय वयण हसंति. २७

ऊपरि षाजली फरतीय, निरतीय छत्राकारि,
नंदीसर अ..... २८

.....लि कमलडां, जमलडां कहं कीजंति,
ऊपरि थई निहाली अ, जालीय चित्त हरंति. २९

दिसि रमणी आरीसीए, कोसीसां ए हुंति,
मेरुमेखल गहमंडल, मंडल अहर फिरंति. ३०

त्रिणि त्रिणि चिहुं दिसि दीपइं, जीपइं बारइ सग्ग,
मंडप ऊंचपणि घणइं, गयणंगणिहिं विलग्ग. ३१

थांभे तोरण धोरणी, कोरणी नानाकारि,
जाणे मंडव सयवर, सय वर ईह सिवनारि. ३२

रासओ

मंडपि पूतली अति रूअडी, कुंअलडी जिसी रंभ रे,
पाड गतिइं पंडितपणउं धरती, करती नाटारंभ रे. ३३

पहिरी चंपवन्न वर पहिरणि, हरिणनयणि दीसंति रे,
बाधी मोरबंध वर मस्तकि, हस्त करइं हसंति रे. ३४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अंदोला

इक जिसी सोवन कंब, लहिकइ वेणी लंब,
मयणह धनुहडी ए, पणचइं किर सही ए. ३५

जणमणथंभणहार, कंठि निगोदर हार,
अपछर अवतरी ए, अछरायण करी ए. ३६

पांचली एक अंग वाली, नाचंती रसाली रे,
दिइं इक ताली रे, अधर जाची प्रवाली रे. ३७

करकमलि एक वीणा धारइं, अति गाइं ऊभारइं रे,
कामिनी अंग भारइं रे, रूपिइं रंभ संभारइ रे. ३८

काव्यं

सोहंती सुकुमाल अंग सदली, क्यांहिं न जे सांभली,
मूकइं तिक्ख खडग्ग, बाण धणुही जेह्वी रही सांमुही,
रूपिइं रंभ तिलोत्तमा करि जिसी मेल्हइ हसी उर्वसी,
जोतां मंडपि पूतली निर्मली, पूजइं भलेरी रुली. ३९

[फाग]

चिहु भूणे चउमुख तणे अति घणे तोरणे [सा]र,
ऊंचा जेम महाधर, महाधर च्यारि विहार. ४०

दो दो जिण मूलनायक, पायकमलि सेवंति,
दो दो बार सोहामणां, भामणां नारि करंति. ४१

दो दो मंडप निरषीय, हरिषीय सखीय भणंति,
एकि धरणीय तरुणी, पीण पयोहर हुंति. ४२

अठोत्तरसु देहरी ए, हरी लइं मोरूं चींत,
सिहरि सोवन दंड कलस ए, विलसए धज लहकंति. ४३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चिहुं दिसितु संघ आवए ऊलटि, ऊलटिया अनंत रे,
पूनिम यात्र मनि आणी, जाणी विशेष वसंत रे. ४४

आवइ मासि वसंति, वणसइ सवि विहसंति,
तरुयर मंजरी ए, भमरे परवरी ए. ४५

कुंद अनइ मचकंद, परिमल दइं आणंद,
वउलसिरी फूली ए, भमर भमइं रुली ए. ४६

काव्यं

आव्यु ए रितु आज, काज करती सवे भामिनी,
यात्रा मास वसंतनी पदमिनी आवी मिलइं सामिनी,
लीलइं केलि घणी, घणी प्रिय तणी केडइ लगी लाजती,
दीसइ ते रति माल्हती, मयणनी पूठिइं जिसी आवती. ४७

[फाग]

कोइलि कलिरवि लागीय, जागीय रतिपति राय,
मलयाचल तणु अति घणु वाईओ दक्षिण वाउ. ४८

जाणे चंदन तरुयर, विसहर वमीओ वाउ,
तिणि कारणि विसघारिय, नारिय भारिइं काय. ४९

परिमल वहकती मालती, माल्हती भमरनी श्रेणि,
प्रीयडा शरण निहालओ, वालओ रूयडु जेणि. ५०

विरुहणी देषी दमणु, बिमणु करइं संताप,
फलिओ रक्त अशोक ए, रोकए मयणप्रताप. ५१

जिम जिम पसरइ साल ए, माल्हइं तिम तिम काम,
निय परिमल गुण पाडल, लाड लहइं अभिराम. ५२

---

१ आ चरणमां मूल प्रतमां अक्षरो खूटे छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देषी फल नारंगनां, [रंगनां]पूर चडंति,
पेषी चंपक परथिय, पंथिय प्राण पडंति. ५३

दीसइं बसरी वालीय, नालीयरी फलभारि,
नमती जिसी किसोयरी, पीण पयोहरी नारि. ५४

सखी एव हसीय जूहीय, मूं हीयडइ पटकेइ,
मरूऊ परिमल बहिकतु, लहिकतु सोह धरेइ. ५५

विरुहां देषी किंसुय, अंसूय वाह वहंति,
चींतवइ कामिनी रातीय, तातीय काती हुंति. ५६

इकि अति तीषी केवडी, बेवडी रही निरषंति,
तिक्ख खडग्गह आगलिइं, जामलि करि परषंति. ५७

काव्यं

हींडोले एक हींचती, नयणले नेहे अमी सींचती,
झींलइ एक षडोषली, मन रुली पूरइं एके मोकली,
नींचोइं एक वेणडी करि धरी, नीचउं जोई करी,
मूकिउ संकरि जे दही, मयण ते सींचइ सही ए रुही. ५८

[फाग]

चाषी दाडिमनीं कली, नींकली जाइ ताप,
कुंयली कणयर कंब ए, लंबए मयणह चाप. ५९

अंबला डालडी सूयडलु, रूयडलु बोलइ जाम,
सुणी इम जंपइ विरुहणी, विरहिणि बोलि म ताम. ६०

इकि धाईनइ विसमसि, किसिमसि द्राष लेयंति,
मिली एक तेवडतेवडी, सेलडी वाडि रमंति. ६१

सेवंत्रीय सुगंधीय, सोगंधिय विहसंति,
वनि वनि जनमनहरणीय, करणीय फल विहसंति. ६२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मस्तकि इक नव यौवन, सोवन जाइ वहंति,
नवसति रतिपति राइणि, राइणि नाम कहंति. ६३

ऊजली सदली कदलीय, विदलीय माणिनी माण,
जाणे जयध्वज लहलही, गहगही मयणनी आण. ६४

काव्यं

बीजुरी मउरी घणी, फल तणे भारें लची एलची,
देषी चारउली फली, इम वली पूगी घणीइ रुली,
मूकउ केलि वसंतनी प्रिय तुह्मे, बोलइं इसिउं कामिनी,
कीजइ श्रीजिनपूज ऊजम धरी, भागिइं करी सांभरी. ६५

फाग

इणि परि श्रीसंघ भाविआ, आवीया धरणविहारि,
क्षणि उलंघी आवडी, पावडी चिहु दिसि वारि. ६६

देषी सामी संमहु, चउमुहं रूप धरंत,
समवसरण ए सासय, संशय चित्त करंत. ६७

कणयकलस जलपूरइं ए, पूरइं मननइं रंगि,
स्नात्रमहोछव मंडए, छंडए कसमलं अंगि. ६८

कुंकुम केसर भावन, बावनचंदन लेवि,
जिणवर चरचइ आंगीय, विरचइ ६९

चंपक पाडल विचकिल, परिमल गु[ण]हिं प्रधान,
वर्ण्ण भणीय घणी परि, कणयर रहइ बहु मान. ७०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

..... भावन केवडी, के वडी मननी आस,
भवियण ..... वर पूजइ ए, पूजइं वंछित आस. ७१

आठ मंगल आलेखइं, लेखइं तेहनइ हुंति,
आगलि फल जल नेव ज, निर्मल एक ढोयंति. ७२

वेणा वंस वजावइ ए, भावइं पंचम राग,
रंग भरि इक खेलइं, गेलिइं जिणवर फाग. ७३

भाषा

सामि आगलि नारि नाचइ, आणंदिइं इकि साचइं रे,
ऊलट अंगि माचइं रे, जनमि जनमि सेवा याचइ रे. ७४

पाए नेउर रणझणकावइं, कंकण रणकावइं रे,
मेखल षलकावइं रे, हार लहिकावइं अति रूयडु रे. ७५

सोवन थाल इकि भरी आवइ, मोतडे वधावइं रे,
सामीना गुण गावइं रे, सुललित सादि सोहावइं रे. ७६

फाग

सामी साम्हउं निहालइं ए, ढालइं ए चामर सार,
भवीयण धज दइं विस्तरि, निस्तरसिइं संसारि. ७७

एक आरती ऊतारइं ए, सार[इं] ए मंगलदीप,
पभणइ प्रभु जयउ ताम ए, जाम ए जंबूदीप. ७८

इणि परि करइं उछव नव, नव नव नितु नरनारि,
अहवि दीइ आसीस ए, वीस ए विसा विचारि. ७९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जां लगइं चंद दिवायर, सायर जाम उदार,
जणमणनयणआणंदउ ए, नंदउ धरणविहार. ८०

इति श्रीराणपुरमंडन चतुर्मुख श्रीआदिनाथ फाग संपूर्णः ॥

श्रीः । संवत् १५५७ वर्षे पोस शुदि १३ शुक्रे श्रीसूर्यपुरे श्रीअंचलगछे पं. विनयहंसगणिना लिखितं ॥ श्री ॥ श्रीओसवंशशृंगार सा०..... *॥ श्रीरस्तु ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्टं, तादृशं लिखितं मया, यदि शुद्धमसुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ लेखकपाठकयोः शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

* अहीं मूल प्रतमांना केटलाक शब्दो पाछळथी कोईए छेकी नाख्या छे. पण एमांथी प्रयत्न करतां आटलुं वांची शकाय छे– " ...श्राविका वीकू पठनार्थं लखितं. " अर्थात् ओसवाल साह...नी (जेनुं नाम वांची शकातुं नथी) कोई संबंधी श्राविका वीकूना पठन माटे आ प्रत लखाई छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[१९]

चतुर्भुजकृत

भ्रमरगीता

(सं. १५७६)

भारती[1] प्रारथी प्रणमुंय वर्णवुं अ मदनमुरारि,
देव द्वारामती जई रहिया, विरह हूउ व्रजनारि. १

गोपकन्या करइं वातडी, रातडी किह्मइ न विहाइ,
वाहलु विदेसि जई रहिउ,[2] अह्मे मेहल्यां गोकुलमाहि. २

भारथी प्रारथी पाए लागुं, सारदा सर्वदा सुमति मागुं,
फाग फागुणि गाउं क्रिष्ण केरा, फल जोउ फोकट टलइ फेरा. ३

कंस तणइ घरि क्रिष्ण चतुर्भुज चालणहार,
सणसर सांभली शांमानइ, रांमानइ करइ विचार. ४

सांभलिइ सुकृत हुइ संच, गातां पातक पुलइ पंच,
क्रिष्णइं कीधु कंससुं कटकबंध, एहवु एक छइ कथानु संबंध. ५

अक्रूर आव्यु छइ तेडवा, जेडवा दिइ नही देव,
मोकलावीनइ सांई ए मिल्या, विष्णु वल्या ततषेव. ६

---

१ हस्तप्रतमां पहेली कडीमां 'भारती' शब्द पहेलां 'फाग,' त्रीजी कडीमां 'भारथी' शब्द पहेलां 'दूहा' अने चोथी कडीमां 'कंस' शब्द पहेलां 'फाग' एवा शब्दो पाछळथी कोईए लख्या छे.

२ 'माधव मधुपरि जइ रहिया (उली २)' आ प्रमाणे कोइए हांसियामां पाठांतर लखेल छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अक्रूर आविउ छइ तेडवानि, सारथी थिउ रथ घेडवानि,
क्रिष्ण बिइठा मिली मोकलावी, तिणि कारुणि तारुणी तिहां आवी. ७

बुधि विना बोल न उचरि, सांचरइ श्रीजगनाथ,
विलविलइ देव दीक्कोडी रे, जोडीय हीअडइ हाथ. ८

बुधि विना बोली न सकइ रे बाली, करइ पींयाणुं प्री वनमाली,
वात वांमा करइ आंसू ढाली, किम करी रहीशइ कहु क्रिष्ण टाली. ९

अक्रूर कीधु रे सारथी, रथि बिइठा रिणछोड,
सुंदर दीसि सोहांमणा, वलिभद्र बंधव जोड. १०

कांमिनी क्रिष्ण पूठि ज धाइ, चीर छूटि छेहडा घसाइ,
विलविलइ विरुहणी साहि वांहि, वालहा विदेसि कां मूंकी जाइ. ११

अक्रूर नही ए क्रूर, कांमिनि कहइ पापी कोय,
जीव मिल्यु रे अह्मांरडा, हारडा सूपिइ सोय. १२

अक्रूर नही ए क्रूर पापी, आव्यु अचिंत्यु शांमा संतापी,
क्रिष्ण म जाउ अह्म कंठ कापी, विलविलइ विरुहणी विरह व्यापी. १३

कहइ नवयोवन नारी रे, मारीनइ रथ पेडि,
जावा देसुं नही तुह्मनि, अह्मनइ तां साथि तेडि. १४

पालव पाथरी पाए लागि, रहु रहुजी राजन मांन मागि,
नीरनीझरण झरि वहु नयणे, दीन वचन वदिइ रे वयणे. १५

नेह उपायु ति पहलुं रे, वहलु करवा छेह,
जल विना किम रहइ माछली, जीव विना तिम देह. १६

स्वांमीनइ सम देई वारइ, प्रांण अह्मे छंडसुं प्रेम ताहरि,
पूर्वनी प्रीति तुं सिंइ न संभारइ, वालहा विछोह करी कां मारइ ? १७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गुणवंत छुं अह्मो गोरडी, त्रीकम तोरडी दासि,
विणि अपराधि तिजी, वधू मेहली म जाउ मधुमासि. १८

रथि रांमा मिली झलिझूंबी, कांमिनी क्रिष्णनि करि विलंबि,
प्रीछवी पदमनी लाज लोपी, सूधा संकेत करी वाली गोपी. १९

चडवडीनि रथ षेड्या रे, तेड्या गोप आहीर,
विरुहणी वाट निहालइ रे, ढालि नयणे नीर. २०

सुंदरी क्रिष्ण जोइ जातां, इम शूं कीधुं विरी विधाता ?
गदगद कंठ नि जोइ वाटि, जोउ रे दुष्ट हीयां न फाटि ! २१

वालिंभ वुलावी वल्यां, गली गली पडइ रे शरीर,
पाछा पग चालि नहीं, वहि वली नयणे नीर. २२

सूनि गोकलि जई सूं करीसि ? क्रिष्णनां ठांम जोतां मरीसि,
मन मठी मुंधि मंदिरि पुहती, नगरनी नारि पूरी पनोती. २३

सांचरिया सुभट एकमना रे, म्या यमुना तटि सूर,
तरुछाया रथि छोड्या रे, प्रीत सारइ अक्रूर. २४

उदकमांहिइ शूं अक्रूर देषिइ, पाषिलि जोइ तु नेह ज पेषइ,
जल जोई पेषि हंसा सरूप, रथि रांम हसइ त्रिभुवनभूप. २५

मथुरां नयरि निवेश, प्रवेश करइ करुणाल,
मारि उपरी यटपट, फूल पहिरावा सवि गोवाल. २६

मस्तकि पुफना मुगट रचीया, कुबजाइ क्रिष्णनि चंदन चरच्यां,
नगरनी नारिनइ ध्यांन लागुं, तीणइ वनि कृष्णजीइ कंसनुं धनुष भागुं. २७

वीजइ दीहाडि बहू कोड, मांमानइ मिलवानुं हेज,
मेडी चडी जोइ जन जन, मदनमूरति अति तेज. २८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कांमिनी कंदर्परूप देषि, पूरण ब्रह्म योगिइ पेषि,
मले जांणिउं मेर चाली आविउ, कंसनइ मनि माहाकाल भाविउ. २९

मारिउ कुवलय चांपी रे, काढिउ यादवसल साल,
सवि कहइ जोतां शंहारया रे, मालाषाडइ माल. ३०

हरि हेला झूंटे झालिउ ए कंस, पाडिउ पृथवीतलि हणिउ हंस,
सुरनर [सर्वेनां][1] सारियां काज, आपिउ उग्रसेननि अचलित राज. ३१

मायवाप पाए लागा रे, भागां संकट कोडि,
गोकलि चलावु नंद, गोव्यंद नमि कर जोडि. ३२

निर्दल्या दुष्ट दांनव दोषी, क्रिष्णि कुबजा सहिजि संतोषी,
अक्रूरनि घरि हरि पधारया, छपन कोडि यादव वधारया. ३३

मधुपरि माधव जई रहिया, उधवसुं कीधु आलोच,
वेगि तुह्मे जाउ गोकलि, गोपी करसि शोक. ३४

गोपीनि माहरुं ज्ञांन कहयो, सघला दिन दसपांच रहज्यो,
नंद-यसोदानइ कहयो सांई, वाहला गोवालीया माहरि प्रांण पांहि. ३५

चाल्या छि सारथि उधव, माधवनइ उपदेसि,
संध्या समइ गोकलि गया, नंद मंदिरि परवेश. ३६

यशोदा-नंदनि प्रणांम कीधा, आदरि आशन-मांन दीधां,
रांम नि क्रिष्णनि प्रणांम करिया, यशोदानां जलि नेत्र भरिया. ३७

उधव तिहां आरोगावीया, भावि आदर करी प्रेम,
कहि यशोदा, कहीइ मिलशइ माधव नइ बलदेव ? ३८

उधव माधव गिउ रे वाही, कहि तुं अचिंत्यु आव्योस आंई ?
सांमलि वलता संदेसा काहाव्या, राम नि क्रिष्ण गोकलि नाव्या. ३९

---

१ हस्तप्रतमां ' शत्र तां ' एवो पाठ मळे छे ते भ्रष्ट छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कांई कहु उधव वातडी, रातडी बिठा नंद,
कुशलि कंस संघारिउ रे, यादवकुलि आनंद. ४०

नंद-यशोदा वात करि, नीरनीझरणी नयणां झरइ,
पूतना पयोधर पहिली शोकी, शकट-तृणावत दलिउ दोषी. ४१

धेनुक वछक बक हणिउ, असुर अघासुर सोय,
माहागिरि तोलिउ टिचांगली, गोकलि राप्युं तोय. ४२

ऊषलि वांधि बि वृक्ष पाडिया, प्रसन प्रलंब केशी पछाड्या,
नीरमाहि थिउ नंद शरणि लीधु, बलतु दव बि वार पीधु. ४३

व्याल तणइ विसि धारा रे, सध्यारया सवि गोप,
कालीकलहु कृष्णि करिउ, इंद्रमहोत्सव लोप. ४४

केतला क्रिष्णना गुण संभारुं, मोकल्या ते अ भ्याग्य अह्मारुं,
रांम नि क्रिष्णनी करतां वात, गुण संभारतां थयुं प्रभात. ४५

गाइ गोपी गमे गमे, लोपी लज्जा मनि,
घम घम घूमि मही सही, ब्रह्मांडि लागी ध्वनि. ४६

कांमिनी यांमिनी जाति जागी, गीतनी ध्वनि ब्रह्मांडि वागी,
यम यती हुइ सर्व संग त्यागी, तिम गाइ क्रिष्ण गाढी विरागी. ४७

उधव ग्या एकमना यमना सारवा प्रात,
रथ देषी रांमा करइ, टोले मिली करइ वात. ४८

सूनि गोकलि सुं लेवा रे आव्यु, पिइ धुते पहिली वार फाविउ,
आपणी देह छिदमर सुकी, करी 'क्रिष्ण क्रिष्ण' निस्वास मूकी. ४९

वाटपाडु वली आव्यु रे, फाव्यु ते पहिली वार,
गिउ वयरी गलां वाढी रे, कालिज काढी सार. ५०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आवता उधव देव दीठा, जाणिउं ए माधव मनि बईठा,
प्रेम वाध्या, धसी सोइ साह्मी, उलप्या उधव लाज प्रांमी. ५१

टोले मिली रही कांमिनी, स्वांमीनी पूछि छि वात;
उधव लागा गोपी पाए, प्रदक्षणा देई सात. ५२

उधवनि आसीस दीधी, हरिगुण माटि माहापूज कीधी,
सुंदरी सर्व व्यापार छांडी, पूछवा क्रिष्णनी वात मांडी: ५३

मथुरां थिका तह्मे आवीया, लावीया कांई संदेस ?
कां न पध्यारया श्रीक्रिष्णजी ? हवि रहिया सिइ लवलेशि ? ५४

उधव उचरि: सुणु रे मात ! कुण लहि कृष्णना मननी वात ?
कहीं तुं अचित्यु आव्युस आंही, तह्म शरणु वाहलु कोइ नाही. ५५

हरिनी परि अह्मो लाधी रे, बांधी तिहां हठि प्रीति,
नगरनी नारि धूतारी, रमती हुसि विपरीत. ५६

हरि हवि शूं करि अहां आवी ? नीरस नारि अम्हो थई अभावी,
भमरनी परि भला भाव जोया, नव रस नगरनी नारि मोहिया. ५७

भरूआडी अह्मो भूर, चतुर नगरनी नारि,
नाथ न जांणु रे वसि करी, परिहरी गिउ रे मुरारि. ५८

ते गाइ, गोकल, ते आहीर, तेह ज वृंदावन, यमनां तीर,
चांदरणी राति नइ कहि रे बाली, सर्व सूनुं एक क्रिष्ण टाली. ५९

उधव, अम्हो मंदभागी रे, वयरागी कहइ नारि,
तिणि नरिहरि ग्यु परिहरी, करी निज नेह अपार. ६०

नांहनि थकि घणु नेह कीधु, जातइ अह्मांरडु जीव लीधु,
थोडि काजि घणी प्रीति मांडी, वहिलु ए वयरी ग्यु छांडी. ६१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उरि दूहव्या दुषदायक, वायक सुणु रे सहीय,
वीसारिइ वेदन टलि, संभारि सुष नहीय. ६२

संभारीइ नही ए सही शत्र, आस सुं कीजिए जगमित्र,
हरिना गुण हईअइ दहि, वाहलो वीसारतां वीसरइ नही. ६३

पूतना आवी'ती परुहणी, विरुहणी करइ विचार,
नांहनि थकि मासी ग्रही, एहनु एह रे आचार. ६४

विरुहणीनु वयरी सदाइ, इम बोलिउं छइ वेदपुरांणमाहिं,
सूर्पनषा विरूप कीधी आगइ, आंपणि उगरया ते आश्चर्य लागि. ६५

अवगुण काढतां अधक्षण विहरु न पडि रे लगार,
गदगद कंठि बोलाइ, नयणे नीर त्रिधार. ६६

सूनी तनि थई सर्व सषी, चंद्राउली जांणे चित्रांमि लिषी,
क्रिष्णसुं थई ते लीन नारी, उधवि जांणिउं सुं भगति अह्मारी. ६७

गुल्म, लता, तृण, तरूअर, हुं हयो वृंदावनि,
गोपीना चरणनी रेणिका अडइ इम जांणुं मनि. ६८

जातिनइ भातिनुं कारण नही, भरूआडी स्त्री उदवसि रही,
भगति नथी कहि एह पासि, अचिरत देषी उधव विमासइ. ६९

सर्व निरंतर शरषु रे, निरषु तुह्मे निज नाथ,
इण परि माधव प्रांमसिउ, उधव कहि जोडी हाथ. ७०

छइ ऋदयकमलि जमलि मुरारी, अह्मतुह्म अंतर लिउ विचारी,
वेदपुरांण जोउ रे कथी, क्रिष्ण विना रज मात्र नथी. ७१

वेगलु हुइ ते न वीसरइ, जमलु मनथिउ न जाय,
ते तुम्हनि सदा सांभरि, भगतिनु एह उपाय. ७२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चालसि अह्मारि भगति पापइ, अह्मनइ को किही कृष्ण दाषि,
ज्ञांन कहिउं तह्मे ते न लहीइ, जांणीइ हरि गलि लागी रहीइ. ७३

जांणिउं कमलभ्रम भूलु भमर, गोपी पाए विइठ,
चरण गुंजारव करतु रे, मांनिनी मधुकर दीठ. ७४

कृष्णनु दूत को कहइ विरागी, मनावइ छइ आपणे पाइ लागी,
रीझवइ छइ गुणग्यांन करी, ए धूरत कृष्णनइ वांनि वयरी. ७५

माटि थिकु जालई मधुकर, ठाकुर ताहरु धूत,
नायक पायक लक्षण दायक दुःख बहूत. ७६

नगरनी नारि जे उगट करी, वसवा वईकुठिनाथि हरी,
तझ मुषि परिमल जे विलगु, ते मली अह्म शरिर [र]हि रे अलगु. ७७

क्रिष्णकथा कही एतली, चाली गोपी गेहि,
आदरिं उधव राषीया, दिन दसवीस सनेह. ७८

वनि जाइ उधव नित्यमेव, जोवा जिहां क्रीडता क्रिष्णदेव,
रमतिनां ठांम गोवाल दाषि, जोई जोई उधव आंसूं नाषइ. ७९

वृंदावनमाहि चारतां, अहां अह्मे-हरि गाय,
आणइ कदंवि चडीनि झंपाविउं आ द्रहमाहि. ८०

नाग ते निर्दलिउ आणि ठांमि, आंहां प्रलंब पछाडिउ रांमि,
आहां आघासुर उभु रे फाडिउं, वछकु मारतां ते विनर्डिउ. ८१

रासक्रीडा आहां रमतां रे, जिमतां आंणइ ठांमि,
आंहां अह्मे हरि लीधा रे, कीधा तेह विरांमि. ८२

धेनुक धरि मारिउ विनर्डी, अहां बकासुरनी कोटि मरडी,
अश्व केसी अहां उभु फाडिउ, अहां तृणावृत ते पछाडिउ. ८३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मोर चमर चरमोईना हार परोतां कान्ह;
ते अह्मे वांधतां वहिरषि, सरषा शोभता मांन. ८४

नाचती गोपी अहां क्रिष्ण गातां, मादल वंश महूयरि वाता,
हरिनी रमति ते हीइ आवि, अह्मनइ वनवयरी रोआवि. ८५

कांहनक सारथी थई गयु, रहिउ रे मथुरां जई,
क्यारि संभारि रे अह्मनि आवशइ कहीइ जई. ८६

गोवालीया प्रति उधव बोलइ, क्रिष्णनइं नही को तुह्म तोलइ,
एक दीह उधवि सीष मागी, गोप-गोपांगना पाए लागी. ८७

चतुर्भुज चाहि रे नाथनि गोपी कहावइ संदेश;
शा अवगुण अह्मे कीधा रे, लीधा तुह्मे रे विदेस ? ८८

नाथ ! अनेक नारी तह्मारिं, प्रांणजीवन तुं एक अह्मारि,
उलंभा उधव हाथि कहावि, आंपडीइ अति घण आंसू आवइ. ८९

अह्मनइ कीधु इम छेह जे, ते तह्मे किहां हसि छूटि ?
सर्व सूनुं करिउं, मन हरिउं, हरि हवि इम म लूटि. ९०

सुंदर मुष मनोहर हसतुं, वीसरी गिउं जे मन वसतुं,
अह्मे अभागिणी नारी गोपी, तुं त्यजी ग्यु इम लाज लोपी. ९१

अह्म दुषणीनि जोवानि, एक वार आवु रे दयाल,
थोडामाहि घणुं जांणयो, कृष्ण कठिण, अह्म काल. ९२

वलतां नही आवीइ ईणइ ठांमिइ, नीम शूं लीधु छि क्रिष्ण-रांमि,
एक दीह आवयो, पछि रहयो, उधव क्रिष्णनइ इम कहयो. ९३

धन धन उधवजी ! तह्मो माधव मलस्यु रे आज,
सांई देयो अह्मारुं वतुं, इम कहि लोपी लाज. ९४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चालिउ उधव गोपी रोइ, वली वली कोटि वालीनि जोइ,
हेलयां जई हरि जमलां रहियां, सर्व समाचार संकेत कहिया. ९५

चतुरभुज चाराइं पूरीउ, पछइ जई जुगति वास,
क्रिष्ण-गोपी कुरपेत्रि मिल्या, तिहां मनि पूरी आस. ९६

कहि चतुरभुज करजुगल जोडी, वोलिउ बालापण वुधि थोडी,
सांभलिइ गाइं जे नरनारी, सफल फेरु हुइ तेहां संसारी. ९७

फाग

छिहुतरि कीधु छूटवा भेटवा श्रीभगवांन,
कोडि कन्या परणाविइ जे फल हुइ समानि. ९८

श्लोक

अठसठि तीरथ अवधांन, हेमतुलापुरष भूमिदान,
भावि गाइ जे नर तेहां तोलि, भणइ चतुर्भुज वेदव्यास बोलइ. ९९

॥ इति भमरगीता फाग समाप्ता: । इति श्रीक्रिष्णगोपीविरहमेलापक-भमरगीता समाप्ता ॥ श्री ॥ संवत् १६२२ वर्षे द्वितीय आसाढ सुदि १ गुरवारे चेला रतना लिक्षतं ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२०]

अज्ञात कविकृत

मोहिनी फागु

(विक्रमनो सोळमो सैको)

पूरव दक्षिण अंतरि, चंपकनयरु प्रसिद्धु,
सुललितु लोकु विचक्षणु, निवसइ अतिहि समृद्धु. १

तीणि अछइ वणजारडी, एक अपूरव नारि,
नामि सुणीजइ मोहिणि, अतिहि खरी सुविचारि. २

तारुणि मदि अति मातीय, मयणनिहाण निहालि,
सगुण सलूणिय सुणिजइ, सहजि सभावि छिनालि. ३

चतुरिम चालइ चमकति, काम तणी रसवेलि,
रूपि सयलु जगु मोहइ, मोहणि मोहणवेलि. ४

भयडिहि भुयणु भमाडइ, भाभरभोली तोइ,
नयणि अमीसरु वींधइ, छूटइ तरुणु न कोइ. ५

मोहिणिनइ मुहि जीतउ, पूरउ पूनिमचंदु,
दाडिम हूलै होठडे, अमिउ झरइ रसविंदु. ६

सरल तरल अति कोमल, गोरिय चंपकवानि,
दंति वइरागरु दीपइ, झाल झलापइ कानि. ७

हियडइ हसमस करता, प्रकट थिया थण वेउ,
सोवन कलस कि पूरिया, कामि अमीरसु लेउ. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कउलिए लाकु ग्रहीजइ, कडियडि लहकइ वीणि,
नाभि मयणरस वापिय, उरिए थीवलि तीणि. ९

जांघडी कूंकुमवानीय, केलि तणा दुइं षाभ,
जोनि रे नव रंग दीसइ,....अतिहि सुचंगु. १०

केसर कूंकुमवानउ, दरसणि दूलभु देहु,
पूरवजनमचई सुकृति, रे भेटण लाभइ तेहु. ११

हींडती हंस हरावइ, नेउर झमकइ पाइ,
अति सोहग गुणि आगली, भुवणि निरुपम तोइ. १२

इसी छयली वणजारडी, निवसइ तीणइ देसि,
वालंभु वणिजिहि चालियउ, मूकिय जोवनवेसि. १३

*इसइ अति ऊलटि, पहुतउ रितु तणउ राउ,
परिमलि दिसि सवि पूरिय, वाइउ दक्षिणु वाउ. १४

प्रेसु वसंतस्यउं धरतिय, विहसिय सवि वणराइ,
कुसुम तणइ रसि ऊधसी, परिमलु कहणु न जाइ. १५

कोइल कलिरवि वासइ, मंजरिया सहकार,
कुसुम तणइ रसि लवधुला भमर करइं झणकार. १६

मानिनि मानु गली ग्यउ, फूलिउ देषि पलासु,
कमकमिया मन कामिनी, विरहिणि ऊडिउ हांसु. १७

दमणउ परिमलि बहकइ, मरुअउ हुअउ अबाहु,
वालउ वउलु निहालिउ, विरहिणि हुउ मनि दाहु. १८

*आ चरणमांथी अक्षरो पडी गयेला छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वउल तणइ मदि मातुला, अभिनव दीसइ भृंग,
हरषि हूया सवि हरुणुला, करइ ति हरिणिय संग. १९

त्रिभुवननउ जउ विरचइ, मनमथु मोहनवाणि,
मानिनि मानु मुकाविय, मुणिवर जीतला प्राणि. २०

मासु वसंतु निहालिय, चंपकनयरि प्रवेसि,
मोहिणि मनमथु मोहिउ, पहिलउ विरह प्रवेसि. २१

विरहि हियउ अति परजलइ, कामु लोपावइ लाज,
सयरु भयउ सखि परवसि, किसउ नही मुझु काजु. २२

सहिय समाणिय सवि मिली, करइ भली परि सार,
वणजारी परवसि भई, विरहि विणू भरतार. २३

पूजल पाग तलासइ, वीजल वीजइ वाउ,
चापल चापइ सीसु रे, प्रीति तणउ मनि भाउ. २४

साजिणि साकर सूकडि सरसउ पायइ नीरु,
विरहानलु अति परजलइ, भयउ अचेतु सरीरु. २५

रंगि सही सहियर रही, हियइ रचइ विचारु,
देव संजोगिहि मोहिणि भागउ मोहविकारु. २६

इसउ वचनु तव वोलइ, कामगहिलिय नारि,
छयलु छरालउ छावउ, छइ कोइ नयर मझारि ? २७

चारइ च्यहु दिसि चाहिस्यउ, आणउ वेगिहि जारु,
विरहि सरीरु प्रजालइ, काहुं करउं भरतारु. २८

एकु अणाविउ जारु रे, मोहिणि हियइ विचारि,
सागणु वीजलु तीकमु, चाहडस्यउं थिया चारि. २९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मोहिणि रूपु निहालिय, च्यारइ चमक्या वीर,
करइ अपार विमासण, हियइ धरइ नवि धीर. ३०

आपणमाहि विरोधिया, हियइ धर रचइ प्रपंचु,
वणिजारीय विचक्षण उलपियउ तिह संचु. ३१

वणिजारी इम वोलइ, कीजइ कांइ विवादु,
पहरि पहरि तुम्हि....., मनि मन धरहु विषादु. ३२

पहिलइ पहरि पदावइ, सागणु ता गुणजाणु,
वीजइ वीकमु इम कहइ, करइ अनेक वषाणु. ३३

त्रीजइ तीकमु तंत्रइ, जिम सुखनी वहु जाति,
चउथइ चाहड....., तिमइ विहाणी राति. ३४

ईणि परि....., चउरासी परवंधि,
काम तणइ मदि मातिय, पाग चडावइ कंधि. ३५

कुहक करइ तह नवनवा, होठ तणइ रसद्रेठि,
चापडी....मोहिणि, जारु घलावइ हेठि. ३६

विणउ करइ वणजारडी, ऊपरि वइठीय षाट,
च्यारइ मीत जिमाडइ, सारिय एक जि त्राटि. ३७

वणिजारी तिह रातीय, अवरु गमइ नवि कोइ,
राति दिवसि....., त्रिपति न मानइ तोइ. ३८

सूकडि सयरि लगाडइ, आपइ फूल तबोलु,
चुंबडिया रसि रंजवइ, वोलइ बहुविध वोल. ३९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तीणि समइ वणजारडी, आंगणि आविउ नाहु,
तेह तणउ सरु साभली, कांपिय वीर अवाहु. ४०

सांगणु सयरि प्रसीजइ, तीकमु थ्यउ विपरीतु,
वीजल वोलु न नीसरइ, चाहड थ्यउ चलचित्तु. ४१

मीत तिहा सवि धीखइ, कांपउ कांइं सरीरि,
ए इसा ऊतर देइवा, हउ अछउ बावनवीरि. ४२

चिंतइ चित्ति विचारिय, वणिजारी गुणजाणि,
बुद्धि तणइ परपंचिहिं, वंचिउ नाहु विनाणि. ४३

आंगणि देषि गुसाइउ, साइउ दीधउ आंगि,
नयणुले नीरु झरंती, वोलइ नव नव भंगि. ४४

सामिय जिम तू चालिउ, मू मूकिउ परदेसि,
धानुपानु मइ नीमिउ, प्राणप्रियार ज रेसि. ४५

जां निसि सूतिय देषउ, नीभर नींद्र मझारि,
गोत्रज सुमिणइ आविया, वोलिया वोल विचारि. ४६

तोरउ नाहु मरसइ, जीवितु अछइ छ मास,
हउ तव रोवण लागिय, हियडुलउ भयउ निरासु. ४७

मइ वली गोत्रज वीनवी, सामिणि करि न पसाउ,
नाहु होइ अजरामरु, चीतिवि सोइ उपाउ. ४८

तूठिय गोत्रज वोलिउ, मोहिणि मनि करि भ्रांति,
च्यारइ तरुण वोलाविय, वइसउ तुम्हि एकंति. ४९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रीति भली परि भोजनु, करिवउ एक हि थालि,
मइ तुझ कारणि कीधउ, ए इस्यउ नाहु निहालि. ५०

मोहिणि वोलु सुणी करी, कोपु ग्यउ मनि दूरि,
जारह चहु वणिजारउ, वीडउ देइ कपूरि. ५१

इस्यउ सुणी मूरषु रह्यउ, हरषु हुयउ अप्पारु,
मोहिणिनइ सुहि मोहिउ, गहगहियउ भरतारु. ५२

एकिहि चित्तिहि सांभलइ, ए इस्यउ फागु रसालु,
रंगि ते रंजवइ कामिणी, नीपजइ छयलु छिनालु. ५३

॥ मोहिणी फागुः समाप्तः ॥ छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२१]

अज्ञात कविकृत

कामीजनाविश्राम तरंग गीत

(विक्रमनो सोळमो सैको)

फागुणि फूली[१] वीजउरडी[२] तु नवरंग[३] पहुतल[४] मास वसंत तु.[५] १

वनि वनि तरूअर[६] कूंपल्या[७] तु नवरंग परिमल कहणउ[८] न जाइ तु. २

मिलीय छइ[९] तेवडतेवडी[१०] तु नवरंग सरोवर केरी[११] पालि तु. ३

मधुरइ[१२] सादइ[१३] पापिणी तु नवरंग कोइलि[१४] वासइ अकालि तु. ४

पाडल परिमल पसरीउ[१५] तु नवरंग भमरा[१६] रमइ वसंत तु. ५

वउलसिरी[१७] वन सीयलुं[१८] तु नवरंग केसू[१९] कुसुम अनंत तु. ६

करणी कारणि भमरलउ[२०] तु भमसि[२१] म[२२] माझिम राति तु. ७

काची कुली[२३] न[२४] ऊगरइ तु नवरंग भोगवि[२५] नवनवी राति[२६] तु. ८

चांपा कुली अति कूंयली[२७] तु नवरंग परिमल पूर[२८] अपार तु. ९

---

१ आ शब्द पछी 'य' छे. २ बीजुरडी. ३ स्व. मोहनलाल दलीचंद देसाईनी नकलमां, आ स्थळे दरेक पंक्तिमां 'भ०' लखेलो छे. ४ पहुतु. ५ स्व. देसाईनी नकलमां 'तु' नथी. ६ तरुअर. ७ फूलीआ. ८ 'पुहवि अनंत तु' एवा शब्द पंक्तिना उत्तरार्धमां छे. ९ स. १० तीवडी. ११ कीरी. १२ मधुरइं. १३ सादि. १४ 'वासइ कोइलि कालि तु' ए प्रमाणे पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. १५ पसरि. १६ भमरला. १७ वुलसिरी. १८ सिअलुं. १९ केसू अ. २० भमरलु. २१ भमइ. २२ सु. २३ कली. २४ नवि. २५ भोगवइ. २६ भाति. २७ कुंअली. २८ 'रहण न जाइ तु' एवा शब्द पंक्तिना उत्तरार्धमां छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बालइ यौवनि[१] प्रिय[२] गयु तु नवरंग ते[३] दुख हीइ[४] न माइ तु. १०

पहिरणि पीत[५] पटउलडी[६] तु नवरंग ओढणी[७] यादर[८] चीर तु. ११

विहरणि[९] तुझारउ वालहु तु नवरंग नयणे न सूकइ नीर तु. १२

भरत[१०] भराविस[११] कांचली[१२] तु नवरंग गलई[१३] एकाउलि[१४] हार तु. १३

सहजि[१५] सकोमल चालती[१६] तु नवरंग नेउर रणझणकार[१७] तु. १४

जिसी[१८] रतूफल[१९] पांखडी तु नवरंग आंषडी[२०] सू काजलरेह[२१] तु. १५

वालापणनउ[२२] नेहडउ तु नवरंग वालिंभ[२३] कांइ उविषि[२४] तु. १६

कामिणि[२५] होठि[२६] अमी झरइ तु नवरंग दाडिम कूली[२७] दांत तु. १७

नयणे[२८] न देपूं[२९] नाहलउ[३०] तु नवरंग[३१] मोरा[३२] सलूणा कंत तु.[३३] १८

मस्तकि[३४] सोहइ राषडी[३५] तु नवरंग सइथई[३६] घालि सिंदूर[३७] तु. १९

आच्छी[३८] ऊगटि जे करइ[३९] तु नवरंग बीडलीमाहि[४०] कपूर तु. २०

मचकोडे[४१] मन मोहीउं तु नवरंग लहकइ[४२] लाष[४३] म मारि[४४] तु. २१

---

१ यूवनि. २ प्री. ३ मनि. ४ हीयइ. ५ वीर. ६ पटुलडी. ७ पहिरगि. ८ जादर. ९ आ पंक्ति स्व. मोहनलाल दलीचंद देसाईनी नकलमां नथी. १० भरय. ११ भराभरि. १२ कांचूउ. १३ गलि. १४ एकावलि. १५ सहिजि. १६ वाल ती. १७ रमझमकार. १८ जिसि. १९ कूपल. २० आंखडी; आ शब्द पछीनो 'सू' स्व. देसाईनी नकलमां नथी. २१ काजलरेख. २२ बालापणनु. २३ वालंभ. २४ उवेख. २५ कोमल. २६ होठे. २७ हूला. २८ नयणि. २९ देखउं. ३० नाहलु. ३१ अहीं 'तु' पछी दरेक पंक्तिमां आवे छे तेवो 'भ०' स्व. मो. द. देसाईनी नकलमां लखेल नथी; पण 'नवरंग' पहेलांनो 'तु' मुख्य प्रतमां नथी ते त्यां छे. ३२ मरूंअ. ३३ स्व. देसाईनी नकलमां आ 'तु' नथी. ३४ सिर वरि. ३५ राखडी. ३६ सइंथइ. ३७ सींदूरि. ३८ आछी. ३९ कर रं. ४० बीडी. ४१ मचकोडइ. ४२ लहिकओ. ४३ लाखि. ४४ मागि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चतुर सनागर गोरडी तु नवरंग गूजरि[1] केरी[2] नारि तु. २२
माघ[3] सिर भरी मरहठी तु नवरंग सोरठडीय सुजाण तु. २३
मनमथ मूरति आवीउ तु नवरंग गोरडी पलं विलाहि तु. २४
नवयौवनभरि गोरडी तु नवरंग दीह दोहेला जाइ तु. २५
तरूयरि[4] बांधिउ[5] हींदोलडउ[6] तु नवरंग वृंदावनह[7] मझारि तु. २६
पालव[8] मूंकि[9] पटउलडी[10] तु नवरंग झीलि[11] सरोवरमाहि तु. २७
गलइ[12] भींजइ गोरी कांचूउ तु नवरंग अनइ एकाउलि हार तु. २८
सींगी[13] जलि भरि पाणीइ[14] तु नवरंग छांटइ[15] बाली वेस तु. २९
वृंदावनि गोरी मिली[16] तु नवरंग[17] हीयडइ[18] हरष धरेवि तु. ३०

॥ इति शृंगारभावेन कामीजनविश्रामतरंग गीतं संपूर्णं[19] ॥

---

१ गूजर. २ केरीय. ३ २३, २४ अने २५ आ मुख्य पाठनी त्रण पंक्तिओ स्व. देसाईनी नकलमां नथी. ४ तरूअर. ५ डालि. ६ हींडोलुइ. ७ पंक्तिना उत्तरार्धमां आ प्रमाणे शब्दो छे: 'गिरि कुंदर वनमाहि.' ८ पालि हि. ९ माहि. १० पहुतली. ११ झीलइं. १२ स्व. देसाईनी नकलमां आ पंक्तिना शब्दोनो क्रम आ प्रमाणे छे: 'भींनु गोरी गलि कांचूउ तु भ० भींनु नवसर हार तु.' ते पंक्ति पछी स्व. देसाईनी नकलमां आ पंक्ति वधारे मळे छे: 'भीनी काजलरेखडी तु भ० भींनु कुसुमह भार तु.' १३ सींगु. १४ पांणो अ. १५ पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे: 'छंटइ माहोमाहि तु.' १६ रसइ. १७ 'नवरंग' ने बदले 'भम०' लखेलुं छे. १८ पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे: 'सहुइ पाडीउं मोहि तु.' १९ स्व. देसाईनी नकलनी पुष्पिका आ प्रमाणे छे: 'इति नवरंग समाप्त.' तेमनी नकलमां आ कृतिनुं शीर्षक 'नवरंग' छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२२]

अज्ञात कविकृत

चुपइ फागु

(विक्रमनो सोळमो सैको)

आविउ वसंत कि सुणि रे सही, आंबाडालि कोइलि गहिगही,
कसिम परीमल रहिणउ जाइ, वनि वनि वनि वहिस्यु[ती] वणराउ[इ]. १

वसंत मास रति आयु रे, वायु मलयानींल रे,
भमर गूजारव करइं मंजरी, कोइलि सरलइ सादि रे. ध्रूपद २

भमरा रणझणकारि भमइ, फलि भरि करणी भारइ नमइ,
वनमाहि विहिस्यु वेलइ अनंत, गोरी रमइ हींडोला वसंत. ३

आसो[सा] विस्त करइ बहू पंषि, तरुअर तणी न जांणुं संषि,
कइलि डोडा दिसइ नवा, वनमाहि द्राष तणा मांडवा. ४

फोफल नालीइरी अषोडि, फणिसि तणि वनि दीसइ कोडि,
सोवन केतकी फिरती तीरे, पाकां आलूं नइ जंवीर. ५

केलि षजूरी नइ नारिंगि, आंबा जांबू नइ भारिंगि,
पाडल सेवंत्री मूचकंद, रमइ व्रंदावन गोपी गोव्यंद. ६

धामण धूंसर सीसवि साग, धाव धाउडी नइ दीसिइ माग,
महू गलइ ते मोडामोडि, कींब लींब करपटनी कोडि. ७

कुठि करमदी निइ आंबिली, बहुला तरुअर छाया भली,
पढइ ते पोपट वनमाहि सूआ, वसंत मासि फूल्या केसूआ. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दाडिमि बीजउंरी लीबूइ, मधूर परिमल फूली जूही,
सदा फफल वांये मन उल्हसइ, वाइ तरुअर भइं घसइ. ९

दमणु मरुउं नइ बावची, फलि भरि तरूअर आव्या लची,
मोर सु सरसउं सरसी डेलि, वडइ पलंदी नागरवेलि. १०

आंबण बोरि अनइ झीझणी, वडिवागुलि त्यांहां झूंवी घणी,
पाकां रांइणइ दीसइ घणां, किरण प्रगटइ सूरिज तणां. ११

सरभि समीरण वायइ वाअ, पाडल फूल षिरइ जलमाहि,
तीरइ तीरइ सारंग फिरइ, सरोवर पाणी इह कांकरइ. १२

आदि अनोपम भणि रेहया, करलइ सारस जलि पंषीआ,
पाणी उपरि पदमिनी तरइ, राजहंस जलि क्रीडा करइ. १३

कुली आवइ काटा प्रदेस, सोल अढारी चडती वेसि,
पंनरपि गुझ प्रकासी कहइ, एकि झीलइ एकि पालइ रहइ. १४

तेहनूं रूप सिहिणूं जाइ, सोइ झीलइ ते पांणीमांहि,
अधर भरइ योवनमद पूरि, रूपइ रथ रहावइ सूर. १५

चंदवदनी ते सिवि सहि लालइ, रमइ रंग रसि अबला वालि,
तडकस कंचू उर वरि हार, रेणि रंगि रीझवइ भरतार. १६

पदमिनी कमल करइ विकास, नवयोवन स्त्री करइ विलास,
मिलीय सिवे बाली लहूअडी, प्रीय विण न रहइ एकइ घडी. १७

करइ श्रंगार सार गलइ हार, चरणे नेअरना झमकार,
चित्रालंकिइं ति कुच कठोर, पडंती रसीआं चित्त चकोर. १८

मृगनयणी कुंबरा रसि झिरइ, डसण वइरागर उपम करइ,
चंद्रवदनी अति करइ सुरंग, प्रति भरतारनइ आलइ अंग. १९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कणइअर कांव जिसी कूंअली, त्रसरी आटि पेटिइ वली,
आछां आंवर कूंकूं वांनि, झवकइ झालि को सीसे कांनि. २०

तेहनी उपम कहीइ किसी, जांणे स्वर्ग तणी अर्वसी,
मेघवनी पहिरइ कांचली, निरपइ नारि ते पाछी वली. २१

पिहिरण नवरंग अनोपम चीर, गोरी चांपावंन सरीर,
तपत कंचू कसण कसमसइ, युगम पयोधर भारिइ लसइ. २२

कटितटि विलसइ वेणीदंड, तोडइ कुसल ते भूअंग,
सर वरि केस वल्यां वांकडी, वेणीदंड जडित रापडी. २३

सोवन तडूकां सोहि कांनि, एकि गोरी एक भीनइ वांनि,
मृगमदि टीली निलवटि आधि, सर वरइ बहिकइ साष ज बांधि. २४

गयगमनी ते लीलविलास, पंषि जाइ मुपि विहिकइ सास,
डसण झबूकइ करि मुपि वयणि, वनि हरावइ करंगी नयणि. २५

जंघ यशाउ कदलीथंभ, रूपइ जमलि न दीसि रंभ,
मदनमेषली हीरे जडी, नहरि जिस्या सतकमलपांपडी. २६

गलइ नगोदर नइ झूमणूं, घणु शणगार हव केहु भणूं,
हाथि हाथुलि करि मूद्रडी, माणिक मोती हारे जडी. २७

अणवटइ पगि नेउर झमकार, नयणे करइ अनेरा मार,
चंपककली धूंप सिरि भरइ, आछी रेष काजलनी करइ. २८

अधर अमृतरस झ्यरइ सुरंग, प्रेम काजि रसि भरीआं कंभ,
तरल सकोमल कुंअली बालि, रतिपति रमीइ श्रीगोपाल. २९

कटि कुंअली अति आवइ लंकि, भमइ जिसी करि धनुष अनंग,
पदमिनी वास सास अति निर्मली, नयण जिस्यां रातूं फल कमल. ३०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कंकण चूडि अनइ आभरण, हारे तेजि तपइ रविकिरण,
केतक सरीसी रमलि करंत, गोरी गाइ राग वसंत. ३१

नलवटि करइ सरि सींदूर, ऊगटि केसर नइ कपूर,
करणी वेलि अंबोडा भरइ, भमर गूंजारव शरवर करइ. ३२

श्वेत पटुली कसमस करइ, हंस हराव्या नव माहि फरि,
अशोक पल्लव करइ कामिनि, मांन न मेल्हि ते मानिनी. ३३

मधर वाणि बोलि भींभली, करइ विलास ते प्रेमआकुली,
लाया बोल ते बोलइ वयणे, रतिपति रमीइ पूंनमरयणि. ३४

शरषंडां सिवि पहरइ चीर, भर सरोवर वनमाहि नीर,
काजलि करल कशिम शिरि भरइ, गोरी मिली छांटणा करइ. ३५

सांकली सोत्रन [श्वेत][1] पटुली, हीचइ सुंदरि ते अति भली,
अतिहि सलक्षण प्रेमनी प्रीया, पंथीभूला पंथी हुआ. ३६

वेणा यंत्र करइ आलि विणि, करइ गानि ते सवि सुररमणी,
मृदंग सरमंडल वाजंत, भरह भाव करी रमइ वसंत. ३७

पदिमनी हस्तिनी चित्रणि नारी, लीलावंती रमइ मुरारि,
सोल सहस वनइ मिली आनंद, राश भासि गाइ गोव्यंद. ३८

मिलीआनील घणूं वायउ वाउ, रतिपति पहुतु वसंतराउ,
चंदनवनि बिहिकइ सिहिकार, सोहइ भ्रमर तणा झमकार. ३९

कुरणी वेल अनइ मुचकंद, पाडल रस पीइ मुचकंद,
कोइलि पंचम शर आलवइ, वसंत तणा गण कवीआ कवइ. ४०

---

१ खूटतो शब्द श्वेत होवो जोइए ए संभावनाथी ते शब्द उमेर्यो छे. जुओ कडी ३३.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केसू कस (?) मेलयु ऊल्हास, पांणी पाडल करइ विलास,
विरहणी चित्त चमकु थाइ, अढार भार वहिसि वणराय. ४१

पदमिनी कमल करइ विकास, नवयोवन स्त्री करइ विलास,
मिलि सिवे छावी लहूअडी, प्रिय विण न रहइ एकइ घडी. ४२

कवि कहइ रतिपति तणु विचार, आंछां अंवर पहिरणि सार,
वावनिचंदन सिर लाइंइ, हीडोलाट षाट पुढीइ. ४३

अनी ऊंन्हालइ मं विलसीइ, नवयोवन गलि लाइंइ,
मुधरु वाउ राति चांद्रिणी, करइ विलास करइ प्रिय तणी. ४४

चंपक वेल तणी पांपडी, पांन अडागर सोहइ वांकडी,
सोव्रन केतकी गंध अपार, कंठइ कंदलइ करणीना हार. ४५

सांभलि पुरुष तणु सिणगार, आछां अंवर पिहिरणि सार,
बाहि बिहिरषा रूडा लेढ, डावा जिमणा पहिर्या वेढ. ४६

भइरव सानबाफ पिहिरणइ, दाडिमहूला ते ऊढणइ,
बंधालग पहिरइं बहूमूलि, अंबोडे चांपानां फूल. ४७

कांने कुंडल आछा झूलि, पागि वांणही ते बहूमूलि,
डसण झबूकइ दाडिमकली, निरषइ नाह ते पाछा वली. ४८

नव नव भाति पटुली नवी, पेषि भावि ते भृति भोलवी,
ललत गर्भेसर लक्षणवंत, मध माधव रमि वसंत. ४९

चैत्रि सषी कोरण घणूं वायुं, येठि मासि पग मेल्हणु न जाइ,
कोकोला बिणि कोरण आंधि, हवइ आवी वरसाला सांधि. ५०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आसाढ मासि अंबर झिरमरइ, वापईडउ प्रिय[1] प्रिय करइ,
सुषि सोगठे रमीइ सारि, जु पणि तुसइ देव मुरारि. ५१

श्रावण पिहरण यादर चीर, परणालिइ वहइ अरवल नीर,
सइरि सींदूरी कांचली कसइ, नरपइ नारि ते मरकलइ हसइ. ५२

भरतारिइ सूं भाद्रवइ मासि, हीडोलाटइ करइ विलास,
नसि अंधारी विजलि षवइ, गमे गमे दादर डांलवइ. ५३

सुदी सुरंग ते आसो मासि, अंबर डंबरीउ आकासि,
थयी गुरि नइ वर मागीइ, सही सही प्रिय गलइ लागीइ. ५४

सीआला धरि काती मासि, कांमिनि मनि हवं पूगी आस,
कडां सरीसी उर[ड]इ[2] षाट, हसतां लीइ हीडोलाट. ५५

मागसरे मन करि कुंमाह, लाडगहेली लहूआ नाह,
रूपिइ सु नागर अतिहि सुजांण, सषी एकनूं धण तिणइ प्राणि. ५६

प्रिय तणा गण पोसि मासि, सेजइ पइठी वालंभ पासि,
मेहिली लाज अंग आपीइ, प्रीय तणा रस द्राम पामीइ. ५७

माहा मासि स्त्री नांन्हडी, प्रिय नान्हड [न रहइ][3] एकइ घडी,
विषय वेध रूस करइ सु प्राण, तेहनइ तूठा सारंगपाणि. ५८

---

१. प्रतमां 'प्रीय' एवी जोडणी छे ते लहियानी भूल होवानो संभव छे तेथी ज्यां ज्यां 'प्रीय' शब्द छे त्यां त्यां 'प्रिय' एवो सुधारो कर्यो छे.

२. अहीं 'उरडइ' शब्दमांथी पडी गयेलो 'ड' मोटा कौंसमां मूक्यो छे.

३. अर्थ अने छंद तूटतां होइ, कोइ शब्द पडी गयेला जणाय छे; पडी गयेला शब्द 'न रहइ' होवा जोइए, एवी संभावनाथी ते मोटा कौंसमां मूक्या छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फागण मासि फली वण वेलि, बाजी रामति हवइ परी मेल्हइ,
मध माधव रिति कांमनि कंत, रतिपति रमीइ राउ वसंत. ५९

रत्न अमूलिक सरव रिधडी, जाणे किरि विश्वामित्र घडी,
मदनमेषला भीजी रहइ, धीणु ऊपम केही कहइ. ६०

॥ इति चुपइ समाप्तानि ॥ श्री ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२३]

अज्ञात कविकृत

फागु

(विक्रमनो सोळमो सैको)

चांद्रिणी राति सोइ सीयली रे, सीअलु माधव मास,
अस तह्म [ना]री[1] नाहवि[नि] नाहुला रे, सीयला चंदनरुष रे. १

सीयलु वाउ वाराय पहुतु, गोरी रति रणु रे,
कोयल कोरले अंबवने, मोरडला मंन वास. २

दसितं माहारी (?) हवि नाहला आ रे, गय सीआलु हवि गोरडी,
हईड झूर म झूरिइ रि, देसांतरि प्री वसि रे. ३

वंनि वंनि तरुअर फलीआ रे, मुरीअडा मचकंद,
वंदा [वन] वनि रस पीइ रे, सी ब.....*
*.....फूलीआ कमदा रे, वार लागी नईणे निरषंता रे. ४

केसूयां कसमलि *.....मं मधर महू छोडि,
मोड म मूकेसि आपणु रे, कूअली करणी न फूलीइ रे. ५

पीय*.....ल न होइ, जोइ पाडल भमरु रस पीइ रे,
वुलसरी गंध सीअलु रे, पारध गंधि विहीण [रे]. ६

[इ]णी परि प्रीह रीझवु रे, वेलि विहाणिडि विहसीउ रे,
परिमल[2] गंध न जाइ, नाहा हईडा हूतु न वीसिरि. ७

---

१ 'नारी' शब्दमांथी 'ना' पडी गयो होवाथी तेने मोटा कौंसमां मूक्यो छे.

२ प्रतमां 'परीमल' छे.

* अहीं मूल प्रतमां अक्षरो कपाई गया छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दमणा दरीसण ताहिरु रे, हव कंम मिलीइ नाहा,
माहा मासि आलि नीगमु रे, मरुउ मनि कंम वीसारि रे. ८

जेणि हईअडू टाढू थाइ, कंथ संदेसा साई मोकलि रे,
चंपला तरुअर फूलीआ रे, फूलीआ कमदा रे. ९

सार करेजे प्रीअडा माहइरी रे, वांम लोचन अंग फरकीउ रे,
साभलि सपी मझ गूझ, मझ वालंभ आव्यु ढूकडु रे. १०

कांचूआ कसण वित्रूटीआ रे, आव्यु मू भरतार,
हार हईडा हूतु हरशीउ रे, वालंभ हईडू ताहिरु रे. ११

हवि मरु....वा पी मेहेलि, वेलि चडि जमं मांडवइ रे,
फागुण रति वसंत षेलीय रे, हईडि हरष मंनमां नाह. १२

मंनोरथ साआ परीआ रे, अतेयी*....णी

समापत पद

॥ इति फागु समाप्त ॥ छ ॥ श्री रामाय नमः । श्री गोवंदाय नमः ॥ श्री । छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२४]

अज्ञात कविकृत

वाहणनु फाग

(सं. १५८७)

फाग ढाल

अहे सरसति सांमणि वीनवूं, मागुं एक पसाय,
काया प्रवहण पूरीयां, मन सूकाणा वाय. १

श्रीजिनशासनि गाइसिउं, लाभइ सुष अपार. श्रीजिन. आंकणी.
अहे तप कूओ निरतु करे, दया ति दस्तूरह जांणिं. श्रीजिन. २

अहे सीयलइ ते सढ पूरीओ, भाव भंडारी थापि,
धरम ध्यांन वेहू आवलां, जोईय वेला तुं वाहि. श्रीजिन. ३

अहे क्रोध मान माया जल वहइ, उपशम दलूयां मेल्हि,
संवर सषाईयु राषजे, जाणइ विवेक विचार. श्रीजिन. ४

अहे दानइ दुरगति नाससिइं, नालि ति जस भडवाउ,
जीपजे वयरी वांकडा, आठे कर्म्म कठोर. श्रीजिन. ५

अहे पांचइ इंद्री पांजरी, चड्या तिहां जोइं वाट,
वाटइं लोभ धूतारडउ, ते जोई करे रहठांम. श्रीजिन. ६

अहे वार देवलोक वारां भलां, नगर छइ नव ग्रैवेक,
मुगतिशिला पाटण भलुं, तिहां छइ विनु रे विवेक. श्रीजिन. ७

अहे चिहुं गति च्यारइ वावटा, वाइं राति नइ दीस,
पंचविमान जेम रुयरि, जीव तूं रहइ तिहां जोइ. श्रीजिन. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अहे न्यांइं नांगर मूकजे, वस्त विचारी वुरि,
बार व्रत किरीयाणां भलां, सूधी लइ रे सुजांण. श्रीजिन. ९

देवतत्व गुरुतत्व ए, धर्म्मनु धणी तूं होइं,
आगमसिद्धांत जिहां अछइ, जाणइ विवेकविचार. श्रीजिन. १०

अहे संवत पनर सत्यासीइं, आषाढ शुदि रविवार,
*..... श्रीजिन. ११

एह फाग जे गाइसिइं, तेह घरि मंगल च्यार,
श्रीजिनशासनि गाइसिउं लाभइ सुष अपार. १२

॥ इति फाग वांहणनु समाप्त ॥ सूरेति मंदिरे रषिराजू लिखितं।
शुश्राविका वाछी पठनार्थं ॥ शुभं भवतु ॥

* मूल प्रतमांथी एक पंक्ति पडी गयेली छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२५]

अज्ञात कविकृत

नेमिनाथ फाग

(अनुमाने विक्रमनो सोळमो सैको)

राग फाग

अहे तोरणि वालिंभ आवीउ, यादवकुल केरु चंद,
पसूआ देषी रथ वालीउ, तिहि वसि हू उच्छंइ. १

निशि अंधारी एकली, मधुर म वासिसि मोर,
विरह संतापि पापीउ, वालिंभ हईइ कठोर. २

धुरि आसढइ ऊनयु, गोरीना गुण नेह,
गाढइ गाजि म पापीआ, छानु वरिस न मेह. ३

श्रावण वरसइ सरवडे, मेह न षंडइ धार,
मनमथि मोरू मन व्यापीउं, प्रीअडु न करइ सार. ४

भाद्रवडा भरि ऊलटइ, सरोवर लहिरडे जाइ,
कायासरोवर अह्म तणुं, विण सामी सीदाइ. ५

राजहंस परवति रूअडु किमइ न आवइ हेठि,
मांनसरोवर परिहरी, छीलर ऊपरि द्रेठि. ६

आसो आशा लूधडी, हुं मेली ईणि कंति,
मधुकर मालती परिहरी, पारधि पुंठि भमंति. ७

जिम जिम सहीअर सासरइ जाती देपुं माइ,
तिम तिम मोरुं मन आवटइ, किमइ न थाहरि थाइ. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काती मास मेलावडु, नेमि न कीधउ आज,
छपन्न कोडि यादवधणी, हूं मेल्ही कुण काजि ? ९

मागशरीए सजन मेलावीइ, एह सलूणउ नाह,
जाणीइ तीणइ पालविउ, बलता दव केरु दाह. १०

हंस भणी मइ हेलविउ, सर वगलानु दीध,
अंब भणी मइ सेवीउ, फल धंतूरा दीध. ११

पोस मलइ सु मनवंछित होइ, पभणइ राणी राइमइ,
.....नेमि न मेल्हइ कोइ.* १२

करंडी कीधउ, मइ वहिउ वारू विसहर जाणि,
द्रिष्टि वंची मुझ डसी गयु, देपत राणोराणि. १३

माह मासि वाइ टाढडी, गाढडी लागइ भूप,
नेह ज सालइ हईअडलइ, नेमि न जाणइ दूष. १४

हरणी हेजइ परिभमइ, पाष लिधी सवि वार,
हरणु हईइ कठोरडु, वरते आंक मदार (?) १५

फगुणि फाग न मुं गमइ, दमइ ति मदन सरीर,
कामणगारु कंतडु गमइ ते साथल धीर. १६

करहु सहिजि कुबधीउ, मुह वाहि करीरि,
गली द्राष जु परिहरी, कंटकि लाइ सरीरि. १७

चैत्रि न चेतइ कंतडु, सवि फली वणराइ,
पाडल परिमल बहिकतु, मूरष मेली जाइ. १८

*आ कडीनुं त्रीजुं चरण मूल प्रतिमां नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहीए ईस्वर कूडीउ, गंग वहइ सिरि कीध,
तिहि पाइ तुं आगलु, कर अधिकेरु दाह. १९

बारह मासमाहि मूलिगु, जेठ वडेरु होइ,
पभणइ राणी राइमइ, नेमि न मेलइ कोइ. २०

कृष्ण भणइ, सुणि राइमइ, मिलसि तोरु स्वामि,
अष्टभवंतर प्रीतडी, सिद्धपुरि हूउ ठाण. २१

जाणउं यादव कूडीउ, हू आगइ मनमांहि,
सोल सह[स] गोपीधणी, मूरष तेडी म वाहि. २२

तप जप संयम आदरी, कीधउ निर्मल काइ,
नेमि पहिली राइमइ, इम बइठी शिवपुरी जाइ. २३

॥ इति श्रीनेमिनाथ फाग समाप्तं ॥ छ । छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२६]

जयवंतसूरिकृत

स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग

(सं. १६१४ आसपास)

फागनी ढाल*

सरसति[१] सामिनि[२] मनि[३] धरी, समरी प्रेमविलास,
थूलिभद्र कोश्या[४] गायसिउं,[५] जिम मनि[६] पुहचइ आस. १
ऋतु[७] वसंत नवयौवनि[८] यौवनि[९] तरुणी वेश,[१०]
पापी विरह संतापइ[११] तापइ[१२] पिउ[१३] परदेश.[१४] २

काव्यं[१५]

ऋतु[१६] वसंत वनि आव्यु[१७] गहगही, प्रेमकुंपल[१८] कुसुमावलि महमही,[१९]
मलया वाय[२०] मनोहर वाइ,[२१] प्रिउनइं[२२] ऊडी मलउं[२३] इम थाइ. ३

चालि[२४]

वनसपती सवि मोहरी रे,[२५] पसरी मयणनी आण,
विरहीनइं[२६] कहंउ कहंउ[२७] करइ[२८] कोयलि[२९] मूंकइ[३०] बाण. ४

---

* 'फागनी ढाल' ए शब्दो खंभातनी प्रतमां नथी.

१ सरसिति. २ माता. ३ मन. ४ कोशा. ५ गाइस्युं. ६ सवि. ७ रितु. ८ नवजोवनि. ९ जोवनि. १० वेस. ११ संतापए. १२ तापए. १३ पीउ. १४ परिदेसि. १५ प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. १६ रिति. १७ खंभातनी प्रतमां 'आव्यु वनि' ए प्रमाणे शब्दो छे. १८ परिमलंइं. १९ महिमही. २० वायु. २१ वाय. २२ पीउनइं. २३ मिलूं. २४ फाग. २५ मुरी. २६ विरहीनि. २७ कुहु कुहु. २८ करी. २९ कोइलि. ३० मेहलइ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तरुअरवेलि आलिंगन देषिय[१] सील[२] सलाय,
भरयौवन प्रिय[३] वेगलु,[४] षिण न विसारिओ[५] जाइ.[६] ५

[काव्यं[७]]

प्रियडउ[८] टलवलइ प्रदेशथी,[९] रडइ गोरी मंदिरमांहिंथी,[१०]
बहु[११] गुझवी[१२] हतु रतिराज,[१३] रहइ रहइ[१४] पसरी[१५] धरी लाज.[१६] ६

चालि

वली रे[१७] कुंपलडीय[१८] वेलडी, वली वली ऊगइ चंद,
पणि न वले[१९] गयु योवन,[२०] प्रेमलतानु कंद. ७

सूकइ सरोवर जल विना,[२१] हंसा किस्युं रे[२२] करेसि,
जस घरि गमतीय गोरडी, तस किम गमइ रे[२३] विदेश.[२४] ८

[काव्यं[२५]]

षिणि[२६] अंगणि पिणि ऊभी[२७] ओरडइ,[२८] प्रिउडा[२९] विना[३०] गोरी ओ रडइ,[३१]
झूरतां[३२] जाइ[३३] दिन रातडी, आंषि हूई ऊजागरइ रातडी. ९

---

१ देषी. २ माण. ३ पीउ. ४ वेगलइ. ५ वीसारु. ६ जाअ. ७ खंभातनी प्रतमां आ शब्द नथी; प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. ८ पीउडु. ९ परदेशथी. १० मंदिरमाहिथी. ११ बहू. १२ गोझिवी. १३ रितुराज. १४ खंभातनी प्रतमां 'रहइ' एक वखत ज आपेलो छे. १५ पसरइ. १६ लाजा. १७ 'रे' खंभातनी प्रतमां नथी. १८ कूपलीइ. १९ वलाइ. २० यौ[व]न. २१ विण. २२ 'रे' खंभातनी प्रतमां नथी. २३ 'रे' खंभातनी प्रतमां नथी. २४ वदेसि. २५ खंभातनी प्रतमां नथी; प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. २६ षिणय षिण. २७ आ शब्द खंभातनी प्रतमां नथी. २८ उरडइ. २९ प्रीउडी. ३० विण. ३१ उरडइ. ३२ झूरता. ३३ जाय.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चालि[१]

रे साजन[२] जे तिइं[३] करिउं[४] ते मिइं[५] कहिउं[६] रे न जाइ,
वइरीडा वेध विलाईनइ[७] ईम कां[८] अलगु[९] थाय.[१०] १०
वीज पडओ[११] ते ऊपरिं[१२] जे करी छांडइ[१३] नेह,
विरहिइं[१४] बाल्यां माणस स्युं करइ वरसी मेह. ११

काव्यं[१५]

प्रिउडइ[१६] सखि[१७] कामण कीधुं, पापीइं[१८] चित चोरी लीधुं,[१९]
लोकलाज[२०] तिजीनइं[२१] माय,[२२] प्रिउ[२३] केडिइं[२४] भमुं इम थाय.[२५] १२

चालि[२६]

लीला गतिइं[२७] जे चालइ,[२८] बोलइ[२९] सुललित वाणि,
नयन[३०] सोभागी पातलो[३१] मोहन लंक सुजाण. १३
ते साजन[३२] किम वीसरइ जस गुण वसिया[३३] चिंति,
ऊंवमांहिं[३४] जु[३५] वीसरइ[३६] सुंहुणामांहिं[३७] दीसंति.[३८] १४

काव्यं[३९]

कठिन कंत करि आलि जगावइ,[४०] घडी घडी मुझ[४१] सुहणइ[४२] आवइ[४३],
जब[४४] जोऊं तब[४५] जाइ नासी, पापीडा[४६] मुझ घालि म फांसी. १५

---

१ खंभातनी प्रतमां आ शब्द नथी. २ सज्जन. ३ तइं जे. ४ कर्युं. ५ मइं. ६ कहुं ७ लाईनइ. ८ का. ९ अलगो. १० थाइ. ११ पडओ १२ उपरि. १३ छंडि. १४ विरहइं. १५ प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. १६ प्रीउडि. १७ सषी. १८ पापिइं १९ लीधूं. २० लोकलज्ज. २१ मेल्ही ति. २२ माइ. २३ प्रीउ. २४ केडि. २५ थाइ. २६ फाग. २७ गति. २८ चालए. २९ बोलए. ३० नयण. ३१ पातला. ३२ सज्जन. ३३ वसीआ. ३४ ऊंघमाहि. ३५ जउ. ३६ वीसरि. ३७ सुहणामाहि. ३८ देषंति. ३९ प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. ४० जगावि. ४१ आनी पछी खंभातनी प्रतमां 'सुझ' शब्द आपेलो छे. ४२ सुहणि. ४३ आवि ४४ जव. ४५ तव. ४६ पापीआ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चालि[१]

पापी रे धूतारां[२] सुहणडां[३] मुझ स्युं[४] हासुं छोडि,
करइ विछोह जगावीनइं[५] सूतां मूंकइ[६] जोडि. १६

रे साजन तुझ मन तणी, पुहचसिइ[७] सघली[८] रुहाडि,
पणि नवि मोरा मन तणा[९] जाणो[१०] तुम्हो[११] रे पेलाडि. १७

काव्यं[१२]

सखि[१३] फागुण मास सोभागी, मलइ[१४] साजन[१५] जेणि सरागी,
वरसइ[१६] मेह नइं[१७] मेलावु[१८] होई,[१९] वेलिं[२०] कोइलि चातक मोहई.[२१] १८

चालि[२२]

रे साजन जब मुझ[२३] तुझ संगम हतो रे अपार,
तव[२४] मुझ आला लुंबडे[२५] षिण नु हुतु[२६] परवार. १९

रोहणओ[२७] रुंष[२८] मनावणो[२९] इम करतां[३०] दिन जंत,[३१]
वीवाह वीतओ[३२] मांडवे[३३] तिम हूं[३४] सूंनी कंत. २०

काव्यं[३५]

तेह ज मंदिर तेह ज सेरी, नवि गमइ[३६] सखी[३७] जोऊ[३८] फेरी,
ओल्हाव्या[३९] विण जाइ[४०] वणजारा[४१] गया चोरी चित्त[४२] लूटारा.[४३] २१

---

१ काव्यं. २ धूतारा. ३ सुहणला. ४ सुंउ. ५ जागावी. ६ मेलि. ७ पुहचिइ. ८ सघलइ. ९ नयणनी. १० जाणउं. ११ तह्मे. १२ प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. १३ सषी. १४ मिलिइ. १५ साजण. १६ वरसमइ. १७ दिति. १८ मेलावो. १९ होइ. २० वेलिं. २१ जोइ. २२ फाग. २३ अह्म. २४ तव. २५ लंवणइ २६ हतो. २७ स्नेहं. २८ रूसणुं. २९ मनामणउं. ३० करता. ३१ जंति. ३२ वीतइ. ३३ मांडवि. ३४ हवि तिम... ३५ प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. ३६ गमि. ३७ सषि. ३८ जोयुं. ३९ ऊचल्या. ४० जनि. ४१ विणजारा. ४२ चींत. ४३ षोटारा.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चालि[1]

सखि[2] मुझ न गमइ चंदन, चंद न करइ[3] रे संतोस,
केलि म वीझस[5] ही सही,[6] सही न समइ[7] अम[8] दोस. २२

जेणिं[9] कीधुं[10] मुझ[11] कामण ते मुझ[12] मेलि न आज,
आरति[13] हुइ[14] ऊतावली, जु[15] मुझ जीविइं[16] काज. २३

काव्य[17]

वसंत देषी मोरुं मन गहवरइ, पापिणी कोइलडी[18] कोहउं कोहउं[19] करइ,
तेहनइं[20] सखी[21] लवती[22] वारउं,[23] विरहिइं[24] माहरानइं[25] म मारउं.[26] २४

चालि[27]

परदेशीस्युं प्रीतडी हईडा[28] मंडइ[29] काय,[30]
वईरडओ[31] वेध[32] पुंणीनइं[33] वेध विलाई जाइ. २५

आज घाली गलि बांहडी[34] परमइं[35] पियारइ[36] देशि,[37]
जिम[38] रांनि रुंष ज एकलां[39] हईडा[40] किस्युं रे करेशि.[41] २६

---

१ फाग. २ सषि. ३ करि. ४ आ शब्द खंभातनी प्रतमां नथी. ५ म वीजसि. ६ हें सही. ७ गमइ. ८ इम. ९ जेणइ. १० कीधू. ११ आ शब्द खंभातनी प्रतमां नथी. १२ मझ. १३ आरत्था. १४ आ शब्द पछी खंभातनीं प्रतमां 'रे' मळे छें. १५ जो. १६ जीवइ. १७ प्रा. वि. मं. नी प्रतमां 'दूहा' छे. १८ कोइल. १९ कहु. २० एहनइ. २१ सषी. २२ लवंती. २३ वारइ. २४ विरह. २५ मार्थानइं. २६ मारइ. २७ फाग. २८ हियउला. २९ मंडी. ३० काइं. ३१ वईसीआ. ३२ वइर. ३३ पूणीनिइ. ३४ बाहडी. ३५ परिम. ३६ पीयारि. ३७ देसि. ३८ खंभातनी प्रतमां 'रांनि रुंष जिम' ए क्रममां शब्दो छे. ३९ एकलुं. ४० हइडला. ४१ करेसि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काव्यं[१]

सजनीआं[२] वुलावी[३] हूं वली, गुण संभारी[४] हूई[५] अति आकुली,[६]
आंगणइ[७] आव्या मेह बारे[८], गहवरी रही पोलि दुआरे.[९] २७

चालि[१०]

ओसीसुं[११] अति दुष धरइ[१२] तालोवीली[१३] थाय,[१४]
ओसीसुं[१५] अति[१६] तापव्युं,[१७] तडफडतां निशि[१८] जाय.[१९] २८

कहिनइं[२०] सखी[२१] ए सेजडी से[२२] जडी सजन[२३] विछोह,[२४]
कइ[२५] अगनिं[२६] कइ[२७] कांटडइ[२८] के[२९] कउचां[३०] कंइ लोह.[३१] २९

काव्यं[३२]

मुझ शरीर[३३] सखि[३४] चीरइ चीर, लोह संकल समान झंजीर,
रयणि[३५] जोवनिमांजरि[३६] महिमही,[३७] नीसासे करी काया मिइं[३८] दही. ३०

चालि[३९]

हुं[४०] सिइं न सरजी पंषिणि, जिम भमती प्रीउ पासि,
हुं सिइं न सरजी चंदन, करती प्रियतनु वास. ३१

---

१ प्रा. वि. मं.नी प्रतमां 'दूहा' छे. २ सइजनिआं. ३ वउलावी. ४ समरेवि. ५ हुई. ६ आकली. ७ आंषडी. ८ बारइ. ९ दुआरि. १० फाग. ११ उसीसुं. १२ करि. १३ तालोवेली. १४ थीइ. १५ उसीसुं. १६ जिम. १७ तापविउं १८ निसि. १९ जाइ. २० कहिन. २१ सषी. २२ सि. २३ सज्जन. २४ विछोडि. २५ कि. २६ अगनिह. २७ केइ. २८ षोटडइ. २९ कइ. ३० कउअचि. ३१ लोहि. ३२ प्रा. वि. मं.नी प्रतमां 'दूहा', छे. ३३ सरीर. ३४ सषि. ३५ रयणी. ३६ मांजरियौवन. ३७ महमही. ३८ मइं. ३९ काव्यं. ४० अहींथी शरु थती २१मी कडीनी प्रथम बे पंक्ति खंभातनी प्रतमां छेकी नाखेली छे पण ते नीचे प्रमाणे वांची शकाय छे:

"हुं सिं न सरजी पंषिणी, जे भमती प्रीउ पासि,
हउं न सि सरजी चंदन, करती पिउतन वास."

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हुं सिं न सरजी फूलडां, लेती आलिंगन[1] जाण,
मुहि[2] सुरंग[3] ज शोभतां,[4] हुं सिइं[5] न सरजी पान. ३२

[काव्य][6]

देह पंडुर[7] भई[8] वियोगिइं,[9] वईद[10] कहइ एहनइं[11] पिंडरोग,[12]
तुझ वियोगि जे वेदन मइं[13] सही, सजनीया[14] ते कुण सकइ कही. ३३

चालि[15]

सजन[16] हवा रे[17] देसाउरि[18] संदेसे[19] व्यवहार,[20]
आहार[21] जुहार[22] ह[23] मन तणो, कागल[24] बांधिउ[25] बारि.[26] ३४

विरह[27] ओ तां मिलवा तणो, किम जीवीइ[28] रे[29] संदेसि,[30]
डील उपरि दुप आंगमी वाहला[31] तुज्झ[32] मिलेसि. ३५

दूहा

केसूडां पंथि पालवे,[33] सूडा दिउं[34] तुझ लाष,
एक वार मुझ मेलि न सजन पसारी पांष. ३६

---

१ आलिंगण. २ वदनि. ३ सरंगी. ४ शोभती. ५ सिं. ६ खंभातनी प्रतमां आ शब्दो नथी; प्रा. वि. मं.नी प्रतमां 'दूहा' छे. ७ पांडर. ८ थई. ९ वियोगिं. १० वैद्य. ११ एहनि. १२ पंडरोगई. १३ मिं. १४ सजनीआ; आ शब्द पछी खंभातनी प्रतमां नीचेना शब्द मळे छे: 'तुं ते कहसि सही'. १५ फाग. १६ सद्यनीयां. १७ 'हवा रे' आ शब्दो खंभातनी प्रतमां नथी. १८ देसावरी. १९ संदेसि. २० विवहार. २१ आहर. २२ जाहर. २३ 'ह' खंभातनी प्रतमां नथी. २४ कागलि. २५ बांधीं. २६ हारि. २७ 'विरह ओ तां मिलवा तणो' ए शब्दोने स्थाने खंभातनी प्रतमां नीचेना शब्द छे: 'हैयडु रे मिलवा आलजवुं. २८ जीविइ. २९ 'रे' खंभातनी प्रतमां नथी. ३० संवेसि. ३१ वाल्हा. ३२ तुझनइं. ३३ पालव्यां. ३४ द्या.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वइरीडा[१] वयर वहइ[२] घणु,[३] विसमी वाट विदेश,[४]
विसमु[५] वालिंभ[६] वेधडु, इम दिन जाइ आदेश.[७] ३७

वाई[८] विण नवि वेदन न वरी वारो वारि,
व्यसनीनइं[९] व्याप्यु[१०] वेधडो, वाल्हा विण न रहाइ. ३८

झूरि झूरि[११] पंजर थई, साजन ताहरइ[१२] काजि,
नींद[१३] न समरुं, वींझडी[१४] न करइ[१५] मोरी[१६] सार. ३९

भूष तरस[१७] सुख[१८] नींदडी,[१९] देह तणी सान[२०] वान,[२१]
जीव साषिइं[२२] मइं[२३] तुझ देउं,[२४] थोडइ घणुं[२५] स्युं[२६] जाणि. ४०

ए मुझ परि मइं[२७] तुझ कही, हवइ[२८] मुझ करि न संभाल,
मलि[२९] कइ ऊतर आपिनइं[३०] आला लुंबओ[३१] टालि. ४१

कोश्या[३२] वेध वलूधडी एम[३३] ओलंभा[३४] देइ,
एहवइ[३५] गुरु आदेशडइ थूलिभद्र मुनि आवेइ. ४२

कंत देषी कोश्या[३६] कूबडी[३७] हईडा[३८] कमल विकास,[३९]
जिम वनराई[४०] माधवओ[४१] पामी अधिक उल्हास. ४३

---

१ वइरी. २ वहि. ३ घणूं. ४ विदेस. ५ आ शब्द पछी खंभातनी प्रतमां 'रे' मले छे. ६ वाल्हांनुं. ७ अंदेसि. ८ आ आखी लीटी खंभातनी प्रतमां नीचे प्रमाणे छे: 'वहरी नावइ वेदन, वारइ वारोवार.' ९ विसनी; तेनी पछी खंभातनी प्रतमां 'रे' मले छे. १० व्यापो. ११ झूरी झूरी. १२ ताहरि. १३ निसदिन. १४ वीझडी; आ शब्द पछी खंभातनी प्रतमां 'तुं' शब्द' मले छे. १५ करि. १६ मुझ. १७ तरसु. १८ सुष. १९ नींद्रडी. २० सांन. २१ वांन. २२ साथि. २३ मि. २४ दीयां. २५ घणूं. २६ अस. २७ मि. २८ हवि. २९ मिलि. ३० आपिन. ३१ लुंबु. ३२ कोशा. ३३ इम. ३४ उलंभा. ३५ एहवि. ३६ कोसि. ३७ कूपली. ३८ हैडा. ३९ विकाश. ४० वणराई. ४१ माधवि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

थूलिभद्र कोश्या[1] केरडो[2] गायु प्रेमविलास,
फाग गाइ[3] सवि गोरडी जब्र[4] आवइ मधुमास. ४४

दिन दिन सजन मेलावडो[5] ए गणतां[6] सुख[7] होइ,
जयवंतसूरि वर वाणी रे[8] सवे[9] सोहामणी होइ. ४५

॥ इति श्रीप्रेमविलास स्फुरन्मानं फागः संपूर्णेति भद्रं ।
श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः[10] ॥ छ ॥

---

१ कोशा. २ केरडु. ३ षेलि. ४ जव. ५ मेलावडु. ६ गातां. ७ सुष. ८ 'रे' शब्द खंभातनी प्रतमां मळतो नथी. ९ सवि. १० खंभातनी प्रतमां नीचे प्रमाणे पुष्पिका छे :

॥ इति थूलिभद्र-कोशा प्रेमवि[ला]सः । फागबंधेन ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२७]

कमलशेखरकृत

धर्ममूर्त्तिगुरु फाग

(विक्रमना सत्तरमा शतकनो पूर्वार्ध)

श्री श्रीथंभण पास, नमइं सुरासुर जास,
अहनिशि भावसिंउ ए, हरषइं गाइसुं ए. १

कर जोडी वंदेवि, करिसिउं कवित संषेवि,
ऊलट अति करी ए, सरसति मनि धरी ए. २

नयर त्रंबावती सार, अमरावइ अवतार,
विवहारी वसइं ए, धरमइं उल्हसइ ए. ३

फाग

उल्हसइ श्रीमाली वली पूरवरिषिनी वाट,
हंसराज घरि घरणी तुरणी ओढणि घाट. ४

हांसलदे सुत जाईउ, पाईउ पुण्य असेस,
नाम दीउ धर्मदासह, तासह करूंय वसेस. ५

लष्यण बत्रीसइ पूरउ, सूरउ धर्महं राग,
श्रीजिन नाणीय वाणीय जाणीय धरिउ वइराग. ६

संजमनउ जंग मंडीउ, छंडीउ घरनउ भार,
श्रीगुणनिधानसूरि दीधी लीधी दिष्या सार. ७

अढैउ

लीधी दिष्या सार, सयल जीवआधार,
सूत्र सयल भणइ ए, भवियण ते सुणइ ए. ८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गुरि देष्यु विद्यावंत, ध्यानि जोयु एकंति,
लाभ दीठउ घणु ए, संघ तुम्हे सुणउ ए. ९

फाग

सुणउ संघ सुजाणह नाणह ए वितपन्न,
पाटइं थापउ मन रुली, सवि कहइं ए धन धन. १०

उदयकरण आणंदइ वंदइ गुरुना पाय,
अहमदनयरइं इणि परिं उच्छव हरष न माइ. ११

ताल दमामा वाजइ, वाजइ तिवलनिनाद,
रणतूर नफेरी भेरीय संख सुहामणउ साद. १२

घूघर वाजइ घमघम मादल दोंदोंकार,
पंचशबद घरि वा[ज]इ, गाजइ गयण अपार. १३

आढैउ

इणि परि उछवकार, वित वावरिउं अपार,
पाटि बइसारीया ए, उच्छव कारीया ए. १४

माणिक मोती सार, रूप योवनभंडार,
परिग्रह परिहरी ए, क्रिया अति आवरी ए. १५

फाग

आदरी क्रिया जिणि अति घणि मइं सुणी देसविदेसि,
पंच महाव्रत पालइ टालइ सयल किलेस. १६

षटविध जीवह राषइ, दाषइ जिनवरवाणि,
सात भय निवारीइ, वारीय मद अठ जाणि. १७

नवविध सील सदा धरइ, करइ यति दसविधि धर्म,
एकादस प्रतिमा कहइ, लहइ ते सूत्रह मर्म. १८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भिषूप्रतिमा बार ए, सारए आपणउं काज,
तेर काठीया निवारीय, कारीय धर्महं काज. १९

अढैउ

गुण छत्रीस संपन, धर्ममूरतिसूरि धन,
वंदुं उलट करी ए, विधिसूं अणुसरीए. २०

गुणनिधानसूरि पाटि, सोहइ मुनिवर थाटि,
गुरूतण आगरू ए, षिमा अति सागरू ए. २१

फाग

षिमासागर गुर वंदु, नंदउ जां ससिभाण,
थंभणपुरि गुर गाईइ, पाईइ शिवपुर ठांण. २२

श्रीकमलशेषर कहइ वंदीइं, वंदीइ गुरना पाय,
जे नरनारी गावइ, पावइ सुष सयांइं. २३

॥ इति गुरुफाग समाप्तं ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२८]

मालदेवकृत

स्थूलिभद्र फाग

(विक्रमना सत्तरमा शतकनो पूर्वार्ध)

पास जिणंद जुहारीइ, समरूं[1] सारद माया रे,
गाउं[2] फाग[3] सोहामणु,[4] थूलिभद्र मुनिराया रे. १

लाल मोहन मेरे जीउ[5] वसइ, थूलिभद्र पीउ[6] पाया रे,
तन[7] मन उछा अति करुं, बहुत दिन प्रीउ पाया रे. आंचली

पाडलपुर[8] रुलीआमणुं, नंद करि तिहां राजो रे,
लोक[9] प्रजा सव्व सुपइं वसि, सारि सहूनां काजो रे;
लाल मोहन मेरे जीउ वसइ. २

च्यारि बुद्धि-गुणे[10] दीपतु, महिंतु[11] तस[12] सकडालो[13] रे,
तासु नारि लिपमी[14] जिसी, दोइ[15] कुल कीउ जयकारो[16] रे. लाल० ३

थूलिभद्र शरीउ[17] दोउ पुत्र दोऊ[18] तिणि जाया रे,
जाण[19] कि दोऊ[20] देवता सुप भोगनकुं[21] आया रे. लाल० ४

---

१ समरउं. २ गावउं. ३ फागु ४ सुहामणउं. ५ जीय. ६ पीय. ७ आ आखी पंक्ति श्री. देसाईनी संवत वगरनी प्रतमां नीचे प्रमाणे छे: 'तनु मनु निउछावरि करउं, बहुत दिन न तें आया रे'. ८ पाडलिपुर. ९ आ पंक्ति संवत वगरनी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'लोक प्रजा सब सुखि, वसि, सारइ सज्जन काजो रे'. १० गुण. ११ मंत्री. १२ तसु. १३ सगडालो रे. १४ लखिमी. १५ दो. १६ उजियालो. १७ सिरिया. १८ भला. १९ जानु. २० दोउ. २१ भोगनकउं.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कोश्या[१] वेश्याकइ रहि, थूलिभद्र सुष वास्या रे,
बार वरस लगइ[२] भोगवइ, पूरी सवि[३] मन[४] आस्या[५] रे. लाल० ५

तिहां[६] एक बंभण[७] गुणी, वररुचि पंडित आया रे,
कीरति राजा नंदकी, करि सदा मनि भाया रे. लाल० ६

मंत्री[८] कीउ[९] मंत्री तव, बेटी सात सुजाना रे,
राजसभामाहि षंडिउ[१०] वररुचि कीउ[११] अभिमाना रे. लाल० ७

वररुचि पंडित तु[१२] पीछइ, गंगकु[१३] जस[१४] गावइ रे,
यंत्र[१५] करी[१६] कल-कोथली, द्रव्य भरी सो पावि[१७] रे. लाल० ८

नंद भूप सकडाल[१८] शुं, गंगा तटि मिली आया रे,
मंत्री दूजी वार तिहां,[१९] बंभण माम[२०] गमाया रे. लाल० ९

वररुचि पंडित[२१] कोपीउ,[२२] मंत्र कोउ[२३] आलोचइ रे,
मंत्री मुशुं[२४] वयर[२५] कीउ,[२६] अहिनिसि मनहिं[२७] सोचि[२८] रे. लाल० १०

पग शुं[२९] धूलि उछालीइ,[३०] सर[३१] ऊपरि आइ लागइ रे,
इशुं[३२] यानि[३३] जीऊ[३४] आपणइ,[३५] पंडित काहे न जागइ रे. लाल० ११

वररुचि मांडी लेषसाला,[३६] पंडित छात्र पठावि[३७] रे,
छीलर जल[३८] यूं[३९] हंसलु,[४०] कारणि किउंहूं आवि रे. लाल० १२

---

१ संवत वगरनी प्रतमां आ पंक्ति नीचे प्रमाणे छे : 'कोसा वेस्या कइ रहइ, थूलिभद्र सुख-वासो रे'. २ लगु. ३ सब. ४ मनि. ५ आसा. ६ तहां. ७ बंभ. ८ मंत्रु. ९ कियउ. १० खंडीयउ. ११ कुउ. १२ तउ. १३ कउ. १४ जसु. १५ जंत्र. १६ करइ. १७ पावइ. १८ सगडालस्यउं. १९ तहां. २० मान. २१ पंडितु. २२ कोपीयउ. २३ कोऊ. २४ मोस्यउं. २५ वयरु. २६ कियउ. २७ मनमहिं. २८ सोचइ. २९ पगस्यउं. ३० उछालियइ. ३१ सिरि. ३२ अइस. ३३ जानि. ३४ जिय. ३५ आपनें. ३६ चटसाला. ३७ पढावइ. ३८ जलि. ३९ जिउ. ४० हंसलउ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शरीया[1] कइ[2] वीहवा[3] समइ,[4] चामर छत्र समारया[5] रे,
पंडित[6] अवसर[7] पाइउ,[8] वररुचि वइर[9] चीतारयु[10] रे. लाल० १३

एक कीउ तिणिं दूहरु, सवि बालककुं सीषावइ रे,
चाचर चुहटि सवि गली, राजलोककुं सुणावइ रे. लाल० १४

मूरख[11] लोक[12] न जाणहीं,[13] यूं[14] सकडाल[15] करेसी रे,
नंदराय मारी करी,[16] शरीउ[17] राज ठवेसी[18] रे. लाल० १५

नंदराय[19] कुणइ सोइ सुण्यु, कोप धरिउ तिणि चिंता रे,
मंत्री चित्ति विचारिउं,[20] राजा किसका[21] मित्ता रे. लाल० १६

वेश कुनारि जूआरीइं, दूरजन[22] अतिहिं[23] विगोवइ रे,
अगनि साप राजा योगी,[24] कवहूं मीत[25] न होवइ रे. लाल० १७

कुल राषणकुं[26] आपणुं,[27] मंत्री मंत्र उपायो रे,
शरीइ[28] मंत्री मारीउ, राजसभा जव[29] आयो रे. लाल० १८

सो कंचण[30] क्या पहिरीइ, जु कानहुं[31] तुं[32] तोरइ[33] रे,
मंत्री सोइ जांणीइ,[34] जु राजा किहुं[35] लोडि रे. लाल० १९

शरीया[36] केरे बोल सुणी, बोलि राजा नंदो रे,
तुं मेरि[37] मंत्रीसरू, करि[38] मनमांहि आणंदो रे. लाल० २०

---

१ सिरिया. २ के. ३ वीवा. ४ सवइ. ५ सवार्या. ६ पंडिति. ७ अवसरु. ८ पाइयउ ९ वइरु. १० चीतार्या. ११ मूरखु. १२ लोकु. १३ जानइ. १४ जं. १५ सगडाल. १६ करुं मारसी. १७ सिरियउ. १८ धरेसी. १९ आ आखी पंक्ति संवत वगरनी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'नदराय फुनि सो सुन्यउ, कोपु धर्यउ तिनि चिंता रे'. २० विचारयउ. २१ किसके. २२ दुरजनु. २३ अंति. २४ जोगी. २५ मित्ति. २६ राखनकहुं. २७ आपनउं. २८ सिरिए. २९ जब. ३० कंचन ३१ कानहं ३२ कउ. ३३ तोडइ. ३४ जाणीयइ. ३५ कहुं. ३६ आ पंक्ति, संवत वगरनी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'सिरियाके ए बोल सुने बोलइ राजा नंदो रे'. ३७ मेरे. ३८ करु.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

थूलिभद्र सुणी[1] चींतवइ, ए[2] संसार असारो रे,
मातपिताकु[3] काहू नहीं, नहीं कोऊ परिवारो रे. लाल० २१

थूलिभद्र दीख्या लेइ, श्रीसंभूति सुसीस रे,
गुरु शुं[4] शंयम[5] पालीउ,[6] वहइ[7] रे सो निसदीस रे. लाल० २२

सरीउ[8] कोश्याके घरे, वचि वचि[9] आवइ जावइ रे,
मारण वररुचिके[10] ताइं,[11] कोऊ मंत्र[12] ऊपावइ रे. लाल० २३

बहिनर[13] कोश्या वेश्याकी, तास्युं[14] वररुचि रातु[15] रे,
त्यजी आचार सु आपणु.[16] रहइ सदा मनि मातु[17] रे. लाल० २४

जइ परमेस्वर[18] रूसीइ, नाऊ घालि कूटि[19] रे,
कि वेस्या-घरि मोकलइ, कि[20] खेलावइ जूइ रे. लाल० २५

बुद्धि कोई[21] एहवी कीइ, नंद कोप्यु सो हकारिउ रे,
सभामाहि[22] तन मद वशु, वररुचि पंडित मारिउ रे. लाल० २६

श्रीसंभूतिविजय आगइ, तीनि[23] यती यूं भासइ रे,
सीह साप कूआनिं पासइ, ठामि रहइ[24] चुमासइ रे. लाल० २७

---

१ सुनि. २ आ अर्धी पंक्ति संवत वगरनी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'इहु सायर संसारा'. ३ संवत वगरनी प्रतमां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे: 'मात-पिताको काहूकउ नाहि न को परिवारा रे'. ४ स्यउं. ५ संजमु. ६ पालतउ. ७ 'विहरइ सो निसिदीसा रे' एवो पाठ संवत वगरनी प्रतमां छे. ८ सिरियउ. ९ बिचि बिचि. १० की. ११ तांइ. १२ मंत्रु. १३ वहिनरि. १४ तस्यउं. १५ रातउ. १६ आपनउं. १७ मदुमातउ. १८ परमेसर. १९ कूअइ. २० कइ. २१ सिरिए; ते पछीनो 'एहवी' ए शब्द श्री. देसाईए पाठांतरमां नोंध्यो नथी. २२ आ पंक्ति संवत वगरनी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'सुह कार्यउ, तन मन वशु'. २३ संवत वगरनी प्रतनो आ पंक्तिनो पाठ आ प्रमाणे छे: 'तिनि जती इम भासइ'. २४ रहहि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सहि गुरु-वचन[१] लही ते त्रिणि,[२] पुहता आपणइ[३] ठामि[४] रे,
थूलिभद्र मनि[५] चींतवइ,[६] गुरु-चरणे[७] सीस नामि[८] रे. लाल० २८

वचन तुह्मारुं[९] जइ लहूं,[१०] कोशा घरि वरसालु रे,
च्यारि मास लगइ[११] तिहां[१२] रहूं,[१३] सील महाव्रत पालुं रे. लाल० २९

गुरु-आज्ञा पामी करी, थुलिभद्र विकसंता[१४] रे,
कोश्या देषी चींतवइ, मुझ घरि आयउ कंता रे. लाल० ३०

चित्रसाली तुह्म इहां रहुं,[१५] तन[१६] धन[१७] एह तुह्मारा[१८] रे,
बार वरसकु नेहलु,[१९] प्रीऊ[२०] तह्म चींति[२१] चीतारु[२२] रे. लाल० ३१

पावस आवी ऊनयु, झिरिमिरि[२३] वरसि मेहो रे,
ते[२४] माहि[२५] चमकि[२६] बीजूरी, जागइ देषि सनेहो रे. लाल० ३२

प्रीऊ प्रीऊ[२७] चातक बोलतां,[२८] मोर झंकार सुनायो[२९] रे,
कहूं कहूं[३०] विचि कोकिला, बोलइ शबद सुहावइ[३१] रे. लाल० ३३

घनकारी[३२] घटा अंबर[३३] छायु, वरसे रस घन गाजि रे,
सांझ समइ कोशा वेश्या, सवि[३४] शणगार ते साजि रे. लाल० ३४

रूप देषि सब कोश्याकु,[३५] जानु की अपच्छर लाजि रे,
सरगि लोकि छानी रही, रति उपमा तसु[३६] छाजइ[३७] रे. लाल० ३५

---

१ सुगुरु-वचनु. २ तीन्यउ. ३ आपन. ४ ठामइ. ५ मुनि. ६ कर जोरे. ७ गुरु-चरणहिं. ८ नामइ. ९ तुहारु. १० लहउं. ११ लगु. १२ तहां. १३ रहउं. १४ निहरंता. १५ आ शब्द श्री. देसाईनी प्रतमां नथी. १६ तनु. १७ धनु. १८ तुह्मारउ. १९ नेहरउ. २० प्रीउ. २१ चित्त. २२ चितारउ. २३ रिमिझिमि. २४ ता. २५ महिं. २६ चमकइ. २७ पिउ पिउ. २८ बोलतउ. २९ सुनायउ. ३० कुहु कुहु. ३१ सुहायो. ३२ काली. २३ अंबरु. ३४ आ अर्धी पंक्तिनुं पाठान्तर श्री. देसाईए नीचे प्रमाणे नोंध्युं छे: 'तनि सिंगार सब साजे रे'. ३५ कोश्याको. ३६ तिसु. ३७ छाजि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केश श्याम अति सोहता, गूंथे फूल अपारा रे,
श्याम रयणमाहि[१] चमकता, योति[२] सहित तनु[३] तारि[४] रे. लाल० ३६

निलवटि सोभा देषतां, आठमि-ससि याणे[५] दीपइ रे,
मुष पूनिमकु चंद्रमा, उ कलंक नु छीपइ रे. लाल० ३७

वेहू[६] अधर अमृत भरे, प्रीति रंग तनु[७] रातु[८] रे,
दाडिम शरिषा दांतला, देषी चित्ति सुहावइ रे. लाल० ३८

विकसित कमलनयन वनिं, कामबाण अनिया[१०] रे,
पांचइ भमुह[११] कमान शुं,[१२] कामी मृग-मन मारि[१३] रे. लाल० ३९

कानहि[१४] कुंडल धारती, जानु मदन की जाली रे,
स्याम[१५] भुयंगी[१६] यूं[१७] वेणी, यौवन[१८] धन रषवाली रे. लाल० ४०

दोऊ[१९] कुच ऊपरि कुंचकी,[२०] जानु की[२१] उठंभा दीआ रे,
थंभ दोऊ उंचे वनइं,[२२] वास मदन तिहां[२३] लीउ[२४] रे. लाल० ४१

कुच ऊपरि नवसर वण्यु,[२५] मोतीहार सोहावइ रे,
परवत[२६] तिं जन[२७] ऊतरती, गंग-नदी-जल आवइ रे. लाल० ४२

रोमावलि रेषा वणी,[२८] जानु की दीसि थंभो रे,
कुचभारि नमसइं कवइ याणि[२९] कि दीउ उठंभो[३०] रे. लाल० ४३

---

१ रजनिमहिं. २ जोति. ३ जनु. ४ तारी. ५ जाणे; बीजुं पाठान्तर : 'जनु'. ६ बिंब. ७ जनु. ८ राते. ९ श्री. देसाईए नोंधेलुं आ पंक्तिनुं पाठान्तर आ प्रमाणे छेः 'दाडिम बीज दशन बने, देखत चित्ति सुहातुं रे.' १० अणिया. ११ भवांह. १२ स्युं. १३ मारे. १४ कानहिं. १५ श्याम. १६ भुजंगी. १७ जिउं. १८ जोवन. १९ दो. २० कंचुकी. २१ कि; आ शब्द पछी 'तंबू दीयो रे' एवा शब्द 'उठंभा दीआ रे' ने बदले मळे छे. २२ बने. २३ तहं. २४ लीओ; बीजो पाठः 'लीयो;' २५ वन्यो. २६ परवत. २७ जनु. २८ बनी. २९ जाणि. ३० उट्ठंभो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नाभि गंभीर सोभावणी,[१] जानु की[२] मदन-सरोवर रे,
कामीजन तृसना मिटि, देषित[३] रूप मनोहर रे. लाल० ४४

कटि-तटि जीतु मृगराजा, जानु लीउ[४] वनि[५] वासो रे,
रंभ-थंभ जसी वणी, उर-युगल[६] प्रकासो[७] रे. लाल० ४५

कमल-चरणकी सोभा तिं, जाइ छपिउं[८] सिर[९] मोही[१०] रे,
रगत[११] सकोमल[१२] देषी कि, मानु हम हि को नाहि रे. लाल० ४६

कोश्या कर ग्रही आरसी, मृगमद-तिलक वणावइ[१३] रे,
हाथे सांकली[१४] ए जानु, कामि कइ[१५] आण मनावइ रे. लाल० ४७

नयनिहिं[१६] कज्जल सारीउ, याने अंधेरु [उ]जयालो रे,
चित्त[१७] परांइ[१८] जो दुष देवइ,[१९] तिन्ह मुष कीजि[२०] कालो रे. लाल० ४८

सरि[२१] उढी[२२] तिणि[२३] चूनरी, कामधजा जनु[२४] लहकइ रे,
चूआ चंदन कस्तूरी, अति सुवास महमहकि[२५] रे. लाल० ४९

मलपति गज-गति-गामिनी, हंस तणी परि चालइ रे,
अवतरी याणे[२६] पद्मनी, सुर नरपति मनि टालि रे. लाल० ५०

झणणि झणणि[२७] कटि-मेषला, चरणि[२८] नेउर[२९] साजि रे,
मदनराय के उवारणइ,[३०] जाणु दमामां वाजि रे. लाल० ५१

---

१ सुंहावनी. २ कि. ३ देखत. ४ लीओ. ५ वन. ६ उर-युगल ७ सुप्रकासो. ८ छपिउ. ९ सर. १० मांहि. ११ रक्त. १२ सुकोमल. १३ वणावइ. १४ सांग[क]लां. १५ कामकी. १६ श्री. देसाईए नोंधेला पाठान्तरमां आ पंक्ति आ प्रमाणे छेः 'नयनिहिं कज्जल सारीयो, जनु अंधारु उजियालो.' १७ चित्ति. १८ पराए. १९ देइ. २० कीजे. २१ सिरि. २२ उटी. २३ तिनि. २४ जम. २५ महमहके. २६ जानु; बीजो पाठः 'जाणे.' २७ झूणण झूणण. २८ चरणिहि. २९ नेवर. ३० बारणे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नव सत साजे कामिनी, थूलिभद्र पासि[1] आवइ रे,
सषी संग मली[2] कोश्या, प्रीयशुं प्रीति जगावइ रे. लाल० ५२

नयन[3] काम-रस[4] लावती, बोलि[5] बोल रसाला रे,
काहे न बोलु[6] प्रीय ! मोशुं,[7] तुझे तु[8] दीनदयाला रे. लाल० ५३

उह[9] सनेह बारह[10] वरसी,[11] काहे न चित्ति[12] विचारु,[13] रे,
थूलिभद्र प्रीअ[14] ! मोशुं, नुहि कंगन धारा रे. लाल० ५४

एक अंगकइ नेहरइ, कछू[15] न होवइ रंगो रे,
दीवा के चित्तिमांहे[16] नहीं, जलि जलि मरि पतंगो रे. लाल० ५५

रे मन ! प्रीति न कीजीइ, कीजइ एकंगी काहो[17] रे,
पाणीके[18] मनहीं नहीं, मीन मरि षणि माहिउ[19] रे. लाल० ५६

एक अंगकु नेहरु, मूरषि मधुकरि कीनु रे,
केतकीके मनहीं नहीं, भमर मरि रस-लीणु रे. लाल० ५७

प्रीति एकंगी जइ कीजि, तु सब किछू न लहीइं[20] रे,
होअ[21] चकोर दोषत रहइ, चांदु सुथिर न रहाई[22] रे. लाल० ५८

सूर कमलको सोसही, कमल सूर-मुष जोवि रे.
एक अंगकइ नेहरइ, रंग किछू नहीं होवइ रे. लाल० ५९

नेह एकंग न कीजीइ, जिउं चातक घन-नीरो रे,
सारंग पीउ पीउ मुषि बोलि, मेह न जानइ पीरो रे. लाल ६०

---

१ अहि. २ मिलि. ३ नव. ४ नव–रस. ५ बोले. ६ बोलहु. ७ मोस्युं. ८ तो. ७ उहु. १० बार. ११ वरसको. १२ चित्ते. १३ चितारो. १४ श्री. देसाईए नोंधेला पाठान्तरमां 'प्रीअ' पछी 'तुम्ह' शब्द आपेलो छे. १५ कब. १६ चित्तहीं. १७ काहे. १८ पानीके. १९ माहे. २० लूहीइ; बीजो पाठ 'होइ'. २१ उहु. २२ रहोइ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चित्ति विकार देषावती, हावभाव मुषि बोलइ रे,
नयणकी साण सवि जाणती, घूंघटके पट उलि[1] रे. लाल० ६१

वीणा[2] पंग[3] वजावती, कोश्या रंगि[4] राचि रे,
ताल मृदंग तिहां वाजि, नृत्य करि मन साचि रे. लाल० ६२

राग छत्तीस अलावती,[5] सिंगारी पद गावि[6] रे,
चुसट्ठि गुण जाणइ कला सवि संगीत सुणावइ रे. लाल० ६३

गीत नृत्य बहू[7] तिणि कीनी,[8] कोश्या मनि पछतावि रे,
थूलिभद्र डोलि नहीं, धर्मध्यानि लइ[9] लाइ रे. लाल० ६४

कोश्या तु इम बोलती, धन धन तुं मुनिराया रे,
नारी संग न जुडरिउ,[10] वंदुं तेरे पाया रे. लाल० ६५

नारी कुण[11] न पंडीआ, भोज मुंज दस-सीसो रे,
जे नारी वसि नवि पड्या, नित[12] हूं नामुं सीसो रे. लाल० ६६

कान्ह पडयुं[13] वसि[14] कामकइ, काम[15] विगोयु[16] ईसो[17] रे,
पारवती[18] आगलि नाच्यु, भरतकला निसिदीसो रे. लाल० ६७

सुरपति कामि विटंबीउ, आइ आहिल्या रामइ रें,
विश्वामित्र पारासर[19] तापस[20] पडीआ कामइं रे. लाल० ६८

नंदिषेण मुनि ते नम्यु,[21] कामिहिं आर्द्र कुमारो रे,
जिणि[22] रहनेमि डोलईउ,[23] बोले कामविकारो रे. लाल० ६९

काम सुभट जिणि जीतीउ,[24] ते धन्न धन्न वषाणुं रे,
ये नर काम न वसि कीउ,[25] थूलिभद्र सो जाणो रे. लाल० ७०

---

१ ओलि. २ वीण. ३ उपंग. ४ रंगहिं. ५ आलापती. ६ गावि. ७ वहु ते. ८ कीने. ९ लीउ. १० जोतयों. ११ को. १२ तिन्ह. १३ पर्यो. १४ वश. १५ कामे. १६ विगोयो. १७ इशा. १८ पारवती. १९ पाराशरु. २० टारे. २१ खडहयों. २२ जिनि. २३ डुवाइयो. २४ जीतीओ. २५ कीओ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मन वचन काया भावशुं, थूलिभद्र गुन गावि रे,
चरम विघात जे को कीउ,[1] सा अपराध षमावइ रे. लाल० ७१

थूलिभद्र मुनि उपदेस्यु, देस-विरति तिणि लीणी रे,
जिन लिषमीके नंदना, वेश्या श्राविका कीनी रे. लाल० ७२

चुमासुं पूरुं करी, जाइ सगुरु-पद वंदि रे,
दुःष्कर दुःष्कर तव कीउ,[2] साह्या साह्या ऊठि आणंदि रे. लाल० ७३

त्रिहूं[3] साधु मच्छर कीनु, ते त्रण्हि मति-मूढा रे,
सीह गुफा जु मनि रहिउ,[4] क्रोध धरि चित्ति कूडा रे. लाल० ७४

तिनइ मुनि सहिगुरु पूछीउ, जइ तुह्म आयस पाउ रे,
कोशा वेश्याकइ घरे, हूं चुमासुं ठावुं रे. लाल० ७५

श्रुतज्ञानी गुरु इम कहि, थूलिभद्र सम होवइ रे,
सो कोशाके घरि रहइ, जु निज सील न षोवइ रे. लाल० ७६

सो मुनि गजपति वरजतां, कोशाकि घरि पासइ रे,
करुं परीक्षा एहरी, वेश्या चित्ति विमासइ रे. लाल० ७७

करि शणगार संध्या समइ, जु मुनि पासइ आई रे,
देषत हा चित्त लाईउ,[5] सुद्धि रही नहीं कांई रे. लाल० ७८

कोशा कहि न मानीइ, धन विण इहां कोई रे,
धरमलाभ कहीइ नाहीं, अरथ-लाभ इहां होई रे. लाल० ७९

चुमासइ विषया-वसइ, देस गयु नेपालि रे,
रतनकंबल आण्यु तिणि, कोशा चीषलि घालि रे. लाल० ८०

शील-रतने-कंबल षोयुं, तिं मतिमूढ अयांणा रे,
होड न कीजि पारकी, थूलिभद्र शुं माना रे. लाल० ८१

---

१ कीओ. २ कीओ. ३ त्रिहू. ४ रहिओ. ५ लाईओ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आट्ठि तरंति देषंति, काग रतन कहूं धाया रे,
होड पराई जे करि, तलि शर ऊपरि पाया रे. लाल० ८२

सीष देई प्रतिबूझव्यु, सो मुनिवइ गुरु पासइ रे,
आलोअण तपू तिणि लीउ, रहिउ सगु तुलि षासइ रे. लाल० ८३

एक दिवस कोशा घरे, राज-सारथी आयु रे,
आंब ऊतारउ बाण शुं, गुण आपणुं दिषाडयु रे. लाल० ८४

कोशा मान ऊतारती, सूई ऊपरि नाचि रे,
बोलि बोल सुभामिनी, कवण कला इन राचि रे. लाल० ८५

कला वडी[1] थूलिभद्रकी, जिनि निज सील न षंडिउ रे,
नारी संगतिमाहि वस्यु, भूमंडलि जसु मंडिउ रे. लाल० ८६

अगनि जिहां नेडी बलइ, घृत तिहांकुं दीजि रे,
एहुक घन वूठउ किणि, थूलिभद्र विनु कीजि रे. लाल० ८७

इशु वचन कहि सारथी, चित्ति विरागी कीउ रे,
थूलिभद्र गुण चींतवतु वइरागइं चारित लीनु रे. लाल० ८८

बार वरस कुशमि समइ, सवि मिली संघ विमासइ रे,
सुष निरवाह आजीविका, गया समुद्रतट पासइ रे. लाल० ८९

जु सुभक्ष हूउ तवइ, संघ पाटलपूरि आवइ रे,
अंग इग्यारह मेलीआ, कही कही तइं पाया रे. लाल० ९०

थूलिभद्र देवइ कइ सवि मिली संघ विमासइं रे,
पूरव पढिवा मोकलिउ, भद्रबाहू गुरू पासइ रे. लाल० ९१

दस पूरव श्रुत जु थुण्या, सात बहिनि आणंदे रे,
दीष लेइ[2] ते वहिरतां, भद्रबाहू गुरु वंदि रे. लाल० ९२

---

१ वलि. २ लइ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

थूलिभद्र मनि चींतवी, सिंहरूप धरी बिठउ रे,
गुरुवचनि जाई वंदीउ, एह आचिंतम दीठउ रे. लाल० ९३

जक्खा बहिनि महासती, बोलि बोल सुहाता रे,
थूलिभद्र शुं सवि कही, शंयमकी[1] निज वाता रे. लाल० ९४

सरीआकी सवि वातडी, भाइ प्रति सुणावइ रे,
महाविदेहि वंदीउ, सीमंधर जिनराई रे. लाल० ९५

सीमंधर सइं मुषि कहिउं, दोष नहीं तुझ लगारो रे,
धरमबुद्धि तइ कीउ, शरीआकुं उपगारो रे. लाल० ९६

इम कहि सात महासती, वाचि गई निज ठामि रे,
थूलिभद्र मुनि वाचना, गुरु पासइ नहीं पामइ रे. लाल० ९७

थूलिभद्र चरणिहि लागु, निज अपराध षमावइ रे,
वीनती करवा गुरु आगइ, संघ मिली सवि आवइ रे. लाल० ९८

संघ वचनतइं सूत्रथी, पूरव च्यारि पढाया रे,
चऊद पूरवधर[2] विहरता, थूलिभद्र गुरुराया रे. लाल० ९९

भविक लोक प्रतिबोधता, महीमंडलि उपगारी रे,
शीलशरोमणि गुणनिलु, पंच महाव्रतधारी रे. लाल० १००

अवर मुनीश्वर वनि वसइ, सील महाव्रत पालइ रे,
थूलिभद्र कोशा घरे, साध्यु[3] मदन वदीतु रे. लाल० १०१

वेगै[4] त्यजि जउ उपइ यती, तु होवइ व्रतचारी रे,
थूलिभद्र रहिउ सील शुं, नितु षटरस आहारी रे. लाल० १०२

---

१ संयमकी. २ पूरव. ३ 'साध्यु मदन वदीतु रे' ने बदले 'वसि विषयरस टालइ रे' एवो पाठ श्री. देसाईनी वाचनामां मळे छे. ४ वेगि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नेमिनाथ परवत लीइ,[1] काम सुभट येणि जीतु रे,
थूलिभद्र कोशा[2] घरे, साध्यु[3] मदन वदीतु रे. लाल० १०३

थूलिभद्रकु जस रहिउ, चुरासी चुवीसी रे,
सील इम जु पालीइ, तु उपमा पाइसी रे. लाल० १०४

ब्रह्मचर्य पालइ[4] जि के, ते व्रत च्यारि आराधइ रे,
नरय-तरी[5] ना दुख लहि,[6] नर सुर सुष सिव[7] साधइ रे. लाल० १०५

धर[8] अडोल तुही रहइ, जइ निश्चल हुइ थंभो रे,
धरम महिलकु जाणीइ, सील सबल उठंभो रे. लाल० १०६

मालदेव मुनि वीनवइ, नारी-संगति टालु रे,
थूलिभद्र मुनिनी परि, सील महाव्रत पालु रे. लाल० १०७

॥ इति थूलिभद्रो फागः । संवत्त १६५० वर्षे फाल्गुन वदि १४ रवौ गणिश्री विद्यासुंदरशष्य रंगसुंदरलिखिताः ॥

---

१ उल्हें. २ वेस्या. ३ १०३मी कडीमां 'साध्यु मदन वदीतु रे' ए शब्दोने बदले 'वसि विषयरस टालइ रे' एवा शब्दो मुख्य प्रतना 3-A पानना नीचला भागे, जमणी बाजुना हांसियामां लखेला छे. ४ पालइं. ५ तिरी. ६ 'ना दुख लहि' ने बदले श्री. देसाईनी प्रतमां, 'दुःख ना लहें' एवो पाठ मळे छे. ७ 'शिव सुख' एवा शब्दो श्री. देसाईनी प्रतमां छे. ८ धरु.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२९]

वाचक कनकसोमकृत

मंगलकलश फाग

(सं. १६४९)

ढाल फाग

सासणदेवी[१] सामिणी ए, मुझ सांनिधि[२] कीजइ,
पुण्य तणा फल गाइयइ[३] ए, सुणतां मनं[४] रीजइ. १

मंगलकलस तणउ प्रबंध, करिवा मुझ राग,
शांतिनाथ जिनचरित्र[५] थकी ऊधरिस्युं[६] फाग. २

उज्जयणी[७] नगरी विसाल, इणि भरति पुराणी,[८]
वइरसिंह तिहां[९] भूपती ए, सोमचंद्रा राणी.[१०] ३

सेठि तिहां[११] धनदत्त वसइ, श्रावकगुणजुत्तउ,
धर्म्मत्थी[१२] सुविनीत, शीलगुणगणहि[१३] पवित्तउ. ४

दयादांनसनमानभली,[१४] सत्यभामा नारी,
रूपवती गुणवती सती, पियपेमपियारी.[१५] ५

---

१ सासणदेवीय. २ सानिधि. ३ गाईयइ. ४ मन. ५ जिनचरित. ६ मुख्य प्रतमां 'ऊधरि' शब्द छे; पण छंद अने भाषानी शुद्धिनी दृष्टिए बीजी प्रतनो 'ऊधरिस्युं' पाठ अहीं स्वीकार्यो छे. ७ उज्जयणी. ८ पुरांणी. ९ आ शब्द मुख्य प्रतमां नथी पण ते बीजी प्रतमां लखेलो छे; ते योग्य रीते वपरायलो होई अहीं स्वीकार्यो छे. १० रांणी. ११ तहां. १२ धम्मत्थी. १३ सीलगुणगणहि. १४ दयादांनसनमांनभली. १५ पियप्रेमपियारी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पिणि तेहनइ संतांन नही, वड एवड[1] षोड,[2]
सेठि देषि चिंता करइ ए, मनमहि[3] मुषमोड.[4] ६

परमेसरि[5] धन रूप दीयउ, पणि[6] सुत नवि दीनउ,
तिणि सुत विणि[7] गृहवास, जिसउ मुख नयणविहीणउ. ७

नाचि नाचि जिम मोर चलण देषीनइं[8] रोवइ,
इणि परि सेठि हियइ[9] विचारी[10] नारीमुख जोवइ. ८

सुणि सुणि नंदन ए ढाल

प्रीयमुख देषी अणमणउ, रमणी कहि[11] भरतार,
दुषकारण तुम्हनइ किउ,[12] ते मुझ कहउ ए[13] विचार. ९

सुणि सुणि प्रीतम वालहा, ए[14] संसारि[15] असारि,
नरभवि[16] जिनधम दोहिलउ, लाधउ जनम म हारि. सु० १०

सेठि कहइ, नारी ! सुणउ, तुम्हनइ नहीय संतान,
इम चींतवतां[17] अहिनिसिइं[18] मुझ चिति[19] वसइ न आन. सु० ११

सतिभामा रमणी कहइ, पुन्यइं[20] वंछित होइ,
धन संतान समाधि सुं,[21] मुष विलसइ सब कोइ. सु० १२

तिहि ज[22] पुन्य[23] करउ तुम्हे, देव सुगुरुपदसेव,
द्यउ तुम्हि[24] दान[25] सुपात्रनइ, आराधउ जिनदेव. सु० १३

---

१ आ पंक्तिना उत्तरार्धमां मुख्य प्रतमां, ' वड षोड ' एटला शब्दो छे, ज्यारे बीजी प्रतमां ' वड एवड षोडि ' एवा शब्द छेः ' वड एवड ' ए उचित पाठ होई, एं शब्द मुख्य प्रतना पाठ तरीके छे २ षोडि. ३ मनमाहि ४ मुषमोडि. ५ परमेसर. ६ पिणि. ७ विण. ८ देषीनइ. ९ हीयइ. १० विचारि. ११ कहइ. १२ किसउ. १३ बीजी प्रतमां ' ए ' शब्द नथी. १४ इणि. १५ संसार. १६ नरभव. १७ चीतवतां. १८ अहिनिसइ. १९ चित. २० पुन्यइ. २१ स्युं. २२ तेहि. २३ पुण्य. २४ तुम्हे. २५ दांन.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इम करता[१] जउ[२] सुत हुवइ, तउ अति भलउ विचारि,[३]
नहीतरि परलोक[४] साधिवा,[५] करि[६] उद्यम भरतार. सु० १४

हरषित सेठि कहइ इसउ, मनभावत उपदेस,
ते[७] मुझनइ हित चींतवइ,[८] नारि भली मति देसि. सु० १५

जिनवर प्रतिमा पूजिवा, वनमालीनइ हकारि,
पुष्फ भणी धन द्यइ घणउं,[९] आंपण जाइ सवार.[१०] सु० १६

पूजिय जिनप्रतिमा घरइं[११] देवहरइ जिनराइ,
सेव करी निज भगतिस्युं[१२] प्रणमइ सुहगुरुपाय.[१३] सु० १७

ढाल जिनपूजनानि तु करइ इणि पर[१४]

सुणि वषाण सुसाधुनउ,[१५] पचषाण करि[१६] सुअतिथिनइ,
प्रतिलाभ ल्यइ धनलाभनउ, दुइ कालि आवश्यक[१७] करइ. १८

.....नितु साहम्मीवच्छल[१८] करइ, *
इणि परइ शासनदेवि[१९] त्रूठी, पुत्रनउ ते वर वरइ. १९

धनदत्त हरषित मन[२०] थयउ, धरम तणइ परभावि,
सोवन कलस सुपनइ लह्यउ, नारि कहइ निसि आवि. २०

पिय कन्हइ आवी सुपन कहती, उपरि पुत्ररतन धर्यउ,[२१]
नव[२२] मासि[२३] अधिक[२४] पुत्र[२५] जायउ, नाम[२६] मंगलकलस करयउं.[२७] २१

---

१ करतां. २ जइ. ३ विचार. ४ परलोग. ५ साधिवउ. ६ कर. ७ तइ. ८ चींतवी. ९ घणउ. १० सवारि. ११ घरइ. १२ मुख्य प्रतमां 'भतिस्युं.' शब्द छे; ते अशुद्ध होवाथी बीजी प्रतनो 'भगतिस्युं' ए शब्द मुख्य पाठ तरीके लीधो छे. १३ सहगुरुपाय. १४ परि. १५ सुसाधुनउं. १६ करीय. १७ आवस्यक. १८ साहमीवच्छल. १९ शासनदेव. २० मनि. २१ धरिउं. २२ नवि. २३ मास. २४ अधिकि; आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'सु' लखेलु छे. २५ पतु. २६ नांम. २७ करिउ.

* आ कडीनुं प्रथम चरण मूल प्रतिमां नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चंद्रमानी परि कला ग्रहतउ, आठ वरष थया जिसइ,
दिन प्रतइ तात ! किंहां[1] सिधारउ[2] ? सुणउ पुत्र ! कहइ तिसइ. २२

दूहा

वच्छ ! अम्हे आरामना, पुप्फ[3] लेवा काजि,
दिन प्रति देहरासरि जई पूजउं[4] श्रीजिनराज. २३

हूं पिणि[5] आविसु साथि तुम्ह, जोएवा आराम,
गयउ साथि आरामि कंइं,[6] दीधां फल अभिराम. २४

चउपई

फल लेई ढोया जिणहरइ, कुलआचार लघुवय पणि[7] करइ,
वीजइ दिनि[8] कहइ, हूं आणिस्युं, तुम्हे[9] रहउ बइठा ध्यानस्यउं[10] २५

अति आग्रहि[11] मान्यउ[12] तसु वचन्न,[13] दिन प्रति आणइ कुमर ते सम,[14]
धर्म्माभ्यास[15] करइ इणि परिइ,[16] थयउ वृतांत[17] तिणइं[18] अवसरइं[19] २६

भरतक्षेत्रि चंपामहापुरी, अमरापुरी जाणे[20] अवतरी,
सुरसुंदर नामइं[21] भूपाल, गुणावली राणी[22] ससिभाल.[23] २७

कल्पलता दीठी सुपनमइं,[24] राइ[25] विचार कीयउ मन गमइ,
सुताजनम होस्यइं[26] मुझ[27] घरइ, देषत मुष नयणणि सुख करइ. २८

अनुक्रमि जाई गुणसुंदरी, दीयउ नाम त्रेलोक्यसुंदरी,[28]
लवणिम रूप तणी उवरी, जोवनइ[29] अपछर[30] अवतरी. २९

---

१ किहां. २ सिधारिउ. ३ पुहप. ४ पूजउ. ५ पण. ६ कइ. ७ पीणि. ८ दिन. ९ तुहे. १० ध्यानस्युं. ११ आग्रह. १२ मांन्यउ. १३ वचन. १४ सुमन. १५ धर्माभ्यास. १६ परइ. १७ वृत्तांत. १८ इणइ. १९ अवसरइ. २० जांणे. २१ नामइ. २२ रांणी. २३ शशिभाल. २४ सुपनमइ. २५ राउ. २६ होस्यइ. २७ हम. २८ त्रैलोकसुंदरी. २९ जोवनिवइ. ३० अपच्छर.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मृगलोयण मुष चंद समान,[१] नासा कीर कोकिला वाणि,[२]
उज्जल दसन, अधर अति रंग, जघन वयण थन पीन उतंग. ३०

केहरिलंक हंसगामिनी, सोल शृंगार[३] धरइ[४] कामिनी,
नरपति देषि चिंतवइ इसउ, पुन्य जोगि प्रिय मिलिस्यइ किसउ ? ३१

राणी ! सुणउ, कुमरी केहनइ, तुम्हे कहउ आपउं[५] तेहनइं,[६]
जीवितव्य हूंती[७] वल्लही,[८] परदेसइं ए देस्यां नही. ३२

आपणा मंत्रिपुत्र तेहनइ, परणावउ कुमरी एहनइ,
सुबुद्धि[९] मंत्रिनइ[१०] बोलावीयउ,[११] हरषित रायघरइ आवीयउ. ३३

मंत्री[१२] ! सुणि, ताहरा पुत्रनइ, मइं[१३] बेटी दीधी इक्कमनइ,
मुहतउ कहइ, सुणउ नरराय ! एह वातह मनावइ दाय. ३४

सिरषइ कुलि राजसुत भणी, परणावीयइ कुवरि आपणि,[१४]
राजा कहइ, मइ दीधी सही, मेरी सउं[१५] स बोलिवउ नही. ३५

मुहतउ घरि आवी चींतवइ, किसी विमासण[१६] कीजइ हिवइ ?
कुष्टरोगदूषित मम पुत्त, किम परणावउं[१७] एह अजुत्त. ३६

राजानउ आग्रह एतलउ, आगइ नदी पाछइ वाघलउ,
आणीजइ[१८] जउ[१९] कुवरी[२०] घरइ, तउ लषमी आवइ बहु परइ. ३७

---

१ समांन. २ वांणि. ३ सिंगार. ४ कीयइ. ५ आपउं. ६ तेहनइ ७ हुंती. ८ वाल्ही. ९ सुबुधि. १० मंत्रनइ. ११ बोलावीअउ. १२ मंत्रि. १३ मइ. १४ आपणी. १५ सुं. १६ विमासणि. १७ परणाविउ. १८ आंणीजइ. १९ जइ. २० कुमरी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढाल धन धन ते जगि जाणीयइ[1]

मनि[2] चींतयनइ[3] इणि[4] परइ, मंत्री लाधउ एक उपाय,
कुलदेवी आराधिसुं, मनवंछित[5] करिस्यइ आय.
सुबुधि भली मुझ ऊपनीजी,[6] इणि बुद्धइं[7] हो थास्यइ[8] आणंद. सु० आं. ३८

विधि आराधी देवता, ते परषि[9] आवी पासि,
किणि काजइं[10] समरी तुम्हे? ते कहिज्यो हो जिम आणूं[11] रासि. सु० ३९

तूं समरथ जाणइं[12] सहू, अम्ह पुत्रनउ जे रोग,
तिम करउ आणी[13] कृपा, जिम थायइ ए[14] सुत नीरोग. सु० ४०

कहइ देवत,[15] मंत्री! सुणउ, नवि कर्म्म[16] छूटइ कोइ,
कोटि उपाय करउ घणा, विण भोगव्या[17] हो ते[18] अंत न होइ. सु० ४१

मंत्रि कहइ, देवी! सुणउ, रूपवंत आणउ[19] कोइ,
ते[20] विहाई[21] कुंवरी, हूं आपिसु[22] हो निज पुत्रनइ जोइ. सु० ४२

आणिसुं[23] हूं परदेसथी, पुर पोलिनइ[24] जु दुवारि,
बालिनइ[25] लेई करी, तुम्हि[26] करिज्यो हो काम विचारि. सु० ४३

मंत्रीसर हरषित थयउ, वीवाह करिवा काजि,
हयपालनइ संदेस कहि, रषवालउ हो राष्यउ मंत्रिराज. सु० ४४

---

१ जांणीयइ; आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'ए ढाल' एवा शब्द लखेला छे. २ मन. ३ चींतवइ. ४ इण. ५ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'हो ते' ए शब्द लखेला छे. ६ ऊपनी रे. ७ बुद्धि. ८ थाइस्यइ. ९ परत षि. १० काजइ. ११ आंण. १२ जांणइ. १३ आंणी. १४ 'ए' बीजी प्रतमां नथी. १५ देवति. १६ कर्मणी. १७ भोगव्यां. १८ तिणि. १९ आंणउ. २० तेहनइ. २१ विवाही. २२ आपिस. २३ आंणिस. २४ पोलनइ. २५ बालकनइ. २६ तुम्हे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राग मल्हार

उज्जयणी नयरी[१] जिहां[२] जी, कुलदेवति तिहां जाइ,
मंगलकलश[३] जिणि मारगइं[४] जी, तिणि ते सवद कहाइ. ४५

धन धन[५] त्रिलोक्यसुंदरी[६] जी, जहनइ[७] एहवउ जी भरतार,
भाडइ[८] परणेस्यइ जाई[९] जी, चंपानगरि मझारि. धन धन० ४६

वाणि[१०] सुणी संसइ[११] धरइ जी, कहिसु पितानइ वात,
बीजइ दिनि[१२] वलि इम सुण्यउ[१३] आज जणाइसु तात. धन० ४७

इम चीतवतां[१४] कुमरनइ जी,[१५] वाउलि ताणी जाइ,
ऊपाडी आण्यउ[१६] तिहां जी,[१७] चंपानयरी[१८] ठाइ. धन० ४८

पथि भयतृषित सरोवरइ, करि[१९] अमृतजलपान,[२०]
नगरी परिसरि[२१] ते गयउ जी,[२२] संध्यासमय निदानि.[२३] धन० ४९

संकेती नर ले गया[२४] जी, मुहता मंदिर वाडि,
न्हवण वसन भोजन करयउ[२५] जी, वेसास्यउ मन माडि. धन० ५०

किणि कारणि मुझनइ सदा जी,[२६] भगति करेउ[२७] धरि भाउ,
परदेसीनइं[२८] कुण करइ जी[२९]? अम्हनइ ते समझाउ. धन० ५१

---

१ नगरी. २ जहां. ३ मंगलकल्स. ४ मारगइ. ५ मुख्य प्रतमां 'धन धन धन' ए पाठने बदले बीजी प्रतमां लखेलो 'धन धन' ए पाठ मुख्य प्रतमां स्वीकार्यो छे. ६ त्रैलोकसुंदरी. ७ जेहनइ. ८ भाडै. ९ जई. १० वांणि. ११ संसउ. १२ दिन. १३ सुणिउ जी. १४ चींतवतां. १५ बीजी प्रतमां 'जी' नथी. १६ आणिउ. १७ बीजी प्रतमां 'जी' नथी. १८ चंपानयरी. १९ करिय. २० अमृतजलपांन. २१ परसिरि. २२ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. २३ निदांनि. २४ गयउ; तेनी पछीनो 'जी' बीजी प्रतमां मथी. २५ करी; तेना पछीनो 'जी' बीजी प्रतमां नथी. २६ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. २७ करइ. २८ परदेसीनइ. २९ 'जी' बीजी प्रतमां नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कुण नयरी कुण देस ए जी,[१] कुण राजा कुण तुम्ह ?
काम[२] किसउ तुम्हारइ कहउ जी ? ते समझावउ अम्ह. धन० ५२

मंत्री कहइ, चंपापुरी जी,[३] अंगदेस अभिराम,
सुरसुंदर नरपति इहां जी,[४] मंत्री सुबुद्धि[५] मुझ नाम.[६] धन० ५३

राजसुता अति सुंदरी जी,[७] माहरा[८] सुतनइ काजि दीधी,
ते सुत कोढीयउ जी,[९] किम परिणावुं[१०] आज ? धन० ५४

ते परणी मुझ पुत्रनइ जी, देई तुम्ह घरि जाउ,
इणि अरथइ आण्यउ[११] तुनइं[१२] जी,[१३] कुलदेवी लहि दाउ. धन० ५५

मंगल कहइ, किहां[१४] हंसिणी जी,[१५] संग जिसउ किह[१६] काग ?
तिम रोगी सुत कोढीयउ[१७] जी,[१८] रूपवती नही लाग. धन० ५६

एह अकारिज नहीं[१९] करूं जी,[२०] ए कुकर्म चंडाल,
मंत्री कहइ, तुझ मारिसुं[२१] जी, काढी षडग कराल. धन० ५७

साहस धरि मंगल भणइ[२२] जी, मरिवउ छइ इक वार,
एहु[२३] कर्म्म करिस्युं नही जी,[२४] लहि श्रावक अवतार. धन० ५८

---

१ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. २ काज; बीजी प्रतमां आ पंक्तिनो पूर्वार्ध आ प्रमाणे छेः 'काज तुम्हारइ कहउ किसउ'; मुख्य प्रतनो 'जी' नथी. ३ आ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. ४ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. ५ सुबुधि. ६ नांम. ७ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. ८ माहरइ. ९ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. १० परणावुं. ११ आणिउ. १२ तुनइ. १३ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. १४ किह. १५ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. १६ किहां. १७ कोढीअउ. १८ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. १९ नही. २० 'जी' बीजी प्रतमां नथी. २१ मांरिस्युं; पछीनो मुख्य प्रतनो 'जी' बीजी प्रतमां नथी. २२ कहइ; पछीनो 'जी' बीजी प्रतमां नथी. २३ एकु. २४ 'जी' बीजी प्रतमां नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विचि पराधान[१] पुरुष[२] पड्या जी,[३] मंगलनइ समझाइ,
वणिगबुद्धि[४] निज केलवी जी,[५] पहिलउ भाडउ[६] ल्याइ. धन० ५९

राजा जे घइ दाइजउ जी,[७] ते मुझ घउ मंत्रीस,
परणी अम्हारी राषिज्यो जी,[८] हम तुम्ह विचि जगदीस. धन० ६०

उज्जयणी पुहचाविज्यो जी,[९] वित्तसुं[१०] अम्ह घउ[११] बोल,
मुहत[१२] मान्यउ[१३] वचन ते जी,[१४] रंग रली चित षोलि. धन० ६१

ढाल ऊलाला

स्नान करावीय रंग, कुमरनइ धरि[१५] उच्छरंगइ,
कीधला विविध श्रृंगार, वस्त्राभरण प्रकार. धन० ६२

गजवरषंधि[१६] आरोहइ, रूपइं[१७] [ज]नमन मोहइ,
जाणे[१८] कामकुमार,[१९] सुंदरी जोग भरता[र]. धन० ६३

राजा अधिक आणंद, बोलाव्या[२०] नरवृंद,
गावइं[२१] मंगल गीत,[२२] सधव वधू[२३] कुल रीत.[२४] धन० ६४

च्यारे मंगलं[२५] मंडी, कृपण कुरीत[२६] ते छंडी.
दीधा वस्त्र अनेक, आभर्णादि[२७] विवेक. धन० ६५

थाल त्रंबालू कचोला,[२८] मणिमाणिक रथ घोडा,[२९]
कुमरीनइ हथ लेवइ, प्रीतइ नरपति देवइ. धन० ६६

---

१ परधांन. २ पुरष. ३ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. ४ वणिकपुद्धि. ५ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. ६ भाडा. ७ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. ८ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. ९ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. १० वितस्युं. ११ नइ. १२ मुहतइ. १३ मांन्यउ. १४ 'जी' बीजी प्रतमां नथी. १५ धरिउ. १६ गाजवरषंध. १७ रूपइ. १८ जांणे. १९ कांमकुमार. २० वोलाव्या. २१ गावइ. २२ गीति. २३ वधू. २४ रीति. २५ मंगल. २६ कुरीति. २७ आभरणादि. २८ कचोले. २९ घोले.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अश्व पंच तिणि दीधा, हथ मुकलावा[1] कीधा,
वाजित्र वाजि[2] ते तूरि, दान[3] दीया जन भूरि. ६७

मंगल वहू[4] ले आव्यउ, घरमाहि[5] पूषि[6] वधाव्यउ,
मंगल सुंदरीय[7] बेवि, सुणिहर[8] आव्या हेवि.[9] ६८

मुहतउ भाव जणावइ, मंगल बाहिर[10] आवइ,
जोरि[11] न काव्यउ ए जावइ, राजानै[12] मनि[13] भावइ. ६९

चलचित निज पति पेषी,[14] कारण कउण विशेषइ,
पतिनउ पास न छंडइ, कुमरी दृष्टि पंडइ. ७०

देहचिंता मिसि ऊव्यउ, सुंदरी न मेल्हइ ते[15] पूठउ,
राग धरी नवि बोलइ,[16] सूनइ चिति[17] घरि डोलइ. ७१

कहउ कुमर ! काई[18] बाधइ ? क्षुधा[19] दीपइ विण षाधइ,
रुचता[20] मोदक अणावइ, स्वामी ! ल्यउ तुम्ह भावइ. ७२

मंगल भाव जणावइ, एतउ मोदक भावइ,
उज्जयणी जल पावइ, तउ हम षरउं[21] सुहावइ. ७३

चमकी चित्ति कुमारी, अघटत वात विचारी,[22]
मातानउ घर होस्यइ, अवंती नाम ते[23] लेस्यइ. ७४

दीधां[24] पंच तंबोल, संध्याकाल अबोल,[25]
निकस्यउ[26] ते मिस[27] लेई, आवि सु सहिय वलेई. ७५

---

१ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'ए' लखेलो छे. २ वाज. ३ दांन. ४ वहु. ५ घरमाहे. ६ पूष. ७ सुंदरी. ८ सुणहर. ९ एहेवि. १० बाहरि. ११ जोर. १२ राजानइ. १३ मन. १४ पेषि. १५ ए. १६ वोलई. १७ चित. १८ कांई. १९ षुधा. २० रुचिता. २१ षरउ. २२ अविचारी. २३ नगर. २४ दीधा. २५ अवोल. २६ निकिस्यउ. २७ मिसि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मंदिर थकीय[१] नीकलियउ,[२] जाई साथनइ मिलीयउ,
दीधी वस्तु संभाली, हय रथ सोवनथाली. ७६

मुहतउ[३] ते मुकलाव्यउ, उजयणी[४] पथि आव्यउ,
पूछी निश्चय[५] कीधउ, जे दीधउ तेइ[६] लीधउ. ७७

ढाल तूं वडउ लेसालीयउ ए ढाल[७]

मातापिता मंगल तणा ए, बहु विधि[८] करीय ते सोग,
ते दुक्खरहित थया ए, मंगल तणइं[९] संजोग.[१०] ७८

निज कुसलि[११] घरि आवीया ए, पूरब[१२] पुन्यसंयोगि,[१३]
मंगलकलश[१४] आवीया ए, रथ ऊपरि चड्यउ घर भणी ए. ७९

आवतउ देषीयउ मात, पिणि उलप्यउ[१५] तिणि नही ए,
मारग नही इहां जात, निज कुसलि घरि आवीया ए. ८०

तउ पिणि पोलि माहे गयउ ए, माय कहइ सेठिनइ जाइ,
ते सेठि साम्हउ थयउ ए, देषि सुत उलप्यउ[१६] ताइ. ८१

आलंगी षोलइ लियउ[१७] ए मातपिता धरि राग,
मनि[१८] आणंद अति थयउ ए, धन धन पुत्र सोभाग. नि० ८२

हरिषित माय[१९] पूछइ इसउ ए, किहां रह्यउ[२०] किण विरतंत ?
ए रिद्धि किहां लही ए, अचरिज[२१] ए महंत. नि० ८३

---

१ थकी. २ नीकलीयउ. ३ मुहतइ. ४ उज्जयणी. ५ निर्णय. ६ ते. ७ 'ढाल' शब्द बीजी प्रतमां नथी. ८ बिध. ९ तणइ. १० संयोग. ११ कुसल. १२ पूरव. १३ संयोग. १४ मंगलकल्स. १५ उलषिउं. १६ उलषिउ. १७ लीयउ. १८ मन. १९ माइ. २० रहिउ. २१ आ पंक्तिनो उत्तरार्ध मुख्य प्रतमां अशुद्ध रीते आ प्रमाणे छे: 'अवरि ज ए हंत'; आना बदलें बीजी प्रतनो पाठ 'अचरिज ए महंत' मुख्य पाठ तरीके स्वीकार्यो छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वात मांडीनइ सवि कही ए, अहो अहो पुत्रनउ भाग,
हिव अश्व[1] वंध्या[2] तिहां ए,[3] जिहां केहनउ नही लाग. नि० ८४

सर्व कला भणिस्युं अम्हे ए, पाठकनइ घरि जाइ,
नित[4] पढत गुणत रहइ ए, करत अभ्यास बुधि[5] थाइ. नि० ८५

पाछिली[6] वाते कहियइ[7] हिवइ ए, संभलिज्यो चित लाइ,
तिणि मंत्रि किसुं कीयउ ए, पुत्रनइ लीयउ बोलाइ. नि० ८६

ढाल साधु न षंसीयइ

मंत्रीपुत्र तिहां गयउ, सेज आरुढउ[8] जांम,
देप्यउ ते नर कोढीयउ, मनमांहि[9] संकी तामो रे,[10]
कर्मदसा[11] फली धिग् धिग् कर्म्म[12] अकामो रे. कर्म्मदसा फली. आं.[13] ८७

करफरसण करिवा भणी[14] उद्यत हूवउ[15] जाम,
कुमरी[16] बाहिर नीकली[17], दासी पूछइ तामो रे. क० ८८

कहि सषि ! तु[18] काइ[19] दूमणी ?[20] सुणि सषि ! गयउ भरतार,
कामरूप मनमोहनूं,[21] तजि मुझनइ निरधारो रे. क० ८९

कहि[22] हिवणइ कोई कोढीयउ[23] आव्यउ मुझ आवासि,
ते परि[24] जाणी[25] परिहरी,[26] आवी छुं तुम्ह पासो[27] रे. क० ९०

---

१ अस्व. २ वांध्या. ३ जी. ४ नितु. ५ बुद्धि. ६ पाछली. ७ कहीयइ. ८ सिझारूढउ. ९ मनमाहि. १० तांमो. ११ कर्म्मदशा. १२ कर्म. १३ 'कर्म्मदसा फली. आं.' आ शब्दो बीजी प्रतमां नथी. १४ 'भणी' पछी वीजी प्रतमां 'रे' छे. १५ हूयउ. १६ कुवरी. १७ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. १८ तूं. १९ कांइ. २० आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २१ मनमोहनू; आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २२ बीजी प्रतमां 'कहि' शब्द नथी. २३ आनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २४ पर. २५ जांणी. २६ आनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' लखेलो छे. २७ पासि.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दासीमांहे[1] सुइ रही, राति विहाणी ताम,[2]
पीहरि पहुती सुंदरी, मुहतउ[3] जाण्यउ[4] अकामो रे. क० ९१

दुर्बुधी राजा कहइ,[5] बइठउ करि मुख साम,[6]
पूछइ राइ[7] विषावादस्यउं,[8] तुम्ह मनि हरषनइ ठामो[9] रे. क० ९२

कर्म तणी गति स्युं कहूं ?[10] कहिवा जोग न राज,
कुमर जे देप्यउ[11] ते तिसउ,[12] पिणि ते थयउ[13] काजो[14] रे. क० ९३

कुमरीनइ संयोगथी, कोढी थयउ[15] कुमार,
हा हा रव भूपति करइ, हूयउ कुण रतन विणासो[16] रे. क० ९४

निश्चय[17] नय जिनवर कह्यउ[18] सुष दुष करइ न कोइ,
पिणि व्यवहारइ[19] नयइ करी,[20] देषि[21] सुतानइ होइ रे. क० ९५

जइ मइ हूंत[22] नही सुता,[23] तउ किम हुंत विकार ?
दोष नही स्वामी ! तुम्हां,[24] थयउ गुणकरमह[25] माहारो[26] रे. क० ९६

इम[27] प्रपंच करि ते गयउ, सुंदरि[28] चड्यउ रे[29] कलंक,
इष्ट अनिष्ट थई सुता,[30] राजानइ मनि[31] संको रे. क० ९७

---

१ दासीमाहे. २ तांम. ३ मुहतइ. ४ जांण्यउ. ५ आनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ६ स्याम. ७ राउ. ८ विषवादस्यउ; आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ९ ठामि. १० आनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ११ देषिउ. १२ तुम्हे; आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. १३ आनी बीजी प्रतमां 'रे' छे. १४ अकाज. १५ थयाउ. १६ विगार. १७ निश्चइ. १८ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. १९ व्यवहार. २० आनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २१ दोष. २२ हुंत. २३ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २४ आनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २५ कुणकरमह. २६ मारो. २७ ए. २८ सुंदर. २९ 'रे' बीजी प्रतमां नथी. ३० आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ३१ मन.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नवि बोलावइ कुमरीनइ,[१] नवि जोवइ धरि राग,
एकई[२] षूणई[३] पडि रही,[४] मातानइ गृह भागो रे. क० ९८

चींतवती मनमइ इसउ, पूरव भव दुःकर्म्म,[५]
जे मुझ पति छांडी[६] गयउ,[७] उदय थयउ ते अधर्मो[८] रे. क० ९९

कुल[९] कलंक पाम्यउ इमइ, किसउं करुं, किहां[१०] जाउं[११] ?
व्यसन पडी, करमइ नडी, देव विडंबी[१२] साउ[१३] रे. क० १००

इम चींतवतां संभरयउ,[१४] पति उज्जेणी[१५] वचन्न,
सही तिहां[१६] पहुतउ हुस्यउ,[१७] कुमरी बुद्धि उपन्नो[१८] रे. क० १०१

कणि[१९] उपाइ[२०] तिहां जई, उलषि निज भर्तार,[२१]
ए कलंक ऊतारिसुं,[२२] जिम जाणइ संसारो रे. क० १०२

एक वार माता मुंनइ,[२३] जउ बोलावइ[२४] तात,
कान[२५] देनइ[२६] सांभलइ,[२७] माहरा[२८] मननी वातो रे. क० १०३

माता देषि निरादर,[२९] मामउ[३०] सीह सामंत,
तेहनइ पिणि वीनति[३१] करी,[३२] ते कहि, होइ निचंतो रे. क० १०४

---

१ कुमरनइ; आनी पछीं बीजी प्रतमां 'रे' छे. २ एकइ. ३ षूणइ. ४ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ५ दुःकर्म. ६ च्छांडी. ७ 'गयउ' पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ८ धर्मो. ९ कुण. १० कहं. ११ जाउ. १२ विडंवी. १३ माउ. १४ सांभर्यउ. १५ उज्जयणि. १६ तहां. १७ हुस्यइ. १८ उपन्न. १९ केणि. २० उपाई. २१ भरतार. २२ उतारिस्युं. २३ मुनइ. २४ बोलावइ. २५ कांन. २६ देइनइं. २७ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २८ माहरइ. २९ निरादर; आनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ३० मामा. ३१ वीनती. ३२ पछी 'रे' लखेलो छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजानइ तिणि वीनव्यउ,[१] छोरू इम सीदाइ,
दान मान[२] दूरइ रहउ,[३] वचनइं[४] स्वामि बोलायउ[५] रे. क० १०५

एक रुषी सुणि परिहरी, कुमरी विण[६] आप धार,[७]
आज माहरइ आग्रहइ,[८] बोलावउ इक वारो रे. क० १०६

दूहा

बोलावी आवी कुमरि, करि प्रणाम, सुणि तात,
पुरुष वेष द्यउ मुझ तुम्हे, पछइ जणाइसु वात. १०७

वेष कीयउ तिणि पुरुषनउ,[९] द्यउ मुझ सिंघ[१०] संघाति,
उंज्जेणी[११] नगरी [भ]णी भेजउ मुझनउ,[१२] तात. १०८

तिम करिजो[१३] जिम वंसनइ,[१४] रती न लागइ षोडि,
सुंदरी चलीय[१५] प्रयाण करि, करि प्रणाम कर जोडि, १०९

ढाल[१६] सव सेन लिय साथि

त्रैलोकसुंदरि[१७] सिंह सामंतइ[१८] परिवरी ए,
सुषि अषंड प्रयाण देतां, चालता[१९] पहुता[२०] उज्जणीपुरी[२१], ए. ११०

वइरसिंह सुणि राय आयउ, सनमुष चंपापतिनंदन सुणी ए,
जुगति भगति करि आणी[२२] निज मंदिर भलइ भोजन देई गुण थुणी ए. १११

---

१ तेनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. २ मांन. ३ तेनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. ४ वचनइ. ५ बोलावोइ. ६ विणु. ७ 'आप धार'ने वदले बीजी प्रतमां 'आधार' छे. ८ तेनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' लखेलो छे. ९ तेनी पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. १० सिंह. ११ उज्झेणी. १२ मुझनइ. १३ करजे. १४ पछी बीजी प्रतमां 'रे' छे. १५ चली. १६ ढालनी पंक्ति बीजी प्रतमां आ प्रमाणे छेः 'गउरी रागे, सबल सेन लिय साथ' १७ त्रैलोकसुंदरी. १८ समंतइ. १९ चालत. २० पहुती. २१ उज्जयणीपुरी. २२ आंण.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कुण कामइ इणि नयरि[१] आव्या, ते कहउ, नगर कुतूहल देषिवा ए,
सिप्रानइ उपकंठि महलइं[२] ते रह्यउ[३],
जोवइ तुरंगम एहवा ए. ११२

तेहि ज[४] तुरंगम देषि आपण उलष्या, चर भेज्या, पूठिइं[५] गया ए,
गृहपति नाम[६] सुठाम,[७] सघली[८] सुधि लही,
सुणी कुमर हरषित थया ए. ११३

सिंह बोलाव्यउ[९] माम,[१०] माहरउ पति इहां कलाचार्य पासइ पठइ ए,
तेहनइ[११] इहां निमंत्रि छात्र सहित,
हित तुम्हे जाइ[१२] आणउ[१३] अठइ ए. ११४

आव्यउ[१४] देषि भरतार, अति आणंद करी आसन भोजन उपचर्यउ ए,
छात्र थकी सुविशेष[१५] वस्त्र अनोपम
मंगलनइ रागइ वर्यउ ए. ११५

पाठक! कहावउ वात इण[१६] चटडां कन्हा,[१७] चटडां[१८] बोल्या कुमरनइ ए,
कथा कहेस्यइ एह, जे तुम्हनइ
अति रागदृष्टि सूधइ मनइ ए.[१९] ११६

मंगल कहइ कुमार, कहउं[२०] कथानिक,[२१] आपण वीतउं,[२२] तुम्ह सुणउ ए,
ए तेहि ज[२३] नारि भाडइ परणीय,
पुरुषवेष कारण कुणइ ए? ११७

---

१ नगरि. २ महलइ. ३ रहिउ. ४ 'ज' बीजी प्रतमां नथी. ५ पूठइ. ६ नांम. ७ सुठांम. ८ सगली. ९ बोलीवउ. १० मांम. ११ तेहनउ १२ जई. १३ आंणो. १४ आविउ. १५ सुविशेषि. १६ इण्ह. १७ कन्हइ. १८ चटडा. १९ 'ए' बीजी प्रतमां नथी. २० कहूं. २१ कथानक. २२ वीतती. २३ आनी पछी बीजी प्रतमां 'निज' शब्द छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एहवउ निश्चय जाणि वात कही तिम जिम परणी छंडी गयउ ए,
माहरी छइ तिहां[१] मागि[२] चंपानयरीय,[३]
ए अचरिज मुझनइ थयउ ए. ११८

जा रे जूठी वात, झालउ एहनइ, अम्हरइ घरि ए किहां रह्यउ[४] ए?
पुरुषे झाल्यउ[५] जाम, नाठा छात्र ते
धन्न सेठिनइ जाई कहउ[६] ए. ११९

चउपई

मंगलकलश[७] मांहि[८] आवीयउ,[९] ऊंचइ[१०] आसणि[११] वइसाणीयउ[१२],
सिंह ! सुणउ, मइ परिछाणीयउ,[१३]
परण्यउ पति मुझ मनि मानीयउ.[१४] १२०

सुणउ सिंह ! जइ संसउ[१५] होइ, थाल कचोला जाई जोइ,
एहनइ घरि पहुचउ सहु कोइ, धनदत्तइं[१६] आण्या सव ढोइ. १२१

ते धनदत्त चित्त संकाइ जाइ,[१७] परमेसर ! स्युं थाइ,
सिंहइ[१८] कही वात समझाउ,[१९] बेटी बहू[२०] होइ घरि[२१] ल्याउ.[२२] १२२

सिंह कुमरि पासि[२३] आवीयउ, स्त्रीना भेष लेइ[२४] धावीयउ,
पुरुषवेष[२५] ते दूरइ करी, आवी पति पासइं[२६] सुंदरी. १२३

पइसारइ निज घरि आवीया, जाणे अभिनव परणावीया,
नगरइ[२७] राय[२८] ते बोलावीया, सुणी देषि अचरिज भावीया. १२४

---

१ तिह. २ मांगि. ३ चंपानगरीयइ. ४ रह्यओ. ५ झाल्यओ. ६ कह्यउ. ७ मंगलकल्स. ८ माहि. ९ आंणीउ. १० उचइ. ११ आसणइ. १२ बइसांणीयउ. १३ पहिच्छाणीयउ. १४ मांनीयउ. १५ संसो. १६ धनदत्तइ. १७ जाणइ. १८ सिंघ. १९ समझाइ. २० वहू. २१ घर. २२ ल्याइ. २३ पासइ. २४ ले. २५ पुरुषभेष. २६ पासइ. २७ नगर. २८ राइ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मंगलकलस घरि करइ विलास, त्रिलोकसुंदरी[1] पूगी आस,
सिंह लेई कुमरना वेस, चंपायइ वीनव्यउ नरेस. १२५

वली सिंह भेज्यउ तेडिवा,[2] मंगलनइ संसउ फेडिवा,
मंगल सुंदरी आव्या पासि, राजा हियइ धरीय[3] उल्हास. १२६

भलइं भलइं[4] सुंदरिनी बुद्धि, देषउ मुहता तणी कुबुद्धि,[5]
विना दोष पुत्री दूहवी, मिट्यउ कलंक, रिधि[6] पामी नवी. १२७

कुबुद्धीनइ काढ्यउ मारिवा, मंगल आव्यउ[7] ऊगारिवा,
मुहतानइं[8] द्यउं[9] जीवियदान,[10] राजन ! आपउ अम्हनइ मान.[11] १२८

राजा मान्यउ, निज करि पुत्र, मूल पिता बोलाव्यउ अत्र,
मंगलनइं[12] दीधउ निज राज, पुण्यपसाइ[13] सीधा जां[14] काज. १२९

ढाल आढीयानी[15]

यशोभद्र गुरु आवीया, गाईया मिलि नरनारि,
सुरसुंदर नरपति गणपति,[16] पदवंदन कारि.[17] १३०

देसण सुणि प्रतिबूधला[18] लीधला चारित सार,
भविक जीव निस्तारिवा, करिवा[19] उग्र विहार. १३१

सीमाला भूपाल न मानइ मंगल आण,[20]
वणिकपुत्र[21] ए स्युं करिस्यइ संग्राम अजाण ? १३२

---

१ त्रैलोकसुंदरी. २ तेडवा. ३ धरी; 'राजा धरी हियइ उल्लासि' ए प्रमाणे बीजी प्रतमां आ पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ४ भलइ भलइ. ५ कुवुद्धि. ६ रिद्धि. ७ आवीउ. ८ मुहतानइ. ९ दीउ. १० जीवीदांन. ११ मांन. १२ मंगलनइ. १३ पुन्यपसायइ. १४ 'जां' बीजी प्रतमां नथी. १५ बीजी प्रतमां 'ढाल फागनी' लखेली छे. १६ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'ए' शब्द लखेलो छे. १७ कार. १८ प्रतिवूधला. १९ कारिवा. २० आंण. २१ वणिगपुत्र.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऊदालीनइ राज हरिस्युं[१] इणि अभिमान,[२]
चतुरंग सेन लेई[३] चड्यउ[४] मंगलकलस प्रधान.[५] १३३

पुण्य[६] पसायइ ते अरि भागा लागा पाइ,
जिनवर प्रतिमा पूजि[७] करइ ते निज घरि आइ. १३४

जिनप्रसाद अनेक करावइ आवइ लोग,
जैनधर्म्म[८] इम साचवइ साचवइ राग संयोग. १३५

अन्य[९] दिवसि उद्यानइ आव्या जइसिंघसूरि,[१०]
वंदन चाल्यउ[११] सुमंगल, मंगल वाजइ[१२] तूर.[१३] १३६

गुरुजी ! अम्ह मनि संसय, एह विटंबन[१४] देषि,
भाडइ परणी आणी, दूषण लहीय विशेषि. १३७

ए कुण कर्म अम्हारउ ? पूरव[१५] भववृत्तंत,
न्यानि[१६] करी सब[१७] जाणउ[१८] वषाणउ[१९] मनि[२०] षंति. १३८

सूरि कहइ, संभालीयइ,[२१] राजन ! आपणे[२२] कर्म,
उदयागत भोगवीयइ, जोगवीयइ जिनधर्म्म.[२३] १३९

ढाल बालूडानी

इणि भरति सुषेत्रइ, षितिप्रतिष्ठ वरठामि,
धन धन्नउ[२४] समृद्धउ, सोमचंद्र इणि[२५] नामि. १४०

श्रीदेवी तेहनइ नारी अति अभिराम,
प्रीतइं[२६] संतोषइ जाणे रति नइ काम.[२७] १४१

---

१ हरेस्युं. २ अभिमांन. ३ लेइ. ४ चढ्यउ. ५ प्रधांन. ६ पुन्य. ७ पूज. ८ जैनधर्म. ९ अन्न. १० जइसिंहसूरी. ११ चाल्य. १२ वाजत. १३ तूरि. १४ विटंवन. १५ पूर. १६ न्यान. १७ सव. १८ जांणउ. १९ वषांणउ. २० मन. २१ संभलीयइ. २२ आपण. २३ जिनधर्म. २४ धन. २५ इण. २६ प्रीतइ. २७ कांम.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोमचंद्र प्रकृति गुण माननीक जस ठामि,
पति रमणि संजोगइ सरिषइ सरिषउ पामि. १४२

जिनदेव सुश्रावक तिहकणि[१] वसमान,[२]
तिण[३] माहोमाहे मैत्री भावप्रधान.[४] १४३

जिनदेव देसंतरि धनइ[५] कारजि[६] चलंत,[७]
निज मित्र बोलावी बइठा मिलि एकंत.[८] १४४

भाई ! मुझ ए धन सहस मान[९] दीनार,
षरचेज्यो साते क्षेत्रे करीय विचार. १४५

सामग्री मेरी साचविज्यो धरि राग,
इम सीष देईनइ कुसल चले निज माग. १४६

सोमचंद्र हिवइ धन षरचइ आपण मेलि,
अनुमोदइ घरणी धरम भणी करि केलि. १४७

तिणि पुरि एहनी सषि भद्रा नामइ[१०] जाणि,[११]
देवदत्त तणी जे नारीसुं पहिचाणि.[१२] १४८

षरचइ मेरउ पति धरमारथि[१३] धन[१४] कोडि,
संभलि श्रीदेवी भाषइ मुह मचकोडि. १४९

तेरी संगति ए कोटी[१५] किम षरचेस्यइ ?
फोकटणी फोकइ काइ तूं गरव करेस्यइ ? १५०

तिणि वचनि कठोरइ मुष विलषउ अति कीधउ,
वलि हास करीनइ मिच्छा दुक्कडं[१६] लीधउ.[१७] १५१

---

१ तिहिकणि. २ वसइ समांन. ३ तिणि. ४ भावप्रधांन. ५ धननइ. ६ काजि. ७ चलंतइ. ८ एकंतइ. ९ मांन. १० नांमइ. ११ जांणि. १२ पहिचांण. १३ धरमरथ. १४ धननी. १५ कोढी. १६ दुक्कड. १७ दीधउ.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ते सोमचंद्रनइ श्रीदेवी संघाति,[१]
श्रावकना व्रत ल्यइ साधु संगति मनि भात.[२] १५२

ति[३] थया समाधइ, चविनइ सुरा[४] सोधर्मि,[५]
स्थिति पंच पल्योपम, आयु भोगवी कर्म्म.[६] १५३

सोमचंद्रना[७] आतम हूआ तुम्हे भूपाल,
श्रीदेवी सुंदरि थई नारि ते बाल.[८] १५४

परद्रव्यइ जे तुम्ह कीधउ पुण्य रसाल,
तिणि भाडइ परणी वली मिली ततकाल. १५५

हासइ श्रीदेवी भद्रानइ दीधउ आल,
इणि भवि[९] तिणि पाम्यउ एह कलंक कराल. १५६

इम सुणीय विरत्तउ मंगलकलस नरिंद,
सुंदरिना सुतनइ दीधउ राज आणंद. १५७

राजा राणीसुं[१०] भावइं[११] सहगुरु पासि,
लीधउ चारितव्रत पालइ धरीय उल्हास. १५८

क्रमि रायरिसी ते भणइ सकल सिद्धंत,
गुरु आचारिजपदि[१२] थाप्यउ जाणि[१३] महंत. १५९

त्रिलोक्यसुंदरी[१४] थई पवित्तण नारि,
पाली चरित[१५] वर अणसण करि उच्चार. १६०

पंचम सुरलोकइं[१६] पहुता[१७] करि ध्यान,[१८]
पामी नरभव वलि पद लहिस्यइ निरवाणि.[१९] १६१

---

१ संघानइ. २ भातइ. ३ ते. ४ पुरि. ५ सौधर्म्म. ६ धर्म्म. ७ सोमचंद्रनउ. ८ वाल. ९ भव. १० रांणीस्युं. ११ भावइ. १२ पद. १३ जांणि. १४ त्रैलोकसुंदरी. १५ चारित. १६ सुरलोकइ. १७ पुहता; तेना पहेलां बीजी प्रतमां 'गुरु' शब्द छे. १८ ध्यांन. १९ निरवांण.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इम जाणी[१] पूजा जिनप्रतिमानी कीजइ,
मानवभव पामी[२] पुण्य[३] तणा फल लीजइ. १६२

संवत[४] सोलहसइ ऊपरि गुणपंचासि,
ए कीधउ मंगलकलस चरित्र विलासि.[५] १६३

दूहा

अधिकउ ऊणउ जे कह्यउ मिच्छा दुक्कड तास,
मूलताण[६] मांहि[७] ए कीयउ मगसिर सुदि उल्लास. १६४

श्री[जि]निचंदसूरिंद[८] गुरु वर्त्तमान[९] गणधार,
सुविहित मुनिचूडामणी जुगप्रधान[१०] अवतार.[११] १६५

खरतरगच्छि[१२] सुहागनिधि अमरमाणिक्यगुरुसीस,[१३]
कनकसोम वाचक कहइ मंगलचरित जगीस. १६६

॥ इति मंगलकलश फाग समाप्तः ॥[१४]

---

१ जांणी. २ पांमी. ३ पुन्य. ४ संवत्. ५ विलासइ. ६ मूलतांण. ७ महि. ८ जिनचंद्रसुरिंद. ९ वर्तमांन. १० जगप्रधां ११ अवतारि. १२ खरतरगच्छ. १३ अमरमांणिकगुरुसीस. १४ बीजी प्रतनी पुष्पिका आ प्रमाणे छे. 'इति मंगलकलस फाग समाप्तं ॥ श्री ॥ छ ॥ कल्याणमस्तु ॥'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३०]

कल्याणकृत

वासुपूज्य मनोरम फाग

(सं. १६९६)

सरस्वतीं नमस्कृत्य प्रणम्य सद्गुरुन्नपि ।
वक्ष्ये मनोरमं फागं वासुपूज्यजिनस्य च ॥

ढाल १ प्रथम, अढीआ

पणमीय जिन चउवीस, पाय नमाडीय सीस,
वासपूज्य जिन तणउ ए, फाग रलीआमणउ ए. १

फागु ते फागुण मासि, लोक ते रमइ उहलासि,
रामति नवनवी ए, किम जाइं वर्णवी ए. २

बांधइ करमनी कोडि, न सकइ कांई वछोडि,
ते रामति किसी ए, राग मति जस वसी ए. ३

धिन धिन श्रीवासपूज्य, फाग रमतइ थी बूझ्य,
संजिम आदरइ ए, शिवरमणी वरइ ए. ४

त्रिण भवनी सुणउ वात, तीरथपति थया विख्यात,
सहू को सांभलउ ए, मूकी आमलउं ए. ५

त्रोटक

आमलउ मूंकी भवीअण भाविइ, वासपूज्यनउ फाग जे गावइं
तस घरि लीला लषिमी आवइ, अजरामर पद निश्चइं पावइ. ६

फाग फाग पण सरिषा नही, छासि धोली नइ दूध धोलुं सही,
जेवडउ अंतर मेरु सिरशवइ, तिम जिनगुण अवर कथा कव्यइ. ७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढाल बीजी, सरसति अमृत ए देशी, राग केदारु वसंत

पूरव भविइं पुष्करार्द्ध माहइ,
पूरव महा विदेह कहाइ,
धरमषेत्र सुहाय. ८

मंगलावती विजय भल दीपइं,
रत्नपुरं अमरापुर जीपइ,
मुक्तिक सोहि सीपइ. ९

तिहां पद्मोतर नामि राय,
शत्रुवर्ग नमाडिया पाय,
दिन दिन ओच्छव थाय. १०

एक दिन राय सभामां बिसिइं,
अंगद बांहइ देषी मन विहसइ,
भुजबल निज परसंसइ. ११

भुज प्रमाणि मइं सांध्या देस,
भुज प्रमाणि मुझ लच्छी असेस,
भुजबल न धरइ षेस. १२

भुज प्रमाणि मुझ सहू को जाणइं,
भुज प्रमाणि मुझ सहू वषाणि,
मानइ रांणो रांणि. १३

तव सहू को कहइ हा जी हा जी,
मोटा कहइ उलसीनइ भाजी,
पण न कहइ को ना जी. १४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विमलबोध मंत्री तव बोलइ,
जिनधरमवासित मति नव डोलइ,
सुणि पद्मोत्तरराय. १५

पुण्यइ उत्तम कुलि अवतार,
पुण्यइ लषिमी नइ व्यापार,
पुणइ हुइ व्यवहार. १६

पुण्यइ रामा रंभ समानि,
पुण्यइ विलसि नवइ निधांन,
पुण्य संपजइ न्यांन. १७

पुण्य घरि वांधवनी जोडि,
पुण्यइ दीसइ कांई नही षोडि.
पुण्यइ संपद कोडि. १८

पुण्यइ विद्यानु नही पार,
पुण्यइ बुधि तणउ भंडार,
पुण्यइ गुण दातार. १९

पुण्यइ तनु हुइ नीरोग,
पुण्य हुइ वंछित भोग,
पुण्यइ बेटा योग. २०

पुण्यइ मानइ मोटा राय,
पुण्यइ लागइ शत्रु पाय,
पुण्यइ वंछित थाइ. २१

गजरथ घोडा पायक बहू अ,
पुण्यइ उलग सारइ सहू अ,
भुजबल पुण्यइ कहू अ. २२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पुण्यइ पुण्याढइ हवउ जेह,
विस्तर कथा सुणावइ तेह,
संखेपइ तेह. २३

ढाल त्रीजी रासक, सीति रसु केवल वर नाणी ए देशी

पद्मपुरं पद्मइ करी शोभित, शोभित तपन नरनाथ रे,
सेठ धनावइ राय आप्यउ हाथी ऐरावण साथ रे. २४
अरध राज्य राजा दीइ तेहनइ, हस्तीथी देस साध रे,
दिन दिन हस्तीथी अ तपननउ, यस प्रताप ते वाधइ रे. २५
एक दिन वारण श्लोक लिषीनइ, नरपतिनइ समझावइ रे,

श्लोक : अवज्ञातत्रयीतत्त्वो, मिथ्यासत्त्वोल्लसित्भुजः ।
हा मूढा शत्रुपोषेण मित्रपोषेण दूष्यति ॥

जव अर्थ न बूझइ तव आणंदचंद, गुरुनइ राय तेडावइ रे. २६
तत्व प्रीच्छीनइ राय दीक्षा लेवानइ जव जावइ रे,
कहि कलसो करीवर जसु ढासु ढालइ, राजधणी ते थावइ रे. २७
शणगारिउ साम ज जव भमतुं, वन भणी ते चालिउ रे,
सूता नरनइ पुण्यप्रभावि, कलसो माथइ ढालिउं रे. २८
सहू प्रणमइ धनउ नवि मानइं, हस्ती तेहनइ पासि रे,
पुण्यइ पुण्याढराय ए जाणु, वाणी हवी आकाशिइ रे. २९

त्रोटक

वाणी सुणी तव झगडउ भागउ,
शेठ धनावउ आवी पाए लागउ. ३०
टूटुंउ पागलउ पण पुण्यइ आगलउ,
भाविइं करउ भवीक पुण्य उतालउ. ३१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढाल चुथी, फाग

आहे पुण्याढराय नाम थापीय, आपी मागत दान,
उच्छवमुच्छव शुभ परि, नगरि पिसारि प्रधांन. ३२

देस प्रदेसइ यस भणइ, सहु सुणइ पुण्याढराय
विरुआ वइरी वांकडा, आंकडा ति जि लागा पाय. ३३

एक दिन तपन समोसरिया, उत्तरिया वन उद्यांन,
त्रिण न्यानइ करी दीपता, जीपता मोह अज्ञान. ३४

राजा वंदण जावइ ए, आवइ जिहां गुरुराय,
विनय संपूरण साचवी, राजवी प्रणमी पाय. ३५

तिहां कणि गजराय आवइ ए, वंदइ गुरुपाय,
सभा सहू को कौतक, उच्छक जोवा थाय. ३६

नरभव जाणउ दोहलु, न सोहिलु वारंवार,
इम जाणी चित्त आणी अ, प्रांणी धरम करउ सार. ३७

देसन अंति पूछी ए, स्यउ छइ पूरव भव मूझ,
पुण्य पाप फल साथइ ए, ताथिइ सुणि कहूं तुंझ. ३८

पूरविइ लषिमीपुर वर, सुरपुर सम ते होइ,
वांमण राम संग्राम ए, नामि त्रिण मित्र होइ. ३९

त्रिण ते षित्रीपुता ए, रमतां वनमां जाय,
वामणउ मुनीवर देषी अ, हरषीय लागु पाय. ४०

साधुना नेत्रथी पाणी अ, जांणी अ लागूं पूठि,
उचउ जोई निरषइ ए, परषइ उभउ ऊठि. ४१

रषिवर नेत्रइ कांटडउ वांकडउ केम कढाइ,
हू वामण, जती उभुउ थोभ विण किम चढाइ? ४२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राम कहइ मुझ उपरि, शुभ परि चढिनइ भाय,
संग्राम साहइ बांहिइ ए, कंटक तव उद्धराय. ४३

मुनीपरसेवागंधथी वांमणइ कीउ रे संकोच,
पुण्य पाप फल साथइ ए, बांधिउं हवि सिउ सोच ? ४४

साधुजी निरही निरहंकारी अ, सारी करी अ प्रणांम,
वारवार आनंदी अ वंदी अ जावइ ठामि. ४५

वामणउ जातिमदि इम करइ, अम्ह शिरि षित्री जाति,
ते विण कंटउ न काढइ ए, इम चढिउ वदि उनमादि. ४६

राम कहइं हूं पशू थयु, फल भयुं ए मुझ सार,
संग्राम कहइ फल हारिउं, वारउ ए वचन विचार. ४७

संग्राम जीव हूं तपनु, उपनउ हस्ती रांम,
वामण जातिमदि राजन, भाजन सुणि थयुं तांम. ४८

ढाल पांचमी, अढीआ

नयरी यवंती होइ, राय सबाहू जोइ,
छत्रधर तेह तणउं ए, नामि किंनर भणउ ए. ४९

तस घरि हरणी नारि, लषिमी शपन उद्दार,
जातिमद ऊपनु ए, श्रीदत्त संपनु ए. ५०

रूपइ देवकुमार, देषत जन सुषकार,
राजलषिण धरइ ए, सहू को उचरइ ए. ५१

जाणी राय वात, करवा तेहनी घात,
घायक मूकीआ ए, ते पछइ भूंकीआ ए. ५२

नाहसइ श्रीदत्त तांम, सात दिन थाइ जांम,
अणे वनि आवीउं ए, अज्ञात फल षावीउ ए. ५३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूतउ सउडउ ताणि, शरीर संकोच ते जांणि,
हाथीइ राज्य दीउं ए, लोकि जय कीउ ए. ५४

अवध्यन्यानी गजराज, तुझनइ आप्युं राज,
राजन सांभलउ ए, सांहमी ए भलउ ए. ५५

पुण्य पाप फल दोइ, साथइ आव्यां सोइ,
भोगवइ निज कीउं ए, न्यानइ ए लहिउं ए. ५६

दीष्या दीउ गुरुताय, मागइ पुण्याढराय,
गुरु इम कहइ, सही ए, चारित्र तुझ नही ए. ५७

तुझ संकोच शरीर, दीष्या किम देउ वीर,
विहारो किम करइ ए, पग विण किम फरइ ए. ५८

क्रियाकलाप न थाइ, कर विण कसिउं कराय,
रथ नही चक्र विना ए, प्रीति जसी बिमना ए. ५९

संतोष विण नही सुख, जेहवुं भोजन लूख,
लूण विण रसवती ए, क्रिया तसिउं जिती ए. ६०

सरववरति न देवाय, देसवरति लीउ भाय,
मुगति जसिउ सही ए, आ भवि केवल लही ए. ६१

हरष्यु पुण्याढराय, लागु गुरुनइ पाय,
श्रावक व्रत उच्चरइ ए, पाप परांह करि ए. ६२

बीजा बहू लीइ दीष वहइ ते गुरुनी सीष,
विहारक्रम गुरु करइ ए, पुरि पुरि संचरइ ए. ६३

ढाल छठी, इम पूजा ए देसी

पुण्याढराय घरि आवीउ, वरतावि अमारि रे,
पुण्या करणी समाचरइ, सुख विलसि संसारि रे. पुण्या० ६४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साधर्मिक गज लेषवी, बंधन कीधां दूरि रे,
आधोरण उत्तारीआ, वहइ गज लज्या भूरि रे. पुण्या० ६५

नीची द्रष्टि संचरइ, न पीइ अलगण नीर रे,
फासू आहार ते गज करइ, ममता तिजि सिरीर रे. पुण्या० ६६

चतुपरवी गज साचवइ, चउवीहार पच्चखाण रे,
चैत्यपरवाडि करइ परगडी, साथइ संघ जाण रे. पुण्या० ६७

एक दिन गजनइ आकरउ ताव ते चढीउ जांम रे,
नृप तेडावइ वैद्यनइ, करवा ओषध कांम रे. पुण्या० ६८

लषी जणावइ हाथीउ, हवइ थोडुं छि आय रे,
अणसण लेवू मि सही, बीजु नही ऊपाय रे. पुण्या० ६९

पुर बाहिर अणसण करइ, उछव बहुला थाय रे,
राजा आवइ वंदवा, लषि आवइ लषि जाइ रे. पुण्या० ७०

लषि चउरासी जीवनइ, षमावइ गजराय रे,
अरिहंतध्यांन रदइ धरइ, लागइ सहु को पाय रे. पुण्या० ७१

शुभ ध्यानइ सुखर थयु, सोहमकलप मझारि रे,
राजा बहु रुदन करइ, गजना गुण संभारि रे. पुण्या० ७२

गज विण मुझ नवि आवडइ, धर्मबांधव गजराय रे,
गजनी गोठि विना सही, दिन ते दोहिलु जाय रे. पुण्या० ७३

वारी राषइ रायनइ, मंत्रीशर ते जांम रे,
रातइ सुरवर आवीउ, अमृतफल लेई तांम रे. पुण्या० ७४

गजरूपि देषी करी, भूपति हरष न माय रे,
फल तुं षाए राजीआ, काया नीरोग थाय रे. पुण्या० ७५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ए शूभाव हजी नवि गयु, सुणि बंधव दृष्टांत रे,
हंस केसव दोइ बंधुनउ, रयणीभोज्य वृतांत रे. पुण्या० ७६

ढाल सातमी, राग सारिंग महलार
एक दिन सुभद्रा कंतनी रे ए देसी

कुंडनपुर सुरपुर समूं रे, वसइ यशोधर सेठ,
रंभा रमणी तेहनइ रे, रूपवंत मांहिं जेठ. ७७

रे प्राणी रात्रीभोजन वारि, भारे दूषण ए निरधार,
पंच महवय छठूं सार, भासइ आगममां गणधार. रे प्राणी० आंकणी. ७८

पुत्र दोइ सुहामणा रे, हंस केसब इति नाम,
ए दिन वनमांहि गया रे, वंदइ धर्मघोप ताम. रे प्राणी० ७९

देशनामां साधुजी कहइ रे, रात्रीभोजन पाप,
राति रांधी रात्यइ ज्यमइ रे, भवि भवि तस संताप. रे प्राणी० ८०

राति रांधी दीशइ जिमइ रे, ते करइ पापनु पोष,
दिवसि रांधी राति जिमि रे, तेहनइ गिरुउ दोप. रे प्राणी० ८१

दिवशइ नीपाई दीशइ वावरइ रे, टालइ घडी दोइ दोय,
सास्वतां सुख ते पामशइ रे, इह लोकिइं परलोय. रे प्राणी० ८२

साधु मुखइ नियम उचरइ रे, हंस केसव दोइ भाय,
रात्रीभोजन नवि करां रे, जिहां शकति अह्म काय रे. प्राणी० ८३

आहा सुहं देवाणुप्पिया रे, वंदी घरि ते जाय,
व्याल मागे दीह छतां रे, नापइ तेहनी माय. रे प्राणी० ८४

चालि कुलि नही आपणइ रे, हठि चढिउ तस ताय,
भोजन कुमरनि नवि दीइ रे, दिवस पांच इम जाय. रे प्राणी० ८५

छठइ घस्त कुटंब मिली रे, भाषइ सुणउ कुमार,
कचपत्र सी, राति जिमउं रे, कां करउ नवु आचार. रे प्राणी० ८६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हा भणी हंसइ तदा रे, केसव कहइ सुणु वात,
रात्रिभोजन [न]वि करु रे, जो थाइ देहपात. रे प्राणी० ८७

माय ताय कुटंब सहु रे, दूहवाणूं अपार,
कुमर तिहांथी नीसरिउं रे, धिन केसव कुमार. रे प्राणी० ८८

पढम कप्पि इणइ समि रे, भाषइ इंद्र सुजाण,
अहो दृढता केशव तणी रे, केतुं करु वषाण. रे प्राणी० ८९

च्यार प्रकारना देवता रे, चालवी न सकइ कोइ,
सभा सहू हा जी करइ रे, परसंसइ सहू लोय. रे प्राणी० ९०

वन्ही नामइ एक देवता रे, धरतु मनि संदेह,
मानव लोकिइ आवीउ रे, परीक्षा कारणि तेह. रे प्राणी० ९१

ढाल आठमी, राग रामेरी

भूषिउ ते तरसिउ दिन सातमइं, मध्यराति जाइ जांम रे,
देवल एक ते पेपीउं, बहु मनुष्यनु विश्रांम रे. ९२

तेजपुंज विराजितं, दीपइ ते झाकझमाल रे,
मुखभक्षका नइ रसवती, जिमइ ते बाल गोपाल रे. ९३

तेहमां जे महार्धिका, तेम पंथि ऊभा जोय रे,
एहवइ केसव आवीउ, बहू मांनि तेडी सोय रे. ९४

भुवनमाहइ जई कहि, भलइ आव्या पूज्य सुपात्र रे,
भोजन करउ आशा फली, अह्म अछइ जक्षनी जात्र रे. ९५

च्यार यांम दवसइ व्रत करीइ, राति ते करी आहार रे,
जक्षराज तुसइ सर्वदा, ए अछइ अह्म आचार रे. ९६

केशव कहइ सुणु बांधवा, राति जिमि नही धर्म रे,
मार्कंडपुराणि इम कहिउं, निशि भोजनइ बहु कर्म रे. ९७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रजनीइ जल रुधिर सरिखूं, मांस समूं अन्न ते जोय रे,
विबुध जन किम वावरइ, जिहां पाप एवडूं होइ रे. ९८

पिपीलिकाथी बुधि नासइ, यूकाथी ज जलोदर थाइ रे,
विमन थाइ मक्षकाथी, कोलीइ कोढ कहाय रे. ९९

कंटकिइ तालू वीधीइ, स्वरभंग वालथी होय रे,
इत्यादि बहु युक्ति दाषी, हराव्या ते सोय रे. १००

यतः, अस्तं गते दिवानाथे आपो रुधिरमुच्यते ।
अन्नं मांससमं प्रोक्तं मार्कंडेयमहर्षिणा ॥ १०१ ॥

मेधां पिपीलिका हंति यूका कुर्यात् जलोदरं ।
कुरुते मक्षिका वान्तिं कुष्ठरोगं च कूलकः ॥ १०२ ॥

कंटको दारुषंडं च वितनोति गलव्यथां ।
व्यंजनांतर्निपतितस्तालुं विध्यति वृश्चिकः ॥ १०३ ॥

विलगनश्च गले वालः स्वरभंगाय जायते ।
इत्यादयो दृष्टिदोषाः सर्वेषां निशि भोजने ॥ १०४ ॥

मोगरि लेई जक्ष भाषइ, अह्म नंदइ मूढ गमार रे,
भोजन नही करइ कहण एहनइ, गुरु हणू तुझ निरधार रे. १०५

किंकरइ पांहइ अणावीआ, धर्मघोष जे अणगार रे,
गुरु कहइ अम्ह मारइ सही, वच्छ करउ राति आहार रे. १०६

गुरु कारणि व्रत लोपीइ, ए कहिउ छि आचार रे,
कुंअर चिंतइं नही ते सद्गुरु, जे दोष दाषइ लगार रे. १०७

पछइ मोगरी लेई गुरु हणइ, वली वदइ एहवी वाणि रे,
गुरु जीवाडूं, रधि आपू, जउ वचन करइ प्रमाण रे. १०८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जीवतिव्य रधि जउ तूं दीइ, तुं दुषी न को संसारि रे,
पछइ कोपीउ कहइ तुंझ मारुं, घणउं करी कुमार रे. १०९

केसव कहइ सुणि देवता, मरवूं अछइ एक वार रे,
नियम न भाजूं माहरउ, व्रतिभंगि हुइ वार वार रे. ११०

माया संहरइ रलीआती थई, सूआरि वारु ठारि रे,
दिवस विकुरवी कहइ, उठु भोजन करउ कुमार रे. १११

निशा लषिण कुमर जाणइ, नयनइ ते नीदनउ व्याप रे,
माया म करउ देवजी, रजनी जिमइ बहु पाप रे. ११२

अमर तव प्रगट थई, करइ कुसुमवृष्टि उदार रे,
इंद्रइ प्रसंस्यउ जेहवउ, तेहवु धिन कुमार रे. ११३

ताहरा पगनइ धोअणइ, सरव रोग जासइ दूरि रे,
वर दीउ प्रभाति राज होसइ, मूकी गयु आनंदपूर रे. ११४

साकेतपुर नइ राय धनंजय, प्रभाति देषइ आशि रे,
वनमांहि वंदि साधु केशव, बिहु राजा पाशि रे. ११५

राय जंपइ गुरु प्रति, प्रभु ! चिंता हूंती एक रे,
पुत्र विना राज्य ते वेण दीइ, किम दीप्या लेऊं छेक रे ? ११६

आज राति देव आवी, कही गयु एहवी वात रे,
केसवनइ तुं राज्य देजे, गुरु कहु ते कुण विख्यात रे. ११७

गुरु कहि तुझ पासि बिठउ, केसव ए गुणगेह रे,
पूरव वात सघली कही, राय चमकीउ धरि नेह रे. ११८

केसव कुमरनइ राज्य आपी दीषा लीइ गुरु पासि रे,
केसवराय ते राज्य पालइ सुख भोगवी आवासि रे. ११९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढाल नउमी, राग आसाउरी, सब सूत्रि दीसइ ए देसी

एक दिन उंचइ मालीइ रे बिटु केसवराय,
नगर निहालइ गोषथी रे, नवि दीठउ यशोधर ताय. १२०

संभलि भविक जना ! व्रत पालइ जयजयकार,
नाहनूं मोटउं व्रत ते सार, सुणि हंस केसव अधिकार.
करउ रात्रीभोजन परिहार. संभलि० आंकणी. १२१

राजा हेठउ उत्तरइ रे, आवी लागइ पाय,
आलिंगि रोमंचतु रे, मंदिर तेडी जाय. संभलि० १२२

एकाकी किम आवीआ रे, तातजी कीहइ कांमि,
आ राज सरव ते तुम्ह तणुं रे, हूं सेवक तुम्हइ सांमि. संभलि० १२३

सुत रधि देषी हरषीउ, बोलि यशोधर वांणि,
तुझइ गया पछी हंसनइ रे, रात्रिभोजन दीउ पराणि. संभलि० १२४

उरग गरलथी मूरछा रे, दीठउ दीवइ तेह,
मंत्रऊपचार घणा कीआ रे, पण विषनउ नाव्यउ छेह. संभलि० १२५

गारडी कहइ माशि मरइ रे, एहनउ नही उपचार,
रोमरोम छिद्र ऊपना रे, दिन पांच थया जिवारि. संभलि० १२६

तुझ जोवा हूं नीसरयो रे, आज माशि मलिउ तुं वीर,
सु जोअण अहीथी अछइ रे, कुंडनपुर ते धीर. संभलि० १२७

देव सानिधि तव जई करी रे, पग धोई छांटि नीर,
सर्पविष विलहि गयूं रे, थयूं नवपल्लव शरीर. सांभलि० १२८

कुटुंब सरव श्रावक थयूं रे, हईडइ हरिष अपार,
पछइ साकेतपुर ते आवीआ रे, वरत्यो जयजयकार. संभलि० १२९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राज रधि सुष भोगवी रे, लीधु संजिम भारं,
केसव मुनि मुगति गया रे, सेठ कल्याणकार. संभलि० १३०

दूहा

फल देई सुरवर गयु, दिवसि कीधु आहार,
संकोच टलीउ देहनउ, फल मांहिमा भंडार. १३१

राजरमणि सुख भोगवइ, चिंतइ मनह मझारि,
छंडी हस्तीइ देह जिहां, प्रासाद करूं तिहां सार. १३२

सुखभरि वरस बहु वउलीआं, करी न सक्यउ प्रासाद,
रवाडी गयि सांभरिउं, मनसिउं धरइ विषाद. १३३

हवइ प्रासाद करावीनइ, जुहारु जिनवर देव,
तु मइ आहार ज आहारवउं, अभिग्रह ग्रहीउ हेव. १३४

प्रासाद करवा मांडीउं, आठ हवा उपवास,
राजा देह निकलामीउ, पण नवि छंडइ साहस. १३५

दंती देविइ उद्धारिउं, रयणा कंचन प्रासाद,
थंभा चउकी दीपती, रणझणइ घंटानाद. १३६

रीषभदेव अवलोकंता, पुण्याढराय उहल्लास,
अंतगड केवल लही करी, पुहुता शिवपुर वास. १३७

विमलबोध मंत्री कहइ, गुरुमुखि सुणीउ एह,
पुण्य प्रमाण ए जाणज्यो, म धरउ किंपी संदेह. १३८

ढाल दसमी, राग मल्हार, धन्य ते निज बंधुनइ ए देसी

विमलबोध मंत्रीथी एहवी कथा सुणी रे,
रणझणिउ राजा चित्त, सभा पणि रणझणी रे. १३९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समझिया जाण सुजाण, केई बुझिया गुणी रे,
धिन धिन विमल प्रधांन, जेणे वार्त्ता भणी रे. १४०

एक दिन राय सभामां बिठउ शोभतु रे,
विमलबोध मंत्रीश व्रतफल पूछ्तु रे. १४१

साधुना व्रत कहइ मुझ, श्रावक व्रत कहउं रे,
तेहना फलाफल जेह, कहउ जेह वालहउं रे. १४२

तेहनां अरथ विचार, किम कहउं नृप सुणु रे,
पंगू पामइ पार के, सारी दनी तणउ रे. १४३

पण कंटकउं जेणइ उद्धरिउ, तेहनइ फल असिउं रे,
सूधा व्रत जे पालशइ, तेहनूं कहइवूं किसिउं रे. १४४

इणि अवसरि उद्योत, नगरमां विस्तरइ रे,
राजा मनि आश्चर्य, लोका हरिष धरइ रे. १४५

दीइ वधामणी तांम कि वनपालक वली रे,
श्रीवज्रनाभ मुणिंद, आव्या केवली रे. १४६

वनपालिक देई दांन, आवय वंदवा रे,
साथइ विमल प्रधांन, पाप निकंदवा रे. १४७

वंदी केवली पाय, भूप बइठउ वली रे,
[देव देवीना थोक, परिषद तिहां मिली रे.] * १४८

बारमा जिननउ जीव, नृप जाणी गुणी रे,
जीवाजीव विचार कहइ, तव जगधणी रे. १४९

---

* खंभातनी प्रतमां आ पंक्ति नथी; तेथी प्राच्य विद्यामन्दिरनी प्रतमांथी लईं ए पंक्ति मोटा कौंसमां मूकी छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुषि मनि गोठि आदिइं, सरव प्रकासीउं रे,
हां रे राजा रंज्यउ चीत, वइरागि वासिउ रे. १५०

दान शीअल तप भाव गुरु देशन करइ रे,
तेहांना जे दृष्टांत, सहू ते उचरइ रे. १५१

सुतनइ देई राज्य, राय संजिम ग्रहइ रे,
पद्मोत्तर रषिराय गुरु शिष्या वहइ रे. १५२

भणीआ अंग अगीआर, तप श्रुत आगला रे,
पंचम सुमति प्रतिपाल, सदाचारी भला रे. १५३

थानक सेवी वीस तीर्थंपद बांधीउं रे,
मासी अणसण अंते, करी काज सांधीऊ रे. १५४

प्राणत कल्पि मझारि, चंवी थया देवता रे,
वीस सागर तिहां आय, बहु सुर सेवता रे. १५५

बीजउ भव ते एह, हवइ त्रीजउ कहइ रे,
ऋधिवृधि कल्याण, सेवक जिम लहइ रे. १५६

इति श्रीवासपूज्य मनोरमे फागे प्रथमोल्लास संपूर्णः

ढाल ११मी, राग गुडी

जंबूदीप मझारि दक्षणभरत भलउ री,
अंग सुचंग सुदेस, जाणि कि भूमितिलु री. १५७

चंपानयरी सार, चांपां वनि करी सोहइ,
गढ मढ पोलि प्राकार, नरनारी मन मोहइ. १५८

श्रीवासपूज्य नरेंद्र, राजा राज्य करइ री,
जयाराणी तास, कुल मारगे धरइ री. १५९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जेठ सुदि नुमि के दिन, राति बहवुर समि री,
चवी पद्मोत्तर देव, जया कूषि रमइ री. १६०

हस्ती वृषभ उर सीह, लक्ष्मी फूलकी माला,
सोम सूर धज कुंभ, सरोवर समुद्र विशाला. १६१

विमान रत्ननुं पुंज, वली ज्वलयोति अतागिइं,
शपनां दशनइ च्यार, देपी राणी जागइ. १६२

पूछइ प्रिय प्रत्यइ वात, नृप कहइ पुत्र होशइ री,
रीधिवृधि आनंद, सुतथी शख थशइ री. १६३

कुलमंडण, कुलकेतु, कुलदीपक कुलचंदउ,
संभलि भूपतिवाणि, राणी धरइ आनंदउ. १६४

शपनपाठिक प्रभाते तेडी पूंछइ राय,
ते कहि त्रीलोकीनाथ अथवा चक्री थाय. १६५

राजा आपइ दांन, पाठिकवर जाय,
जया पालइ गरभ, उलट अंगि न माय. १६६

फागुण वदि चउदसि, मध्य निसाइ जायु,
शुभ लगनि शुभ वार, शुभ योगइ सुत आयु. १६७

छप्पन्न कुमरी तांम उच्छव आवी करइ री,
नहवरावइं जिनराय इंदा मेरुशिरि री. १६८

पूजी प्रणमी पाय, माता पासइ मूकइं,
नंदीशर करी यात्रा, निज थानकि जई ढूंकइ. १६९

उच्छव कीनउ राय, जव वधांमणी पांमी,
वासपूज्य दीउ नांम, वाधि त्रिभोवनसांमी. १७०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढाल १२मी, राग सारिंग, एक दिन अचिरा० ए देशी

जयाराणी पुत रमांडती, हूलरावइ सीस नमाडती,
थेई थेई करइ ताली पाडती, नवी नवी रामति देषाडती. १७१
मेरउ लालमणी रे लालमणी, मेरउ लालमणी ते जगतधणी,
मुझ आशा लालमणी अ तणी, मेरु लालमणी सवथी अ गुणी.
[मेरउ] लाल० आंचकी. १७२
लीनी लाली लाल गुलाल तणी, मानूं साचूं ते अविरंग भणी,
दीसि छि तिहां सुगंध घणी, जेणइ लाली आपी आपणी. मेरउ० १७३
पछइ गंधहीन जासू थयां, लाली देवा वेला नासी गया,
पुत कांमइं, कणयर नावीआं, तेणइ शुभ शुकनइं न बोलावीआं. मेरउ० १७४
चोल मजीठ नइ कसूंभडउ, तेहनइ शिर वीचइ हूं बडउ,
इंद्र साथइ मणि पाय पडी, तेणइ लालमणी माथइं चढी. मेरउ० १७५
पुत जनमि घंटा रणझणी, पुत जनमि घरि लषिमी घणी,
पुत जनमि पुण मुझनि थुणी, पुत जनमि आव्या दिनमणी. मेरउ० १७६
प्रभु वाधइ सुरतुरनी परि, मायताय मनसिउं मोद धरइ,
उच्छव कीनउ राय शुभ परि, प्रभु पाठशाला भणी सांचरइ. मेरउ० १७७
सजनवर्ग सहु तिहां मिलि, इंद्र आवइ न्यान तणइ बलि,
मघवाइ तिहां इम आयसिउं, प्रभु त्रिण न्यान्यी, भणवूं कसिउं. मेरउ० १७८
पंडित सतकारिउ शुभ परि, पछइ आविउं सहू निज निज घरिइं,
मायताय विमासि इम कहइ, पुत परणउ जिम घरसूत रहइ. मेरउ० १७९
प्रभु परणउ पदमावती गुणी, पुत्री ते राय वत्सल तणी,
प्रभु कुमरपणइ सुख भोगवि, वरस लाष अढार सुणु हवइ. मेरउ० १८०
वसंतऊछव जगतधणी, प्रतिबूझस्यइ कुमरपणइ सुगुणी,
प्रभु स्तवतइ सुख संपद सदा, सेवक जननइ कल्याण मुदा. मेरउ० १८१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढाल १३मी, राग केदारु टोडी

एणइ अवसरि आवीउ रे, मनोहर मास वसंत,
सिसर गयु दुख देई करी रे, ठारवा जे जगि संत. १८२

मनमोहन मोरे जगपती हो, श्रीवासपूज्यराय मलार,
जयाराणी कुषि [अ]वतार, तेरी सूरतिकी वलीहार,
मेरी वंदन वारंवार. मन० आंकणी. १८३

अंब अशोक नइ एलची रे, अषोड अंजीर अनेक,
अगर तगर वली आंमलां रे, अंकूल फलीउ ववेक. मन० १८४

करणी केलि नइ करमदां रे, षजूरी षयर द्राष,
अक्ष पलक्ष ते दीपता रे, शोभता वृक्षना लाष. मन० १८५

श्रीवृक्ष नीग्रोध पचूमंदो रे, राजा दाव रसाल,
कपीत्थ जंबू जूजूआ रे, मउरीआ केता विशाल. मन० १८६

डाडिमडी डोड मिली रे, दीसइ केसू रंग,
भमरउ आवइ बिसवा रे, कंपावइ वेलडी अंग. मन० १८७

बीली बदांम बीजोरडी रे, विहडां ताल तमाल,
नालीइरी पुगीफली रे, सुंदरहं ताल डाल. मन० १८८

साग सीसव सरघू घणा रे, बोर कदंब नारंग,
नाग पुनाग रतांजणी रे, दीसता सार लिवंग. मन० १८९

फणस फल्या रलीआमणां रे, रूडा चारुली झाड,
भीलातक हरीतकी रे, मीठडा सेलडीवाड. मन० १९०

माधवी नागरवेलिना रे, मंडप दीसइ चंग,
फूलवाडी फूलि भरी रे, दीपइ नवनव रंग. मन० १९१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दमणउ म्यरुउ मालती रे, जाइ जूही गलाल,
वालु वेलि सुहामणी रे, कणयर जासू ते लाल. मन० १९२

मोगर मचकंद केतकी रे, चांपां फूल अमूल,
वसंत वकुल वपउरीउ रे, सेवंत्री कुण करइ मूल. मन० १९३

वनपालिक वधांमणी रे, दीनी वासपूज्य राय,
वासपूज्यनइ मोकलि रे, मित्र साथि प्रभु जाय. मन० १९४

ढाल १४मी, सेहरानी ए देसी

लाला लालमणी क्रीडा भणी, वनमां जाइ जांम,
लाला साथइ मित्र सुहामणा पिहरइ वेष अभिरांम.
लाला लालमणी क्रीडा भणी० आंकणी. १९५

लाला पंचवरण वागा भला, मांहि नवेरी भाति,
लाला मसग ति साथि सीवीआ, पिहरि आणी षांति. लाला० १९६

लाला धोला सालूं सांसटां, अधोत्तर अटाण,
षासा सेला महिमही, भइरव भारे जांणि. लाला० १९७

लाला रातु रंग कसूभनु, वली चोल मजीठां जेह,
जेहनइ जेहवुं शोभीइ, पिहरइ तेहवुं तेह. लाला० १९८

लालां पीलां पीतांबर सावटूं, पीली पामरी जांणि,
लाला केसरीआ वागा सही, केई पिहिरि उलट आंणि. लाला० १९९

लालां नीलां तास ता तगतगइ, पाडी सोनारी छाप,
सूडा षंषी शोभता, केई पइहरइ देई थाप. लाला० २००

लाला चूआ चंदन महिमहि, माथइ लायां मोगरेल,
केवडेल चांपेलां सही, भलउ, गलाल करउ रंगरेल. लाला० २०१

लाला अगरचंदन तन लीपीआं, अरघज लाया सार,
लाल अबीर गलाल उडावता, सारी सकल शणगार. लाला० २०२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लाला छयल छबीला नीसरिया, प्रभुजी साथि कुमार,
लाला एक पाला एक पालषी, एक घोडइ असवार. लाला० २०३

लाला एक नर चक्कडोलिइं चढिया, एक रथि बेठा जाय,
एक मयगल मोटइ चढिया, रमवा उच्छक थाय. लाला० २०४

लाला ताल मृदंग वजाडता, एक वजाडता चंग,
वीणा शरणाई वायता, षेलइ धरता रंग. लाला० २०५

लाला वनमाहइ टोलइ मिली, षेलइ बाल गोपाल,
निज परिवारि परवरया, करता रंग रशाल. लाला० २०६

ढाल १५मी, देसी धूआरि सुंदर नयरी वणारसी ए देसी

पदमावती प्रभुनी प्रिया, रंगि राती लाल,
मेली सहीअर सार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २०७

वनमांहि क्रीडा करइ रंगि राती लाल,
नवनवा रंगप्रकार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २०८

साथइ हस्तिनी चित्रनी, रंगि राती लाल,
पदमिनी चतुरा सुजाण, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २०९

शंषिनी सहुइ परिहरी, रंगि राती लाल,
सुणीइ गुणागुण ठाण, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१०

हस्तिनी पीनस्तनी, रंगि राती गलाल,
झाझउ रूडउ आहार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २११

आठ पुहुर मद घूमती, रंगि राती लाल,
शोभि करि शणगार, [करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल.] * २१२

* 'करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल' ए पंक्तिना आ शब्द, लहियानी भूलथी रही गयेला होवाथी कौंसमां मूक्या छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चित्रनी चतुरा पातली, रंगि राती लाल,
अल्प ज वारु आहार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१३

विण शणगारि सोहामणी, रंगि राती लाल,
थोडी नीद्रा सार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१४

पोयण फरस्यइ पदमनी, रंगि राती लाल,
अल्प आहार सुवचार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१५

पद्मगंधा सुशोभना, रंगि राती लाल,
भमरा करइ गुंजार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१६

लषलषती लुडिणि जिसी, रंगि राती लाल,
षाता नही सक्कार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१७

शिषनीनइ शणगार कसिउ, रंगि राती लाल,
परणइ तेह गमार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१८

बहुला भेद छइ एहना, रंगि राती लाल,
कहितां नाठि मरम, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २१९

जे जेहवां समाचरइं, रंगि राती लाल,
ते तेहवा पामइ करम, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२०

एक पटुली पिहरणि, रंगि राती लाल,
एक यादर एक चीर, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२१

षटदश भूषण एक सजइ, रंगि राती लाल,
रणझण करइ मंजीर, करइ क्रीड़ा हो उडाडइ गलाल. २२२

कोयल कंठि जीपती, रंगि राती लाल,
मृगनयणइ मनु हार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चित्रालंकी गजगति, रंगि राती लाल,
नासा दीपकधार, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२४

चंद्रवदनी सुलोचना, रंगि राती लाल,
जंघा कदलीकंद, करि क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२५

रूपि रति हरावती, रंगि राती लाल,
जिह्वा अमीनउ कंद, करि क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२६

एहवी सखी साथइ करी, रंगि राती लाल,
वनमां षेलइ फाग, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२७

कोकिलकंठि गायती, [रंगि राती लाल,] *
आलावइं सघला राग, करइ क्रीडा हो उडाडइ गलाल. २२८

ढाल १६मी, रंगीलें जिनपति ए॰देशी

वसंत उच्छव वनमां करइ सिलीआ लोकरा लाष, रंगीले प्राणीआ,
इंदोला क्रीडा करइ, केई बिठा मंडप द्राष, रंगीले प्राणीआ. २२९

षडोपलीमां केई झीली, छांटइ मांहोमांहि नीर, रंगी॰
कांडां मेहलामणी रमि, केई महा भडवीर. रंगी॰ २३०

केसुकेसरजल भरी, केइ पचरकी छांटंति, रंगी॰
अबीर गलाल एकठां करी, केइ मुखि नाषंति. रंगी॰ २३१

टोडर नवसर केई गूंथी निज रामा कंठि ठवंति, रंगी॰
निज कांतां देषी केई कामवचन चवंति. रंगी॰ २३२

केई कामिनी निज कंतनइ पुष्फकंदुक मारंति, रंगी॰
केई हसि केई विलगइ, कोई लाज धरी वारंति. रंगी॰ २३३

---

* २२८मी कडीनी पहेली पंक्तिमां 'रंगि राती लाल' ए शब्द लहियानी भूलथी रही गयेला जणाय छे; ते शब्द कौंसमां दर्शाव्या छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कोई फाग गाइ सुहामणा, कोई विरही गाइ गीत, रंगी०
कोई समारइ सेहरो, सहीअर आणी चींति. रंगी० २३४

कोई रामा निज कंतनउ, पालवि ऊभी सोहाय, रंगी०
भांमिनी भांभरभोलवी, प्रीउडउ तव उजाय. रंगी० २३५

कोई भाषइ, कोई लषइ, सूषडी षाइ पीउ साथि, रंगी०
जेठी मल्या मालापाढइ, कोई जूइ बाथोबाथि. रंगी० २३६

कोयल कुहु कूहू कही करइ, कही भमर करइ गुंजार, रंगी०
हंस चकोर चकवा चकवी, कही केकी करइ केंगार. [रंगी०] २३७

कही मेष कही महिष लडइ, कही मयगल मयमत्त, रंगी०
निज कंथो हाथइ ग्रही चंद्रवदनी जोवा पत्त. रंगी० २३८

मित्र साथि बइठा निरषइ, श्रीवासपूज्य ते ताम, रंगी०
चिंति मोहविडंबना, अहो संसारी काम. रंगी० २३९

ढाल १७मी, अढीआनी

ए संसार असार, मुझइ लोक अपार,
जिनधरम नादरइ ए, चउरासी लषे फरि ए. २४०

निगोद अनादि अनंत, तिहां वसिउं काल अनंत,
अनंत भव करिया ए, तुह नवि निस्तरिया ए. २४१

पुढवी अप तेउ काय, वणसइ त्रस कहाय,
काल असंख भम्यु ए, आलिइ भवि गमिउ ए. २४२

षणण पीयण बहु वार, ताडण धमण अपार,
छेदन भेदना ए, सही बहु वेदना ए. २४३

बींदी चोरंदी दूष, नही तिहां लांबु सुख,
अन्योन्य भषइ ए, काल जाय दूषि ए. २४४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जलथलषेचरमहि पंडीउ परनी बाहिई,
तिहां जें दूष सहिया ए, नवि जाय कहिया ए. २४५

नारकीपंणइ दूष जेह, कोडि पूरव लगइ तेह,
नवि जाइ भण्या ए, घटिका बि तणा ए. २४६

मणूजनमि करमबंधि, कही बहिरो कही अंध,
टूटउ पांगुलिउ ए, मूगउ रांघलु ए. २४७

घणी वार थयु देव, करतु परसुरसेव,
आभी उगीपणइ ए, कलमषी दुख घणइं ए. २४८

च्यारि गति मझारि, भमीउ वारंवार,
मानव भव हारीउ ए, विषयसुष धारीउं ए. २४९

हजी तेह ज ढाल, सम बाल गोपाल,
नरभव दोहिलु ए, धरम करि सोहिलु ए. २५०

संभलि वासपूज्य वाणि, समइया मित्र सुजाण,
उठइ पडवंडा ए, आवी पाए पडिया ए. २५१

प्रभुजी लेवा दीष, मायताय मागइ सीष,
ते कहइ वच्छ सुणु ए, आदरउ जे मुणु ए. २५२

जिनदीष्या धरइ भाव, तव लोकांतिक आवि,
बूझि भुवनधणी ए, जगजीव हित भणी ए. २५३

ढाल १८ मी, फागनी

जिन दीष्या चित्त जाणी अ, वाणी वहइ सुरराय,
त्रिणसय अठिआसी कोडी अ, जोडीइ इसी लषि थाय. २५४

सोविन मुंकउं जिनघरि, सुरवर तिम धारइ जांण,
एक कोडि आठ लाष आपइ ए, दिन दिन प्रभु दांन. २५५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शत्रुकार ते मंडइ, छंडइ ए बहु भत्तपाण,
श्रीवासपूज्य ते नरवर, जिनवर दीष्या जांणि. २५६

चुसठे इंद्र आवि ए, भाविइं जिनवर पासि,
लावइ बहु परि ओषधी, ऊदधिनीर उहलासि. २५७

आठ सहिस नि चउसठि, हठतुठ कलसा करंति,
बिइसारी सिंहासनि, वासनि शुभ नहवंति. २५८

इणी परि करि ते उच्छव, मुच्छव श्रीजिनराय,
सवि शणगार करावी अ, आवी लागा पाय. २५९

सहस ऊपाडि पालषी, सवालाषी अग्निप्रभा नाम,
फागुण वदि अमावास्या ए, दिवसि ए प्रभु अभिरांम. २६०

जयजय नंदा भद्दा ए सुरिंदा करतां जाइ,
चतुरंग सेना साथि ए, वाधि वनमां आय. २६१

छसय मित्र साथि करी, मनि धरी सिद्धनूं ध्यांन,
चारित्र लीइ जगगुरु, पामइ चउथूं न्यान. २६२

महापुरि सुरंद राजा घरि, चउथ तपि पारणि जाइ,
चामर छत्र निवारी अ, राय सुनंदो ध्याय. २६३

धन्य माहारुं आगणूं, धिन्य माहारु जन्म,
परमाअंनि प्रतिलाभइं ए, आणि हरषि ते परम. २६४

पंच दिव हुइ तिहांकणि, वसुधारा १ अहोदान २,
चेलुखेप ३ देवदूदुंभि ४, वरसइ कुसुम प्रधांन ५. २६५

धिन धिन ते नर नारी अ, प्रतिलाभइ जिनराय,
धिन सुनंदो राय जे एक भविइ सीध थाय. २६६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निरमम निरहंकारी अ, विचरइ देस विदेस,
धिन्य ते पुर पाटण जिहां, प्रभु करइ प्रवेश. २६७

एक दिन चंपावन माहइ, प्रभु ध्याइ चोथूं ध्यांन,
माघ सुदि बीजिइ पामइ ए, चोथि केवल न्यान. २६८

ढाल १९मी, सरसति अमृत ए देसी

पंचम न्यान उपनुं जांणी,
सुरवर कोडि आवइ ऊजाणी,
चित्तमाहि हरिष ते आंणी. २६९

आवइ भुवनपती सवि इंदा,
विंतरवर बत्तीस सुरिंदा,
आवि दोइ रविचंदा. २७०

बार देव लोकना दस इंद जाणउ,
शरवालि चोसट्टि वपाणउ,
वंदि त्रिभोवनभाणउं. २७१

च्यार निकाय तणी जे देवी,
बत्रीस गुणी देवी ते लेवी,
उघडिया वंदेवी. २७२

एक सुरी आवइ थुणंती,
एक आवइ गुणग्राम गुणंती,
बिरुदावली भणंती. २७३

एक जाय, एक वाय, गाय,
कर जोडी एक लागइ पाय,
एक जयजय शब्द सुणाइ. २७४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रूप सोवन रयणमय सार,
रचीआ रुडिइं त्रणि प्राकार,
मंडइ सिंहासन च्यार. २७५

बिहु रूपिइ जिण करि वषाण,
त्रि परी भाषइ समझइ जांण,
गणधर छासठि मांण. २७६

सुभम आदिइं गणधर जाणउ,
धरणी परमा साहुणि वषाणउ,
सुजस श्रावक मनि आणउ. २७७

जननी जया श्राविका कहइ,
संघ चतुर्विध एणी परि लहीइ,
जिण आण सद्दहीइ. २७८

चउविह संघपइ जिनराज,
भविक जीधना सारइ काज,
भवोदधि तरवा पाज. २७९

चउत्रीस अतिशयशोभित सांमी,
देसविदेस विचरइ गयगांमी,
पाय प्रणमूं शिर नामी. २८०

इणि समि नयरी द्वारामती,
राज्य करइ द्विपुष्ट त्रिषंडपती,
आणा जास दीपंती. २८१

वासपूज्य जिन विहार करंत,
द्वारिकां नगरीइ संपत्त,
ते वनमां उत्तरंत. २८२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वंनपालिक जाणी ते वात,
हरि प्रति वधामणी खात,
साढीवार कोडि रुप वात. २८३

बीजी परि तस पातग चूरी,
याचक जन मन आशा पूरी,
वंदनि मति संपूरी. २८४

चतुरंग सेनाइ परिवरीउ,
विजय बलदेव साथइ संचरीउ,
लालमणी पद अनुसरीउ. २८५

ढाल २०मी, मन भमरा ए देसी

बारइ परिषद आगलिइं, चित्तहंसा रे,
जिनवर भाषइ धरम, लाल चित्तहंसा रे, २८६

दशे दृष्टांति दोहिलु, चित्तहंसा रे,
लाधु माणस जंम, लाल चित्तहंसा रे. २८७

ते पांमी नवि हारीइ, चित्तहंसा रे,
जु हुइ हैडइ सान, लाल चित्तहंसा रे. २८८

कांम क्रोध लोभ परिहरउ, चित्तहंसा रे,
माया नइ वली मांन, लाल चित्तहंसा रे. २८९

पांचइ इंद्री संवरउ, चित्तहंसा रे,
वरजउ विषयविकार, लाल चित्तहंसा रे. २९०

पांच प्रमाद ते मूंकीइं, चित्तहंसा रे,
पांमी नरभव सार, लाला चित्तहंसा रे. २९१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निरय निगोद दूष ति सहिया, चित्तहंसा रे,
तउ हजी नावइ लाज, लाला चित्तहंसा रे. २९२

वली धन घरणी धंधइ पडिउं, चित्तहंसा रे,
इम किम सरशइ काज, लाल चित्तहंसा रे. २९३

दान सील तप भावना, चित्तहंसा रे,
धरमना च्यार प्रकार, लाल चित्तहंसा रे. २९४

यथा शकतइ कीजीइ, चित्तहंसा रे,
श्रावक धर्माचार, लाल चित्तहंसा रे. २९५

वरति विना वारु नही, चित्तहंसा रे,
अविरती दुरगति जाइ, लाल चित्तहंसा रे. २९६

श्रावक यतिधरम आदरि, चित्तहंसा रे,
शिवसुख संपद थाइ, लाल चित्तहंसा रे. २९७

केई भद्रक बूझिया, चित्तहंसा रे,
केई लीइ संजिम भार, लाल चित्तहंसा रे. २९८

केई समकित ऊचरइ, चित्तहंसा रे,
केई लीइ व्रत बार, लाल चित्तहंसा रे. २९९

केई अभिषनी आषडी, चित्तहंसा रे,
वरजइ अनंत काय, लाल चित्तहंसा रे. ३००

रात्रिभोजन परिहरइ, चित्तहंसा रे,
कोई नीलवणि नवि षाय, लाल चित्तहंसा रे. ३०१

चउथूं व्रत केई आदरइ, चित्तहंसा रे,
अणगल पांणी पच्चरवाण, लाल चित्तहंसा रे. ३०२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सात विसन केई परिहरइ, चित्तहंसा रे,
भारे दूषण जाणि, लाल चित्तहंसा रे. ३०३

दो पुठी समकित धरइ, चित्तहंसा रे,
तिम विजयो बलदेव, लाल चित्तहंसा रे. ३०४

लालमणी वंदी वलइ, चित्तहंसा रे,
वली आवयो हेव हेव, चित्तहंसा रे. ३०५

त्रीजइ देवलोकि गयां, चित्तहंसा रे,
जिनजीनां मायताय, लाल चित्तहंसा रे. ३०६

मघवा सुत प्रभुजी तणउ, चित्तहंसा रे,
पालइ राज्य सुभाय, लाल चित्तहंसा रे. ३०७

लालमणी भक्ति नरवरो चित्तहंसा रे,
द्विपुष्ट हरि सुववेक, लाल चित्तहंसा. ३०८

पुनः पुनः द्वारिकां आवतइ, चित्तहंसा रे,
तारिया जीव अनेक, लाल चित्तहंसा रे. ३०९

लाष अढार कुमरपणइ, चित्तहंसा रे,
पछइ दीष्या लीइ जगताय, लाल चित्तहंसा रे. ३१०

चउपन्न लक्ष, * [केवलीपणइ] चित्तहंसा रे,
बहुत्तरि लष्य वरिस आय, लाल चित्तहंसा रे. ३११

सीत्तिर धनुष सुहामणउ, चित्तहंसा रे,
रक्तवर्ण जिनराय, लाल चित्तहंसा रे. ३१२

कुंभराशि जिनपति तणी, चित्तहंसा रे,
कासर लंछन पाय, लाल चित्तहंसा रे. ३१३

---

* आ पछीना केटलाक अक्षरो उपर मूळ प्रतमां हरताल फांसेली छे.
केवली पणइ ' आ शब्द खंभातनी प्रतमांथी लई तेने मोटा कौंसमां दर्शाव्यो छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साशन जक्ष जक्षणी भलां, चित्तहंसा रे,
कुमार प्रवरा नांम, लाल चित्तहंसा रे. ३१४

अंत समय जांणी करी, चित्तहंसा रे,
आव्या चंपावन ठांम, लाल चित्तहंसा रे. ३१५

ढाल २१मी, राग धन्यासी, इंद्रयनयरी ए देसी

मास दिवस अणसण आदरी, साथइ ते छसय अणगार,
काउसग करतु सुगति गया, पामीआ सुखभंडार. ३१६

लालमणी सुखकरु रे, श्रीवासपूज्य जिनराय,
वासवपूजितपाप, प्रभु नमि शिवसुष थाय,
प्रभु पूज्यइ पातग जाय. लाल० आंकणी. ३१७

चउसठि मघवा मिली कीउ, निर्व्वाण मोछव सार,
आसाढ सुदि चौदशि दिने, पछइ यात्र करी निज ठारि. लाल० ३१८

हविइ नमूं परिवारनइं छासठि गणधर राय,
सुभम आदिइ जांणीइ, कर जोडी लागू पाय. लाल० ३१९

षट सहस केवली वंदीइ, षट सहसनइ च्यार न्यान,
सहस पंच ते अवधिन्यानी, ऊपरि च्यार शतमान. लाल० ३२०

चउद पूरवधर वारसइ, दस सहस वैक्री होइ,
शडतालीसशत साधु वांदी, वांदिइ न जीपइ कोइ. लाल० ३२१

सामान्य मुनीवर सहस अडत्रीस आठसय चउत्रीस,
सरव थईनि सहस बिहुतिर, हस्त नीप्यत ईस. लाल० ३२२

साधवी एक लाष वंदीइ, श्रावक बि लाष जाणि,
सहस पनर ऊपरि अधिका, व्रतधारक गुणमणिषाणि. लाल० ३२३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लाष च्यार नइ सहस छत्रीस, श्राविका सुगुण सुजाण,
चउविह संघ श्रीवासपूज्यनउ, दीउ सेवकनइ कल्याण. लाल० ३२४

जिनचंदसूरि जगि राजीउ, नामि सदा नवनिधि,
सोल सताणउंइ अमर थाशइ, एक भविइ लहिशइ सिद्ध. लाल० ३२५

जिनवलभ तसु पाटि होशइ, सतर सतावीस मांन,
अनुक्रमइ पाट ते चालशइ, जाव दुप्पसह युगह प्रधांन. लाल० ३२६

सोल छनूं माघमासे, सूदि अष्टमी सोमवार,
मनोरम फाग वासपूज्यनउ, सेवक कल्याणकार. लाल० ३२७

गण लघु महावीर प्रसादि, थिरपुर कीउ उच्छाहइ,
कटुक गछ सदा दीपयो, चंद सूर जिहां जगमाहइ. लाल० ३२८

इति श्रीमनोरमे फागे द्वितीयोल्लास समाप्तः

॥ ग्रंथाग्र श्लोक ३७६, अक्षर १५ अक्षरगणनाइ छः । संवत १६९७ वर्षे असाढ वदि ५ रवौ संपूर्णः, श्रीरस्तु ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३१]

विनयविजयकृत

नेमिनाथ भ्रमरगीता

(सं. १७०६)

दूहा[1]

समुद्रविजयनृपकुलि तिलउ, मात सिवादे[वी] नंद,
बाल ब्रह्मचारी सदा, नमीइ नेमि जिणंद. १

तीर्थंकर[2] बावीसमो यादवकुल[3] सिणगार[4],
राजीमती[5] मन[6] वलहु,[7] किरुणरस[8] भृंगार. २

मुनिमनपंकजभमरलु[9] भवभयभेदणहार,
भमरगीत टोडर[10] करी, पूजुं बंधु[11] मुरारि.[12] ३

[फाग[13]]

प्रणमीय[14] सरसति[15] वरसति,[16] वचन सुधारससार,
नेमि जिणेसर गाईइ, पाईइ[17] हरष अपार. ४

---

१ श्री आत्माराम जैन ज्ञानमन्दिर, वडोदरानी प्रतमां 'दूहा' के 'फाग' एवां काव्यबंधनां नाम आपेलां नथी; पण प्राच्य विद्यामन्दिर, वडोदरानी प्रतमां काव्यबंधनां जे नाम आप्यां छे ते मुख्य पाठमां नोंध्यां छे. २ तीर्थंकर. ३ यादवकुलि. ४ शिणगार. ५ राजीमति. ६ मनि. ७ वालहो. ८ करुणरस. ९ भमरलो. १० मूलमां 'डोडर' शब्द छे; ते अशुद्ध जणातां, प्राच्य विद्यामन्दिर, वडोदरानी प्रतमां मळतो 'टोडर' शब्द स्वीकार्यो छे. ११ बंधू. १२ मोरारि. १३ प्राच्य विद्यामन्दिर, वडोदरानी प्रतमां अने श्री. आत्माराम ज्ञानमन्दिरनी प्रतमां, बन्नेमां 'फाग' ए काव्यबंधनो उल्लेख रही गयेलो छे तेनी अहीं नोंध करी छे. १४ प्रणमी अ. १५ सरसती. १६ वरसती. १७ पाईइं.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जान[१] लेई जव आवीउ,[२] यादव तोरणिबारि,[३]
गोषि चडी[४] तव निरषइ, हरषइ[५] राजुल[६] नारि. ५

छंद[७]

सरसति[८] भगवती भगति आणी, माय आपु[९] घणुं सरस वांणी,[१०]
परणिवा[११] तोरणि[१२] नेमि आव्या, देषतां राजुलि[१३] मनि सोहाव्या.[१४] ६

फाग

ससीवयणी मृगनयणी, नव सति[१५] सजि सिणगार,
नवयौवन सोवनवन, अलि अपछर अवतार. ७

सिर सिंथो फूली, बहुमूली राषडी सार,
सीस फूलमणि टीकी नीकी कंत[१६] अपार. ८

छंद

मृगमदवासित वेणि[१७] काली, झालि कानिं[१८] बनी कनकवाली,
सोहीइ निरमलुं[१९] नाकि[२०] मोती, आरसी करि ग्रही[२१] रूप जोती. ९

फाग[२२]

अंजन अंजित अंषडी,[२३] अधर प्रवाला रंग,
हसित ललित लीला[२४] गति, मदमरी अंग अनंग. १०

---

१ यान. २ आवीया. ३ तोरणबारि. ४ चढी. ५ हरषे. ६ रायुल. ७ प्राच्य विद्यामन्दिरनी प्रतमां आवी रचनाने 'दूहा' नाम आपेलुं छे. ८ आ पंक्तिनो पूर्वार्ध आ प्रमाणे छेः 'प्रणमीइ सरसती भगति आणी.' ९ आपो. १० वाणी. ११ परणवा. १२ तोरण. १३ रायुल. १४ सुहाय. १५ सत. १६ कांति. १७ वेणी. १८ कांने. १९ नीरमलूं २० नाक. २१ धरी. २२ श्री आत्माराम ज्ञानमन्दिर, वडोदरा अने वडोदरा प्राच्यविद्यामन्दिर ए बन्नेनी प्रतोमां 'फाग' शब्दनो उल्लेख रही गयेलो ते अहीं नोंध्यो छे. २३ आंषडी: २४ लीलां.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रतनजडित कंचुककस, खंचित[1] कुच[2] दोइ सार,
एकाउलि मुगताउलि, टंकाउलि गलि हार. ११

दूहा

हाथि[3] मणिमुंद्रडी[4] हेमचुडी,[5] मेषला[6] कटि वनी रयण[7] रूडी,
झांझरी घूघरी[8] चरणि[9] वाजइ,[10] रंभा[11] रति तणि वेसि छाजइ. १२

फाग

गोषि चडी[12] चित चींतवइ,[13] राजुलि[14] राजकुंआरि,[15]
वालिंभ वेगा[16] पधारु[17] रे,[18] उभा[19] कांइ[20] दुवारि.[21] १३

भलुं रे करयउं[22] तम्हे[23] आवतां, पालतां[24] पूरव प्रीति,
नवभव नेह निवाही, राषी[25] उत्तम रीति. १४

छंद

दोहिला दिन गया तुम्ह[26] पापइ,[27] रषे ते सोहणि[28] देव[29] दाषइ,[30]
आज हुं दुषनु[31] पार पांमी,[32] नयन[33] मेलावडि[34] मिल्यउ[35] स्वांमी.[36] १५

फाग

रयणी[37] न आवी[38] नींद्रडी,[39] उदक न भावइ[40] अन्न,
सुनी[41] भमि[42] ए देहडी, नेमिसुं[43] लागुं[44] मन्न. १६

---

१ षंचीत. २ कुचयुग. ३ हाथ. ४ मणिमय मुद्रडी. ५ हेमचूडी. ६ मेखला. ७ रयणिं. ८ घुघरी. ९ चरण. ९ वाजइ. १० अहींथी पंक्ति आ प्रमाणे पूरी थाय छेः 'पीउ जोइ आवतो वहुइ वाजे.' १२ चढी. १३ चिंतवइ. १४ राजुल. १५ राजकुमार. १६ वेगें. १७ पधारो. १८ हो. १९ उभां. २० आ शब्द पछी 'रे' मळे छे. २१ दुआरि. २२ कर्युं. २३ तुमे. २४ पाली. २५ पाली. २६ तुम. २७ पाषि. २८ सोहिणें. २९ दैव. ३० दाषिं. ३१ दुखनो. ३२ पामी. ३३ नयणे. ३४ मिलावडे. ३५ मिल्यो. ३६ स्वामी. ३७ रयणि. ३८ आवइ; आना पछी 'हो' मळे छे. ३९ निद्रडी. ४० भावें. ४१ सूनी. ४२ भमइ. ४३ नेमस्युं. ४४ लागु.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आसुंअडि[1] झडि लागी, भीजि[2] कंचुकचीर,[3]
मयण[4] संतापइ आपी पापि दहि सरीर. १७

छंद

विरह[5] ताहरि घणुं दाधी, माछली[6] जल थकी जिम अलाधी,
जीवजीवन हविं[7] चित[8] ठारो, वहिलां[9] मंदिरमां पधारो. १८

फाग

मयण हराव्यउ[10] रूपइं[11] ते, जिम कंस मुरारि,
ते मुझ बाण[12] हणि[13] मनि,[14] जाणे[15] ताहरी नारि. १९
सरण करयउं[16] मि[17] ताहरूं,[18] वालिभ[19] विरह निवारि,
भाणाषडहडि[20] दोहिली, जोवन[21] दिवस बिच्यारि.[22] २०

छंद

भवि भवि लाईउ[23] चित[24] चालउ,[25] नेह नजरिं हवि मांन[26] भालउ[27]
कंत ति[28] कांमणि[29] करयु[30] काई,[31] षिण षिण सांभरि[32] तुं हि ज सांई.[33] २१

फाग

फिरकइ[34] रे दाहिण लोयण,[35] मुझ मनि आरति थाइ,
रषे रे यादव पाछो[36] वलि, दुष[37] देईनि[38] जाइ.[39] २२
एणि[40] अवसरि[41] पशु पेषी[42] उवेषी राजुलि[43] प्रेम,
जीवदया मनी आंणी,[44] पाछा वलीया[45] नेम. २३

---

१ आंसुंअडे. २ भींजे. ३ कंचूकचीर. ४ आ आखी पंक्ति आ प्रमाणे मळे छेः 'मयण संतापइ हो पापी आपे दहय सरीर.' ५ आ पंक्तिनो पूर्वार्ध आ प्रमाणे छेः 'ताहरइ विरहें हुं घणुं दाधी.' ६ माछिलि. ७ हवें. ८ चित्त. ९ वहिला १० हराव्योः तेना पछी 'हो' मळे छे. ११ रुपें. १२ बांण. १३ हणे. १४ मानुं. १५ जाणी. १६ करयुं. १७ में. १८ ताहरुं. १९ वालिंभ. २० भाणाषडषडी. २१ यौबन. २२ बिच्यार. २३ लाईउं. २४ चित्त. २५ चालो. २६ कां. २७ भालो. २८ तें. २९ कामण. ३० करयुं. ३१ कांइं. ३२ सांभरइं. ३३ साइं. ३४ फरके. ३५ लोअण. ३६ पाछा. ३७ दूष. ३८ देइने. ३९ जाय. ४० इंणी. ४१ अवसर. ४२ देषी. ४३ राजुल. ४४ आणी. ४५ वलिया.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छंद

राजुलि[1] ततषिण पडी[2] धरती, सहीअर[3] सवि मिली[4] हा हा[5] करती,
चंदन छांटीनि[6] करी[7] बिठी,[8] वली वली[9] दुषनि[10] पूर पइठी.[11] २४

फाग

निठुर[12] नाह न कीजीइ, एम विसासीघात,
को न करि[13] तिम कीधुं[14] ते, जग[15] लगि रहस्यइ[16] वात. २५

विण अवगुण हुं छंडी, मंडी अवरस्यु[17] प्रीति,
छेह दीउनि[18] चटकीनि,[19] ए सी उत्तम रीती ? २६

छंद

भूषण परिहरी[20] हार त्रोडि,[21] ढोलए[22] चंदन अंग मोडइ,
जक नहीं[23] जीवनि[24] फिरि[25] रोती, षिण षिण नेमिनी[26] वाट जोती. २७

फाग

कंत विना स्युं जीवयुं, कंत विना स्यो जंग,
कंत विना स्यां भूषण, कंत विना स्यो रंग. २८

कंत विना स्यां मंदिर, कंत विना सी सेज,
कंत विना स्यां भोजन, कंत विना स्यां हेज. २९

छंद

सहीअर[27] नेमिनइ[28] जई[29] मनावउ,[30] हजी हठ छंडि[31] प्रीउ[32] वेगि आवो,
जु[33] धुरि जाणती मुगति[34] रातउ,[35] करि ग्रही राषती कंत जातउ.[36] ३०

---

१ राजुल. २ पडीय. ३ सहीअरो. ४ मिलि. ५ हाय. ६ छांडने. ७ करे. ८ बेठी. ९ वलि वलि. १० दूषनें. ११ पेठी. १२ नीठूर. १३ करे. १४ कीधूं. १५ जगि. १६ रहस्ये. १७ अवरस्युं. १८ दीउ. १९ छटकीनें. २० परिहरइ. २१ त्रोडइ. २२ ढोले; आनी पछी 'ए' मळे छे. २३ नहिं. २४ जीवनें. २५ फिरे. २६ नेमनी. २७ सहीयरो. २८ नेमनें. २९ जइ. ३० मनावो. ३१ छंडी. ३२ पीउ. ३३ जो. ३४ मुंगति. ३५ रातो. ३६ जातो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

चंद तपि[1] सूरज[2] परि,[3] दादुर दइ दुष[4] जोर,
घोर घना घन गाजइ,[5] न वलि[6] कंत कठोर. ३१

नींद न आवि[7] विरहण,[8] देषुं सुंहणे नाह,
बापीयडो[9] पीउ पीउ[10] करि,[11] दूणु[12] दि[13] वली दाह.[14] ३२

छंद

कंत ति[15] कांमिनी[16] अवर जोई, माहरि[17] तो नही[18] अवर कोई,
महिर[19] करि[20] मोहन[21] पासि[22] राषु,[23] आठ भवनी परि[24] प्रेम दाषु.[25] ३३

फाग

जाणुं[26] हतु[27] जई[28] पूरिस्युं,[29] सासरडि[30] सुषवास,[31]
सासूनि[32] पाए[33] लागिसूं,[34] ससरोजी पूरस्यइ[35] आस. ३४

सुं[36] जाणुं इम[37] नाहलु,[38] जास्यइ[39] देई[40] छेह,
वयर वसायुं[41] जे कीयुं,[42] निस[ने]हासुं[43] नेह. ३५

छंद

नेमिजी[44] राजुलि[45] प्रीति पाली, विरहनी वेदना सर्व टाली,
सुष[46] घणां मुगति[47] वेगि दीधां, नेमिथी[48] विनयनां[49] काज सीधां.[50] ३६

---

१ तपे. २ सूरय. ३ परिं. ४ दुख. ५ गाजे. ६ वल्यो. ७ आवे; आनी पछी 'हो' मळे छे. ८ वइरणि. ९ बापइडो. १० पिउ पिउ. ११ करइ. १२ दुंणो. १३ द्यइ. १४ दिलदाह. १५ तें. १६ कामिनी. १७ माहरइ. १८ नहिं. १९ महिरि. २० करी. २१ मोहनें. २२ पासिं. २३ राषो. २४ परिं. २५ दाषो. २६ जाण्युं. २७ हतुं. २८ जइ. २९ पूरस्युं. ३० सासरडे. ३१ सुखवास. ३२ सासूनें. ३३ पाउले. ३४ लागस्युं. ३५ पूरस्ये. ३६ स्युं. ३७ इंम. ३८ नाहलो. ३९ जास्ये. ४० दे[इ]. ४१ वसाव्युं. ४२ कीयु. ४३ निसनेहास्युं. ४४ नेमजी. ४५ राजुल. ४६ सुख. ४७ मुगतिनां. ४८ नेमना. ४९ विनयथी. ५० सिधां.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

श्रीविजयदेवसूरि[१] तपगछनु[२] सिणगार,[३]
श्रीविजयसिंहसूरी[४] जयवंता तास[५] पटोधार. ३७

कीर्त्तिविजय[६] उवझायनुं,[७] [पामी] चरणपसाय,
यदुपतिना इम[८] वाचक, विनयविजय गुण[९] गाइ.[१०] ३८

छंद

भेद संयम तणां[११] चित[१२] आणो, मांन[१३] संवत् [तणुं][१४] एह जाणुं,[१५]
वर[स] छत्रीसनुं[१६] वर्गमूल,[१७] भाद्रवि[१८] प्रभु[१९] थुण्या[२०] सानुकूल. ३९

॥ इति नेमि भ्रमरगीता[२१] ॥

---

१ विजयदेव सूरिश्वर. २ तपगछनो. ३ शिणगार. ४ विजयसिंह सुरीश्वर. ५ तस. ६ आ शब्द पहेलां 'श्री' मळे छे. ७ उवझायनो. ८ इंम. ९ गुंण. १० गाय. ११ संयम तणा. १२ चित्त. १३ मान. १४ संवत तणुं. १५ जाणो. १६ छत्रीसनो. १७ वर्गमुल. १८ भाद्रवे. १९ प्रभू. २० थुण्यो. २१ वडोदरा प्राच्य विद्यामंदिरनी प्रतमां आ पंक्ति आ प्रमाणे छेः 'इति श्रीनेमिनाथ भमरगीता स्तवनं संपूर्णम्.'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३२]

वृद्धिविजयकृत

ज्ञानगीता

(सं. १७०६)

दूहा

सकल समीहित पूरवा, कल्पवृक्ष अवतार,
पास प्रभु सुप्रसन सदा, संखेस्वर सुषकार. १
महिमा महियल जेहनो, सकल भवीक शुपवास,
ते साहिब मुझ मन वश्यो, श्रीसंखेस्वर पास. २

छंद

पास सुषवास प्रभु तेह सोहे, नेह भरी नीरषतां चित्त मोहे,
माता वामा सती जेह जायो, सुरनर कीन्नर कोडि मायो. ३

ढाल फागनी देशी

ते साहिब संखेस्वर, अलवेसर अरिहंत,
सुषदायक जगनायक, भवभंजन भगवंत. ४
थुणतां अती घणुं भक्ते, निज मत सक्तें हेव,
सारद सार दया करो, जिनसासन स्तुति देव. ५

छंद

प्रणमी सरसती सरस अमरी, जीनमुषपंकजे जेह भमरी,
गाइयें पास जिनराज रंगे, अती घणुं आंणि उल्लास अंगे. ६

फाग

देव दया कर ठाकर, चाकरनी अरदास,
अवधारो अरिहंतजी, केवलकमलावास. ७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चोरासी लष जोनिमां, भमतां बहु अवतार,
भाग्य भलेरें भेटीये प्रभुजीनो दिदार. ८

छंद

तार तुं महेर मनमांहे आंणी, जगपती आपणो दास जाणी,
देव निज तणी ए सेव कीजें, मोज महिरांण ए मोज दीजे. ९

फाग

अंतराय अलगां थयां, आव्यो तुझ दरबार,
पुंन्य संयोगें पांमीयो, तुम साहिब दिदार. १०

हवें सवि भावठ भागी, लागी तुझस्युं प्रीत,
नेह निजर नीहालीयें, पालीयें उत्तम रीत. ११

छंद

आज जिनराज सवी काज सीद्धां, तन मन नयण ते सफल कीधां,
स्वांमी सिरदार दिदार पायो, सकल संकट तणो भय गमायो. १२

फाग

तुम दरिसण विण साहिब, भमतां इंण संसार,
कर्म तणे वस पडियो, नडीयो विविह प्रकार. १३

मोह तणें कर चडीयो जडीयो मायाजाल,
ते गत जांणें अवर को तुझ वीण दीनदयाल. १४

दूहा

मोह महीपति महिमांहें भालें, जेह प्रतें कोइनुं बल न चाले,
तास प्रवस पड्या जंतु दीना, धीवर कर चड्या जेम मीना. १५

फाग

मोह तणा भट उदभट, मद मच्छर झुझार,
लोभ अक्षोभ सदा वली क्रोध योध सींणगार. १६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कांम नांम करडो तिहां, कटक तणो सिरदार,
सेनानी मांनी जन हाथ जोडावणहार. १७

छंद

तेहनो सबलो जगमांहि जोरो, पडे जास भड त्रिभुवन सोरो,
पलकमां षलकने जे नमावे, एकलो आंण सहुनें मनावे. १८

फाग

ते राहु मकरध्वज, विलसे मननी मोज,
जेहने चिंहु दिसी चमकती, कांमनी करडी फोज. १९
तरुणपणे तेजी परें, तुरत थइ असवार,
चातुरी चाबख कर ग्रही, महियल कीरती विहार. २०

छंद

नेहनी जाल नाषी अपार, षेले ए खांतिस्यूं ते सकार,
मृग जिम पडे तिम राग वाह्यो, मूढ जन मांननी रस उमाह्यो. २१

फाग

सबल प्राक्रम सज करे, वांकी भमुह कबांन,
अति अणियाला काला अंजत लोचन बांण. २२
ताकी चोट न चुके, मुंके अति सपरांण,
तिणें वेधे वेधक तणा, काढी नार्षे प्रांण. २३

छंद

बांणनो घावो कोइ नवी दिसें, प्रगटपणें तोइ विश्वास वीसे,
वेंधे ए नर तणी सात धात, अहो अहो कोप महिमा वीष्यात. २४

फाग

तेह बांण जब लागे, भागे तब सब ज्ञांन,
मुर्च्छित अति आकल होइ, दूष देषे असमांन. २५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सयण विलेपन मंजन, भोजन तस न सुहाय,
हा हां करतां दिवसें, जागतां रयणी विहाय. २६

छंद

अंध परे मुढ तेह नवि कांइ पेखे, धन कण कंचन सवि उवेखे,
सोइ दिन आउषामांहें लेखे, जीहां त्रीया तणु दरसन देखे. २७

फाग

इंणि परें रागे लागे, विद्या तप जप जाय,
ज्ञांन ध्यांन कांने रहें, मांने कोइ उपाय. २८

निस वासर रटतो रहे, परहरे पूरव प्रीत,
जब ते सापणी पापिणी माननीं मोहे चीत्त. २९

छंद

कांमनी दांमनी परे देषाडे, तेहवी चमक नर फंद पाडे,
साकणी परे तरुहृदय वलगी, सोसे ए अंग नवि थाय अलगी. ३०

फाग

जग धुतारी नारी, बारी नरकनी एह,
मुह मीठी मन धीठी, मांडे नेह अनेक. ३१

कपटकला बहु केलवे, मेलवे मायापाश,
निज वस पाडे भमाडे, नरने देइ आस. ३२

छंद

नर तणुं चित प्रहराय लेवे, आपरो चित कोइनें न देवे,
तेह भणी दुष तणी षांण नारी, तत्त्वदृष्टि करी एह विचारी. ३३

फाग

आइ कुमर आषाढो, अरहनक अणगार,
चुकाव्या चारित्रथी नंदीखेण व्रतधार. ३४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवल एलाची सारीषा, मुंझ महीपति अयाद,
रांक तणी परे रोलव्या, मन मांण्यो विषवाद. ३५

छंद

सक्री चक्रादिक जेह देव, ते पण आदरी तास सेव,
ते कुंण अचरज अधिको कहीजइं, मोहनी आंण मस्तकें वहिजे. ३६

फाग

मोह महा भव पांने, तानें नाच्यो महेश.
बंभ रमे करमें करी, पुत्रीस्यूं सुविसेस. ३७

केसव ते सवि लज्जा लोपी गोपीरत्त,
अहो तीहुंअणजयकारी मोह महाउनमत्त. ३८

छंद

मोह जिन वीरने भवें भमाड्यो, मोह चारित्र क्रिया वगाड्यो,
मोह ने कोह ए सबल चोर, गुणस्थांन इग्यार लगें जस जोर. ३९

फाग

मत कोइनें लागज्यो मोह महावेताल,
जेह तो छुटे न जंत्रें, मणि मंत्रे जंजाल. ४०

सीर धुणावे धींगना, अंगना*
आठ कर्ममां एहनी अवर करे कुंण होड. ४१

छंद

धन तुंहि ए जीणें मोह मारयो, मोह दल दलीनें तुंहि ज वारयो,
सहुथी जग जेह इम हारयो, भलो तेहनो तें मद उतारयो. ४२

---

* आ पंक्ति मूल प्रतमां आ प्रमाणे अधूरी छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

मोहतिमिरभरनासन, भवनविनासन भांण,
वांमासुत वालेसर संखेश्वरमंडाण. ४३
मोह तणे वस प्रवस, जे में कीधु काज,
ते तुझ आगल स्यूं कहुं, कहेतां आवे लाज. ४४

छंद

हवें महाराज तुझ दिदार पायो, पाप संताप दूरे पलायो,
पावन मुझ थयां सकल अंग, आज नाह्यो मांनुं नीर गंग. ४५

फाग

तुं मुझ नायक त्रायक, तुं मुझ जीवन प्रांण,
अहनिसि अकल अलवेसर, सिर वाहु ताहरी आंण. ४६
भक्तिवत्सल भगवंतजी, निरमल अवचल नांण,
समकित सिरोमणि दिजीइं, कीजीइं कोड कल्यांण. ४७

छंद

फरी फरी वेंनती केहि कीजें, अवसरे तत्त्व ही एक दिजें,
जिम लहुं आप कीर्त्ति सवाइ, तिम हम आपज्यो प्रभु वडाइ. ४८

फाग

संप्रति सोहम समवड, श्रीविजयदेवपट्टधार,
श्रीविजयप्रभ्भसूरीश्वर, तपगच्छना सिंणगार. ४९
धीरविजयकविसेवक, लाभविजयबुधसीस,
वृद्धिविजय कहे पासजी पूरो सयल जगीस. ५०

छंद

दर्श[न] मुंनी ससी मांन वर्षे, सांइपुर नयरमां चित्त हर्षे,
ज्ञांनगीता करी प्रेमपूर, पास प्रभु संथुण्यो चढत नूर. ५१

॥ इति श्रीज्ञांनगीता संपूर्ण । लिखितं ऋषभविजेगणी श्री ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३३]

लक्ष्मीवल्लभकृत

अध्यात्म फाग

(सं. १७२५ आसपास)

राग धमाल

तनु वृंदावन कुंजने हो, प्रगटे ग्यान वसंत,
मति गोपिनसुं हसि सवे हो, पंचेऊ गोप मिलंत. १

आतम हरि होरी षेलीये हो, अहो मेरे ललनां
सुमति राधाजू के संगि. टेक.

सुष सुरतरु की मंजरी हो, लई मनु राजा रांम,
अव कउ फाग अति प्रेम कउ हो, सफल कीजे मलि स्याम. आतम० २

जाकी लोग सिस की कला हो, फट गए मोह तुसार,
सोलह पदम कमल छऊ हो, विकसित भए है उदार. आतम० ३

मंद मिष्ट हितगुण गहे हो, वह हे सत्य समीर,
अति समता रवि रुचि बढी हो, घटी ममता निशि पीर. आतम० ४

रचे पीत पट सीलु के हौ, उर संवेग वनमाल,
सिरि विचित्र तप को धर्यो हो, मोरु मुकुट सुविशाल. आतम० ५

इला पिंगला सुषमना हो, वहति त्रिवेणीधार,
अति उज्वल रुचिसुं रमै हो, मुनिमन हंस उदार. आतम० ६

वजी सुरत की वांसुरी हो, उठे अनाहत नाद,
तीन लोक मोहन भए हो, मिट गए दद्दं विषाद. आतम० ७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भरि भरि झोरी प्रेम की हो, षेलति भक्ति गुलाल,
पुन्य अबीर की सुरभिता हो, पाप गए पयमाल. आतम० ८

कुमति कुवरी कुपि गई हो, क्रोध जनक कै गेह,
सुमति महासुष मानि के हो, लाग रही पतिदेह. आतम० ९

त्रिकुट त्रिवेणीतट तिहां हो, गुपत ब्रह्मरंध्र कुंज,
वसे षिलत तहां दंपती हो, मगन भए सुषपुंज. आतम० १०

राधा कै बसि हरि भए हो, तजी और रसरीति,
ऐसे फागु सफल कह्यो हो, सुदि ८ भई अति प्रीत. आतम० ११

निसदिन ऐसें षेलमें हौ, षेलत काल अनंत,
मंदमती समुझतु नही हो, समझतु है मनि संत. आतम० १२

श्रीलषमीवल्लभ को रच्यो हौ, इहु अध्यात्म फाग,
पावतु पद जिनराज को हो, गावत उत्तम राग. आतम० १३

॥ इति अध्यात्म फाग संपूर्ण ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[२४]

उदयविजयकृत

पार्श्वनाथ राजगीता

(संवत १७२८ आसपास)

छंद[1]

सकल मंगल तणी कल्पवेली, तीर्थंकरलच्छिनी[2] जे सहेली,
सरसती वरसती सरस वांणी, आप हितहेतु[3] ते चित्त[4] आणी. १
सकल संपति तणो जे विधाता, सकल भवि[5] जास गुणरंगे[6] राता,
पाससंषेसरो तेह दीपइं,[7] हेज तेजइं[8] शशीसूर[9] जीपइं.[10] २

ढाल फागनी[11]

ते साहिब सोभागनी नीरागी भगवंत,
थुणिवा[12] मुझ मति[13] जागी भागी भावठि[14] तंत.[15] ३
हवइ[16] आलस परि छंडुं[17] मंडुं[18] प्रभुस्युं[19] नेह,
जेह थिकी[20] दुख निकसइं[21] विकसइं[22] सुक्ख[23] अछेह. ४

छंद

एक सुविवेक प्रभु[24] तुं हि दीसइं,[25] तोहिथी[26] हियडलुं हेज हींसइं,[27]
एक तुं कल्पतरुराय रोप्यो, अह्म[28] तणो पुण्यअंबार[29] उप्यो.[30] ५

---

१ बीजी प्रतमां 'अथ श्रीराजगीता लिप्यते ॥ श्री ॥' एवी पंक्ति शरुआतमां लखेली छे. २ लछनी. ३ तुं हित. ४ चित. ५ भुवि. ६ गुणरंग. ७ दीपे. ८ तेजें; आनी पछी 'करी' शब्द लखेलो छे. ९ ससीशुर्य. १० जीपें. ११ बीजी प्रतमां 'ढाल फागनी' ने बदले 'फाग' शब्द लखेलो छे. १२ थुंणवा. १३ मत. १४ भवनी. १५ भ्रांती. १६ हवे. १७ छांडु. १८ मांडुं. १९ प्रभुसुं. २० थकि. २१ भिकस्यें. २२ विकस्यें. २३ दुष. २४ प्रभुं. २५ दीसे. २६ तेहथी. २७ हिंसे. २८ अम्ह. २९ पुन्यअंबार. ३० ओप्यो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

धन्य दिवस धन[1] ते घडी धन[2] मुझ वेला तेह,
जब सुखदायकनायक[3] त्रायक निरषस्युं नेह. ६
सरवर[4] जिम कमलाकर दिनकर केरइं[5] तेजि[6]
मनि[7] विकसइं[8] तिम[9] माहरु[10] तुम मुष निरषत हेज. ७

छंद

बुद्ध[11] भगवंत अरिहंत सामी,[12] सिद्धिसीमंतिनीभोगकामी,[13]
आज तुं एक आधार[14] मिलिओ,[15] आजथी माहरो दिवस वलिओ. ८

फाग

भावठिना[16] दिन नाठा माठा[17] दुसमन दुरिं,[18]
मंगलमालिका बालिका रंगसुरंग सनूर.[19] ९
कामगवी[20] घर[21] अंगणइं[22] अति घणइं[23] हेज हसंत,
उत्तम नर लीला करइं[24] जय वरइ[25] सुख[26] विलसंत.[27] १०

छंद

आज हुं प्रभु तणइं[28] मोहि मातो,[29] आज हुं प्रभु तणइं[30] रंगि रातो,[31]
आज ए कामघट[32] मइं[33] हि[34] पायो, सुरमणी[35] आज अणचिंत आयो. ११

---

१ धन्य. २ धन्य. ३ शुषदायकनायक. ४ सरोवर. ५ करे. ६ तेज. ७ मनी. ८ विकस्यें. ९ जिम. १० माहरो; आ शब्द पछी आ प्रमाणे पंक्ति पूर्ण थाय छेः 'ताहरो नीरषस्युं नेह'. ११ बुधि. १२ स्वामी. १३ सिद्धीसीमंतनीभोगकांमी. १४ आद्धार. १५ मलिओ. १६ भावठना. १७ त्राग. १८ दुर. १९ सनुर. २० कांमगवी. २१ घरें. २२ आंगमणे. २३ घणे. २४ करे. २५ वरे. २६ शुष. २७ विलसंती. २८ तणे. २९ मोहमातो. ३० तणे. ३१ रंगरातो. ३२ कांमघट. ३३ में. ३४ हिं. ३५ शुरमणी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

साहिब सांभलो वीनती[1] जे हती बहु दिन चित्त,[2]
आज मिल्यो[3] करुणाकर[4] ठाकुर तुं जगमित्त.[5] १२

एता दिन तुझ सेवना[6] देवनादि नव कीद्ध,[7]
केवल आसथी प्यासथी[8] मोहसुरा मइं[9] पीद्ध. १३

छंद

मोहमाया महारंभपाणी,[10] प्रीतनी मोहमाया नीसाणी,[11]
मोहमाया वर्सि[12] विश्व पडीओ, नेहनइं[13] तंतु जगजंतु जडिओ. १४

फाग

माया जगि धूतारी[14] ऊतारी[15] नवि जाय,
ए[16] संसारनी छाया[17] माया[18] नवि मुकाय.[19] १५

ए मायाइं हरि हर सुरनर शशधर[20] शूर,[21]
मोह महाशवपानइं[22] वानइं[23] प्रगट्या[24] नूर.[25] १६

छंद[26]

भवनपति[27] धरणिपायाललोकइं,[28] मनुजपति[29] चक्रि ते[30] मनुजलोकइं,[31]
शक्र[32] सुरलोक पणि[33] राग वाह्यो, नारिपाये पड्यो रस[34] उमायो.[35] १७

---

१ विनति. २ चित. ३ मील्यो. ४ करुणाकुरु. ५ जगमीत. ६ सेवन. ७ कीध. ८ पासथी. ९ मे. १० महारंगषांणी. ११ निसांणी. १२ वशें. १३ तेहनें. १४. जगधूतारी. १५ उतारि. १६ ते. १७ माया. १८ छाया. १९ मुंकाय. २० ससिधर. २१ सुर. २२ महासववांनें. २३ पानें. २४ प्रगटयो. २५ नुर. २६ दुहा. २७ भूवनपति. २८ धरणपायाललोकें. २९ मनुयपति. ३० वक्र ते. ३१ मनुंजलोकें. ३२ एक. ३३. पणें. ३४ रसनो. ३५ उमाह्यो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

नगन[1] नचाव्यो हो शंकर किंकर परिं[2] गिरिबाल,
उपरि[3] अवर[4] धरी शिर[5] सुरसरिता[6] असराल.[7] १८

विष्णु[8] तणी जे लीला ते[9] सवि जाणइं लोग,
ब्रह्मानइ[10] निज पुत्री सावत्रीस्युं[11] भोग. १९

छंद

राम[12] सीताविओगइं[13] विलापी, रोहिणीलीण चंदो सरापी,
नल जिस्या तेह पणि[14] मोह चोरइं,[15] रंक[16] परि राषीआ[17] आप जोरइं.[18] २०

फाग

मोह तणइं[19] कटकइं[20] भटउदभट[21] रणसिणगार,
क्रोध मान[22] माया मद लोभ जिस्या झूझार.[23] २१
ते माहिं[24] पणि[25] समरथ मनमथ अति भडवाय,
मोह वसिं[26] जग व्याप्यो उथाप्यो नवि जाय. २२

छंद

चक्रधर हलधर[27] वासुदेवा दोइ[28] विणु[29] अवर देवाधिदेवा,
मोहलीला तणइ[30] जोरि[31] वाह्या,[32] भोगफल सी[33] चारि तन पाया. २३

---

१ मूळ 'गगन' शब्द छे पण ते अर्थहीन छे तेथी बीजी प्रतमां मळतो 'नगन' शब्द स्वीकार्यो छे. २ पर. ३ उपरी ४ अंब. ५ सीर. ६ भुरताए. ७ असीराल. ८ विष्णुं. ९ अहींथी पंक्ति आ प्रमाणे पूर्ण थाय छे: 'जांणें सवि लोग'. १० ब्रह्मानें. ११ सावत्रीसुं. १२ रांम. १३ सीता-वियोगें. १४ आ शब्द बीजी प्रतमां नथी. १५ चोरे. १६ रांक. १७ राषिया. १८ जोरें. १९ तणें. २० कटकें. २१ भठउदभठ. २२ मांन. २३ झुझार. २४ मांहि. २५ पण. २६ वसें. २७ हरधल. २८ होय. २९ विण. ३० तणें. ३१ जोर. ३२ वाया. ३३ सिम.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

नंदिषेण पुण[1] सरिषा पुरुषा[2] बावनवीर,
आषाढादिक गाढा राढा राषणधीर. २४
मोह जोह अतुली वल[3] तेणि[4] मनाव्या[5] आण,[6]
रांक ढींक[7] कुण[8] आसिरइं[9] जग[10] सिरइं[11] मोहमंडाण.[12] २५

छंद

मोहिं[13] मरुदेवी सुतदुःष[14] रेली, मोहिं[15] राजीमती पांण[16] गहेली,[17]
मोहनी लीह[18] सघलां[19] पहेली, मोहनी आण[20] कोणइ[21] न ठेली. २६

छंद

मोहइं[22] योवन[23] जागिं[24] लाग[25] तय रति[26] प्रीति,[27]
मोह तणी जगि[28] एक ज टेक जगइ[29] जय जीति.[30] २७
रागइं[31] जोर अथागइं[32] भागइ[33] शीलनी[34] लीह,[35]
एकादश[36] गुणठाणइं[37] टाणइं[38] मोहनी बीह.[39] २८

छंद[40]

मोह ते एम[41] मिथ्या भमाडइं,[42] आपणइ[43] फंद[44] जगजंतु पाडइं,[45]
दंपती दोइ[46] रंगइं[47] रमाडइं,[48] संत पणि[49] दोष तस नवि दिषाडइं[50]. २९

---

१ पिण. २ पुरषा. ३ बल. ४ तेणे. ५ मनावि. ६ आंग. ७ ढिकु. ८ कुंण. ९ आसरे. १० जब. ११ सीर. १२ मोहमंडांण. १३ मोहें. १४ सुतदुष. १५ मोहे. १६ पिण. १७ गेलि. १८ आंण. १९ सघला. २० आंण. २१ कुणे. २२ मोहे. २३ जोवन. २४ जागे. २५ लागे. २६ नव. २७ रित. २८ प्रीत. २९ जग. ३० जग. ३१ जीत. ३२ रागें. ३३ अथागे. ३४ भागें. ३५ शीलि. ३६ निलि. ३७ एकादस. ३८ गुंणठांणे. ३९ टांणे. ४० बीक. ४१ दुहा. ४२ ए. ४३ भमाडें. ४४ आपणें. ४५ फंदें. ४६ पाडे. ४७ दोय. ४८ रंगे. ४९ रमाडे. ५० पण. ५१ देषाडे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

मोह तणइं[१] रसि[२] परवस[३] सगलो[४] ए संसार,
आदिअनादि[५] गोदथी भमतां[६] दोहिलो पार. ३०
रामा[७] रामा[८] धन धन ए दोइ जाणइं[९] सार,
सार धरम[१०] ते नवि कहइं[११] ते गति लहइं[१२] किरतार. ३१

छंद

एक ए[१३] मोह ते महामाया,[१४] एक ए[१५] मोह संसारछाया,
मोह आरामनी नीक रामा, तेहना लो[क]नइं[१६] फोक भामा.[१७] ३२

फाग

पापिणी[१८] सापिणी[१९] कामिणी[२०] दामिणी[२१] जिम चमकंति,[२२]
विषम विषयविष[२३] यारी प्यारी[२४] रमठमकंत.[२५] ३३
भोला भरमइं[२६] भमाडइं[२७] पाडइं[२८] मायापासि,[२९]
कूड[३०] प्रपंचइं[३१] वंचइं पंचइं[३२] निज मनि रासि. ३४

छंद

पेषी[३३] ललणी[३४] महा मोहमाती, पुरुष[३५] पर प्रेमस्युं रंगि राती,[३६]
कर्मचंडालनुं[३७] करण लागि, पुत्र वधवा तणी बुद्धि[३८] जागी. ३५

---

१ तणे. २ वसें. ३ परवसें. ४ सघलो; बीजी प्रतमां 'ए' 'सघलो' शब्द पहेलां लखेलो छे. ५ आदअनादी. ६ भमता. ७ रांमा. ८ रांमा. ९ जांणे. १० सारधर्म. ११ कहें. १२ लहे. १३ बीजी प्रतमां 'ए' नथी. १४ मोहमाया. १५ ते; बीजी प्रतमां 'मोह' पछी 'ते' लखेलो छे. १६ लोकनी. १७ सामा. १८ पापणी. १९ सापणी. २० कांमनि. २१ दांमनी. २२ चमकंत. २३ विषयारस. २४ पारि. २५ रमझमकंत. २६ भमर. २७ भमाडे. २८ पाडे. २९ मायापास. ३० कोडि. ३१ प्रपंचे. ३२ षंचे; आ शब्द पछी बीजी प्रतमां आ प्रमाणे पंक्ति पूर्ण थाय छे: 'आंणे तिज मति रास;' आ पंक्तिनो 'वंचइं' शब्द बीजी प्रतमां नथी. ३३ पेष. ३४ ललनी; आ शब्द पछीनो 'महा' शब्द बीजी प्रतमां नथी. ३५ पुरष. ३६ रंगराति. ३७ करणचंडालनुं. ३८ कुंमति.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

परदेसी[1] नृप भोलव्यो रोलव्यो दुष्ट ज्युं[2] दास,[3]
नारी दुरगति मेलवइं[4] केलवइं[5] कपट विलास. ३६
तोहि जस मुख दीठइं[6] बीठइं[7] पुण्यनी[8] रासि,[9]
नारि रूपिं[10] मोहभूमि[11] भवकूपिं[12] धरयो पास. ३७

छंद

धन्य[13] तुं[14] जिणि[15] तिं[16] मोह जीतो,[17] मोह अरिगंजणो तूं[18] वदीतो,
मइ[19] हवइं[20] तोहि दीदार पायो, मानुं[21] गंगाजलइं[22] आज नाह्यो. ३८

फाग

मोह अरि[23] मुसमूरण[24] पूरण[25] परम पसाय,
संषेसर परमेसर केसरचरचित काय. ३९
देव दया कर[26] ठाकर[27] चाकर निजरि निहालि,
दुषटालक[28] जगपालग निज बालक प्रतिपाल. ४०

छंद

एतला दिवस दुष माहिं[29] दीठा,
आजथी सर्व[30] ते दुष नीठा,
हवइं[31] प्रभू[32] सार संभालि[33] कीजइं,[34]
सुख निराबाध वली बोधि[35] दीजइं.[36] ४१

---

१ परदेशी. २ स्युं. ३ दांस. ४ मेलवे. ५ केलवे. ६ दिठे. ७ नीठें. ८ पुण्यनो. ९ रास. १० रूपे. ११ मोहिए. १२ सविकुंपे. १३ धण्य. १४ तु. १५ जेण. १६ तु. १७ जीत्यो. १८ तुं. १९ मे. २० हवे. २१ मांनुं. २२ गंगाजलें. २३ अरां. २४ मसमुरण. २५ पुरण. २६ कुर. २७ ठाकुर; आनी पछीनो 'चाकर' शब्द बीजी प्रतमां नथी. 'ठाकुर' शब्द पछी बीजी प्रतमां पंक्ति आ प्रमाणे पूर्ण थाय छे: 'निजर तुंही नींहाल.' २८ बीजी प्रतमां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे: 'दुषटालक पालक तुंहि ज प्रतिपाल.' २९ मांहिं. ३० सवे; बीजी प्रतमां 'सवे' पहेलां 'ते' लखेलो छे. ३१ हवे. ३२ प्रभु. ३३ संभाल. ३४ किजें. ३५ बोध. ३६ दिजें.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

फिरि फिरि[१] मीनती वीनती जिनपति[२] केती कराय,
गिरुआ[३] साहिब आगलि[४] लाग लही कहवाय. ४२
सामी[५] हुइ[६] ते जाणइं[७] आणइं[८] निज भणी नेह,
सेवक[९] वंछित पूरीइ[१०] चूरीइं[११] दुरित[१२] अछेह.[१३] ४३

छंद[१४]

मेहथी[१५] मोर ज्युं[१६] मोह मांचइं,[१७]
मुज्झ[१८] मनि[१९] तुझ थकी रंगि[२०] रांचइं,[२१]
मानुं[२२] हवइं[२३] मुज्झ[२४] तुं सही तूठो,[२५]
माहरइ[२६] अंगि[२७] आनंद[२८] ऊठो. ४४

फाग

मुझ समकित अजुआलीइं टालीइं दुषजंजाल,
सेवकजन[२९] संभालीइं पालीइं परम कृपाल. ४५
मृगतृष्णु[३०] मद मोडीइं जोडीइं सुख[३१] भरपूर,
नाणरयण[३२] मुझ दीजीइं कीजीइ[३३] अदभुत[३४] नूर. ४६

छंद

ग्यानघननूर[३५] ते विश्वदीवो, ग्यांनधर[३६] पुरष[३७] ते चिरं जीवो,
नाण तेजइं[३८] करी राग वाहइं,[३९] शांतिसुधारसकुंडि[४०] नाहइं.[४१] ४७

---

१ फिर फिर. २ आ शब्द बीजी प्रतमां नथी. ३ गिरुया. ४ आगलि. ५ सांमी. ६ हुइं. ७ जांणें. ८ आंणें. ९ शेवक. १० पूरे. ११ चूरे. १२ दुरगति. १३ छेह. १४ दुहा. १५ मोहथि. १६ जुं. १७ मार्चें. १८ मुझ. १९ मन. २० रंग. २१ रार्चें. २२ मांनुं. २३ हवे. २४ मुझ. २५ तुठो. २६ माहिरे. २७ अंग. २८ आणंद. २९ सेवकजिन. ३० मृगतृष्णा. ३१ शुष. ३२ ज्ञांनरयण. ३३ किजीइं. ३४ मुख्य प्रतमां 'अदभूत' शब्द छे. छंदनी दृष्टिए तेम ज जोडणीनी दृष्टिए ते अशुद्ध होई बीजी प्रतनो 'अदभुत' शब्द स्वीकार्यो छे. ३५ ज्ञानघननूर. ३६ ज्ञानघन. ३७ पूरष. ३८ तो. ३९ वाहे. ४० सांत शुद्धारसकुंड. ४१ नाहें.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फाग

दारिद्र[१] दुष ते तव लगइ[२] जब[३] लगइ[४] ग्यान[५] न होइं,[६]
ग्यान[७] तणा जे दरीया[८] तरिया[९] ते सहु कोइं.[१०] ४८
भोगी भमर भरतेसर ते सरिसो[११] थयो[१२] जाण,[१३]
तो[१४] आरीसाभुवनिंमि[१५] पाम्यु[१६] केवलनाण.[१७] ४९

छंद

ग्यानपरिणित[१८] थकी जोग[१९] पामी[२०] सिद्धिलीलावती जेहिं[२१] कामी,[२२]
तेह तीर्थंकर सवि नमीजइं,[२३] तेहनी वाणी[२४] अद्यापि पीजइं.[२५] ५०

फाग

नाणलीला[२६] अलवेसर संषेसर मंडाण,
केवल[२७] कमलाकारण त्रिभुवनभाण[२८] समाण. ५१
जे इम गावे[२९] भावइं फावइं[३०] ते धन कोडि,
नित नित रंगवधामणां[३१] अति घणा[३२] पूरवइं[३३] कोडि.[३४] ५२

छंद

श्रीविजयदेव तपगछराजा,[३५] श्रीविजयसिंह गुरु वंड दवाजा,[३६]
वाचक उदयविजयप्रणीता पास जिनवर तणी राजगीता.[३७] ५३

---

१ दारिद. २ लगे. ३ जव. ४ लगे. ५ ज्ञांन. ६ होय. ७ ज्ञांन. ८ दरिआ. ९ तरीआ. १० कोय. ११ सर. १२ आ शब्द पछी प्रतमां 'जंग' शब्द लेखेलो छे. १३ जांणी. १४ सो. १५ आरिसाभवनमें. १६ पांम्यो. १७ केवलनांण. १८ ज्ञानपरीणीत. १९ यौग. २० पांमी. २१ जेही. २२ कांमी. २३ नमीजें. २४ वांणी. २५ पीजें. २६ नांणलिला. २७ मंगल. २८ त्रिभुवनभांण; आ शब्द पहेलां बीजी प्रतमां 'तारण' शब्द लखेलो छे. 'त्रिभुवनभांण' पछी मळतो मुख्य पाठनो 'समाण' शब्द बीजी प्रतमां नथी. २९ आ शब्द पछी मळतो 'भावइं' शब्द बीजी प्रतमां नथी. ३० पावे. ३१ रंगवधामणी. ३२ घणी. ३३ पूगे. ३४ कोड. ३५ तपगच्छराजा. ३६ दिवाजा. ३७ ५३मी कडीना अंते बीजी प्रतमां आ प्रमाणे पुष्पिका छेः 'इति श्रीपार्श्वनाथ राजगीतास्तवन संपूर्णम् । चेला वीलजी लिपीकृतं आत्मार्थं ॥'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अनुपूर्ति

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३५]

जिनचंदसूरि फागु

(सं. १३४१ आसपास)

अरे पणमवि सामिउ संतजु, सिव वाउलि उरि हारु,
अरे अणहिलवाडामंडणउ सव्वह तिहुयणसारु;
अरे जिणपवोहसूरि पाटिहि, सिरि संजमु सिरि कंतु,
अरे गाइवउ जिणचंदसूरि गुरु, कामलदेवि कउ पूतु. १

अरे हयडऊ तपियउ पैखिवि, न सहए रतिपतिनाहु,
अरे बोलावइ वसंतु ज सव्वह रितुहु राउ;
अरे आगए तुह बलि जीतओ, गोरड करउ वालंभु,
अरे इसइं वचनु निसुणेविणु, आगयउ रलिय वसंतु. २

अरे पाडल वालउ वेउल, सेवत्री जाइ मुचकुंदु,
अरे कंटु करणी रायचंपक विहसिय केवडिविंदु;
अरे कमलहि कुमुंदिहि सोहिया, मानस जवलि तलाय,
अरे सीयला कोमला सुरहिया, वायइं दक्खिणा वाय. ३

अरे पुरि पुरि आंवुला मउरिया, कोइल हरखिय देह,
अरे तहिं ठए टुहकए बोलए, मयणह केरिय खेह;
अरे इसइ वसंतिहि हूयए, माघु स केतिय मात्र (?)
अरे अचेतन जे पाखिया, तिन्हु तणी जुगलिय वात. ४

अरे इसउ वसंतु पेखेवि, नारियकुंजरु कामु,
अरे सिंगारावए विविह परि, सव्वह लोयह वामु;

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अरे सिरि मउडु, कन्नि कुंडल वरा, कोटिहि नवसरु हारु,
अरे बाहहिं चूडा, पागिहि नेउर कओ झणकारु. ५

अरे सिरिया मोडा लहलहहि, कसतूरिय महिवट्टु,
अरे न.....
.....
.....ट परि हुयउ देवगण भाउ.

रिणतूरिहिं वज्जंतिहिं उट्ठिउ शीलनरिन्दु,
देखिवि उतकट्ठु विम्हियउ सयलु वि देखिहि विंदु. २१

अरे द्रेठिहिं द्रेठिहिं दीठए नाठउ रतिपति राउ,
नारीयकुंजरु मेल्हिवि जोयए छाडिय खाल (?) २२
धरणिंदह पायालिहिं पुहविहिं पंडिय लोउ,
जीतउं जीतउं इम भणइ सग्गिहिं सुरपति इंदु. २३

वद्धावणउं करावए सग्गिहिं जिणसरसूरि,
गूजरात पाटण भल्लउं सयलहं नयरहं माहि. २४

मालवा की बाउल भणहि सयलहं लोयहं माहि,
सिरिजिणचंदसूरि फागिहिं गायहिं जे अति भावि,
ते बाउल अरु पुरुसला, विलसहि विलसहि सिवसुह साथि. २५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३६]

अज्ञातकविकृत

विरह देसाउरी फागु

(विक्रमनो सोळमो सैको)

आज सखी मन कंपए, तालावेलि करेइ,
फागु-खेलण-दिन आवीउ, प्रिय देसांतर लेइ. १

राखीउ सखी ! न रहइ ए, अणरस नाह अजांण
दुगो (?) अंगि न भेदीइं, यौवन धरइ परांण. २

श्लोक

प्राणेशं प्रथमं प्रयाणसमये वह्वाकुला प्रेयसी
नीत्वा स्थंब सुधाक्षतं दुर्लभकणान दातुं सरस्यागतान् ।
आस्फुर्ज्जित् विप्रयोग दहन प्राणेशनं यौवनं
स्वेदाद् भक्तमभूत कृतमवती नीरांज्जनां लज्जनां ॥* ३

आहि दीहेलू अ वाजए, दवि दाझइ सखि रेउ (?)
दासि तुहारी अ कंत रे, रहि रहि किसी अ परेइ. ४

कि मुझ मारि कटारडी, कइ प्रिय गमण निवारि,
मोरुउं हैअडलउं हरि लयउं, वइरी अ विरह म मारि. ५

मुं पंथि जातां मन वोलि हासउं,
सखी सखी मारि हुसिइ विषासउं,

* स्व. मो. द. देसाईनी नकलमां आ श्लोक आ प्रमाणे अशुद्ध स्वरूपमां छे. तेनुं मूळस्थान शोधी शकायुं नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देखां न दे नास्ति कवी सहू ए (?)
कोठींबडे काज सरइ कहू ए. ६

हांसला विण किसिउं सरोवर, कोइलिं विण किसिउं रान,
वालंभ विण किसी गोरडी, रहि रहि नाह अजाण. ७

इण रति कोइ न नीसरइं, मूरख तुं भरतार,
राउ पहूतु रिति तणउ, योवन पहिलउं भार. ८

वाउलउ अति मनोहर वायउ, चंदलउ रयणि ऊपरि धायु,
कंत कायर मत जाइसि घर छांडी, तइ जीवतइं
हउतइ हूं जि रांडी. ९

अहे मास वसंत रूलीआमणउं, कांमिनीनुं मन जाणि,
पूरि हरष धरि रहीनइ बालापण रस माणि. १०

कोइलि करइ टहूकडा, वइठडी आंवला डालि,
फागुणि घरि प्रीय मेल्हए, यौवन पहिलई अगालि. ११

म लवि कोइलि जोइलि ताहरी, ताहरी न राषि न दाषि तम हरी,
अधर लइ नख दइ मननी रली, हिव किहां विरह्यां मिलिउ वली. १२

अहे वुलसिरि वनि महिकए, वहिकए करणी अंछांह,
कांमिनी वेस नवा करइं, रूपि रे फागुणमाहि. १३

केसुअडा रूलीआमणा, भमरला रणझणकार,
चांपला चिहुं दिशि फलीया, वनि वहिकइ सहिकार. १४

चांपा तणे कुशमि मस्तक थिउं अगाही,
साही पयोधर धरी क्षण एक वाही,
विनाणगार मुझ गिउ विनाणी,
सिउं पूछीइ परघरि पीउं पाणी ? १५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केसूअडा रूलीआमणा, वूलीया गुहिर गंभीर,
इण रति कोइ न नींसरइं, तुं मनि जांणि आहीर. १६

वीलि बीजउरि अ मुरियं, भमरला रणझणकार,
वालंभ रहि न सकु, यौवन पहिलउ भार. १७

विरहिणी वशत पावस उल्हसइ, किहि कहुं सखी ! ए कुण दिसि वसइ ?
दिवस जाइ नवि जाइ रातडी, कहि कहुं सखी ! ए कुण वातडी. १८

जिम जिम फागु गाइइ, तिम तिम ध्रीअनि घाइ,
किसिउं करुं बहु बहिनुंए, मनि दुख हैइ न समाइ. १९

आठ पहुर निशि आवटउं, न सुणउं फागु नइ रास,
देखी सखी ! मोरुं हैयडउं रे, लोही बलइ न मांस. २०

माइ मोर वनमाहि कींगाइं, कंन कंत वली वली मनि थाइं,
दुःखसागरि पड्यां दिन जाइ, राति वयरणि किमइ न विहाइं. २१

विरह संतावए पापीउ, दाझए माझि शरीर,
तन मन यौवन विलसए, नयणि न सूकइ नीर. २२

जिम बालापणि पहिरणउं, कंति वीसारिय तेम,
च्यारि पहुर निशि आवटउं, चकवा चकवी जेम. २३

काम धाडि निसि माझिम धाइ, चंदलइं सुरत दुंदभि वाइ,
स्यउं भणी घरधणी धरि ढीली, वीनवइ सजन लाडगहेली. २४

नयणे न देखउं ए नाहलु, हैअडइ न सांभरइ हेज,
आंसूअडां न ऊगाइआ, रोइ रोइ भीनी अ सेज. २५

सेज तपइ विरहु दहइ, हैअडलइ खटकइ हार,
एक ज वालंभ पाखइ सुंनउ सघलउ संसार. २६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तपइ तलाइ खटकइ कलाइ, न सकुं सही सूकडि अंगि लाइ,
विनाणगारु मुझ गिउ विनाणी, सिउं पूछीइ माधव देवि आणी. २७

देव ! दोहिला दिन नींगमउं, फाटि रे हैअडा ! कठोर,
माझिम राति मुंकइ, कांपए काजलकोर. २८

प्रीय संदेसउ पावीउ, ऊभीय खडकीय बारि,
पाडलपरिमल वहिकइ, भमरुला रणझणकार. २९

जलदनइ जल जांबूअडां गलइ, घर भणी संधि पंथीअडा पुलइं,
इम जइ कहिउं वलि मोरडा, जल भिंतरि छइं पाथर कोरडा. ३०

एक मनु घरि आवि रे, मेल्हि हैआनु मयल,
स्त्रीरस जीणि न माणीउ, पुरुष नहीं ते बयल. ३१

चांदलां करि चांद्रिणउं, मोरुं वयणु सुणे जि,
एक संदेसु माहरु, वालंभ रेसि कहे जि. ३२

ऊनया जल नदी जिम जोउं, 'नाहु नाहु' भणती निशि रोउं,
एउ दुख सखी ! ए कहुं कहि आगइ ? प्राणनाथ मुझ मैथुन मागइ. ३३

जीह वयणि प्रीय दूहविउ, ते मनि परहा वीसारि,
इसउ संदेसु तुं तहि झूरइ घरनीं नारि. ३४

चांद्र कन्हेली आ चांद्रिणी, वहिनपणउं किरि माइ,
इसउ संदिसउ तुं कहे, हुं तस लागी अ पाइ. ३५

रे चांदलां रुउणि (?) कृपा करि तुं जि मोरी,
रे पापीआ प्रगट थाइ म दासि तोरी,
जु भेटिसि हरि वदन नीक खेरी (?)
भूली भमउं प्री रम्यु मुझ चित चोरी. ३६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुणउ रे सही अ समांणी अ, समिणडउं निसिभरि दीठ,
हसीय हसी प्रीय रीझवुं, प्रीय सेजडी अ बइठ. ३७

जाणइ जइ मुझ प्रीय आविउ नइं गलि घालीय बांह,
ऊठीय प्रीय प्रीय करती, न प्रीय न गलि बांह. ३८

अहनिसि गुण गाउं, चांदला मांड लाउं,
विमरि पडहु वाउं (?), कान्ह बीजउ न चाहुं,
सखि क्षण एक न सूती, प्रीयसिउं हउं विगूती,
मन रसि खूती, एकली हुं विगूती. ३९

हव पूछउं पंडित जोसीय, किस्या ग्रह किसी छइं रासि?
धूलहडी दिन पूंनिम होलीय फागुण मासि. ४०

इसइ समइ प्रीय आविसि, हैयडलइ जयजयकार,
गोरीय वचन सांभली करी, कांमिनि करइं शृंगार. ४१

फाली भली ओढणि अंगि रेटइ,
आवी रही जु तुरणी त्रिभेटइ,
हुं हेल देतां पडी जि खेटइ,
जाणउं विदेसी मुझ कंत भेटइ. ४२

अहे हरखि कामिनी अ निहालए, नाहु कि आवणहार,
अंगि सुरंगु कांचूउ अनइ अमूलिक हार. ४३

अगर कपूरिहि अरचिउं रचिउं देह शरीर,
करीयलि कंकण खलक्कइं, झलक्कइं पाइ मंजीर. ४४

कडिउ लगावि मेघवनी जि पटुली,
लई कपूर करि पांन तणीं जि कुली,

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इसि सेइ सुकडि लेइ कणारि (?),
जु भेटिसि मदनमूरति तुं म मारि. ४५

मागि भरइ सरि मावटी, मस्तकि भरीयां[1] खुप,[2]
भमहडीए भमरा भमइं, चांद्र[3] यसउं[4] मुखरूप[5]. ४६

आंखडीए[6] रस कजल[7] करइं नवेरु[8] मार,
कांनि मोतीलग खींटली,[9] कंठि नगोदर[10] हार.[11] ४७

होठ[12] सिउं हठ करइं परवाली, वेगिलइ लहिकइ जिम पाली,
मुख[13] यसुं[14] पूनिमचांदलु,[15] मंत्रि[16] कान्ह[17] मेलवि कालु.[18] ४८

चंदनि[19] भरीय[20] कचोलीय मुंकीय[21] सेज[22] विच्छाहि,[23]
इसइ[24] प्रीय आवीउ, हीडलइ हूअउ उच्छाह. ४९

हसी[25] हसी पूछउं वातडी, प्रीय सेजडी वइठ,
सर्व सु अंति समो सम्यउं, वीसरिउं दक्ख ऊवीठ. ५०

---

१ भरीआ. २ ब्रूप. ३ चंद्र. ४ यसूं. ५ मुषि रूप. ६ आंपडीए. ७ कज्जल. ८ नवेरा. ९ पीटली. १० एकाउलि. ११ आ पंक्ति पछी वस्त्रपट पर लखायली हस्तप्रत (ओळिया)मां आ पंक्ति मळे छे: 'सोवन दंत दाडिम यस्या वाली, वीणादंड यम लहिकइं काली.' १२ आ पंक्ति वस्त्रपट पर लखायली प्रतमां नथी. १३ रापडी. १४ यम. १५ पूनिमचंदलु. १६ मित्र. १७ काह्न. १८ कंथलु. १९ चंदन. २० भरी अ. २१ मूकीय. २२ सजन. २३ विचारि. २४ आ पंक्ति ओळियामां आ प्रमाणे छे: 'अचींत्यु प्री आवीयु, हेयडलइ जयजयकार.' २५ मुख्य पाठनी ५०मी कडीनी बन्ने पंक्तिओ ओळियामां नथी; पण तेमनी जग्याए ओळियामां नीचे प्रमाणेनी पंक्तिओ छे:

कांचूआ कसण त्रूटी गयां, उरि अंगि हरिष न माइ,
हस्त सी हसीय प्री रीझव्यु, प्रीय स्यूं रहीय गलइ लागि.
किंशूक स्यूं वहिन वाल सवइं वीहावी,
ऊछंलइं आंचल लेइ आकुलांवी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कांचू तणां कसण ग्यां[1] त्रटकइं जि त्रूटी,
चांपां पड्यां वीणि थिका[2] विछूटी,
दीइ[3] घणु हरष हूउ ति वारइ,
सेज मिलि प्रेतम जिणि वारइ. ५१

सोल कला ससि[4] चांदलु,[5] रोहिणि तुं[6] वर[7] जाणि,
क्षणि[8] एक रइणि[9] विहाणि,[10] [चंदला][11] म करि विहांण.[12] ५२

रे कूकडा ! वासि म[13] इणि[14] रातिइ,[15] स्त्री[16] जागि तिवि करि रे कांइ ताति ?

सुरावियोग धिर मुंज रथि राणु, लेइस मुंजर देस खाणउं[17] (?) ५३

अधर तंवोली रंगीया,[18] मरुअ[19] सोहावा[20] कंत,[21]
सहीयरमाहि[22] रमंती[23] ए, रंगिहिं भीनला दंत. ५४

रसीया रसि वेध्या[24] रहि,[25] भमर[26] भमीं[27] रस[28] लेउ,
रसक सवेध न जांणतां,[29] ते नर जीवइं कांइ ? ५५

[30]दिने दिने गच्छति नाथ! यौवनं, यभस्व नित्यं यदि शक्तिरस्ति ते ।
मृताय को दास्यति पिण्डसन्निधौ तिलोदकैः सार्धमलोमशं भगम् ॥ ५६

---

१ पंक्तिना उत्तरार्धमां शब्दोनो क्रम आ प्रमाणे छे : 'त्रटकइं गया त्रूटी.' २ थ्या. ३ ५१मी कडीनी छेल्ली बे पंक्तिओ ओळियामां नथी. ४ शश. ५ पूनिमचंदलु. ६ तूं. ७ घरि अ. ८ क्षण ९ रयणी. १० विहाणीय. ११ स्व. मोहनलाल देसाईनी नकलमां आ स्थळे 'अंसावइं' शब्द छे पण ते अर्थहीन होवाथी ओळियामां मळतो 'चंदला' शब्द मुख्य पाठमां लीधो छे. १२ विहाण. १३ 'म वासि' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. १४ माझिम. १५ राति. १६ स्त्रीय. १७ ओळियामां पण आ पंक्ति नीचे प्रमाणे अशुद्ध रूपमां छे : 'राजयोग धर मंजरि रथ्य राणु, लेईस मंजरि हैइ देष आणु.' १८ रंगीआ. १९ मरूंअ. २० सलूंणा. २१ कंथ. २२ सहीअरमाहि. २३ रमंतीय. २४ रसवेध्या. २५ भमइं. २६ भमरा. २७ भमंइ. २८ घर. २९ जाणइ ए. ३० ओळियामां आ श्लोक मुख्य पाठनी ५७मी कडी पछी आवे छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गोरी अ बे रमइं, करइं[1] नवेरा भोग,
अणहिलवाडी[2] पुर पाटणि,[3] वसइं ति वेधीया[4] लोक.[5] ५७

विरहि[6] वसंत[7] सो आवीउ,[8] फागुणि[9] तरु[णि][10] गाइं,[11]
राज करू[12] रसीयं[13] घणुं,[14] सरसति तणइ पसाइ.[15] ५८

॥ इति विरह देसाउरी फागु वसंत समाप्त ॥[16]

---

१ करइ. २ अणहलवाडइ. ३ पाटणिइ. ४ सवेधी. ५ आ कडी पछी ओळियामां नीचेनी कडी मळे छे:

धनि धिन पाटण नगर रे, धिन धिन फागुण मास,
हैयड रस गोरी घणा, घरि घरि रमीइ रास.

६ विरहु. ७ वसंतिइं. ८ आगलु; आ शब्द पहेलां मुख्य पाठमां मळतो 'सो' ओळियामां नथी. ९ फागण. १० तणइ; आ शब्द पछी ओळियामां 'मिसिइं' शब्द मळे छे. स्व. देसाईनी नकलमां 'तरुसिं' एवो अशुद्ध पाठ मळे छे. ११ गाइ. १२ करु. १३ रसीआ. १४ घगूं. १५ आ कडी पछी ओळियामां नीचे प्रमाणेनो अशुद्ध संस्कृत श्लोक छे:

श्लोक

पश्य पश्य [म]म लिंगास्थितं दक्षणाय चितियो मंडलं।
मंधमंमुं परिधाय कुंचकी दहि दहे मम मैथुन प्र[प्रि]ये॥

१६ ओळियामां पुष्पिका आ प्रमाणे छे:

'॥ इति विरह देसाउरी फागु समाप्तू॥'

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३७]

अमररत्नसूरि फागु

(विक्रमना सोळमा शतकनो पूर्वार्ध)

अहे केवलकमलां राजए, छाजए जगतदिणिंद,
अहे नीलवर्ण्ण रलीआमणु सुहामणु पास जिणिंद. १

पणमीय तासु प्रभाविहिं भाविहिं गुण गाएसु,
श्रीअमररत्नसूरिराजा ताजा जई वांदेसु. २

अहे श्री-श्रीमाल वखाणउं, जाणउं ज्ञातिसिणगार,
तहुणा साहु आनंदन नंदन लक्षणसार. ३

मरगदि मानस कर्मिणि धर्म्मिणि सत्त्व अपार,
जीणि लिवराविउ चारित्र पावित्र छूंछ कुमार. ४

विनयकीर्त्ति अभिरामिहिं नांमिहिं जाणउ एउ,
ग्रंथ अनेक वखाणए, जाणए अगमभेउ. ५

श्रीहेमरत्नसूरि तूठा, वुठा अमीरसधार,
सइं हथि सूरिमंत्र आपिउं, थापिउं गच्छआचार. ६

ततक्षणिं मन आणंदिहिं छंदिहिं पुहता संघ,
नयर सहू पालइ उत्सव, अभिनव वर्त्त्या रंग. ७

श्रीअमररत्नसूरिगुरु गरूआ, सरूआ जासु उवएसु,
पनर तेरोतरइ बूझवइं, रंजवइं देसविदेस. ८

चालइं भूमि निहालता, पालता पंचाचार,
तपि ऊतारी उअचट, चउपट जीणि हणिउ मार. ९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तसु मित्र वाहरइं धायउ, आयउ मास वसंत,
वनि वनि वनस्पती गहगहइं, महमहइं मउर लगंत. १०

तीणि वेलां रसि राचइं, साचइं रमणि रमंति,
वस्त्राभरण सिणगारिहिं भारिहिं तनु त्रहकंति. ११

अहे ललना ललकइं लहरइं, पहिरइं जादर चीर,
झलहलइं हार नगोदर, सहोदर मन्मथ वीर. १२

तीहं करि कंकण खलकइं, झलकइं झामर माटि,
पाए नेउर झमझमइं, घमघमइं घूघरी घाटि. १३

झीलइं एकि खडोखली मोकली अहवि खंड,
हींचइं हेजि हींचोले, कचोलि धरइं सिरिपंड. १४

मयणराय हव विस्तरिउ, गहबरिउ करइ कल्लोल,
प्रीअ विरहइं देसंतरी, सुंदरी मनि चक्कडोल. १५

संपत्ति कारणि जिणवर मुणिवर मनि आणंति,
श्रीअमररत्नसूरि प्रसंगिहिं रंगिहिं गुण गायंति. १६

फागुण फाग सींदूरिहिं पूरिहिं सर वरि सार,
भगतिहिं सुगुरु मल्हावउं, फावउं जिम सवि वार. १७

श्रीअमररत्नसूरि मनोहर सुहगुरु वालकूंआर,
स्तवतां भविअण, अन्ह घरि, तन्ह घरि जयजयकार. १८

॥ इति श्रीअमररत्नसूरिगुरु फागु ॥ छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[३८]

जयशेखरसूरिकृत

द्वितीय नेमिनाथ फागु

(सं. १४६० आसपास)

पणमिय शिवगतिगामीय, सामीय सवि अरिहंत,
सुरनरनाहनमंसिय, दंसियसयलदुहंत. १

गाइसु मण अणुरागिहिं फागिहिं नेमिकुमार,
जिणि जगि सयल विदीतउ, जीतउ भुजबलि मारु. २

बारमई वर नयरिय, वइरिय वारण सार,
कंचणमणिमय सुंदर मंदिर पोलि पगार. ३

मणवंछियसुरपायव, जायवकुलनहचंदु,
तहिं अरिदलवलु टालइ, पालइ राज मुकुंदु. ४

बंधव तासु सभाविहिं भाविहिं भवह विरत्तु,
नेमीसरु सिरिकुलहर, जलहरसामलगत्तु. ५

संख पूरि जगु बहिरिअ, हरिउ नादिहिं मेहु,
जिणि भुयदंडि पयंडिहिं किउ केसवबलछेहु. ६

समुदविजय-सिवअंगजु, अंगि जु दसधणुमाणु,
खीजइ नारी नामिहिं, कामिहिं अमलियमाणु. ७

रंभ समाणिय राणिय सरिसउ देव मुरारि,
परिणय काजि मनावइ, नावइ नेमि विचारि. ८

विहसिय रतिपति ऋतुपति तउ अवतरिउ वसंत,
भुवणपराजय संमुहु वम्महु चलिउ हसंतु. ९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राग वसंतह अवसरु नवसरु जाणिय गाइ,
फलि दलि कुसुमिहिं सोहइ, मोहइ मनु वनराइ. १०

केलिजलि कमलिणि लहकइ, बहकइ मलयसमीरु,
वाणि मू मधुरि म दाखइ, भाषइ कोमल कीरु. ११

कोइल केलि निहालिय बालिय मेल्हइ मानु,
भमइ सु भमरउ रुणिझणि रुणिझुणि झुणिहि सगानु. १२

दीसइं विहसइय तरुवर, सरवर कमल सुगंध,
पीजइं ससिकर नयणिहिं, रयणिहिं मयण सुबंधु. १३

उत्तरचारिउ दिणयरु, कणयर कुसुमि विकासु,
चंपकु चमकइं चारिम, दाडिमफलि अहिलासु. १४

गोरिय संगिहिं हरिसिय विहसिय, हसिय अशोक,
पेषिय जिम परिपंथिय पंथिय पंथि सशोक. १५

किंसुउ कानि विहसइं, दीसइ जेम हुयासु,
जो तरणी विणु सकिउ झलकिउ एउ हयासु. १६

दस दिसि वासइ सुविमलि परिमलि वउलु विसालु,
वेउलु वासिहिं विलसइ, अलिसय सेविय-साल. १७

कुसुमइं मेल्हिय केतकि, कौतुकि विलसइं भृंग,
वासंतिय अति सुरहिय, विरहिय हियइ विरंग. १८

देखिय मधुरसपिंजरि मंजरि वर सहकारि,
बोलइं पंचम रागिहिं रागिहिं कोइल नारि. १९

दमणउ मरुयउ तरुणिय करुणिय गंधनिवेस,
जा विहसइं वर सालइ, मालइ वंचिय एस. २०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विरहिणिजनमनु कांपइ, चांपइ भुवणु अणंगु,
बहलिय महलिय केलिहिं, केलिहिं कामिय रंगु. २१

निय निय कंतिहिं सरसिय सरसिय खेलइं नारि,
गाइं मधुर निनादिहिं, वादिहिं छांडइं वारि. २२

दाहिण पवनिहिं माचइं, राचइं नारी कंति,
ऊगटणउं मन नंदनि चंदनि करइं वसंति. २३

विलसइं नव नव भंगिहिं रंगिहिं यादव लोक,
लाछिलतां फलु लीजइ, कीजइ यौवनि रोक. २४

भास—अवर दिवसि खड्डोखलिय खेलइ तिहुयणनाहो,
माइताइं वंधवि वलिहिं मन्नाविउ वीवाहो. २५

अहे बारमई नयरीय लोय हुय हरिस-रमाउल,
राउलि देउलि हाविभावि तउ नाचइ पाउल,
वहलिय छाडइ ठामि ठामि वर वंदनमाला,
घरि घरि खेलइ रास भास ललवलती बाला. २६

केसवि मागिय उग्रसेनधुय राजल नामिहिं,
सहजिइं सारु सरीरु जासु संपूरिउ कामिहिं,
सिरु वरि विउल विसाल वेणि सुललिय सुकुमाल,
लाडिय लुहुडिय अद्धचंद सम लडह निडाल. २७

सोहइ कांनि कपोल कंति लोयणि अणियाले,
सरलउ नासावंसु, होठ विहि विहिय प्रवाले,
वलइ वीणा वेणु वंसु समु कंठि निनादो,
पीण पओहरजुयलु करइं करिकुंभ विवादो. २८

भास—राजलदेविय भुयजुयलो नलिणनाल सुकुमालु,
अरुणु सुरेहइ पाणितलो, नाइ अशोक प्रवालु. २९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तिवलिय सुललिउ उयरदेसु, पुण नाहि सल्लणिय,
देखिय विउलु नियंबबिंबु, शिरु कवणि म धूणिउ,
करिवर शूंडादंड सरिस ऊरूय सच्छाया,
कमल सुकोमल सरल तरल अंगुलि जसु पाया. ३०

रहिय सरूपारंभि रंभ रति रति मेल्हाविय,
जिण सोहागिं गमारि गउर गारिवउ गलाविउ,
रूपि निरूपम सहजि कुमरि यौवनि गहगहए,
चंपककुसुम सही विसारु, परिमलि महमहए. ३१

अह सावण सिय छट्टि चलिउ पहु मोहि अमोहिउ,
गिरिवर गुरयइ गडयडंति गयवरि आरोहिउ,
भंभा भेरी पमुह तूर रवि गयणु बमालइं,
चालिय यादव तणिय कोडि सीकिरिय झमालइं. ३२

भास–ऊतारइं वर वहिनडिय साव सल्लणिय लूणु,

गेलिहिं गायइं गोरडिय मंगल दोसविहूण. ३३

तार तुषार तरंग तरल तेजिय टंपावइं,
यादव भूषित कुंभभारि भूतलु कंपावइं,
मेघाडंबरु धरइ छत्तु सुर चामर ढालई,
सिरि सुरचंपकखूंप मउड, मोतीसरि सालइं. ३४

कुंडल केउर हारु चारु चंदणि अणुलित्तउ,

.....*

* मूल हस्तप्रतमां कडी ३५, ३६ अने ३७ त्रूटित अने अव्यवस्थित छे. कडी ३५नुं बीजुं चरण पडी गयुं छे, कडी ३६ना बीजा चरणनो उत्तरार्ध अने चोथुं चरण नथी, ३७मी कडीना पहेला चरणनो पूर्वार्ध अने आखुं ये बीजुं चरण नथी. खूटता अंशो उमेरवा माटेनां सूचक चिह्न हस्तप्रतमां छे, पण हांसियामां क्यांय ए खूटता अंशो लखेला नथी.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नाही राजल जल सुगंधि, सिणगारु करेई.
सेत पटोली किसिमिसंत पहिलउं पहिरेई. ३५

सिरु कस्तूरिय भरिउ, भालतलि टीली दीपइ,
चलकइं कूंडलउ त.....
जिनवरु नरवर उग्रसेन घरतोरणि पत्तउ,
..... ३६

.....णइं कानि रविमंडलु जीपइं,
.....
मणिमय कंठिय कंठ पीउ उरि मोतिय हारो,
बिहु करि खलकइं कणयचूड कंकण सिणगारो. ३७

भास—कडि मणिमेहल किंकिणय, रुणिझुणि झणिहि झमाल,
रिमिझिमि करती नेउरिय पगि पिहरइ सा बाल. ३८

तउ सखि बोलइं, राइमति [तु]ह प्रियतमु आवइ,
सामल सरस सरीरु, रूपि रतिरमणु नमावइ,
तरुणिम लवणिम सहि सहुय तुह सारउं जाणउं,
अम्मिय अमिय समाणु आजु दिन बहिनि वखाणउं. ३९

जिम जिम सामिय नेमि नामु, राजल निसुणेई,
आठ भवंतरि नेहि हियउं तिम तिम विहसेई,
सीप समाणे नयणि नाहु मुहकमलु निहालइ,
मोह महीपति आण सबल सा बालिय पालइ. ४०

अह पहु पिक्खइ वाडमाहि सस सूयर बंधिय,
पूछइ पुण पउंतार पासि, गजगमणु निरुंधिय,
विलवइं एवड जीव काइं, सो कहइ जुहारी,
ए सवि होस्यइं तुम्ह विवाह गउरवि उपकारी. ४१

P. P. Ac. Gunratnasuri M. S. Jin Gun Aaradhak Trust

भास—तउ मेल्हावइ जीव सवे, देइय अभयपयाणु,
भवह विरत्तउ चींतवए, सामी सहजि सुजाणु. ४२

हा हा निय जिय काजि जीव जिय सहस विणासइं,
सुरतरु सरसु विसुद्ध धम्म विसयंध न पासई,
युवती यौवन देहु गेहु परिवार असारो,
कीजइं तिम तीहं काजि अवर जीवहं संहारो. ४३

धिग धिग विषयविकारवासि किम जगु धूतारिउ,
भूरि भवंतरि फेरि फिरइ इम हियइ विचारिउ,
गज रथ रंग तुरंग रमणि रस विसयविरत्तउ,
मयगलु पिल्लिय चलिउ नेमि शिवरमणीरत्तउ. ४४

भास—तउ मन्नावइं सिवि मिलिय यादव नेमिकुमारु,
नेमि न मानइ मानि रलिय लेवी संयमभारु. ४५

पेखिय वल्लहु चलिउ सोकि संकलिय रडेई,
नेहगहिल्लिय राइमए भूपीठि पडेई,
केसपासु करि मोकलउ सिरु उरु ताडेई,
भांभरभोलीय दलिय हारु हारव पयडेई. ४६

मूंकी जीवतिय आजु प्रिय जाइ किहांइ,
नयण पसारिय रहिय काजु काजलु गिउं वाइं,
सामी मान्या वचन, छेहु सहि काइं दिखाडइ,
अहवा वरसालइ विवाहु किम चडइ सिराडइ. ४७

अगणिय राजलवयणु दाण संवत्सर देई,
रेवय गिरिवरि सामिसालु संजमसिरि लेई,
चउपन दिणि अकलंक विमल केवलसिरि पामिय,
घणइ काजि राइमइ सरिसु सिवि पत्तउ सामिउ. ४८

P. P. Acharya Shri Kailassagarsuri Gyan Mandir Shri Mahavir Jain Aaradhak Trust

नवजुव्वणभरि सील सबलु सोहागिहिं सारो,
मणवंच्छिय फलदेउ देउ सिविदेवि मल्हारो,
सिरिमहिंदमप्पहसूरसीसि जयसेहरि कीजइ,
फागु एउ भवियणि वसंतऋतु रसिहिं रमीजइ. ४९

इति श्रीजयशेखरसूरिकृता श्रीनेमिनाथस्य फागुबंधेन स्तुतिः ॥ छ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शब्दकोश*

शब्दना अर्थनी पछी नोंधेला अंको अनुक्रमे आ संग्रहमांनो काव्यांक तथा एमांनी कडी सूचवे छे. उदाहरण तरीके, अणुरत्तउ शब्द पछी २–३ ए प्रमाणे अंकनिर्देश छे. अर्थात् ए शब्द बीजा काव्यमां (एटले के राजशेखरसूरिकृत 'नेमिनाथ फागु'मां) ३ जी कडीमां छे.

संक्षेपसूचि नीचे मुजब छे:—

अ.	अव्यय
अ. क्रि.	अकर्मक क्रियापद
अ. गुज.	अर्वाचीन गुजराती
अप.	अपभ्रंश
अर.	अरबी
क.	कन्नड
काठि.	काठियावाडी बोली
क्रि. वि.	क्रियाविशेषण
गुज.	गुजराती
ग्रा. गुज.	ग्राम्य गुजराती
जू. गुज.	जूनी गुजराती
दे.	देश्य
न.	नपुंसक लिंग
पं.	पंजाबी
पा.	पालि
पुं.	पुंलिंग
प्रा.	प्राकृत
फा.	फारसी
बं.	बंगाळी

* आ ग्रन्थमालाना पहेला बे ग्रन्थोना शब्दकोशना अनुसंधानमां आ कोश जोवा विनंती छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भू. कृ.	भूत कृदंत
म.	मराठी
मा.	मागधी
मार.	मारवाडी
वि.	विशेषण
स.	सर्वनाम
स. कि.	सकर्मक क्रियापद
सं.	संस्कृत
स्त्री.	स्त्रीलिंग
हि.	हिन्दी

अकह वि. 'अकथ्य, अवर्णनीय.' १४-७८ [सं. अकथ > प्रा. अकह]

अकारिम वि. 'अकृत्रिम, स्वाभाविक.' ७-१९ [सं. अ + कार्मिक ?]

अगाल पुं. 'अयोग्य समय, कवखत.' **अगालि** ३६-११ [सं. अकाल]

अचरिज न. 'अचरज, आश्चर्य.' २९-८३ [सं. आश्चर्य > प्रा. अच्चरिज्ज] जुओ **अचिरत.**

अचिरत न. 'अचरत, आश्चर्य.' १९-६९ [सं. आश्चर्य > प्रा. अच्चरिज्ज > अचिरज] जुओ **अचरिज.**

अछरायण न. 'नृत्य.' १८-३६ [सं. अप्सरायन ?]

अटालि स्त्री. 'अटारी, छज्जुं.' **अटालिहिं** २-१७ [सं. अट्टाली]

अडागर न. 'नागरवेलनां पाननो एक प्रकार.' २२-४५ ['अडागर पान'नो उल्लेख जूना साहित्यमां अन्यत्र पण मळे छे : 'वीडउं पत्र **अडागर** तणउं, परिमल करइ सुगंधइ घणउं'—'अंबड विद्याधर रास' (सं. १६३९), आदेश ३, कडी १०३; 'बीडां दीध **अडागर** तणां, वासवदत्ताइ फल घणां'—ए ज, आदेश ६, कडी २१६; 'पान **अडागर** काथो नइ चूनो.....एणइ इंधाणइ तंबोलीवाडो'—'वर्णवत्रीसी,' कडी १९]

अणमणउ वि. 'उदास.' २९-९ [सं. अन + मनस्]

अणरस वि. 'अरसिक'. ३६-२ [सं. अन + रस]

अणवट पुं. 'स्त्रीना पगना अंगुठानुं एक घरेणुं.' **अणवटइ** २२-२८.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अणुरत्तउ वि. 'आसक्त'. २-३ [सं. अनुरक्त]

अदबुद वि. 'आश्चर्यजनक.' १२-१० [सं. अद्भुत]

अनु अ. 'अने.' १-१ [सं. अन्यत् > प्रा. अण्णं > अप. अनु]

अभिग्गह पुं. [सं.] 'प्रतिज्ञा, धार्मिक नियम.' १-३. आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.

अभिष वि. 'नहि खावा जेवुं, अभक्ष्य.' ३०-३०० [सं. अभक्ष्य > प्रा. अभक्ख]

अमरी स्त्री. 'देवांगना.' ३२-६ [सं. 'अमर'नुं स्त्रीलिंग]

अमिय न. 'अमी, अमृत' १-१२ [सं. अमृत > प्रा. अमिअ]

अमीसारणी स्त्री 'अमृतनो प्रवाह.' १४-२ [गुज. अमी < प्रा. अमिअ < सं. अमृत + सारणी]

अरवल वि. 'पुष्कळ.' २२-५२. सर० जूनी गुज. 'परिघल,' 'परघल'= पुष्कळ.

अर्वसी स्त्री. 'उर्वशी, एक अप्सरा.' २२-२१ [सं. उर्वशी]

अलतउ पुं. 'अळतो, स्त्रीओना प्रसाधनमां वपरातो लाल रंग.' ४-४७ [हाथपग रंगवामां अळतो वपरातो ए प्रसिद्ध छे, पण प्रस्तुत अवतरणमां अळताथी होठ रंगवानो उल्लेख छे. सं. अरक्तकः > अलक्तकः > प्रा. अलत्तउ] जुओ **आलतउ.**

अलवेसर वि. 'सुन्दर, अलवेलो.' १८-१४, ३२-४, ३२-४६, ३४-५१. [अलव + ईश्वर = अलवेश्वर, अलवेसर. आ विषे चर्चा माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां **अलवेसर**.]

अलीअल पुं. 'भमरो.' **अलीअलि** १२-२ [सं. अलिकुल > प्रा. अलिउल]

अवज्झा स्त्री. 'ए नामनुं नगर, अयोध्या.' १०-२ [सं. अयोध्या]

अवल वि. 'मुख्य.' ३२-३५ [अर. अव्वल]

अवसर पुं. [सं.] 'समारंभ, सभा.' **अवसरि** ६-२७. ['दिवाने आम' जेवी राजसभा माटे गुजरातना संस्कृत प्रबंधोमां 'सर्वावसर' शब्दनो प्रयोग छे. जुओ

A.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'प्रबन्धचिन्तामणि' (सं. १३६१)नो श्री. दुर्गाशंकर शास्त्रीनो गुज. अनुवाद, पृ. ९ अने ६८. ई. स.नी १४मी सदीमां जूनी मैथिली भाषामां रचायेल ज्योतिरीश्वरकृत 'वर्णरत्नाकर' (पृ. ३५)मां पण 'राजा का सर्व्वावसर'नो निर्देश छे.]

असराल वि. 'मोटुं.' ३४-१८. [प्राचीन हिन्दी साहित्यमां आ शब्दनो प्रयोग जोवामां आवे छे. जेसलमेरना ग्रन्थभंडारमांना एक हस्तलिखित गुटकामां संकेतस्थाने जती युवतिना वर्णनमां "सोलही वनाय स्यामा, काम की कराल कामा, विरह धकारी तामा बनी **असराल** सी," ए पद्यमां प्रस्तुत शब्द छे. सूरदासमां एनुं 'असरार' रूप मळे छे—"करुणा करे यशौदा माता, नैनन नीर बहैं **असरार**." प्रा. गुज.मां 'मोटुं, पुष्कळ' ए अर्थमां 'अजराल' शब्द छे, जे 'असराल'नुं स्वरूपान्तर जणाय छे. अर० 'इज्राइल' उपरथी ए संभवे छे.]

अह अ. 'हवे.' १-२, २-२, २-८, ५-२, इत्यादि [सं. अथ] फागु-काव्योमां कडीना प्रारंभमां घणी वार 'अह' के 'अहे' आवे छे. जुओ **अहे**.

अहर पुं. 'होठ.' २-९ [सं. अधर] जुओ **अहिरु**.

अहव अ. 'अथवा.' ४-३२ [सं. अथवा]

अहवि स्त्री. 'सौभाग्यवती स्त्री, अविधवा.' १८-७९, ३७-१४ [सं. अविधवा > प्रा. अविहवा, अविहव, जू. गुज. अइहव. सर० वं. 'एयो.']

अहिरु पुं. 'होठ.' ३-१० [सं. अधर > प्रा. अहर] जुओ **अहर**.

अहूठ वि. 'साडात्रण,' गुज. 'ऊठ, ऊंठ;' सर० आंकमां 'ऊठांनो घडियो.' २-२२ [सं. अर्धचतुर्थ > प्रा. अड्ढुट्ठ. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां **अउठ**. त्यां उल्लेख करायेल सं. 'अध्युष्ट' शब्द जैन संस्कृतमां प्रयोजायेल छे. प्रा. 'अड्ढुट्ठ'नुं ए संस्कृतीकरण जणाय छे.]

अहे अ. 'हवे. २५-१, इत्यादि. काव्यांक २४नी बधी कडीओना आरंभमां 'अहे' छे. फागुकाव्योमां कडीना प्रारंभमां घणी वार 'अह' के 'अहे' आवे छे. [सं. अथ] जुओ **अह**.

अंच स. क्रि. 'बांधवुं, लटकाववुं.' **अंचइ** ४-१४; **अंचेई** ३-१५ [सं. अञ्च]

अंजल वि. 'काजळ आंजेल.' ३२-२२ [सं. अञ्जित]

P. P. Gunratnasuri M. S. Jin Gun Aaradhak Trust

अंतगड वि. 'ए ज जन्ममां मुक्ति पामनार.' ३०-१३७ [सं. अंतकृत् > प्रा. अंतगड] आ जैन पारिभाषिक शब्द छे.

अंतेउर न. 'राणीवास.' २-५, ३-७ [सं. अंतःपुर > प्रा. अंतेउर]

अंब पुं. 'आंबानुं वृक्ष.' २५-११ [सं. आम्र > प्रा. अंब]

अंबवण न. 'आंबावाडियुं.' **अंबवणि** ४-५१ [सं. आम्रवन]

°ला भूत कृदंतनो प्रत्यय. जुओ **आइला** 'आव्यो,' १४-४० ; **हरषीयला** 'हरख्यो,' १४-४० ; वळी **पसरीयलइ** 'प्रसर्यो,' १४-४०

आएस 'अनुज्ञा.' **आएसि** १-३ [सं. आदेश] जुओ **आयसु.**

आगलउ 'श्रेष्ठ,' गुज. 'आगलो.' २-३ [सं. अग्र > प्रा. अग्ग + लउ > आगलउ]

आछउ वि. 'झीणुं,' गुज. 'आछुं,' हि. 'अच्छा.' १-१०, **आछां** २२-२० [सं. अच्छ]

आपुण स. 'पोतानी.' ९-१६ [सं. आत्मन- > अप्पण-] **आपुली** ८-१. अहीं **°ली** षष्ठीनो प्रत्यय छे. जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण'ना शब्दकोशमां **आपण** तथा महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां **आपणउ.**

आभ अधारी स्त्री. 'कांचळी माटेनुं एक कीमती काळुं वस्त्र.' १२-७ ['अधारी' शब्द सं. अन्धकार > प्रा. अंधआर > अंधार + इ उपरथी संभवे छे. प्रस्तुत स्थाने 'आभअंधारी' कांचळीना रंगनी घेरायेला मेघ साथे तुलना करी छे ए सूचक छे. १७-१८ मा शतकमां रचायेला गोविन्दकृत 'मामेरा'मां (पं. १४३) 'मेघवरणां' नामे कीमती वस्त्रनो उल्लेख छे ते आ होइ शके ? मैथिली भाषाना 'वर्णरत्नाकर'मां (पृ. २१) पण 'मेघवर्ण' नामे वस्त्रनुं नाम छे, पण एनी साथे ज 'मेघउदुम्बर' नामे बीजुं वस्त्र पण छे, जे बतावे छे के 'मेघवर्ण'थी 'मेघउदुम्बर' (अर्थात् 'मेघाडंबर') भिन्न छे. 'पृथ्वीचंद्रचरित्र' (प्रा. गुज. का. सं., पृ. १०३)मां पण 'मेघवानां' छे. जुओ **मेघवनी.**

आयरिस पुं. 'आरीसो.' १०-१९. **आरीसे** १८-२५ [सं. आदर्श > प्रा. आअरिस]

आयसु पुं. 'आज्ञा, अनुज्ञा.' ६-१ [सं. आदेश > प्रा. आएस] जुओ **आएस.**

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आलतउ पुं. 'अळतो.' **आलतइ** ३-२१ [अळताथी स्त्रीना नख रंगवानो अहीं उल्लेख छे.] जुओ **अलतउ.**

आवश्यक न. [सं.] 'जैन धर्मानुसार सामायिकादि नित्यकर्म.' २९-१८.

आसा स्त्री. 'दिशा.' २२-४ [सं. आशा]

आहण पुं. 'प्रहार.' **आहणए** १-१८ [सं. आ + हन्]

आंकणी स्त्री. 'कवितामां आवती टेकनी पंक्ति.' २४-२, ३०-१२१, ३०-१८३, ३०-१९५, ३०-३१७ [सं. *अङ्कनिका > प्रा. अंकणिआ] जुओ **आंचली.**

आंग न. 'शरीरनो अवयव.' **आंगि** २०-४४ [सं. अङ्ग] जुओ **आंगी.**

आंगी स्त्री. 'जैन मूर्तिनो शणगार.' १८-६९. जुओ **आंग.**

आंचली स्त्री. 'कवितामां आवती टेकनी पंक्ति.' २८-२, ३०-१७२ [सं. अञ्चल > आंचल + इ] जुओ **आंकणी.**

आंबर न. 'कीमती वस्त्र,' गुज. 'अम्मर.' २२-२० [सं. अम्बर]

इगु वि. 'एक.' १०-२ [सं. एक = प्रा. इक्क > जू. गुज. इक. सर० पं. इक्क]

उअचट स्त्री. 'अभिमान' (?). ३७-९

उगट जुओ **ऊगटि**

उजा अ. क्रि. 'दोडवुं, चाल्या जवुं.' **उजाय** ३०-२३५. **ऊजाणी** 'दोडीने.' [सं. उद्याति > प्रा. उज्जाइ > जू. गुज. ऊजाइ-उजाइ. 'ऊजाण' सं. उत् + यान > उज्जाण उपरथी.]

उमाहो पुं. 'उत्साह.' ३-२३; **ऊमाहो** ५-१५. **उमायो** 'उत्साहित थयेलो, आसक्त.' ३४-१७; **उमाह्यो** ३२-२१; **ऊमाहीअ** २-२७ [सं. उष्मायित > प्रा. उम्हाइअ]

उरडउ पुं. 'ओरडो.' १२-११ [सं. अपवरक > प्रा. अउअरड] जुओ **ओरडउ.**

उलग स्त्री. 'सेवा,' गुज. 'ओळग.' ३०-२२ [क. ऊळिग 'सेवा.' क्रियापद तरीके पण 'उलग' आवे छे.] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां **अंगओलगूं** अने **उलग.**

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उलंभउ पुं. 'ठपको,' गुज. 'ओळंभो. **उलंभा** १९-८९ [सं. उपालम्भ > प्रा. उवालंभ]

उवट पुं. 'आडो रस्तो.' २-१६ [सं. उद्वर्तमन् > पा. प्रा. उवट्ट. 'उवट' शब्दमां सं. वर्त्मन् अंतर्गत छे ए कालक्रमे भुलाइ गयुं. परिणामे 'उवट वाटि' ('कान्हडदेप्रबन्ध, खंड १, कडी ४६) जेवा प्रयोगो मळे छे.]

ऊषल न. 'खांडणियो,' गुज. 'ऊखळ.' **ऊषलि** १९-४३ [सं. उदूखल > प्रा. उऊखल]

ऊगटि स्त्री. 'सुगंधी पदार्थोनो लेप.' १-१०, २-१४, ६-४६, १३-८, २१-२०, २२-३२; **ऊगटी** १८-२६ [सं. उद्वर्तन > प्रा. उव्वट्टण ?] सर० गुज. ऊगटणुं = पीठी के ते चोळवानी क्रिया]

ऊगाअ अ. क्रि. 'सुकावुं.' **ऊगाइआ** ३६-२५.

ऊदाल स. क्रि. 'बळात्कारे पडावी लेवुं.' **ऊदालीनइ** २९-१३३ [सं. उद्दालित > प्रा. उद्दालिअ. अर्वाचीन गुजरातीमां आ क्रियापद वपरातुं नथी. एना अन्य प्रयोगो माटे जुओ जयशेखरसूरिकृत 'त्रिभुवनदीपकप्रबन्ध,' कडी ३४; 'कान्हडदेप्रबन्ध' १-२१५, २-१५, २-१९, २-४४; 'अंबडविद्याधर रास,' ४-२८९, इत्यादि]

ऊनयु वि. 'उन्नत.' २५-३ [सं. उन्नत > प्रा. उन्नय]

ऊबीठ वि. 'निबिड, गाढ.' ३६-५०

एकलमल वि. 'अद्वितीय पराक्रमी.' **एकलमलि** ७-७; **एकलमल्लु** ५-११

ओरडउ पुं. 'ओरडो.' **ओरडइ** २६-९. जुओ **उरडउ.**

ओसीसुं न. 'सूती वखते माथा नीचे राखवानुं टेकण, ओशीकुं.' २६-२८ [सं. उत्शीर्षक > प्रा. उस्सीसअ]

कइलि स्त्री. 'केळ.' २२-४ [सं. कदली > प्रा. कअली]

°कउ षष्ठीनो प्रत्यय. ८-१७, ३५-१; **°कओ** ३५-५; **°की** ३५-२५ [आ प्रत्यय जूनी गुजरातीमां पण विरल छे, पण क्वचित् एना अन्य प्रयोगो मळे छे, जेम के 'कान्हडदेप्रबन्ध' १-७८ मां 'भाजी देसं देवकइ पाटणि दल दीपंता आव्या.']

कउतिग न. 'आश्चर्य.' **कउतिगि** १-१७ [सं. कौतुक]

P. P. Gunratnasuri M.S. Jun Aaradhak Trust

कउलिउ पुं. 'पंजो,' सर० गुज. 'कोळियो.' **कउलिए** २०-९ [सं. कवलक]

कचपच स्त्री. 'ककळाट.' ३०-८६

कचोलु न. 'प्यालो.' **कचोला** १-१४, २९-६६, २९-१२१; **कचोलि** ३७-१४ [प्रा. कचोलअ, गुज. 'कचोळुं'] जुओ कंचोला.

कडक्ख पुं. 'प्रेमभरी वांकी दृष्टि.' ६-४७; **कडक्खहं** २-१७ [सं. कटाक्ष > प्रा. कडक्ख]

कडख स. क्रि. 'आंखनो कटाक्ष करवो.' **कडखइं** २-१७

कणइअर पुं. 'करेणनुं झाड.' २२-२०; **कणयर** १४-४६ [सं. कर्णिकार > प्रा. कण्णिआर, कणिआर]

कन्हेली अ. 'पासे, कने,' सप्तमीनो अनुग. ३६-३५ [सं. *कर्ण > प्रा. कण्णे + ल (स्वार्थिक प्रत्यय) + इ. जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण'ना शब्द-कोशमां कन्हइ.]

कबांन स्त्री. 'कामठुं, धनुष्य.' ३२-२२ [फा. कमान]

कयवार स्त्री. 'स्तुति, प्रशस्ति.' १०-१६ ['पृथ्वीचन्द्रचरित्र' (प्रा. गुज. का. सं, पृ. ११३)ना नीचेना अवतरणमां आ अर्थ तद्दन स्पष्ट छे—'करइ भट्ट कइवार' (भाट स्तुति करे छे). मैथिली भाषाना 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थमां (पृ. ४४) भाटना गुण वर्णवतां एने 'केवारी' (स्तुति करनार) कह्यो छे. 'वसंतविलास,' कडी ३०—'वउलि विल्लला महुअर बहु अ रचइं झणकार, मयण रहइं किरि अणुदिण बंदिण करइं कइवार.' एमांना 'कइवार' शब्दनो 'स्तुति' अर्थ संभवे छे.]

करयल न. 'हाथ.' १-४; **करीयलि** 'हाथमां.' ३६-४४ [सं. करतल]

करल पुं. 'वाळ, केश.' २२-३५ [सं. कुरल] जुओ कुरुल.

करहु पुं. 'ऊंट.' २५-१७ [सं. करभ > प्रा. करह]

करंगी स्त्री. 'हरणी.' २२-२५ [सं. कुरंगी]

करिवाल स्त्री. 'तलवार.' ३-९ [सं. करवाल]

कलाउ पुं. 'कलाप.' २-८ [सं. कलाप > प्रा. कलाव]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कशिम न. 'फूल.' २२-३५ [सं. कुसुम] जुओ **कसिम** अने **कुशम.**

कसथूरिय स्त्री. 'कस्तूरी मृगनी नाभिमांथी मळतो एक सुगंधी पदार्थ.' ५-१२; **कसथूरी** १०-१५ [सं. कस्तूरिका]

कसिम २२-१. जुओ **कशिम** अने **कुशम.**

कहाणी स्त्री. 'वात, वृत्तान्त.' १४-७८ [सं. *कथानिका > प्रा. कहाणिआ]

कंचूउ पुं. 'कांचळी,' गुज. 'कंचवो.' १३-५, १३-१२ [सं. कंचुक > प्रा. कंचुअ]

कंचोला ३-९. जुओ **कचोलु.**

कंन पुं. 'कृष्ण, कान.' ३६-२१ [सं. कृष्ण > प्रा. कण्ह] जुओ **कान्हड.**

कंब स्त्री. 'सोटी, छडी.' १८-३५ [सं. कम्या] जुओ **कंव, कांब.**

कंभ पुं. 'घडो.' २२-२९ [सं. कुम्भ]

कंव ३-१३. जुओ **कंब.**

काठीया पुं. ब. व. 'जे कारणोथी जीव हितकारी ज्ञान प्राप्त न करी शके ते.' २७-१९ [आ कारणोनी संख्या तेर गणावाय छे, तेथी ते 'तेर काठिया' तरीके ओळखाय छे. आ जैन पारिभाषिक शब्द छे. 'उत्तराध्ययन सूत्र' (अध्ययन ३), निर्युक्तिगाथा १६०-१६१ अनुसार आ तेर कारण नीचे प्रमाणे छे— आळस, मोह, अवज्ञा, स्तंभ अथवा अहंकार, क्रोध, प्रमाद, कृपणता, भय, शोक, अज्ञान, व्याक्षेप अथवा किंकर्तव्यमूढता, कुतूहल (इन्द्रजालादिना अवलोकननुं), रमण (प्राणीओनी साठमारी). 'काठिया' शब्द सं. *कष्टिक > प्रा. *कट्ठिअ उपरथी व्युत्पन्न थई शके.]

कादम पुं. 'कादव.' १५-३०. [सं. कर्दम > प्रा. कद्दम. उत्तर गुजरातनी बोलीमां आजे पण 'कादम' प्रचलित छे.]

कान्हड पुं. 'कृष्ण.' ९-१६; **कान्हडु** ८-७ [सं. कृष्ण > प्रा. कण्ह > जू. गुज. कान्ह + स्वार्थिक 'ड.' सर० 'कहानडो,' 'कानुडो.'] जुओ **कंन.**

कावली स्त्री. 'बंगडी, चूडी.' १४-५३

कांब स्त्री. 'सोटी.' २२-२०. जुओ **कंब.**

P. P. Acharya Shri Vijay Kunratnasuri M... Jin Gun Aaradhak Trust

किर अ. 'खरेखर.' १-१२, १८-२१; **किरि** २-८, २-९, ९-१५. [सं. किल]

किरुण वि. 'करुण.' ३१-२ [सं. करुण]

किसोयरी वि. 'पातळी केडवाळी.' १८-५४ [सं. कृशोदरी]

कुरणी स्त्री. 'करेण.' २२-४० [सं. करेणु. एनां 'करुणी' अने 'करणी' एवां रूप जू. गुज.मां मळे छे; जुओ 'वसंतविलास,' कडी ८३. 'करुणी' रूपमांथी स्वर-व्यत्ययथी 'कुरणी' आवे.]

कुरल अ. क्रि. 'चीसो पाडवी ते' (खास करी पशुपक्षीओनी वाबतमां) **कुरलंत** ३-२४ [सर० 'कुंजडियां कुरलाइयां'—जूना गुज. दूहामां ('बुद्धि-प्रकाश,' पु. ८०, पृ. ७३). आ क्रियापद रवानुकारी होवा संभव छे.]

कुरुल वि. 'वांकडिया' (केशने माटे). ८-११ [सं. कुरल] जुओ **करल.**

कुशम न. 'फूल.' **कुशमि** ३६-१५ [सं. कुसुम] जुओ **कशिम** अने **कसिम.**

कुंअली वि. 'कोमळ,' गुज. 'कुंळी, कुंणी.' २२-२९, २२-३०; **कूअली** १३-३ [सं. कोमल, अपभ्रंशकाळमां एनुं 'कोवँल' उपरांत 'कुवँल'—'कुंअल' रूप थयुं होवुं जोईए, जे उपरथी 'कुंळुं,' 'कुंळी' आदि व्युत्पन्न थाय.]

कुंचकी स्त्री. 'कांचळी.' २८-४१ [सं. कञ्चुकी]

कूओ पुं. 'वहाणनो एक भाग, कूवाथंभ.' २४-२ [सं. कूप > प्रा. कूव]

कूवडि स्त्री. 'नानो कूवो, कूइ.' १-१५ [सं. कूप > प्रा. कूव + स्वार्थिक 'डि']

कृपागरु वि. 'कृपानिधान.' ४-१ [सं. कृपाकर]

केलव स. क्रि. 'खिलववुं, व्यवस्थित विकास करवो.' **केलवइं** ३४-३६; **केलवि** 'मिश्रित करे, मेळवे.' १०-१५; **केलवे** ३२-३२ [क. 'केळं' = 'काळजी लेवी, स्नेह करवो' उपरथी आ संभवे छे. प्राचीन म. मां पण 'केळवणे' आ अर्थमां छे.]

PP By Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Jin Gun Aaradhak Trust

केवल न. [सं.] 'सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सर्वज्ञता, केवलज्ञान.' ३०-६१; केवलनाणूं २-२७; केवली पुं. 'केवलज्ञानी.' ३०-१४६ [आ जैन पारिभाषिक शब्द छे.]

केवी वि. 'केटलाक, थोडाक.' १-१ [सं. केऽपि > प्रा. केवि. जू. गुज. मां 'केइ' रूप पण छे.]

केहरि पुं. 'सिंह, केसरी.' २९-३१ [सं. केसरिन्]

कैंगार पुं. 'मोरनो केकारव.' ३०-२३७ [रवानुकारी]

कोइलि स्त्री. 'कोयल.' २२-१, २२-४० [सं. कोकिला > कोइला]

कोकोला स्त्री. अर्थ अस्पष्ट. २२-५०

कोरण स्त्री. 'धूळनी आंधी.' २२-५०

कोसीसुं न. 'कोट उपरनुं शोभानुं नानकडुं शिखर.' कोसीसां १८-३० [सं. कपिशीर्षक > प्रा. कविसिस्सय, कइसीसय, कउसीसय]

खग्ग न. 'तलवार, खड्ग.' १-१२ [सं. खड्ग > प्रा. खग्ग. बीजी तरफ सं. खड्ग > प्रा. खड्ड, अप. खंडु > गुज. खांडु]

खडकी स्त्री. 'घर आगळनी बांधेली—बारणावाळी छूटी जगा, डेली.' ३६-२९ [दे. खडक्की]

खडग्ग न. 'तलवार, खड्ग.' खडग्गिण १-२५ [सं. खड्ग]

खडोखलि स्त्री. 'क्रीडा माटेनी नानी वाव.' २-५; खडोखली १७-१४, ३७-१४; षडोषली १८-'५८, ३०-२३०; खडुोखलि ८-७; खडुोखलिय १०-१८ [प्रा. खड्डाखड्डिया] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां षडोषली (खडोखली).

खव स. क्रि. 'दूर करवुं.' खवइ २२-५३ [सं. √ क्षप्]

खंच स. क्रि. [प्रा.] 'खेंचवुं.' खंचइ ४-१४

षासा न. 'एक कीमती वस्त्र.' ३०-१९७ [अर. खास = पोतानुं, अंगत. ते उपरथी 'विशिष्ट, उत्तम' एवा अर्थमां आ शब्द हाल वपराय छे. पण अहीं तेनो ए अर्थ नथी. प्रस्तुत सन्दर्भमां वस्त्रो साथे एनो उल्लेख छे. पू. मुनिश्री पुण्यविजयजी पासेनी 'भोजनविच्छित्ति'नी एक हस्तप्रतमां अन्य कीमती वस्त्रो साथे 'खासा'नो पण उल्लेख छे, तेथी अहीं आपेला अर्थनुं समर्थन थाय छे. जुओ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jain Aradhana Trust

—'पछइ भला वस्त्र पहिराया. ते कुण २ ? देवदुष्य वस्त्र, रत्नकंबल, पामडी, थिरमा, षीरोदक, मसजर, चीणी, वुलवुल, चसमा, अतलस, लाहि, अटाण, षासा, सेलां, मुलमुल, नरमा, दोरीआ, श्रीशाप, श्रीवाप, बास्ता, अधोतरी, महिंमुदी, दुदामी, भयरव, टसरीयां, मुगटा, सिणीयां, कसवी, जरवाप, मुखमल, कथीया, इलाइया, नारीकुंजर प्रमुख पचरंगी वागा पहिराया.']

षिण स्त्री. 'अत्यंत अल्प समय, क्षण.' ३१-२१, ३१-२७ [सं. क्षण]

षिमा स्त्री. 'माफी.' २७-२१ [सं. क्षमा]

खींटली स्त्री. 'स्त्रीना कानतुं एक घरेणुं;' एना उपर मोती पण जडातां. ३६-४७. महीराजकृत 'नल-दवदंती रास,' कडी १९२मां पण आ शब्द छे.

षुंप पुं. 'माथा उपरनो पुष्पनो एक शणगार.' १-१०, ३-१५, १४-६५; **खुंपु** २-१४, २-१८, ३-१९, ४-३०; **खूंप** ६-३८, २२-२८, ३६-४६मां **खूप** छे. [दे. खुंपा]

खेड स. क्रि. 'हांकवुं, चलाववुं.' **खेड्या** १९-२० [प्रा. खेड. सर० 'मने मारीने रथडा खेडो हो वाळा राजा रे'—अभिमन्युना रासडामां]

खेल अ. क्रि. 'खेलवुं, क्रीडा करवी.' **खेलय** ७-४०. **खेला** स्त्री. 'क्रीडा.' १-२७ [सं. खेल्]

षेस स्त्री. 'त्रति, ऊणप.' ३०-१२ [महीराजकृत 'नल-दवदंती रास,' कडी ३४९, ६२८मां आ शब्द 'द्वेष' अर्थमां वपरायो छे. दे. खस = 'खसवुं, सरकवुं' उपरथी.]

खेह स्त्री. अर्थ अस्पष्ट. २५-४ ['खेह' शब्द प्राचीन तेम ज अर्वाचीन गुजरातीमां 'धूळ, रज' ए अर्थमां प्रचलित छे. पण अहीं ते अर्थ बंधबेसतो नथी. अहीं कोकिलाने 'मदननी खेह' तरीके वर्णवी छे.]

गइंद पुं. 'हाथी.' १४-४१ [सं. गजेन्द्र > प्रा. गयंद] जुओ **गयंद.**

गउख पुं. 'झरूखो, गोख.' **गउखि** २-१७ [सं. गवाक्ष > प्रा. गवक्ख, गउक्ख. जू. गुज. मां 'गूख' रूप पण मळे छे.]

गउरउ पुं. 'वरनुं सन्मान करवा कन्यापक्ष तरफथी अपातुं जमण,' गुज. 'गोरव.' ३-२४ [सं. गौरव] जुओ **गुरव, गोरवु.**

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गण पुं, 'गुण, सद्गुण.' २२-४०, २२-५७ [प्रा. गुज. मां 'गण' शब्द वपराय छे.]

गयंद जुओ गइंद

गरभु पुं. 'गर्व, अभिमान,' प्रा. गुज. 'गरभ.' ७-३४ [सं. गर्व]

गलाल पुं. 'राता रंगनो सहेज सुगंधीदार भूको, गुलाल.' ३०-२०७ थी २२८ [फा. गुलाल. 'कान्हडदेप्रबन्ध,' खंड ३नी भटाउलीमां आ शब्द 'गुल्लाल' रूपे वपरायेलो छे.]

गहगह अ. क्रि. 'आनंद पामवुं.' **गहगहिया** १-३; **गहिगही** २२-१ ['सुगंधथी महेकवुं' एवा अर्थमां पण आ क्रियापद वपरायेल छे. रवानुकारी. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास,' कडी १००५]

गहबर अ. क्रि. 'गभरावुं.' **गहबरइ** २६-२४; **गहबरी** २६-२७.

गहिर वि. 'ऊंडो, गभीर,' सर० गुज. 'घेरो.' २-३ [सं. गभीर > गहीर] जुओ गुहिर.

गहिल्ली वि. 'घेली.' १-१६, २-१२ [सं. ग्रह + इल्ली. सर० हि. गहिली]

गंगाजलु वि. 'घोड़ानी एक जात.' **गंगाजला** १४-६६.

गंधव न. 'गान.' १०-१५ [सं. गन्धर्व > प्रा. गंधव्व]

गारडी पुं. 'साप उतारवानो मंत्र जाणनार.' ३०-१२६ [सं. गारुडिक > प्रा. गारुडिअ]

गिरट्ठ वि. 'महान.' **गिरट्ठा** ९-६ [सं. गरिष्ठ > प्रा. गरिट्ठ]

गुझ स्त्री. 'छानी वात.' २२-१४; **गूझ** २३-१० [सं. गुह्य > प्रा. गुज्झ. सर० गुज. 'गूझुं' = खीसुं.]

गुझबी वि. 'जुलमगार.' २६-६ ['गोझबी' एवुं पाठान्तर पण छे. अर. 'गजबी' उपरथी]

गुणपंचासि वि. ओगणपचास.' २९-१६३ [सं. एकोनपंचाशत् > प्रा. एगूणपंचास]

गुर पुं. 'गुरु.' २७-२३; **गुरह** १-३ [सं. गुरु. पारसी धर्मगुरुओनां नाम पाछळ केटलीक वार 'गुर' शब्द लागे छे, जेम के 'बहेरामगुर.' सर० गुज. गोर = पुरोहित]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गुरव पुं. १४-७० [सं. गौरव > प्रा. गउरव] जुओ **गउरउ, गोरवु.**

गुसाइउ पुं. ' स्वामी, पति. ' २०-४४ [सं. गोस्वामिन्. सर० हि. गोसाइं, पं. गुसाइं, म. गोसावी, गुज. गोसांइ, जो के जूनी गुज.ना प्रस्तुत प्रयोगनी तुलनाए आ वधा अर्वाचीन प्रयोगोनो अर्थफेर नोंधपात्र छे. अर्वाचीन प्रयोगोमां एनो अर्थ ' धर्मगुरु, ' ' साधु ' के एवो छे. आसामीमां अमुक कुटुंबना सभ्यने ' गोहांइ ' कहेवामां आवे छे (टर्नर, ' नेपाली डिक्शनेरी, ' पृ. १५०) त्यां एनो अर्थ उपर्युक्त ' गुसाइउ 'ने कंईक मळतो छे.]

गुहिर वि. ' गंभीर. ' ६-४२. जुओ **गहिर.**

गूजरडी वि. ' गुजरातनी स्त्री, गुजरातण. ' ७-२५ [सं. गुर्जर > प्रा. गुज्जर > गूजर + स्वार्थिक ' डी. ' ' गूजर ' के ' गूजरी 'नो अर्थ ' गोवाळ अने ' गोवालणी ' पण थाय छे ते गुर्जर प्रजा मुख्यत्वे पशुपालक हती ए सूचवे छे.]

गूजरात स्त्री. ' गुर्जरोनो प्रदेश. ' ३६-२४ [गुर्जर देश माटे प्रयोजायेलो आ ' गुजरात ' शब्द विक्रमना चौदमा शतकना पूर्वार्ध जेटलो जूनो होई अगत्यनो छे. आ प्रकारना अन्य प्रयोगो माटे तथा आ शब्दना लिंगनी चर्चा माटे जुओ ' इतिहासनी केडी ' लेखसंग्रहमां '" प्राचीन गुजराती साहित्यमां ' गुजरात 'ना प्रयोगो " ए लेख. आ शब्दनी व्युत्पत्ति ' गूजर ' + बहुवचनना अरबी प्रत्यय ' आत ' उपरथी अपाय छे. जुओ नरसिंहराव दिवेटिया, Gujarati Language and Literature, Vol II, पृ. १९४-२०२; तथा ' इतिहास-संमेलन निबंधसंग्रह, ' पृ. १-२४ मां ' गुजरात ' शब्दनी व्युत्पत्ति विषे श्री. बेचरदास दोशी अने श्री. केशवराम शास्त्रीना लेखो.]

गूडी स्त्री. ' नानी धजा, ' ६-२३ [आ कन्नड ऋणशब्द छे. चैत्र सुदि एकमथी शरू थता दक्षिणी नवा वर्ष माटे ' गुडी पडवो ' शब्द छे एमां ' गूडी ' शब्द धजाना अर्थमां छे. ए दिवसे धजानां तोरण बांधवामां आवतां. जूनी गुजरातीमां आ शब्दनो प्रयोग वारंवार मळे छे, जेम के—' त्रिभुवनदीपक प्रबंध, ' कडी २८०; महीराजकृत ' नळदवदंती रास, ' कडी १२३, ३९१; इत्यादि.]

गोकल न. ' गोकुल. ' १९-२, १९-५९; **गोकलि** १९-३४, १९-३६ [सं. गोकुल]

गोरवु पुं. २५३. जुओ **गउरउ, गुरव** [सं. गौरव > प्रा. गउरव]

P. P. Gunratnasuri M.S. Jun Gyan Aradhana Trust

गोव स. क्रि. 'छुपावुं.' ३-२९ [सं. गोप् > प्रा. गोव. जुओ 'सिद्धहैम,' ८-४-३३८—" जे गुण गोवइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु । तसु हउं कलिजुगि दुल्लहहो वलि किज्जउं सुअणस्सु ॥"]

ग्रैवेक न. 'ए नामनुं देवविमान.' २४-७ [सं. ग्रैवेयक. आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

घग्घरि स्त्री. 'घूघरी.' ३-२१; **घघरियालि** 'घूघरीवाळी.' २-२१; **घाघरि** १-१५ [सं. घर्घरी > प्रा. घग्घरी. एमांथी संयोगलोपे पूर्वस्वरदीर्घत्वथी निष्पन्न थयेलो 'घाघरी' (घूघरी) शब्द अन्यत्र पण जू. गुज.मां वपरायेलो छे.]

घरसूत 'घरनी व्यवस्था.' ३०-१७९ [सं. गृहसूत्र > प्रा. घरसुत्त]

घस्त पुं. 'गृहस्थ.' ३०-८६ [सं. गृहस्थ]

घाइ स्त्री. 'उतावळ, उत्सुकता.' ३७-१९ [सं. घात > प्रा. घाअ ?]

घाट पुं. 'स्त्रीओनुं एक रेशमी वस्त्र,' सर० गुज. 'घाटडी.' २७-४

°चइ षष्ठीनो प्रत्यय. **पूरवजनमचइ** २०-११ [सं. °त्यक > प्रा. °च्चअ; सर० प्रा. अह्मेच्चअ, तुह्मेच्चअ, आदि] जुओ **°ची.**

चउमास न. 'चोमासुं, वर्षाऋतु.' १-३; **चउमासि** १-२६ [सं. चातुर्मास > प्रा. चाउम्मास, चउमास]

चउमुख वि. 'चार मुखवाळुं, चार दरवाजावाळुं.' १८-११, १८-४० [सं. चतुर्मुख > प्रा. चउम्मुह. आ प्रकारनी जैन मूर्ति अथवा मन्दिरने 'चोमुखजी' कहेवामां आवे छे.]

चउक पुं. 'साथियो,' गुज. 'चोक.' ९-३ [सं. चतुष्क > प्रा. चउक्क]

चओसाल वि. 'विशाळ.' १८-६. आ शब्दनुं 'चउसाल-चुसाल' रूप पण वपरायेलुं छे. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास,' कडी १७५; 'पृथ्वीचन्द्रचरित्र' (प्रा. गुज. का. सं., पृ. ९६). [सं. चतुःशाला > प्रा. चउस्साल]

चकडोल स्त्री. 'संकल्पविकल्प.' ३७-१५ [सं. चक्रदोला > प्रा. चक्कडोला, चक्कडोल]

चटडां न. 'बाळको.' २९-११६ [सं. चेट उपरथी ?]

चतुरिम स्त्री. 'चतुराई.' २०-४ [सं. चतुरिमा]

P.P. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चमक अ. क्रि. 'चमकवुं.' चमकिय १-४; चमक्किय १८-१७ [सं. चमत्कृत > प्रा. चमक्किय. सर० गुज. हि. 'चौंकवुं.']

चरड पुं. 'चोर, लुंटारो.' ५-१३, ७-८; **चरडराउ** 'चोरनो राजा.' ६-५४ [प्रा. चरड < सं. चर + स्वार्थिक 'ट' जैन संस्कृतमां 'चरट' शब्दनो प्रयोग मळे छे.]

चव अ. क्रि. 'स्वर्गमांथी नीचे आववुं, पडवुं.' चवंति ३०-२३२; **चविनइ** २९-१५३ [सं. च्यव्]

चंपलु पुं. 'चंपानो छोड.' **चंपला** २३-९. 'चांपला' रूप जू. गुज.मां मळे छे—'चांपला तरूयरनी कली नीकली सोवन वानि' ('वसंतविलास,' कडी ३१) [चम्पक > प्रा. चंपअ + ल]

चाचर न. 'चोगान.' २८-१४ [सं. चत्वर > प्रा. चच्चर]

चामरहारी स्त्री. 'चामरधारिणी स्त्री.' १८-२७

चालि स्त्री. 'रूढि, चाल.' ३०-८५ [सं. √ चल् उपरथी]

चाह सं. क्रि. 'इच्छवुं,' गुज. 'चाहवुं. **चाहि** १९-८८ [प्रा. चाह] 'चह' क्रियापद पण आ अर्थमां जू. गुज.मां छे. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास,' कडी ९५.

चांद्र पुं. 'चन्द्र.' ३६-४६ [सं. चन्द्र]

चांद्रिणी स्त्री. 'चन्द्रनो प्रकाश, चांदनी.' २२-४४, २३-१

चांदरणी जुओ चांद्रिणी.

चित्रसाली स्त्री. 'ज्यां चित्रो गोठव्यां होय एवुं दीवानखानुं, चित्रशाला.' २२-२४, २३-१ [सं. चित्रशाला]

चित्रांम न. 'चीतरामण, चित्रकाम.' **चित्रांमि** १९-६७ [सं. चित्र + मयट् प्रत्यय]

चिंध न. 'निशानी.' ३-१८ [सं. चिह्न > प्रा. चिंध. सर० गुज. चेन]

°ची षष्ठीनो प्रत्यय. कुसुमांची १३-१२; जाचां १४-३२. जुओ °चह.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चीषल पुं. 'कादव.' चीषलि २८-८० [दे. चिक्खल्ल, म. चीकल]

चुलसी वि. 'चोराशी.' १०-४ [सं. चतुरशीति > प्रा. चउलसी]

चुहटुं न. 'बजार,' गुज. 'चौटुं.' चुहटि [सं. चतुर् + हट्ट > प्रा. चउहट्ट]

चेलुखेप पुं. 'आकाशमांथी वस्त्रोनी वृष्टि थवी ते.' ३०-२६५ [सं. चेलोत्क्षेप] जैन कथासाहित्यमां वर्णवेलां पांच दिव्यो पैकीनुं आ एक छे.

चैत्यपरवाडि स्त्री. 'अनुक्रमे मन्दिरोनी यात्रा.' ३०-६७ [सं. चैत्यपरिपाटी.] जैन धार्मिक परिभाषानो आ शब्द छे.]

चोल मजीठ पुं. 'चूडो रंगवा माटेनो लाल रंग, मजीठ.' ३०-१७५; चोल मजीठां ३०-१९८ [सं. मंजिष्ठा > प्रा. मंजिट्ठा. दक्षिण भारतना चोल प्रदेशमांथी आ रंग आवतो होई तेने 'चोल मजीठ' कहेता हशे? अन्यत्र पण जू. गुज. साहित्यमां मजीठने 'चोल मजीठ' तरीके वर्णववामां आव्यो छे (जुओ 'शब्द अने अर्थ,' पृ. १६३-६४). सर० गुज. 'लाल चोळ.'

छबक्क स. क्रि. 'धारण करवुं.' छबक्कइ ९-५

छयलु पुं. 'रसिक पुरुष, छेल.' २०-२७ [सं. छेक + इल्ल > प्रा. छेअ + इल्ल, छइल्ल] छयली स्त्री. 'रसिक स्त्री.' २०-१३

छरालउ वि. 'मस्त,' गुज. 'छरवाळो.' २०-२७

छावउ पुं. 'युवान.' २०-२७; छावी स्त्री. 'युवति.' २२-४३ [सं. शावक. सर० गुज. 'छैयो']

छिदमर वि. अर्थ अस्पष्ट. १९-४९

छीलर न. 'खाबोचियुं.' २५-६, २८-१२ [दे. छिल्लर]

जगीस स्त्री. 'इच्छा.' ३२-५०. केवळ पादपूरक तरीके, २९-१६६ [सं. जिगीषा 'जीतवानी इच्छा'. आ विशिष्ट अर्थने बदले जूनी गुज. मां 'जगीस' शब्द 'इच्छा' अथवा 'आकांक्षा' एवा सामान्य अर्थमां वपरातो थयो. ए अर्थ पण आछो बनतां ए शब्द 'सार' अने 'निरधार'नी जेम केवळ पादपूरक बन्यो, अने बोलाती भाषामांथी लुप्त थयो.]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जमलां अ. 'साथे, पासे.' १९-९५; **जमलि** १८-२, १९-७१, २२-२६; **जमलु** १९-७२; **जवलि** 'समान, जेवा.' ३५-३ [सं. यमल > प्रा. जमल. म. जवळ = पासे; जूनी गुज. मां 'जामलि' (< सं. यामल) पण छे. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास,' कडी १४५, १८३.]

जमुण स्त्री. 'यमुना नदी.' ५-२ [सं. यमुना] जुओ **जवणि.**

जवणि स्त्री. 'यमुना नदी.' ९-१८ [सं. यमुना > प्रा. जमुणा, जवुणा] जुओ **जमुण.**

जंग पुं. [फा.] 'समारंभ, आनंदनो प्रसंग.' २७-७, ३१-२८ [फा. 'जंग' = युद्ध; एमां थयेलो आ अर्थफेर नोंधपात्र छे.]

जात्र स्त्री. 'देवनी यात्रा तथा ए निमित्ते उत्सव.' ३०-९५ [सं. यात्रा]

जात्रणि स्त्री. 'यात्रिक स्त्री.' ७-५१ [सं. * यात्रिणी]

जात्रिगु पुं. 'यात्रिक.' ५-४ [सं. यात्रिक]

जादर न. 'एक प्रकारनुं सफेद रेशमी कापड.' ३-१९, ६-३९, ९-८, ३७-१२; **जादरु** ४-३०; **यादर** २१-११, २२-५२, ३०-२२१ [दे. जद्दर] जुओ **मरगयजादर.**

जानत्र स्त्री. 'वरयात्रा,' गुज. 'जान.' ८-२० [सं. यानयात्रा]

जिणहर न. 'जैन मन्दिर.' **जिणहरइ** २९-२५; **जिणहरू** १८-११ [सं. जिनगृह > प्रा. जिणहर]

जीप स. क्रि. 'जीतवुं, फत्तेह मेळववी.' **जीपइ** ६-३०, **जीपइं** १४-७; **जीपती** ३०-२२३ [सं. जित > प्रा. जित्त, जिप्प]

जूही स्त्री. 'जूईनो छोड. २२-९ [सं. यूथिका > प्रा. जूहिआ]

जेठी पुं. 'मल्ल, जेठीमल्ल.' ३०-२३६ [सं. ज्येष्ठिन्. जेठी अथवा जेठीमल्ल तरीके ओळखाती, मल्लविद्याने व्यवसाय तरीके स्वीकारनारी एक ज्ञाति गुजरातमां छे. जूना गुज. साहित्यमां 'जेठी' विषेना अन्य उल्लेखो माटे जुओ 'ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण' ए मारी पुस्तिका, पृ. ९-१२]

जेड अ. क्रि. 'विलंब करवो.' **जेडवा** १९-६. आ शब्द विषे चर्चा माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां **जेडि.** अर्वाचीन गुजरातीमां

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आ शब्द प्रयोगलुप्त छे, पण मेवाडमां हजी 'जेज' रूपे ते वपराय छे.

जोरो पुं. 'दोर, जुलम.' ३२-१८ [फा. जोर]

झंजीर स्त्री. 'बेडी.' २६-३० [फा. जंजीर]

झाण न. 'ध्यान.' १-२५ [सं. ध्यान > प्रा. झाण]

झाल स्त्री. 'काननुं एक घरेणुं.' २०-७; **झालि** १७-१६, २२-२०, ३१-९

झुणि पुं. 'अवाज.' ८-२२, १५-४८ [सं. ध्वनि > प्रा. झुणि]

झूमणूं न. 'एक प्रकारनो हार.' २२-२७

टंकाउलि स्त्री. 'एक प्रकारनो हार.' ३१-११; **टंकावलि** १७-१५ [सं. टंका + आवलि. 'टंको' ए जूना समयनो मुख्य शिक्को हतो (जे उपरथी गुज. 'टको' शब्द आव्यो छे); 'टंका'ना आकारनां चकतां आ हारमां गोठवता हशे, ते उपरथी एने 'टंकावलि' नाम मळ्युं होवुं जोईए.

टिचांगली स्त्री. 'टचली आंगळी, सौथी नानी आंगळी.' १९-४२

टूंडुउ वि. 'ठूंठो,' गुज. 'टूंटो.' ३०-३१

डसण पुं. 'दांत.' २२-१९, २२-२५ [सं. दशन]

डांलव अ. क्रि. 'देडकां अवाज करे ते.' **डांलवइ** २२-५३

डील न. 'शरीर.' २६-३५ [प्रा. डिल्ल]

ढीलिणि वि. 'दिल्हीनी रहेवासी स्त्री.' ७-२९

ढो स. क्रि. 'रजू करवुं, भेट धरवुं.' **ढोइ** २९-१२१; **ढोया** २९-२५ [सं. ढौक् > प्रा. ढोअ]

तक्खण अ. 'तत्काळ, ते ज समये.' **तक्खणि** ३-४ [सं. तत्क्षण]

तगतागु न. 'सुन्दरता.' १६-१७

तडकस वि. 'तंग.' २२-१६

तडक्क अ. क्रि. 'चमकवुं.' **तडक्कइ** ६-५० [प्रा. तडक्क. तडक्कार = चमकारो.]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तडूकुं न. 'स्त्रीनुं काननुं आभूषण.' **तडूकां** २२-२४ [सं. ताटंक ?]

तलावली स्त्री. 'नानुं तळाव, तळावडी.' १५-२० [सं. तडाग > प्रा. तलाअ + ली]

तलिया तोरण न. 'एक प्रकारनुं तोरण, तरिया तोरण.' ९-२

तवणु पुं. 'सूर्य.' १-१८ [सं. तपन > प्रा. तवण]

ताजा अ. 'तुरत.' ३७-२ [फा. ताजह्]

ताजिम स्त्री. 'मान आपवानी क्रिया, अदब.' ७-२६ [अर. तअजीम]

ताडंक न. 'काननुं कुंडळ.' ३-२० [सं. ताटंक]

ताड स. क्रि. 'पहेरवुं.' **ताडेइ** १-१३

तालोवीली स्त्री. 'व्याकुळता, उत्सुकता.' २६-२८ [के. तळोविल्लि, एना मूळमां सं. 'तलोपरि' जेवो शब्द हशे.]

तासतु पुं. 'एक प्रकारनुं चक्रचकित रेशमी कापड.' **तासला** ३०-२०० [फा. ताफ्तह्]

तित्थयर पुं. 'तीर्थंकर.' २-१ [सं. तीर्थंकर].

तिरिअ वि. 'पशु, पक्षी वगेरे प्राणीओ.' १५-२८ [सं. तिर्यक्]

तिरेह वि. 'त्रण रेखावाळो.' २-९; **तिरहेउ** ६-३१ [सं. त्रिरेख > प्रा. तिरेह]

तिलउ न. 'टीलुं, तिलक.' ९-६. **कुलतिलउ** ३१-१, ए स्थाने 'तिलउ'नो 'अलंकार, आभूषण' एवो अर्थ छे. [सं. तिलक > प्रा. तिलअ]

तिवरारि पुं. 'महादेव.' ८-१६ [सं त्रिपुरारि]

तिवल स्त्री. 'पेट उपर पडती त्रण रेखा.' २-१० [सं. त्रिवलि] जुओ **थीवलि.**

तिवल न. 'ढोलक.' २७-१२ [अर. तब्ल के तब्लह् ; सर० अर्वाचीन गुज. 'तबलुं.' जू. गुज. मां अन्यत्र पण आ शब्दनो प्रयोग छे. 'तिविलां झालर मेरु करडि कंसालां वाजइ'—'सप्तक्षेत्री रासु,' कडी ५०]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तुरणी स्त्री. 'तरुणी.' २७-४, ३६-४२ [सं. तरुणी]

तुरंगु पुं. 'लहेर.' २-१० [सं. तरंग]

तेय न. 'तेज.' २-३ [सं. तेज]

तोरण न. [सं.] 'शोभा माटे बारणां उपर बंधातो पांदडां वगेरेनो हार.' २-६, ६-२३. 'दरवाजो,' तोरणि १-४, ११-१, २५-१, ३१-५. तोरणे १८-४०.

त्रल वि. [सं.] 'एक स्थानेथी बीजे स्थाने जवानी शक्तिवाळो जीव.' ७-९

त्रसरी वि. 'त्रण सेर-रेखावाळी.' २२-२०

त्रिय स्त्री. 'स्त्री.' ७-९; त्रीनइ ४-१३ [सं. स्त्री]

थट्ट पुं. 'समुदाय.' ३-४. जुओ थाट.

थवक्क पुं. 'स्तवक, जथ्थो.' थवक्का १-१२ [सं. स्तवक]

थाट स्त्री. 'मोटो समुदाय, ठठ.' ४-४०; थाटि २७-२१ [सं.* स्थात. सर० गुज. हि. 'ठाठ,' म. 'ठाट' = भपको. जूनी गुज. मां 'ठाठ' शब्द 'समुदाय'ना अर्थमां पण छे : 'गयवर ठाठ चालता दीसइ, जोतां नावइ छेह' - 'कान्हडदेप्रबन्ध,' खंड २, कडी ८५. जुओ थट्ट.

थापणि स्त्री. 'अनामत.' १-१२ [सं. स्थापनिका > प्रा. थप्पणिआ, थापणिआ. अर्वाचीन गुज. थापण.]

थाहर स्त्री. 'स्थिरता.' थाहरि २२-८. आ अर्थ लक्षणाथी आव्यो छे. आ शब्दनो मूळ अर्थ 'स्थान' छे [सं. *स्थात > प्रा. थाअ, थाह + स्वार्थिक 'ड,' सर० गुज. 'ठार'] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्द-कोशमां थाहर.

थीवलि स्त्री. 'पेट उपर पडती त्रण रेखा.' २०-९ [सं. त्रिवलि] जुओ तिवल.

थुण स. क्रि. 'स्तुति करवी.' थुणीजइ २-२७ [सं. स्तुनोति > प्रा. थुणइ]

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दक्ख न. 'दुख.' ३६-५० [सं. दुःख]

दनी स्त्री. 'दुनिया.' ३०-४३ [अर० दुनिया. उत्तर गुजरातमां लोक-बोलीमां 'देश दनी' एवो प्रयोग प्रचलित छे.]

दप्पण न. 'अरीसो.' ९-२ [सं. दर्पण > प्रा. दप्पण]

दमामो पु. 'एक रणवाद्य, नोबत.' २७-१२; न. दमामां २८-५१ [फा. दमामह्]

दवाजो वि. 'आशीर्वाद आपनार.' दवाजा ३४-५३ [अर० दुआ + फा० गो = आपनार]

दसार पुं. 'समुद्रविजय आदि दश यादवो.' २-१५, ८-२ [सं. दशार्ह]

दस्तूर पुं. [फा.] 'कर.' २४-२

दाइजउ पुं. 'लग्न वखते वरकन्याने अपातुं द्रव्य.' २९-६० [प्रा. दाइज्ज-]

दाडिमहूला पुं. 'एक प्रकारनुं कीमती वस्त्र.' २२-४७

दादर पुं. 'देडको.' २२-५३ [सं. दादुर]

दिक्षणडी स्त्री. 'दक्षिणनी स्त्री.' ७-३०

दिदार पुं. [फा.] 'चहेरो, स्वरूप.' ३२-८, ३२-१०, ३२-१२, ३२-४५; **दीदार** ३४-३८

दिमसु पुं. 'दिवस.' ३-१७ [सं. दिवस. अहीं 'व'नो 'म' थवो नोंधपात्र छे.]

दिव न. 'चमत्कार, दिव्य.' ३०-२६५ [सं. दिव्य > प्रा. दिव्व]

दीकोडी स्त्री. 'दासी.' १९-८ [आ शब्द जूनी गुजरातीमां अन्यत्र वपरायो छे. 'कान्हडदेप्रबन्ध'मां जौहरना वर्णनमां ए शब्द निःशंक आ ज अर्थमां छे—" जइतलदे भावलदे उमादे अनइ कुमलादे राणी; जमहर तणी करइ सजाई वात हीयामाहि आणी. साथी घणी दीकोडी सूंडी, करइ आवीनइ वात; लोक भणइ अम्हे राउल ताहरा नहीं छांडउं संघात " (श्री. व्यासनी वाचना, खंड ४, वही ३२९-३०). आ शब्दनां पाठान्तर जुदी जुदी हस्तप्रतो अनुसार

CC-0. P.P. Gurumaharaj Collection. Digitized by eGangotri

'दीकोली,' 'दकोडी,' 'डीकोली,' एवां त्यां नोंधेलां छे. 'विमलप्रबन्ध' (चूलिका, कडी ६५)मां 'दीकोडी कोडी दस वीस, श्रांनी सार करइ निशिदीस' एम आ शब्द छे, अने ए काव्यमां खंड ९, कडी १३०मां 'दीकोलां' एवो नपुंसकलिंगनो प्रयोग छे. 'योगशास्त्र'ना सोमसुन्दरसूरिकृत बालावबोधनी हस्तप्रतमां 'दीकोला' एवो पुंलिंगनो प्रयोग छे—(१) 'ते कन्या दासदीकोला सहित ते ऋषिहूं दीधी.' (२) 'रीस लगइ दास दीकोला गाइ भइंसि बलीवर्दादिकहूं गाढउ बंध न करइ.' राजस्थानमां जागीरदारोनी जंगम मिलकत जेवा रावणा रजपूतो—खवासोने केटलीक वार 'डोगला' एटले के वर्णसंकर कहेवामां आवे छे. आ शब्दकुल सं. 'द्विकुल' उपरथी हशे ?]

दीनार पुं. 'एक प्राचीन सिक्को.' २९-१४५ [सं. दीनार, जे लॅटिन Denarius उपरथी छे.]

दीस पुं. 'दिवस.' १७-३ [सं. दिवस]

देउर पुं. 'दियर, पतिनो भाई.' १४-५४ [सं. देवर]

देवहर न. 'देवमन्दिर.' देवहरइ २९-१७ [सं. देवगृह > प्रा. देवहर, देअहर. गुज. दहेरुं]

देशन स्त्री. 'उपदेश.' ३०-१५१ [सं. देशना]

देसवरति स्त्री. 'श्रावकनां व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदिनो आंशिक त्याग.' ३०-६१ [सं. देशविरति. आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

देहचिंता स्त्री. [सं.] 'कुदरती हाजत.' २९-७१

दूमणी वि. 'दुखी, सचिंत.' २९-८९ [सं. दुर्मनस् > प्रा. दुम्मण]

दूव्वय स्त्री. 'पांडवोनी पत्नी, द्रौपदी.' ९-९, ९-१२ [सं. द्रौपदी]

दूहव स. क्रि. 'दुख आपवुं.' दूहवाणूं ३०-८८ [सं. दुःखापयति > प्रा. दुहावइ]

द्रूपद न. 'पद्यमां दरेक कडीने अंते पुनरुक्त थती पंक्ति, टेक.' २२-२ [सं. ध्रुवपद]

द्रेठि स्त्री. 'नजर, दृष्टि.' ७-३३, १८-२४, २५-६; द्रेठिहिं ३५-२२ [सं. दृष्टि]

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धणि पुं. 'पति.' ७-३ [सं. धनिन् > प्रा. धणि]

धणुं न. 'धनुष्य.' ६-२६ [सं. धनुष्]; **धनुहडी** स्त्री. १८-३५

धयवड पुं. 'पताका.' २-६, ४-२९ [सं. ध्वजपट]

धरि अ. 'प्रारंभमां.' २२-५५. [सं. धुर् 'धूंसरी,' पा. प्रा. धुर, जू. गुज. धुर, धुरि. सर० गुज. 'धरथी, धरमूळथी,' इत्यादि.]

धाडि स्त्री. 'आक्रमण, धाड.' ३६-२४ [सं. धाटी]

धिन अ. 'शाबाश, धन्य.' ३०-११३, ३०-२६६; **धिन्य** ३०-२६७ [सं. धन्य]

धीठी स्त्री. 'कपटी.' ३२-३१ [सं. धृष्टा > धिट्ठा]

धीरिम स्त्री. 'धैर्य.' १-५ [सं. धीर + अप. इम. सर० वंकिम, भोलिम, गाढिम, आदि]

धुव वि. 'स्थिर, निश्चल.' ३-२ [सं. ध्रुव]

धूअ स्त्री. 'पुत्री.' ३-८; **धूय** २-६ [जू. गुज.मां 'धू' अने 'धूअ' रूप पण मळे छे. सर० गुज. अने कच्छी 'धी.' प्रा. धूआ, धूदा < सं. दुहिता. पिशल एक प्राकृत रूप **दूधा** आपीने सं. *धुक्ता उपरथी ते व्युत्पन्न करे छे.]

धूलहडी स्त्री. 'फागण मासनी शुक्ल प्रतिपदा, धूळेटी.' ३६-४० [दे. धूलिहडी. सर० हि. धुलेंडी, म. धुलवडी. प्रारंभिक गुज.मां 'धूलहडी' शब्द मळे छे. जेम के, 'बहु विगोइउ, फेडिउ ठाउ, जिम **धूलहडी** केरउ राउ—' जिनप्रभाचार्यकृत 'भव्यचरित' (वि. नो तेरमो सैको), कडी ५; 'फार्बस गुज. सभा त्रैमासिक,' पु. १, अंक २]

धम पुं. 'धर्म.' २९-१० [सं. धर्म]

नइ स्त्री. 'नदी.' २-२४ [सं. नदी] जुओ **नय.**

नगोदर पुं. 'कंठनुं एक आभूषण.' २-२०, ६-४९, १२-८, २२-२७, ३६-४७, ३७-१२; **नगोदरु** ३-२०, ४-३८; **नगोदरू** १४-५२ [२-२०ना 'नगोदर-कंठलउ' ए प्रयोगथी उपर आपेला अर्थनुं समर्थन थाय छे.] जुओ **निगोदर.**

P.P. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नय स्त्री. 'नदी.' ९-१८ [सं. नदी > प्रा. नइ] जुओ **नइ.**

नरख स. क्रि. 'जोवुं, निरखवुं.' **नरषइ** २२-५२ [सं. निरक्षते > प्रा. निरिक्खइ]

नरविंदो पुं. 'राजा.' १०-१ [सं. नर + इन्द्रः > नरइंदो]

नलवट न. 'कपाळ.' **नलवटि** २२-३२ [सं. ललाट > प्रा. णिलाड, णिडाल. जू. गुज.मां पण 'नलाड-निलाड' छे. सर० लिलवट] जुओ **निलवटि.**

नवल्लिय स्त्री. 'नवी.' सर० गुज. 'नवली, नवेली.' ४-२८ [सं. नव + ल्ली]

नवेरु वि. 'नवतर, नवनवुं.' ३६-४७; **नवेरा** ३६-५७ [सं. नवतर > प्रा. नवयर]

नसि स्त्री. 'रात्रि.' २२-५३ [सं. निशा]

नह पुं. 'नख.' **नहि** ३-२१ [सं. नख]

नाचणि स्त्री. 'नर्तिका,' गुज. 'नाचण.' ९-१४ [सं. नृत्य > प्रा. णच्च उपरथी णच्चणी]

नाठ अ. क्रि. 'नासवुं.' **नाठउ** = अर्वा. गुज. नाठो. ३५-२२ [सं. नष्ट > पा. प्रा. नट्ठ]

नाण न. 'ज्ञान.' **नाणि** १-२५ [सं. ज्ञान]

नाहि स्त्री 'टूंटी.' १-१५ [सं. नाभि]

निगोद पुं. [सं.] 'अनंत जीवोनुं एक साधारण शरीरविशेष.' ३०-२९२ [आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

निगोदर पुं. १८-३६. जुओ **नगोदर.**

निजर स्त्री. 'दृष्टि.' ३२-११; **निजरि** ३४-४० [अर. नजर]

निधाड स. क्रि. 'परास्त करवुं.' **निधाडिउ** १-२५ [सं. निर्धाटित > प्रा. णिद्धाडिअ]

निय वि. 'पोतानुं.' १-३, १-७, इत्यादि [सं. निज]

P. P. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

निरती वि. 'स्पष्ट, निश्चित.' २-२०; **निरतु** २४-२; **निरुतउ** ४-१३ [प्रा. णिरुत्त < सं. निरुक्त]

निलवटि न. १८-१९, २२-२४. जुओ **नलवट.**

नीकी वि. 'सुन्दर.' ३१-८ [प्रा. णिक्क]

नीभर वि. 'गाढ.' २०-४६ [सं. निर्भर > प्रा. णिब्भर]

नीलडु वि. 'घोडानी एक जात.' **नीलडा** १४-६६

नीलवणि स्त्री. 'लीलुं शाक, लीलोतरी,' गुज. 'लीलवणी.' ३०-३०१

नीसाण न. 'नोबत.' ८-११ [सं. निस्स्वान > प्रा. निस्साण]

नेअर न. 'झांझर, नूपुर.' २२-१८. जुओ **नेउर.**

नेउर न. 'झांझर, नूपुर.' १-११ [सं. *नेपुर = नूपुर. सर० गुज. नेवर, नेपुर; हि. नेवर, नेवल] जुओ **नेअर.**

न्हवण न. 'स्नान.' २९-५०; **न्हवणु** ५-१२ [सं. स्नपन]

न्यान न. 'ज्ञान.' ३०-२६२; **न्यानइ** ३०-३४; **न्यांन** ३०-१७ [सं. ज्ञान]

पइ पुं. 'पग.' ३-१ [सं. पद > प्रा. पय] जुओ **पय.**

पगार पुं. 'कोट.' **पगारि** ९-१२ [सं. प्राकार]

पटउलडी स्त्री. 'उत्तम रेशमी वस्त्र, पटोळी, पटोळुं.' २१-११, २१-२७; **पटउली** १२-६; **पटुली** ६-५१, २२-३३, २२-३६, २२-४९, ३०-२२१, ३६-४५; **पटोलडी** १३-४, १३-११; **पटोलि** ४-३९; **पट्टोलि** ९-३. आ शब्दनी व्युत्पत्तिनी चर्चा माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'मां **पटउलउं.**

पडवंड वि. 'सज्ज.' **पडवंडा** ३०-२५१ [सं. प्रतिपद् > प्रा. पडिवड] अर्थान्तर माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां **पडवडु.**

पणच स्त्री. 'धनुषनी दोरी.' **पणचइं** १८-३५ [प्रा. पडंचा]

पय पुं. 'पग.' ५-२ [सं. पद] जुओ **पइ.**

P. P. Ac. Gurugatnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पयडु वि. 'प्रसिद्ध.' ५-२ [सं. प्रकट > प्रा. पयड]

पयमाल वि. 'खुवार.' ३३-८ [फा. पायमाल]

पयंप स. क्रि. 'बोलवुं.' **पयंपय** २-१७ [सं. प्रजल्पति > प्रा. पयंपइ]

परगडी वि. 'प्रकट रीते.' ३०-६७ [सं. प्रकट]

परणाल स्त्री. 'नेवांनुं पाणी झीलवा माटेनी नीक, परनाळ.' **परणालिइं** २२-५२ [सं. प्रणाल > प्रा. परणाल]

परमल पुं. 'सुगंध.' ७-३६ [सं. परिमल]

परिक्कम न. 'पराक्रम.' **परिक्कमि** २-३ [सं. परिक्रम]

परिगर पुं. 'मूर्तिनी आसपासनो कोतरणीवाळो परिवेश.' **परिगरि** १८-२७ [सं. परिकर]

परिचत्त वि. 'त्यजायेल.' ३-३१ [सं. परित्यक्त]

परिणयण न. 'लग्न.' २-१३ [सं. परिनयन]

पलाव पुं. 'आक्रंद.' ८-२५ [सं. प्रलाप]

पवालउ पुं. 'परवाळुं, एक रत्न.' ४-२५ [सं. प्रवाल]

पसइ 'खोवो.' सर० गुज. 'पोंश, पसली.' २-१७ [सं. प्रसृति]

पहराउत पुं. 'पहेरो भरनार, चोकीदार.' १४-४० [फा. पहरह् = चोकी. सं. प्राहरिक > प्रा. पाहरिअ = चोकीदार, ए पण ध्यानमां राखवानुं छे. संस्कृत अने फारसी बन्ने शब्दो एक मूळमांथी आव्या हशे.]

पहाणो वि. 'मुख्य.' १-२७ [सं. प्रधान]

पहिचाणि स्त्री. 'ओळखाण, परिचय.' २९-१४८ [सं. प्रत्यभिज्ञान > प्रा. पच्चहिआण. सर० हि. पहिचान, गुज. पिछाण–न]

पहिय पुं. 'प्रवासी.' १०-१२ [सं. पथिक] सर० गुज. 'पई' ('परोणो-पई'मां)

पहिरण न. 'पहेरवेश.' **पहिरणि** १-१०, १३-४, २१-११; **पिहरणि** ३०-२२१; **पिहिरण** २२-२२ [सं. परिधान > प्रा. परिहाण, पहिराण, पहिरण. सर० फा. पीराहीन]

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पहिली वि. 'प्रथम, पहेली, उत्सुक.' १-१६ [सं. * प्रथिल्ल > प्रा. पहिल्ल]

पहुत अ. क्रि. 'पहोंचवुं.' **पहुतउ** १-२; **पुहतलु** १३-१; **पहुतुल** ८-१ [सं. प्रभूत > प्रा. पहुत्त, पहुप्प. केटलाक विद्वानो सं. प्रभुत्व > प्रा. पहुत्त अने केटलाक सं. प्राप्त > प्रा. पत्त, पहुत्त ए प्रमाणे व्युत्पत्ति आपे छे. पहुत्त > पहुच्च उपरथी गुज. 'पहोंचवुं,' म. 'पोहचणें,' हि. 'पहूंचना' आदि व्युत्पन्न थाय.]

पंग न. 'ढोलक जेवुं एक वाजिंत्र.' २८-६२ [सं. उपाङ्ग > प्रा. उपंग]

पंच शबद पुं. 'पांच वाद्यनो मंगलसूचक ध्वनि.' २७-१३. आ विषे चर्चा माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां पंच शबद.

पंति स्त्री. 'हार, पंक्ति.' १८-१८; **पंतिहि** ३-१० [सं. पङ्क्ति > प्रा. पंति. सर० गुज. 'पांथी' (होळेला वाळनो गुच्छो), 'पांति,' 'जातपांत.']

पंनरपि अ. 'फरी वार.' २२-१४ [सं. पुनरपि]

पाग पुं. 'पग.' **पागिहि** ३५-५ [सं. पद + क > प्रा. पअग. जे उपरथी पग अने पाग ए बे शब्दो आवे छे.]

पाच अ. क्रि. 'परिपक्व थवुं, पाकवुं.' **पाचइ** ६-१६ [सं. पक्व > प्रा. पक्क, पच्च. सर० गुज. 'पाकुंपच']

पाटण न. 'नगर.' २४-७ [सं. पत्तन > प्रा. पट्टण]

पाडलिय न. 'पाटलिपुत्र, मगधनुं प्राचीन पाटनगर.' **पाडलियमाहि** १-२.

पाथर पुं. 'पथ्थर.' ३६-३० [सं. प्रस्तर > प्रा. पत्थर]

पावस पुं. 'वर्षा ऋतु.' २८-३२; **पावसु** १-२० [सं. प्रावृष > प्रा. पाउस]

पांचयज्ञ पुं. 'श्रीकृष्णना शंखनुं नाम.' १४-३४ [सं. पाञ्चजन्य]

पांचली स्त्री. 'पूतळी.' १८-३३ [सं. पाञ्चाली]

पांजरी स्त्री. 'वहाणनो एक भाग.' २४-६ [सं. पञ्जर]

पिक्ख स. क्रि. स्त्री. 'जोवुं,' गुज. 'पेखवुं.' **पिक्खेवी** १-४ [सं. प्र. + ईक्ष > प्रा. पेक्ख, पिक्ख]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पिणि अ. 'पण, परन्तु.' २९-९५ [सं. पुनः अपि, प्रा. पुणवि, जू. गुज. पणि, अर्वा. गुज. पण, हि. पुनि. प्रस्तुत 'पिणि' रूप राजस्थानीनी असर दर्शावे छे.]

पिशु न. 'प्राणी, पशु.' १४-७२ [सं. पशु]

पीहर न. 'स्त्रीना पितानुं घर, पियर' [सं. पितृगृह > प्रा. पियहर] आने मळता अन्य गुज. शब्दो माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रासना शब्द-कोशमां **पीहर**.

पुफ न. 'फूल.' १९-२७ [सं. पुष्प > प्रा. पुप्फ]

पुल अ. क्रि. 'जवुं, पळवुं.' **पुलइं.** ३६-३०

पूग अ. क्रि. 'संतोष थवो, पुरावुं' **पूगउ** ५-१५; **पूगी** २२-५५, २९-१२५ [सं. पूर्यते > पुज्जइ > जूनी गुज. पूजइ, पूगइ. सर० अर्वाचीन गुज. पूगवुं = पहोंचवुं]

पेलाडि स्त्री. 'पीडा, वेदना.' २६-१७

प्रतिलाभ स. क्रि. [सं.] 'साधु आदिने दान आपवुं ते.' **प्रतिलाभइ** ३०-२६६ [आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

प्रदेश पुं. [सं.] 'परदेश, बीजो देश.' २६-६, ३०-३३

प्रेतम पुं. 'प्रीतम.' ३६-५१ [सं. प्रेयतम]

फरसण न. 'स्पर्श.' २९-८८ [सं. स्पर्शन > प्रा. फरिसण]

फाग, फागु जुओ, आ संग्रह साथे जोडेलो 'फागुनो साहित्यप्रकार' ए लेख.

फाड स. क्रि. 'भाग करवा' (सेंथो पाडीने वाळना बे भाग करवा ए अर्थमां अहीं छे). **फाडेई** १-१३ [सं.* स्फाट्यते > प्रा. फाडेइ. अथवा सं. स्फाल् उपरथी]

फार वि. 'अतिशय.' ३-१४; **फारो** २-१४ [सं. स्फार. सर० म. फार]

फाली स्त्री. 'साडी.' ९-८. आ ज अर्थमां एना प्रयोग माटे जुओ 'वसंत-विलास,' कडी ३८. सर० गुज. 'चोफाळ, फाळियुं,' आदि शब्दो. व्युत्पत्ति माटे जुओ **फाड.**

Acharya Shri Kailassagarsuratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फासू वि. 'निर्जीव.' ३०-६६ [सं. प्रासुक > प्रा. फासुअ]

फीतउ वि. 'समर्थ.' ७-५७ [सं. स्फीत]

बहिणी स्त्री. ' २-१५ [सं. भगिनी. सर० म. बहीन]

बहिनर स्त्री. 'बहेन,' गुज. 'ब्हेनड.' २८-२४ [सं. भगिनी > प्रा. बहिनी, बहिन + स्वार्थिक 'ड']

बहिरखु पुं. 'कोणीनुं एक घरेणु.' **बहिरषा** १८-२२; **बहिरषा** २२-४६ [प्रा. बाहरक्ख < सं. बाहुरक्ष. सर० हि. बैरखी]

बंधालग पुं. 'एक कीमती वस्त्र.' २२-४७. बांधणीने मळतो आ कोई प्रकार हशे ?

बाउल स्त्री. 'सुन्दर स्त्री.' ३५-२५. जुओ **वाउलि.**

बाजी स्त्री. [फा.] 'रमत, खेल.' २२-५९

बारुं न. 'बंदरमां पेसवानो मार्ग.' **बारां** २४-७ [सं. द्वार > प्रा. बार]

बालापण न. 'यौवन.' ३६-१० [सं. बालत्वन > प्रा. बालप्पण]

बावनचंदन न. 'चंदन.' १८-६९; **बावनिचंदन** २२-४३ [क. बावन + सं. चन्दन. एक ज अर्थना, पण विभिन्न भाषाओमांथी आवेला बे शब्दोनो आ अनुवादमय समास (Translation-compound) छे. 'बावनचंदन' अथवा 'बावनाचंदन' रूपे आ शब्द जूनी गुजरातीमां वारंवार वपरायेलो छे. एनां केटलांक अवतरणो माटे जुओ 'शब्द अने अर्थ,' पृ. १५१-१५२, टिप्पण]

बावनवीर वि. 'पराक्रमी, चतुर.' ३४-२४; **बावनवीरि** २०-४२

वीजल स्त्री. 'वीजळी.' १२-८ [सं. विद्युत् > प्रा. विज्जु > गुज. वीज, वीज + स्वार्थिक 'ल.' सर० हि. बीजली, गुज. वीजळी]

बोरीयावडि स्त्री. 'एक कीमती वस्त्र;' एमांथी कांचळी पण बनती. १-१३. प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालामां हवे पछी प्रकट थनार 'वर्णकसमुच्चय'मां वस्त्रवर्णनमां आ वस्त्रनो उल्लेख छे.

बोह स. क्रि. 'बोध करवो, उपदेश करवो.' **बोहंतउ** १-२ [सं. बोध् > प्रा. बोह]

P. P. A. C. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भइरव पुं. 'एक कीमती वस्त्र.' २२-४७, ३०-१९७

भट्ट पुं. [सं.] 'स्तुतिपाठक,' गुज. 'भाट.' ३-४; **भट्टह** २-१६

भडवाउ पुं. 'पराक्रमनी कीर्त्ति.' २-८, २४-५; **भडवाय** १७-२५ [सं. भटवाद]

भत्ति स्त्री. 'भजवुं ते.' ३-१ [सं. भक्ति]

भमण न. 'भवन, मन्दिर.' **पासभमणि** (पार्श्वनाथना मन्दिरमां) ७-३४ [सं. भवन. अहीं 'व'नुं 'म'मां परिवर्तन थई बनेलुं रूप नोंधपात्र छे. कोई बोलीमां आ रूप प्रचलित हशे. 'ॅभमणि 'नुं पाठान्तर 'ॅभुवणि ' मळे छे.']

भमहडी स्त्री. 'भमर.' १४-३२; **भमहि** १५-१२; **भमुह** ३-९, ४-२२; **भुमहिय** ६-२७; **भुंहडियहं** २-८; **भूमहीय** ६-२५ [सं. *भ्रमुक > प्रा. भमुह, भमहं, भुमह]

भयडि स्त्री. 'भमर.' **भयडिहि** २०-५ [सं. भृकुटि > प्रा. भिउडि, भउडि]

भरथेश्वर पुं. 'भरत चक्रवर्ती, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथना पुत्र.' १०-पुष्पिका [सं. भरतेश्वर]

भरह न. 'नृत्यसंगीत आदि.' २२-३७ [सं. भरत = नाट्यशास्त्रना प्रणेता ऋषिनुं नाम. ते उपरथी 'भरह' शब्द अर्थविस्तार पामी उपर्युक्त अर्थमां प्रचलित थयो छे. जुओ : 'भरह-छंदि भुंगल भरहरइ, अवला ऊभी ऊसर करइ'– वीरसिंहकृत 'उषाहरण,' पं. ७४]

भरूआडी स्त्री. 'भरवाडी, भरवाडनी स्त्री, गोपी.' १९-५८, १९-६९.

भवियण पुं. 'मोक्षने योग्य जीव.' ३७-१८ [सं. भविक + जन] आ जैन पारिभाषिक शब्द छे.

भंभरभोली स्त्री. 'साव भोळी, मुग्ध.' २-१२; **भंभलभोलिय** ३-५; **भामरभोली** २०-५. **भांभरभोलव** स. क्रि. 'भोळववुं; **भांभरभोलवी** ३०-२३५ [सं. विह्वल + *भ्रमुल्लक > प्रा. भिब्भल – भिंभल + भोल्लअ – भोलअ. जुओ भोजना 'सरस्वतीकंठाभरण'मां : 'बाली भुम्भरुभोलि उल्लसिअणिअंसणी, गहणु सुणिवि णिक्कन्ता णिद्दाए भंभली' ('आपणा कविओ,' पृ. ५४). जंगलभरना

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रन्थभंडारमां खरतरगच्छीय जिनहंससूरिनी बारमासी स्तुतिनी एक त्रूटित प्रति मारा जोवामां आवी हती. एमां श्रावण मासना वर्णनमां—'श्रावण सोहाविउ मास रंगभर, मिलउ सहियर येलीयां; राग गूजरि सुगुरु गावउ, हरषि **भंभरभोलीआं.**' वळी जुओ कविश्री नानालालना एक गीतमां—'मोरु मोरु क्यां थकी जईश **भंमरभूली** मोरली रे.' सर० हि. 'भमरिभुलान.']

भादव पुं. 'भादरवो महिनो.' ४-३३ [सं. भाद्रपद > प्रा. भद्दवअ. हि. भादो]

भारथी स्त्री. 'सरस्वती.' १९-३ [सं. भारती]

भास स्त्री. 'पद्यखंड, सळंग काव्यनो एक भाग.' १-५, १-९, १-१३, ३-६, ३-११, ३-१६, ५-६, आदि [सं. भाषा. 'भास' शब्दनो 'गीत' अर्थ पण थाय छे. जुओ **भासि** २२-३८. केटलीक वार अलग काव्योने पण जैन गुज. साहित्यमां 'भास' कहे छे. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास 'ना शब्दकोशमां **भास.**]

भासरु वि. 'प्रकाशमान, तेजस्वी.' ६-५ [सं. भास्वर]

भिग्गह पुं. 'प्रतिज्ञा, धार्मिक नियम.' १-१६ [सं, अभिग्रह > प्रा. अभिग्गह]

भिंतर अ. 'अंदर.' **भिंतरि** ३६-३० [सं. अभ्यंतर > अब्भिंतर. गुज. हि. भीतर]

भींभली स्त्री. 'मुग्धा.' २२-३४ सं. [विह्वला > प्रा. भिब्भल] जूना गुजराती साहित्यमांथी आ प्रकारनां अवतरणो माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास 'ना शब्दकोशमां **मदभिंमल.**

भेउ पुं. 'रहस्य.' ३७-५ [सं. भेद > प्रा. भेअ]

भेष पुं. 'वेश, पहेरवेश.' २९-१२३ [सं. वेश. सर० गुज. 'भेख.' व > भ गाटे जुओ उपर **भंमरभोली** अने **भींभली.**]

मउड पुं. 'मुकुट.' सर० गुज. 'मोड.' ९-९ [सं. मुकुट]

मठ स. क्रि. 'दबावबुं.' **मठी** १९-२३ [सं. मथ्]

मडप्फर वि. [दे.] 'गर्वित.' १-८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मणमय वि. 'मणिनां.' १२-६ [सं. मणिमय]

मतु अ. निषेधार्थ, हि. 'मत.' ८-२८

मदनमेषली स्त्री. 'एक प्रकारनी हीराजडित मेखला.' २२-२६ [सं. मदनमेखला]

मध पुं. 'चैत्र मास.' २२-५९ [सं. मधु]

मधर वि. 'मीठुं, कर्णप्रिय.' २२-३४ [सं. मधुर]

मन अ. निषेधार्थ. २०-३२; मनि २०-४९ [म < सं. मा + सं. न]

मनुहार स्त्री. 'मननु हरण करवुं ते.' ३०-२२३. [जूनी गुजरातीमां आ शब्दनां अर्थान्तरोः 'महिमा, माहात्म्य'—गोविन्दकृत 'मामेरुं,' पंक्ति २६७; विश्वनाथ जानीकृत 'प्रेमपचीशी,' पंक्ति ६४०. 'आग्रह'—'प्रेमपचीशी,' पं. ६७, १५३, ३४०. सर० उत्तर गुजरातनी बोलीमां 'मनवेर' = आग्रह; हि. मनुहार = विनंती]

मयगलु पुं. 'हाथी,' गुज. 'मेगळ.' २-२६ [सं. मदकल > प्रा. मयगल]

मरगयजादर न. जेना उपर नीलम टांक्यां होय एवुं जादर वस्त्र.' २-२० [सं. मरकत + जू. गुज. जादर] जुओ जादर.

मरहठी वि. 'महाराष्ट्रनी स्त्री.' १३-१०, २१-१३ [सं. महाराष्ट्रिका > प्रा. महरट्ठिआ, मरहट्ठिआ]

मलार पुं. 'आनंद करावनार.' ३०-१८३; मल्हारु ७-३; मल्हारो १०-५. [दे. मल्ह् 'आनंद करवो, महालवुं' उपरथी. १६-३ मां मल्हाविउ 'आनंद कराव्यो' प्रयोग छे, ते आना कारकनो छे. वळी जुओ ३७-१७मां मल्हावउं 'गुण गाउं.' सर० अर्वाचीन गुज. मां 'मलाववुं' = वहेलावीने वात करवी]

मसग पुं. 'एक प्रकारनुं कीमती वस्त्र.' ३०-१९६

महमह अ. क्रि. [प्रा.] 'खुशबो फेलाववी, महेकवुं,' सर० गुज. 'मघमघवुं.' महमहंत १-७; महमहिया १-३

महियल न. 'पृथ्वी.' महियलि १-२ [सं. महीतल]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

महिर स्त्री. 'कृपा, दया.' ३१-३३; **महेर** ३२-९ [फा. मिह्]

महिवट्टु पुं. 'सुगंधी पदार्थ वडे कपाळ उपर कराती आड.' ३५-६

महिरांण पुं. 'महासागर.' ३२-९ [सं. महार्णव. सर० गुज. महेराण, महेरामण.]

महूयरि स्त्री. 'वांसळी.' १९-८५ [सं. मधुकर-, सर० गुज. महुवर. जूनी मैथिलीना 'वर्णरत्नाकर' (पृ. ३४)मां 'महुअरि' मळे छे. जूनी बं. 'मौहारी,' 'मोहारी.' जुओ 'वर्णरत्नाकर'नी डॉ. सुनीतिकुमार चेटरजीनी प्रस्तावना, पृ. ६३]

महेलि स्त्री. 'स्त्री.' ७-३१ [सं. महिला. जैन संस्कृतमां 'महेला' रूप पण मळे छे.]

मंजीर न. [सं.] 'झांझर.' ३६-४४

मंडणउ पुं. 'अलंकार, शोभा.' ३५-१ [सं. मण्डनकः > प्रा. मंडणओ]

मंमाणी स्त्री. 'एक खाण, ज्यांथी उत्तम आरसना पथ्थर नीकळता हता.' १८-२६ [आ पथ्थर मुख्यत्वे मूर्तिओ घडवाना काममां वपराता हता. आ उल्लेख अन्यत्र पण छे. जेम के राजशेखरसूरिना 'प्रबन्धकोश' (फा. गुज. सभानी आवृत्ति, पृ. २४०)मां—'उपलपञ्चकं मम्माणीखनीतो दापय ।' वळी 'स शैलमयबिम्बं मम्माणीयखनीसकपरिकरमानीय निवेशितवान्' (मेरुतुंगाचार्य-कृत 'प्रबन्धचिन्तामणि,' फा. गुज. सभानी आवृत्ति, पृ. १४२); 'श्रीमन्त्रीशः श्रीशत्रुञ्जयभूमिगृहयोग्यं श्रीयुगादिजिनबिम्बं धन्यं मन्यमानस्य सुरत्राणस्यानुज्ञया तद्देशवर्त्तिन्या मुम्माणीनाम्न्याः खन्याः प्रयत्नशतैरानीतवान्' (ए ज, पृ. १६९). अर्थात् आ उल्लेख प्रमाणे तेरमा सैकामां आ खाणनो प्रदेश दिल्हीना सुलतानना हकुमतमां हतो. 'पुरातन प्रबन्धसंग्रह' (पृ. ९९) अनुसार 'मम्माणी' खाण मारवाडमां नागोर पासे कडाणा गाममां आवेली हती—'तन्नागपुरप्रत्यासन्न-कडाणाग्रामे मम्माणीनामस्त्राणौ.... अत्यारना मकराणना प्रदेशमां आ खाण आवेली हती एवी पण केटलाकनी मान्यता छे.]

मागु पुं. 'सेंथी.' ८-१२; **मागि** स्त्री. ३६-४६; **माध** स्त्री. २१-२३ [सं. मार्ग, सर० हिं. माँग]

P.P. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मादल न. 'एक वाद्य.' १९-८५ [सं. मर्दल > प्रा. मद्दल. सर० गुज. मादळियुं = मादलना आकारनुं घरेणुं]

माल पुं. 'पहेलवान.' १४-२५, १९-३० [सं. मल्ल] जुओ मालाखाड.

मालाखाड पुं. 'अखाडो, व्यायामशाळा.' मालाखाडइ १९-३०; मालाखाढइ ३०-२३६ [सं. मल्ल + अक्षवाट > अक्खाड] जुओ माल.

माल्ह अ. क्रि. 'आनंद पामवुं.' माल्हइं १८-५७. जुओ मलार.

मावटी स्त्री. 'स्त्रीनी सेंथी उपरनो एक अलंकार.' ३६-४६

मांड अ. 'मुश्केलीए, मांड मांड.' २-५, ४-१३, ६-२२ [सं. मनाक् > अप. मणाउं]

मिलियागिरि पुं. 'दक्षिणमां आवेलो एक पर्वत.' १२-१ [सं. मलयगिरि]

मिलीआनील पुं. 'मलयगिरि उपरथी आवतो पवन, दक्षिणानिल.' २२-३९ [सं. मलयानिल]

मीनति स्त्री. 'विनंति.' १७-९; मीनती ३४-४२ [सं. विज्ञप्ति > प्रा. विण्णत्ति. हि. मिन्नत]

मुगतिशिला स्त्री. 'सर्वार्थसिद्ध स्वर्गनी उपर बार योजने आवेलुं मुक्त जीवोनुं स्थान, जे इषत्प्राग्भार पृथ्वी तरीके पण ओळखाय छे.' २४-७ [सं. मुक्ति-शिला. आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

मुधरु वि. 'मधुर'. २२-४४ [सं. मधुर. सर० गुज. मधरो = धीरो] जुओ मुहुर.

मुसमूरण वि. 'नाश करनार.' ३४-३९ [प्रा. 'मुसमूर' नाश करवुं उपरथी]

मुहत पुं 'मंत्री, महेतो' २९-६१; मुहतउ २९-३४, २९-३६, २९-६९, २९-७७, २९-९१; मुहता २९-५०, २९-१२७ [सं. महत्, प्रा. महंत, अप. महंतउ] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां मुहुतु.

मुहवड स्त्री. 'आगळ' मुहवडि १७-२४ [सं. मुखपट. सर० गुज. 'म्होंवड' = आगळनो भाग, 'मोवडी' = आगेवान]

मुहुर वि. 'मीठी.' १०-३ [सं. मधुर] जुओ मुधरु.

P. P. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मुंधि स्त्री. 'भोळी स्त्री, मुग्धा.' १९-२३ [सं. मुग्धा > प्रा. मुद्धा > अप. मुद्ध. मार. मुंध. मुंधि शब्दनो प्रयोग विक्रमना चौदमा सैका जेटलो जूनो तो मळे छे. जेम के 'प्रबन्धचिन्तामणि' (फा. गुज. सभानी आवृत्ति, पृ. ३५) मां मुंज विषेना दूहाओमां—'भोलि मुंधि म गव्वु करि पिक्किवि पडुगु पांइ']

मूलगउ वि. 'मुख्य.' ११-५; **मूलिगु** २५-२० [सं. मूलगतः > प्रा. मूलगओ] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास' ना शब्दकोशमां मूलगु.

मेघवनी वि. 'मेघवर्णा नामे कीमती वस्त्रनी वनावेली.' २२-२१, ३६-४५ [सं. मेघवर्ण > प्रा. मेघवण्ण. आ वस्त्रने लगता संख्याबंध साहित्यिक उल्लेखो मळे छे जुओ **आभ अधारी.**]

मेघाडंबर न. [सं.] 'हाथी उपरनी छत्रवाळी बेठक.' ९-६

मेर पुं. 'मेरु पर्वत' १९-२९ [सं. मेरु]

मोछव पु. 'मोटो उत्सव.' ३०-३१८ [सं. महोत्सव]

मोड पुं. 'स्त्रीना मस्तकनो एक अलंकार, मोंड.' **मोडा** ३५-६ [सं. मुकुट > प्रा. मउड]

यारी स्त्री. [फा.] 'मैत्री.' ३४-३३

रइवल्लह पुं. 'कामदेव, रतिपति.' १-२७ [सं. रतिवल्लभ]

रति स्त्री. 'ऋतु.' ३६-८; **रिति** ३६-८ [सं. ऋतु]

रमलि स्त्री. 'क्रीडा.' ६-९, ६-१०, ८-७, ९-२२, १४-४६, १८-२, २२-३१ [सं. *रमणिका > प्रा. रमणिआ, रमलिआ]

रलिय स्त्री. 'आनंद.' ९-४, ३५-२ [सं. रति > प्रा. रइ, रय + ली, जूनी गुज. रलिय, रलि, रली. सर० जूनी गुज. रलीलायत = आनंदित, अर्वाचीन गुज. रळियात.]

रलियावणउ वि. 'आनंददायक, रळियामणुं.' ९-२२ [रलि + आवणउ] जुओ **रलिय.**

रवाडी स्त्री. 'सवारीमां वैभवपूर्वक फरवुं ते.' ३०-१३३; **रिवाडी** १०-६ [सं. राजपाटिका > प्रा. रायवाडी] आ शब्दनां अर्थान्तरो तथा ए विषेनां साहित्यिक अवतरणो माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्द-कोशमां **रवाडी.**

CC-0. Acharya Shri Kailassagarsuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रसक वि. 'रसिक, विदग्ध.' ३६-१५ [सं. रसिक]

राइणि स्त्री. 'एक फळझाड, रायण.' १८-६३ [सं. राजादनी > प्रा. रायणी]

राउत पुं. 'राजा.' ६-१९ [सं. राजपुत्र > प्रा. रायउत्त. सर० गुज. रावत]

रातउ वि. 'आसक्त.' १-२१, ३९-३०; **रातु** २८-२४ [सं. रक्त > प्रा. रत्त]

रामति स्त्री. 'रमत, क्रीडा.' ३०-२, ३०-३, ३०-१७१ [सं. *रम्यति > प्रा. रम्मति]

राश पुं. 'गोळाकारे नृत्य करतां गीत गावुं ते, रास.' २२-३८ [सं. रास]

रिज्ज अ. क्रि. 'काकलुदी करवी.' **रिज्जइ** २-२४ [जूनी गुज. मां 'रिगइ' प्रयोग छे ते आ उपरथी हशे. जुओ—'अंग देसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्य कारणि **रिगइ**' ('पृथ्वीचंद्रचरित्र,' प्रा. गु. का. सं., पृ. ९६). सर० गुज. रगरगवुं = काकलुदी करवी]

रुयरि स्त्री. आ शब्द वहाणना कोई भाग माटे वपरायेलो जणाय छे. २४-८

रुहाडि स्त्री. 'मनोरथ' (?) २६-१७

रूपिणि स्त्री. 'रुक्मिणी, श्रीकृष्णनी पत्नी.' ३-७, ८-८ [सं. रुक्मिणी > प्रा. रुप्पिणी]

रेट स. क्रि. 'पहेरवुं.' **रेटइ** ३६-४२

रेसि अ. चतुर्थीनो अनुग. २०-४५, ३६-३२ [अप. रेसि, रेसिं]

रेह अ. क्रि. [प्रा.] 'शोभवुं.' **रेहइ** १-१५

लगि अ. 'थी, तेथी, एने कारणे.' ९-४ [सं. लग्नस्मिन् > अप. लग्गहिं] आ विषे चर्चा तथा अवतरणो माटे जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण' अने 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां लगइ.

लडसड अ. क्रि. 'लहेरमां के मदमां चालवुं ते.' **लडसडंतीय** ७-१८

Pujya Gunratnasuri M.S. Jain Gyan Aaradhak Trust

लडहि वि. 'सुन्दर.' ३-२२ [सं. लट्भ > प्रा. लडह. लट्भ ए संस्कृत शब्द प्राकृत उपरथी वनावी काढेलो होवा संभव छे. सर० गुज. लाडी, लाडो, लाड] जुओ **लडहियतण.**

लडहियतण न. 'सुन्दरता.' **लडहियतणि** ७-१८ [सं. *लट्भिकत्वन > प्रा. लडहियत्तण] जुओ **लडहि.**

ललत वि. 'रम्य.' २२-४९ [सं. ललित]

ललवलउ वि. 'सुन्दर.' २-२

लवणिम न. 'सौन्दर्य.' ६-२८, ६-३३, ७-२८, २९-२९ [सं. लवणिमन् > प्रा. लवणिम]

लवधुलउ वि. 'आसक्त, लुब्ध.' **लवधुला** २०-१६ [सं. लुब्ध > लबध + ल]

लहकुडलउ पुं. 'कटाक्ष, लहेको.' **लहकुडलइ** २-८ [सं. लसत् + कृत > प्रा. लहक्किअ]

लहूअडी वि. 'नानी.' २२-४२; **लहूआ** २२-५६ [सं. लघुक > प्रा. लहुअ + स्वार्थिक 'डी']

लाडी स्त्री. 'सुन्दर नायिका.' २-८; **लाडिय** ३-२२ [प्रा. लड्डिय] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां **लाडण.**

लामी वि. 'हलकी, नरसी.' १७-९. निश्चितपणे आ अर्थमां अन्यत्र पण एनो प्रयोग छे.—'जेह नगरमाहि...भला लामा अनेक लोक वसइ' ('पृथ्वीचंद्र-चरित्र,' प्रा. गु. का. सं., पृ. ९८)

लिवंग न. लविंग,' ३०-१८९ [सं. लवङ्ग]

लुक अ. क्रि. 'छुपाई जवुं.' **लुकिउ** १४-३४, १४-३५ [प्रा. लुक्क]

लूधडी वि. 'आसक्त, लुब्ध.' २५-७ [सं. लुब्धा > प्रा. लुद्धा > अप. लुद्ध + डी]

लेषसाला स्त्री. 'निशाळ.' २८-१२ [सं. लेखशाला. अर्वा. गुज. 'निशाळ'नी व्युत्पत्ति आ सं. शब्द उपरथी प्रा. लेहसाला > जूनी गुज. लेहसाल, लेसाल, नेसाल ए क्रमे छे.] जुओ **लेसालीयउ.**

Jin Gun Aaradhak Trust

लेड पुं. आ कोई घरेणुं हशे ? २२-४६

लेव पुं. 'स्पर्श, असर.' १७-२७ [सं. लेप]

लेसालीयउ पुं. 'निशाळे जनार विद्यार्थी, निशाळियो.' २९-७८ [सं. लेखशालिकः > प्रा. लेहसालिओ] जुओ लेषसाला.

लोयण न. 'आंख.' २-८ [सं. लोचन]

वइरागर पुं. 'हीरो, रत्नविशेष.' २२-१९; **वइरागरु** २०-७; **वयरागर** १७-२ [सं. वज्र > प्रा. वइर + सं. आकर > प्रा. आगर, अर्थात् हीरानी खाण. पण सहेज अर्थफेरे आ शब्द जूनी गुज. मां 'हीरो' के 'रत्न' ए अर्थमां प्रयोजायो छे. जुओ 'अंबड विद्याधर रास' (खंड ५, कडी ९९) मां—'वइठां रत्न मुकटनइ ठाणि शुद्धि मूकी **वइरागर** खाणि.' पण 'विमलप्रबन्ध' (खंड १, कडी ६९)ना नीचेना अवतरणमां 'वइरागर' नो 'रत्ननी खाण' ए अर्थ कायम छे— 'करिउं प्रगट वइरागर ठांम, रत्नपूर ए रूडूं नाम.' अर्थात् श्रीमाल नगर रत्नोनी खाणरूप थवाथी एनुं रत्नपुर एवुं नाम (त्रेतायुगमां) पड्युं.]

वणजारडी स्त्री. 'वणिकनी—वेपारीनी स्त्री.' २०-२, २०-१३; **वणजारी** २०-२३; **वणिजारी** २१-३१, २०-३२, २०-४३ [सं वाणिज्यकारक > प्रा. वणिजारअ + डी. सर० गुज. वणजारी, वणजारो]

वणसइ स्त्री. 'वनस्पति.' ५-४, ७-३६, १८-४६, ३०-२४२; **वनसइ** ३-३, ४-४ [सं. वनस्पति > प्रा. वणस्सइ]

वदीतउ वि. 'प्रसिद्ध' १७-२४; **वदीतु** २८-१०१, २८-१०३, ३४-३८ [सं. विदीत]

वद्धावणउं न. 'उत्सव,' गुज. 'वधामणुं.' ३५-२४ [सं. वर्द्धापन- > प्रा. वद्धावण-]

वधार स. क्रि. 'अभ्युदय करवो.' **वधार्या** १९-३३ [सं. वर्ध- + कार > प्रा. वद्धआर]

वरसालु पुं. 'वर्षाऋतु.' २८-२९; **वरसाला** २२-५०; **वरिसालइ** १-३ [सं. वर्षाकाल > प्रा. वरिसाआल, वरिसाल. एमांथी गुज. वरसाद, वरसात]

वरसिउ वि. 'वर्ष पर्यंत.' ४-५१ [सं. *वर्षिक. सर० गुज. वरसी]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jinagam Aaradhak Trust

वरि अ. 'उपर.' ६-२६ [सं. उपरि > प्रा. उवरि]

वसुधारा स्त्री. [सं.] 'आकाशमांथी देवकृत सुवर्णवृष्टि.' ३०-२६५

वंकडी वि. 'वांकी.' ४-२२ [सं. वक्र > प्रा. वक्क, वंक + डी]

वंदुरवाल स्त्री. 'आसोपालव आदिनां लीलां तोरण.' २-६, ४-२९; **वंदुरवालिय** ९-३ [सं. वन्दनमाला > प्रा. वंदणमाला. आ शब्दनां वंदरवाल, वांदरमाल, वनरवालि, वानरवाल जेवां रूपो जूनी गुज. मां मळे छे.]

वाउलि स्त्री. 'सुन्दर स्त्री.' ३५-१. जुओ **बाउल.**

वाउलि स्त्री. 'वंटोळ.' २९-४८ [सं. वायु > प्रा. वाउ + लि]

वाघलउ पुं. 'वाघ.' २९-३७ [व्याघ्र > प्रा. वग्घ > गुज. वाघ + ल]

वादीसर पुं. 'वाद करनाराओमां मुख्य.' १७-३ [सं. वादीश्वर]

वालंभ पुं. ३६-२६. जुओ **वालिभ.**

वालिभ पुं. 'प्रियतम, वहालम.' ३१-२०; **वालिंभ** २५-१, २५-२ [सं. वल्लभ] जुओ **वालंभ.**

वावर स. क्रि. 'खावुं.' **वावरइ** ३०-८२, ३०-९८ [सं. व्यापृ. अर्वाचीन गुज.मां पण जैनोमां 'वापरवुं' = खावुं]

वास अ. क्रि. 'पक्षीओनुं बोलवुं.' **वासइ** ४-९, २१-४; **वासंते** १०-११; **वासि** ३६-५३; **वासिसि** २५-२ [सं. वाश्]

वांणही स्त्री. 'मोजडी.' २२-४८ [सं. उपानह् > प्रा. उवाणह, वाणह, व्यत्ययथी वाहण, म. वाहनें = चंपल, पं. पाहण. जूनी गुज.मां 'पाणही' अने 'वाणही' बन्ने शब्दो वपरायेला छे. अवतरणो माटे जुओ महीराजकृत 'नलदवदंती रास'ना शब्दकोशमां वाणही]

विगूती वि. 'संकटमां आवेली.' ३६-३९ [सं. विगुप्ता > प्रा. विगुत्ता. थोडाक अर्थफेरथी 'वगूती' शब्द उत्तर गुजरातमां 'अव्यवस्थित, फूवड जेवी' एवा अर्थमां वपराय छे.]

विजयखंभ पुं. 'कीर्त्तिस्तंभ' १-१५ [सं. विजयस्तम्भ]

P. P. Acharya Shri Kailassagarsuri M... Jain Gun Aaradhak Trust

वितपन्न वि. 'संपूर्ण ज्ञाता.' २७-१० [व्युत्पन्न]

वित्तु वि. 'गोळ, वर्तुलाकार.' २-१५ [सं. वृत्त]

विनर्ड स. क्रि. 'पराजित करवुं.' **विनर्डिउ** १९-८१; **विनर्डी** १९-८३ [सं. विनर्तयति > अप. विणर्डइ. आनी सामे 'विनड' (सं. विनट्) क्रियापद जूनी गुज.मां वधारे व्यापक छे.]

विनाण स. क्रि. 'छेतरवुं, धूतवुं.' **विनाणी** ३६-१५, ३६-२७ [सं. विज्ञान > प्रा. विण्णाण] जुओ **विनाणगार.**

विनाणगार वि. 'युक्तिबाज, धूर्त.' ३६-१५; **विनाणगारु** ३६-२७ [सं. विज्ञान + कार > प्रा. विण्णाण + गार] जुओ **विनाण.**

विनु पुं. 'विनय.' २४-७ [सं. विनय]

विमन न. 'ऊलटी.' ३०-९९ [सं. वमन]

विरतंत पुं. 'हकीकत.' २९-८३ [सं. वृत्तान्त]

विरत्तउ वि. 'पराङ्मुख.' २-३ [सं. विरक्त]

विलखउ वि. 'सलज्ज.' २९-१५१ [सं. विलक्ष > प्रा. विलक्ख]

विलविल अ. क्रि. 'विलाप करवो,' गुज. 'वलवलवुं.' **विलविलइ** १९-११ [रवानुकारी]

विलूर स. क्रि. 'ऊतरडी नाखवुं,' गुज. 'वलूरवुं.' **विलूरए** ११-२ [प्रा. विलूर]

विवहारीयु पुं. 'वेपारी.' ६-३ [सं. व्यवहारिन् > प्रा. विवहारी, गुज. वहेवारियो = वेपारी]

विसघारिय वि. 'विषथी वेचेन.' १८-४९ [सं. विष + प्रा. घार 'घेनमां पडवुं' उपरथी घारिय. सर० गुज. घारण]

विसहर पुं. 'सर्प.' १८-४९ [सं. विषधर]

विस्स वि. 'शब्दायमान.' २२-४ [सं. विस्वर > प्रा. विस्सर]

विहर अ. क्रि. 'एक स्थळेथी बीजे स्थळे विचरवुं.' **विहरंतउ** १-२ [सं. वि. + हृ]

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विहरु पुं. 'आंतरो, तफावत.' गुज. 'वहेरो.' १९-६६

विहलंघल वि. 'विह्वळ.' २-२४

विंदु न. 'समुदाय.' ३५-३, ३५-२१ [सं. वृन्द]

वीरवलय न. [सं.] 'पुरुषना हाथनुं एक घरेणुं.' ३-१६

वुट्ठि स्त्री. 'वरसाद.' १-२५ [सं. वृष्टि]

वेगै स्त्री. 'घृत आदि विकारजनक वस्तु.' २८-१०२ [सं. विकृति > प्रा. विगइ. आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

वेधीय वि. 'रसिक, संस्कारी,' **वेधीया** ३६-५७ [सं. वेधिताः] जुओ **सवेध.**

वेध्यु वि. 'प्रेमासक्त.' **वेध्या** ३६-१५. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास' ना शब्दकोशमां **वेध.**

वेस स्त्री. 'गणिका.' १-१८, १-१९, १०-४ [सं. वेश्या > प्रा. वेसा]

व्यालू न. 'सांजनुं भोजन,' गुज. 'वाळु, वियालु.' ३०-८४ [सं. विकालिक > प्रा. विआलिअ > अप. विआलिउ]

शत्रुकार पुं. 'सदाव्रत, अन्नदानशाला.' ३०-२५६ [सं. सक्तुक + अगार > प्रा. सत्तुअगार. जूनी गुज. मां आ शब्दनां 'सत्तूकार,' 'सत्रुकार,' 'सत्रुगार,' 'सूत्रूगार' एवां रूपो मळे छे.] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास' ना शब्द-कोशमां **शत्रूकार**

शरखंड न. 'साडी माटेनुं एक कीमती वस्त्र.' **शरषंडां** २२-३५ [सं. श्रीखण्ड]

शोक स. क्रि. 'चूसी लेवुं, शोषी लेवुं.' **शोकी** १९-४१ [सं. शोष > शोख > शोक. बीजी तरफ सं. शोषयति > प्रा. सोसेइ, अप. सोसइं, गुज. सोसवुं.]

सइ अ. 'आपोआप, पोतानी मेळे.' २-१; **सइं** ३७-६ [सं. स्वयं > प्रा. सयं > अप. सइं]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सइथउ पुं. 'माथाना वाळने बे भागमां होळतां वच्चे पडती लीटी, सेंथो.' सइथइ २१-१९; सयथलउ १२-९ [सं. सीमन्तकः > अप. सइंथउ. 'सेंथा उपर पहेरवाना स्त्रीओना घरेणा' तरीके पण आ शब्दनो प्रयोग जूनी गुज. मां थयेलो छे. जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां सइथु] जुओ संथउ.

सइर न. 'शरीर.' सइरि २२-५२; सयरि २०-३९, २०-४१; सयरु २०-२२ [सं. शरीर > पा. प्रा. सरीर, जूनी गुज. मां 'र'नो लोप थतां सइर, सयर. आ प्रकारनां शब्दरूपो जूनी गुज. मां अन्यत्र पण छे, जेम के—सं. करीर > कइर > केर (एक नानुं वृक्ष, केरडो), सं. सरिज्जल > सइज्जल > सेंजळ ('सरवो सोरठ देश, ज्यां सावजडां सेंजळ पीए'), परिमल > पीमळ, आदि]

सउडउ पुं. 'मों ढांकीने सूई रहेवुं ते,' गुज. 'सोंड.' ३०-५४.

सकार पुं. 'मृगया.' ३२-२१ [फा. शिकार]

सखाईउ पुं. 'मित्र.' २४-४ [सं. सख्य > प्रा. सक्ख उपरथी]

सग्ग न. 'देवलोक.' १८-३१ [सं. स्वर्ग]

सणसर स्त्री. 'हीलचाल.' १९-४

सद्द पुं. 'अवाज,' गुज. 'साद.' सद्दि २-३ [सं. शब्द]

समण न. 'स्वप्न,' गुज. 'शमणुं.' समणि ३-२३ [सं. स्वप्न > प्रा. सुविण, सुमिण] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां समणडउं अने सुहणउ. वळी जुओ समिणडउं अने सुमिण.

समिणडउं न. 'स्वप्न.' ३६-३७ [सं. स्वप्न > प्रा. सुविण, सुमिण + स्वार्थिक 'ड'] जुओ समण.

सयवर पुं. 'स्वयंवर.' १८-३२ [सं. स्वयंवर. सर० प्रा. गुज. शंभर = कन्यापक्ष कन्याने लईने लग्न करावचा माटे वरपक्ष तरफ जाय ते. भरूच आसपासना रजपूतोमां आ शब्द प्रचलित छे.]

सरभि वि. 'सुगंधी.' २२-१२ [सं. सुरभि] जुओ सुरहि.

सरववरति स्त्री. 'जैन साधुनां व्रतोनो स्वीकार.' ३०-६१ [सं. सर्वविरति]

सरसइ स्त्री. 'विद्यानी देवी, सरस्वती.' १-१ [सं. सरस्वती > प्रा. सरस्सई]

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सरि स्त्री. 'सेर, माळा.' २-१८; 'आड, शोभा माटेनी रेखा.' २२-३२ [सं. सर]

सलूणउ वि. 'सुन्दर,' गुज. 'सलूणो,' हि. 'सलोना.' २-५; **सालूणा** १४-९ [सं. *सलवणक > प्रा. सलोणअ]

सवेध वि. 'रसिक, विदग्ध.' ३६-५५ [सं. स + वेध] **सुवेध** (सं. सु + वेध) पण जूनी गुज. मां छे; जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास,' कडी ९९९. गुजरातीमां 'उ'नो 'अ' थवानी प्रक्रियाथी 'सुवेध'नो 'सवेध' थयुं होवानो पण संभव छे. जुओ वेधीय.

ससुर वि. 'मधुर स्वरवाळुं.' ९-११ [सं. सुस्वर > प्रा. सुस्सर]

सहगुरु पुं. 'सद्गुरु.' २९-१५८. 'सहिगुरु' रूप पण मळे छे; जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां सहिगुरु. वळी जुओ सुहगुरु.

सहसंबवण न. 'गिरनार उपरनुं एक आंबावाडियुं, ज्यां नेमिनाथनी दीक्षा थई हती.' **सहसंबवणि** ८-२ [सं. सहस्राम्रवन, प्रा. गुज. सहेसावन]

संकल स्त्री. 'सांकळ.' २६-३० [सं. शृंखला > प्रा. संखला, संकला] जुओ **सांकली.**

संघारो पुं. 'नाश, हिंसा.' ३-२५ [सं. संहार]

संजिम पुं. 'दीक्षा, संसारत्याग.' ३०-१३ [सं. संयम > प्रा. संजम]

संथउ पुं. 'सेंथो.' १-१३; **संथइ** ६-४६. [सं. सीमन्तकः > सीअंथउ, सींथउ] जुओ **सइथउ.**

संदरी स्त्री. 'सौन्दर्यवती स्त्री.' १३-९ [सं. सुन्दरी]

संपुत्त वि. 'उपस्थित, आवी पहोंचेलो.' ६-७ [सं. संप्राप्त > प्रा. संपत्त]

संभम पुं. 'संतति.' १४-२३ [सं, संभव]

संवच्छरदाणूं न. 'एक वर्ष पर्यंत अपातुं दान.' २-२७ [सं. संवत्सरदान. तीर्थंकर दीक्षा लेतां पहेलां एक वर्ष सुधी दान आपे छे एवी परंपरागत जैन मान्यता छे.]

P.P. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साइउ न. 'आलिंगन.' २०-४४; **सांई** १९-६, १९-३५, १९-९४ [जूनी गुज.मां 'सांई' अने 'सांईडुं' प्रयोग पण छे. सं. स्वञ्ज् 'भेटवुं' अथवा सं. स्वागत > प्रा. साइअ उपरथी]

साथ पुं. 'प्रवास करता वेपारीओनो समुदाय.' **साथनइ** २९-७६ [सं. सार्थ > प्रा. सत्थ]

सान स्त्री. 'निशानी, संकेत.' १०-८ [सं. संज्ञा > प्रा. सण्णा]

सानबाफ न. 'एक कीमती वस्त्र.' २२-४७ [फा. शाना = फणी (वणकरनुं एक ओजार) + फा. बाफ (बाफतन = वणवुं उपरथी). सर० सं. वाप = वणाट]

सामलु वि. 'घोडानी एक जात.' **सामला** १४-६६ [सं. श्यामल]

सामिसाल पुं. 'अधिपति, मालिक.' २-३०, ३-३० [सं. स्वामिन् + सार. जूनी गुज.मां आ प्रयोग अन्यत्र छे—'इण परि पूजइ **सामिसाल** नरनारी धन्न' ('सप्तक्षेत्री रासु,' कडी ४०); 'धंधलु राउलु विन्नवइ **सामिसाल**...('शालिभद्र कक्क,' प्रा. गु. का. सं.' पृ. ६०); 'आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर **सामीसाल** चिरकालि मुक्कि वर' (मंडलिककृत 'पेथड रास,' प्रा, गु. का. सं., परिशिष्ट, पृ. २८), इत्यादि. श्री. अगरचंद नाहटानी सं. १४९३ना उल्लेखवाळी हस्तलिखित संग्रहपोथीमां पत्र १३९-४०मां १३ कडीनी 'सर्वज्ञविज्ञप्तिका' छे, एनी १२मी कडीमां नीचे मुजब 'सामिसाल'नो प्रयोग छे—'जगनाथनी भावना भेटि लाधी, सुधाकुंड कंकेली मइ आज साधी; जिनाधीस मूं हर्ष हू आवि माला, हवं सार करि करि **सामिसाला.**' व्रज भाषामां व्यक्तिने मानार्थे 'गोष्ठिशाल' (सं. गोष्ठिसार = गोष्ठिमां मुख्य) कहेवामां आवे छे.]

सारि स्त्री. 'सोगठांबाजी.' २२-५१ [सं. शारी. जुओ भालणकृत 'कादंबरी' कडवुं २, कडी १३मां—'शुक सारिकानि रक्षागृह, **सारी** रमतां मारि.']

सालहि स्त्री. [दे.] 'मेना.' ५-४.

सावटूं न. 'जरियान.' ३०-१९९ [सं. स्वापतेय > **सावतेय** ? (धन, द्रव्य). गोविन्दकृत 'मामेरा' (पं. १३०)मां 'सावटुयां शणीयां' एवो प्रयोग छे. 'कान्हडदेप्रबन्ध' १-६९ अने १-१३८मां 'सावटूं' शब्द छे.]

साहिब पुं. [अ.] 'मालिक, परमेश्वर.' ३२-२, ३२-४, ३२-१०, ३२-१३, ३४-३, ३४-१२, ३४-४२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साहु पुं. 'वणिक,' गुज. 'शाह.' ३७-३ [सं. साधु > प्रा. साहु]

सांकली स्त्री. 'हाथनुं एक घरेणुं, सांकळी.' २८-४७ [सं. शृंखला > प्रा. संखला, संकला, संकल, सांकल + इ] जुओ संकल.

सांधि स्त्री. 'समय.' २२-५० [सं. सन्धि]

सिकिरि स्त्री. 'धजावाळुं छत्र.' ३-१८; **सीकिरिहिं** २-१५ [सं. श्रीकरी. जूना गुजराती साहित्यमां आ शब्दनां रसप्रद अर्थान्तरो माटे जुओ 'बुद्धिप्रकाश,' नवेम्बर-डिसेम्बर १९४९मां मारो लेख 'श्रीकरी-सीकरी.']

सिषराउल वि. 'शिखरवाळो, अणीदार, ऊंचो.' ६-३८

सिरदार पुं. 'नायक, आगेवान.' ३२-१२, ३२-१७ [फा. सरदार]

सिरशव पुं. 'सरसवनो दाणो.' **सिरशवइ** ३०-७ [सं. सर्षप > प्रा. सरिसव]

सिरसिज न. 'कमळ' [सं. सरसिज]

सिवराति स्त्री. 'माघ वादि १४नी रात्रि.' १३-१४, १३-१५ [सं. शिवरात्रि > प्रा. सिवरत्ति]

सिवि वि. 'सर्वे.' २२-१६, २२-३५ [सं. सर्वे > प्रा. सव्व, सव + इ] **सिवे** २२-१७ [सं. सर्वे > प्रा. सव्वे, सवे]

सिसर पुं. 'शियाळो.' ३०-१८२ [सं. शिशिर]

सिसिहर पुं. 'चंद्र,' गुज. 'शशियर.' १८-३ [सं. शशधर > प्रा. ससहर]

सिहण पुं. [दे.] 'स्तन.' २-१०

सिहिकार पुं. 'आंबो.' २२-३९ [सं. सहकार]

सिंगीय स्त्री. 'पिचकारी.' ८-७ [सं. शृङ्गिका > प्रा. सिंगिया]

सीसवि स्त्री. 'एक झाड, सीसम.' २२-७ [सं. शिंशपा > प्रा. सीसवा]

सींगणि स्त्री. 'धनुष' १५-१२ [सं. शृङ्गिणी > प्रा. सिंगिणी]

सुकमाल वि. 'कोमळ.' १-१०; **सुकमाला** २-१२ [सं. सुकुमार]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aradhak Trust

सुकिल वि. 'शुक्ल पक्षनुं' २-१३ [सं. शुक्ल]

सुणिहर न. 'शयनगृह' २९-६८ [सं. शयनगृह > प्रा. सुअणहर. °हर < सं. °गृह अंतवाळा बीजा केटलाक शब्दोनी व्युत्पत्ति माटे जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां पीहर]

सुमिण न. 'स्वप्न,' गुज. 'समणुं.' 'सुमिणइ २०-४६ [सं. स्वप्न > प्रा. सुविण, सुमिण] जुओ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'ना शब्दकोशमां समणडउं अने सुहणउ. वळी जुओ समण.

सुरतुर न. 'कल्पवृक्ष.' सुरतुरनी ३०-१७७ [सं. सुरतरु]

सुरहि वि. 'सुगंधयुक्त.' १-८ [सं. सुरभि] जुओ सरभि.

सुरी स्त्री. 'देवांगना.' ३०-२७३ [सं. सुर + इ. अमदावाद तरफ 'सुरी' शब्द स्त्रीओना विशेष नाम तरीके सांभळ्यो छे.]

सुवासणिय स्त्री. 'सौभाग्यवती स्त्री,' गुज. 'सवासण.' ९-१० [सं. सुवासिनी]

सुस्सर वि. 'मीठा स्वरवाळी.' ९-१० [सुस्वर > प्रा. सुस्सर]

सुह न. 'सुख.' १-२३; सुहिण १-२३ [सं. सुख]

सुहगुरु पुं. 'सद्गुरु' १६-१२, २९-१७, ३७-१८ [सं. शुभगुरु] जुओ सहगुरु.

सूअ पुं. 'पोपट.' सूआ ५-४, २२-८ [सं. शुक]

सूकडि स्त्री. 'सूखड.' १२-११, २०-२५ [शुष्क > प्रा. सुक्क + स्वार्थिक 'डी.' दक्षिण गुजरातनी बोलीमां 'सुकड' के 'सुकेड' बोलाय छे.]

सूहव वि. 'सुन्दर' ९-१० [सं. सुभग > प्रा. सुहव]

सेलु न. 'कसबी उपरणो.' सेला ३०-१९७

सेहर पुं. 'माथा उपरनो पुष्पनो अलंकार, शेखर.' ९-५; सेहरो ३०-२३४ [सं. शेखर]

हकार स. क्रि. 'हांक मारीने बोलाववुं.' हकारि २९-१६ [प्रा. हक्कार]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhan Trust

हरीयडु वि. 'घोडानी एक जात.' **हरीयडा** १४-६६

हव अ. 'अत्यारे, हवे.' ३७-१५; **हवं** २२-५५ [सं. एतादृशके > अप. एवहइ, एहवइ > जूनी गुज. हवइ, हिव, हव]

हसमस स्त्री. 'हालवुं ते.' २०-८ [रवानुकारी]

हाथुलि स्त्री. 'हाथे पहेरवानो एक अलंकार.' २२-२७ [सं. हस्त > प्रा. हत्थ > अप. हत्थु, हाथु + लि]

हांसी स्त्री. 'हंसनी मादा.' १७-१६ [सं. हंसी]

हीडोलाट स्त्री. 'हींचोळो.' २२-४३, २२-२५; **हीडोलाटइं** १४-१६ [सं. हिन्दोला + ट]

हीरडु न. 'हैयुं.' **हीरडा** १३-१४ [सं. हृदय. सर० हि. हिरद]

हेलां क्रि. वि. 'रमत मात्रमां, सहेलाईथी.' १४-३३, १८-५ [सं. हेला]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना प्रथम प्रकाशन विषे केटलाक अभिप्रायो

Shri G. V. Mavlankar (Speaker, Indian Parliament; President, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad)—" It was a new thing to me to know that our old literature has a number of works in prose. Then there are a couple of points which I appreciate very much. The first is that the book is printed in Devanagari script. The other point is the gradual compilation of a vocabulary consisting of words of special importance. It is essential to have such a vocabulary for the study of our old literature."

Dr. Suniti Kumar Chatterji (Emeritus Professor of Comparative Philology, University of Calcutta; Chairman, West Bengal Legislative Council)—" I congratulate you on the very fine piece of work which you have brought under the auspices of the University of Baroda. This is a very auspicious start. The book, because of both its language and subject-matter has very great interest for all the students of Indian linguistics and philosophy as well as general culture; and the editing has been done in a very fine scholarly style, and on the top of that, the printing and the get-up are excellent. It was a very good idea to print the introduction and everything in Gujarati in the Devanagari character. Your work is a valuable addition to the mass of texts in early Gujarati which has been made already available by other scholars. The University of Baroda can be most heartily felicitated for inaugurating this series of *Prācīna Gurjara Granthamālā*, which I feel perfectly confident, will become a very honoured series among the various well-known series of texts published by different institutions of India."

Dr. R. L. Turner (Director, School of Oriental and African Studies, London University)—" I have now been very carefully

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

through your Shashtishataka Prakarana and I should like to take this further opportunity of saying how much I appreciate the additions you have made and how useful this type of work will be for elucidating the history of the modern Indo-Aryan Languages. I have found the vocabulary in particular of the greatest use for my work for the Comparative Dictionary of Indo-Aryan. I would like to congratulate you on so successfully initiating this series of old Gujarati texts."

Professor Alfred Master (Retired Professor of Indian Philology, School of Oriental and African Studies, London University)—"The edition as the part of a planned series is very welcome, as the number of critical texts in old Gujarati published is still very small, considering the vast amount of manuscripts extant. As it is still necessary to emphasise the linguistic rather than the literary significance of old Gujarati texts, the publication of a manuscript of Somasundarasūri's commentary written only fourteen years after his death is of particular importance. The book is well-planned, clearly printed and well-bound so that it is a pleasure to the student to handle and read."

Professor G. H. Bhatt (Director, Oriental Institute, Baroda; in the *Journal of the Oriental Institute*, Vol. II, p. 405)—"We congratulate Dr. Sandesara on his excellent edition, and we are sure, the new series under his able guidance will, in course of time, supply the necessary sources of a Gujarati Dictionary to be prepared on historical principles—a long-felt desideratum."

Dr. A. N. Upadhye (Rajaram College, Kolhapur; President, Prakrit and Jainism section, 11th All India Oriental Conference)—"The introduction gives useful material, and the text of the Bālāvabodhas is very well presented.....I am sure, you will bring out many such books which would give us a connected account of the development of Apabhramśa prose."

P. P. Ac., Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

Dr. J. Filliozat (Professor of Sanskrit, College de France; in *Journal Asiatique*, no. 2 of 1953)—

"Premier volume d'une Prācīna Gurjar Granthamālā "Serie d'ouvrages anciens du Gujarāt," publiée á Baroda par L' Université Mahārāja Sayājī Rao, avee une préface en gujarāti par Mme. Hamsa Mheta, Vice Chancelier.....L' édition est trés soigneuse et trés bien présentée....." (First volume of Prācīna Gurjar Gratnhamālā 'series of ancient works of Gujarat' published at Baroda by The Maharaja Sayajirao University, with a preface in Gujarati by Mrs. Hansa Mehta, Vice-Chancellor...The edition is very careful and very well presented...).

श्री. कनैयालाल माणेकलाल मुनशी (गवर्नर, उत्तर प्रदेश; प्रमुख, भारतीय विद्याभवन, मुंबई)—"तमे तो खूब काम करी रह्या छो; अने प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला घणी ज उपयोगी थशे. तमारा प्रयत्नोने सफळता इच्छुं छुं."

श्री. हरसिद्धभाई दिवेटिया (वाइस-चान्सेलर, गुजरात युनिवर्सिटी)—' भाषा तेम ज विवेचन वन्नेनी दृष्टिए पुस्तक मूल्यवान छे अने तमारा विवेचन अने विद्वत्तापूर्ण शब्दकोशथी ते वधारे मूल्यवान बन्युं छे."

श्री. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी (वाइस-चान्सेलर, शेठ ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठ)—"साधारण रीते एवी मान्यता प्रसरी गयेली के जूना गुजरातीमां गद्य हतुं ज नहि.....आ संशोधन, ने ते पण शास्त्रीय रीते करीने तमे आपणा साहित्यनी परंपरा पर नवो ज प्रकाश पाड्यो छे."

विख्यात विवेचक **प्रो. रामनारायण विश्वनाथ पाठक**—"वांचतां संपूर्ण संतोष थयो. तमे जे उद्देशथी ग्रन्थमाला शरू करी छे तेने सिद्ध करवा बधी रीते उपयोगी नीवडे तेवी संपादनपद्धति योजी छे. आ पुस्तक हवे पछी प्राचीन गुजराती भाषाना पुस्तकसंपादननो एक सारो नमूनो थई पडशे. मुद्रण चोख्खुं अने मूळ पाठ अने बालावबोध स्पष्ट जुदा

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तरी आवे एवी रीते करेलुं छे ते योग्य ज कर्युं छे. अंते आपेलो शब्द-कोश भविष्यमां गुजराती भाषानो पूर्ण कोश करवो हशे त्यारे पूरो उपयोगी थशे. "

प्रो. रसिकलाल छोटालाल परीख (अध्यक्ष, भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद)—" महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय स्थापी मुंबई राज्ये युनिवर्सिटीना साचा अर्थमां —' गुरुशिष्यमंडल ' ना अर्थमां—विद्याकीय संस्थानो अखतरो आदर्श छे. आ युनिवर्सिटी अनेक विद्याशाखाओ विकसावबा प्रयत्न करे छे, तेमां तेनो प्रशंसनीय अने सौथी वधारे आवश्यक प्रयत्न गुजराती विद्याविभाग खोलवानो छे. सद्भाग्ये आ विभागना अध्यक्ष तरीके डो. सांडेसरा जेवा कृतपरिश्रम संशोधनकुशल विद्वाननी निमणूंक थई छे. डो. सांडेसराए प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालानी योजना करी तेना पहेला ग्रन्थ तरीके नेमि-चन्द्र भंडारी-विरचित ' षष्टिशतक प्रकरण ' अने तेना त्रण बालाव-बोधोनुं संपादन करी प्रकाशन कर्युं छे ते तेमनी कार्यपरायणता अने संशोधनदक्षता व्यक्त करे छे.

गुजराती भाषानुं वास्तविक स्वरूप जाणवा माटे तेनां विकास अने घडतरने जाणवां जरूरी छे. सुनीतिकुमार चातुर्ज्याए बंगाली भाषानुं अने फ्रेन्च भाषाशास्त्री सद्गत ब्लोके मराठी भाषानुं जे शास्त्रीय पद्धतिए निरूपण कर्युं छे तेवुं गुजरातीनुं थवुं हजी बाकी छे. अंग्रेजी भाषानो जेवो शब्दकोश ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी तरफथी बहार पड्यो छे तेवो गुजराती भाषानो शब्दकोश संशोधकोनी प्रतीक्षा करे छे. पण आ प्रवृत्तिओ हाथ धराय ते पहेलां कालक्रममां प्राचीन गुजराती साहित्यनी कृतिओनुं शास्त्रीय पद्धतिए संशोधन अने प्रकाशन बहोळा प्रमाणमां थवुं जरूरी छे. आ जरूरियातने लक्ष्य करी डो. सांडेसराए आ ग्रन्थमाळानी योजना अने आ ग्रन्थनुं संपादन कर्यां छे ते शास्त्रीयताना साचा मार्गे जाय छे एवो मारो अभिप्राय छे.....

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालयना, गुर्जर ग्रन्थमालाना आ पहेला प्रकाशनने आवकार आपतां अने तेना संपादकने धन्यवाद आपतां मने

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आनंद थाय छे. आवी ग्रन्थमाळाने अवकाश आपवा माटे गुजराती भाषाना अभ्यासीओ वाइस-चान्सेलर श्रीमती हंसाबहेनने अभिनंदन आपशे."

विख्यात साहित्यकार **श्री. रमणलाल वसंतलाल देसाई** ('सयाजी-विजय' ता. २९मी मार्च १९५३ना अंकमां)—"बडोदरा राज्यनी 'प्राचीन काव्यमाला'नी श्रेणीनी याद आपती अने ए श्रेणीना कार्य-उद्देशने विस्तार आपती 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला' ना पहेला ग्रन्थ तरीके प्रसिद्ध थयेलुं 'षष्टिशतक प्रकरण' संपादनकार्यनो एक यशस्वी नमूनो बनी रह्युं छे."

प्रो. विष्णुप्रसाद र. त्रिवेदी (अध्यक्ष, श्री. चुनीलाल गांधी विद्याभवन, एम. टी. बी. कॉलेज, सूरत)—संपादननी समग्र पद्धति नमूनेदार छे.....ग्रन्थनो देखाव आकर्षक छे, तेनुं संपादन प्रशंसापात्र छे; अने तेनुं तात्पर्य सद्वृत्ति अने सद्धर्मना शोधकने उपयोगी नीवडे तेम छे."

प्रो. अनंतराय म. रावळ (गुजरात कॉलेज, अमदावाद)—"आपणी भाषाना अभ्यासीओने भाषाविकासना इतिहासमां खूटता अंकोडा पूरा पाडती तेम ज साहित्यना अभ्यासीओने अभ्यास अने विवेचन माटे नवो भंडार संपडावती प्राचीन गुजराती कृतिओनुं प्रकाशन आ पुस्तकथी प्रारंभती, तमारा विश्वविद्यालयनी 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला' गुजराती साहित्यनी मोटी सेवा करशे."

प्रो. डोलरराय मांकड (आचार्य, दरबार गोपाळदास महा-विद्यालय, अलियाबाडा)—"युनिवर्सिटीने योग्य ए प्रकाशन छे. आपणा प्राचीन गद्यना अभ्यासमां ए घणुं उपयोगी नीवडशे, एमां शंका नथी. संस्कृतनी पेठे जूनी गुजरातीमां पण आवी विवरणशैली हती ते पण आ प्रकाशनथी स्पष्ट थाय छे."

प्रो. गौरीप्रसाद चु. झाला (सेन्ट झेवियर्स कॉलेज, मुंबई)—"प्रस्तावना अने शब्दकोश बन्नेमां तमारी लाक्षणिकता—विद्वत्तानी,

P. P. Ac. Gunratnasuri M. S. Jun Gun Aaradhak Trust

विचारनी अने शैलीनी—अंकाई छे. अभिनन्दन अने 'ग्रन्थमाला'ने शुभेच्छा !"

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल (कॉलेज ऑफ इन्डोलोजी, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी)—"नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक' ग्रन्थ को तीन बालावबोध टीकाओं के साथ प्रकाशित देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई. आपने बडौदा विश्वविद्यालय से प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला का संपादन आरम्भ कर के अपने लिये उत्तम कार्य का सूत्रपात किया है। **गुजराती भाषा में जैसा आपने भूमिका में लिखा है इतना अधिक प्राचीन साहित्य बच गया है जितना अन्य किसी प्रादेशिक भाषा में नहीं।** गुजराती का यह साहित्य गुजराती के लिये ही नहीं, हिन्दी की प्राचीन व्युत्पत्तियों के लिये भी अनमोल है। शब्दनिरुक्ति की जो समस्या गुजराती के लिये है, वही हिन्दी के लिये है, वही बंगला और मराठी, पंजाबी के लिये भी है। असम और उड़िया भाषा के लिये भी अपभ्रंशजन्य शब्दों की व्युत्पत्ति की सामग्री प्राचीन भाषा साहित्य में से उपलब्ध हो सकेगी। मेरी दृष्टि से ११वीं शती से १५-१६वीं शती तक का साहित्य संस्कृत परिवार की भाषाओं के लिये एक जैसा उपयोगी है। इस गुजराती 'षष्टिशतक' में कितने ही हिन्दी शब्दों की व्युत्पत्ति मुझे मिल रही है। इस ग्रन्थ से मेरा परिचय कराने के लिये आप का कृतज्ञ हूं।"

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्राचीन गुर्जर ग्रंथमालानां प्रकाशनो

१. नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित **षष्टिशतक प्रकरण**—त्रण बालाव-बोध सहित. एक ज प्राकृत प्रकरणग्रन्थना पंदरमा-सोळमा शतक आसपास थयेला त्रण जूना गुजराती गद्यानुवादो : प्रस्तावना, परिशिष्टो अने शब्दकोश सहित. संपादक : डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. ३० + १९३. मूल्य पांच रूपिया.

२. महीराजकृत **नल-दवदंती रास**—सं. १६४१मां कर्ताना हस्ताक्षरोमां लखायेली प्रति अनुसार. संपादक डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. २४ + १७४. मूल्य सवाचार रूपिया.

३. **प्राचीन फागु-संग्रह**—विक्रमना चौदमाथी अढारमा शतक सुधी रचायेलां आडत्रीस फागु-काव्योनो समुच्चय; प्रतिपरिचय अने कृतिपरिचय, फागुविषयक अभ्यासलेख अने शब्दकोश सहित. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा अने श्री. सोमाभाई पारेख.

प्राप्तिस्थान—**प्राच्य विद्यामन्दिर, वडोदरा**

*

हवे पछीनां प्रकाशनो

४. उदयभानुकृत **विक्रमचरित्र रास**—शामळना एक पुरोगामी कवि-रचित पद्यवारता. संपादक : स्व. प्रो. बलवंतराय क. ठाकोर.

५. **वर्णक-समुच्चय**—सांस्कृतिक इतिहास माटे महत्त्वनां पद्यानु-कारी, गद्य-वर्णकोनो समुच्चय.

६. नरहरिकृत **ज्ञानगीता**—अखाना वृद्ध समकालीननुं वेदान्त-विषयक काव्य; संत-कविओनी परंपराना अभ्यास सहित.

७. भालणकृत **नळाख्यान**—मध्यकालीन गुजरातीनां लक्षणो जाळवती श्रद्धेय प्रति अनुसार पुनः संपादन.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Jin Gun Aaradhak Trust

८. वस्ताकृत **वस्तुगीता**—वेदान्ती कविनी एक सुन्दर काव्यरचना.

९. **प्राचीन पद-संग्रह**—संत कविओनां काव्यगुणयुक्त पदोनो संग्रह.

१०. यशोधरकृत **पंचाख्यान**— एक ब्राह्मण विद्वाने १६मा सैकामां करेलो 'पंचतंत्र'नो गद्यानुवाद.

११. **बिल्हणपंचाशिका**—सुप्रसिद्ध संस्कृत शृंगारकाव्यना जूना गुजराती गद्य अने पद्य-अनुवादो.

१२. **चाणक्य नीतिशास्त्र**—संस्कृत नीतिग्रन्थना जूना गुजराती गद्यानुवादो.

१३. **रत्नचूड रास**—सं. १५१०मां रचायेल एक विशिष्ट कथाकाव्य.

आ उपरांत प्राचीन गुजराती साहित्यनी बीजी केटलीक विशिष्ट कृतिओना संपादननी आयोजना थई रही छे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust